TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

TEXT CROSS WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_182861
UNIVERSAL LIBRARY

रामायण-मनजूम

18280

रचयिता

हकीम वाइसराय 'वहमी'

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No H81 T91 R   Accession No H 3486

Author तुलसीदास

Title रामायण मनजूम १९६३

This book should be returned on or before the date last marked below

लेखक ने सर्वाधिकार स्वरक्षित रखे हैं।

काव्यकार का नाम : हकीम वाइसराय 'वहमी'

प्रकाशक : हकीम वाइसराय 'वहमी'
७३०, चौक मैदान खां, हैदराबाद (आ प्र)

मुद्रक : कमर्शियल प्रिंटिंग प्रेस,
८३१, बेगमबाजार, हैदराबाद

प्रकाशन का समय : मई १९६३ ई०

मूल्य : ४ रुपये

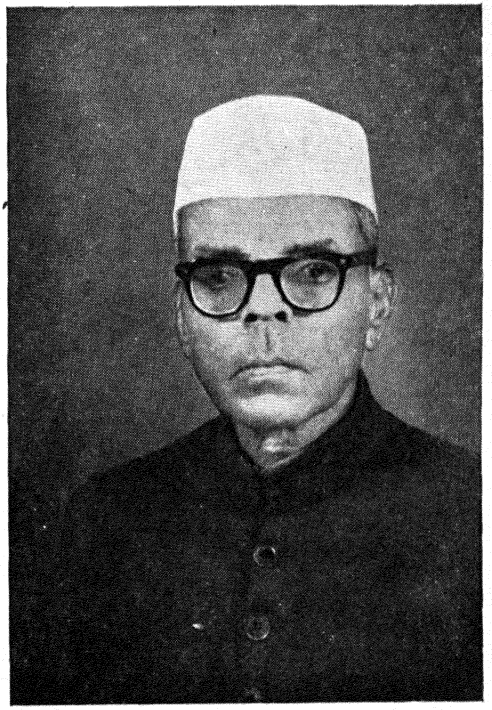

हकीम वाइसराय 'वहमी'

समर्पण

डा. वी. रामकृष्ण राव को

भूमिका

श्री हकीम वाइसराय 'वहमी' जी का पद्य-रामायण 'रामायण मन्जूम' मैंने देखा। यह पुस्तक छह हजार एकतुकान्त और एक ही नज्म मे लिखी गयी है। लेखक का यह प्रयास गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरित मानस का छायानुवाद है। पहले यह ग्रन्थ अरबी या उर्दू की लिपि में था; अब इसका नागरी रूपान्तर प्रस्तुत किया जा रहा है।

गोस्वामी जी के रामचरित मानस में जीवन का जितना सौन्दर्य आयोजित हो कर उतरा था उसको इस अनुवाद मे वहमी जी ने यथास्थान मज्जित कर लेने का स्तुत्य प्रयास किया है। राजनीति और दर्शन, जीवन के अंग हैं। मनुष्य का चिन्तन जिन आदर्शों को अपनी सीमा के भीतर बाँध लेता है उन्ही के बँधे हुए स्वरूप को दर्शन कहते है। जीवन में मनुष्य जहाँ खड़ा रहता है उससे दूर की वस्तु को वह देखता रहता है चाहे वह वस्तु उसे अभी प्राप्त न भी हुई हो। इसी को आदर्श कहते है। मनुष्य जैसा है वह उसका यथार्थ है। वह जैसा होना चाहता है वह उसका आदर्श रूप है।

प्रत्येक युग में संत स्वभाव, मानवता को इस आदर्श पर सामूहिक रूप मे पहुँचाने का प्रयत्न करता रहता है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद, जरथुस्त्र, नानक, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, समर्थ गुरु रामदास इत्यादि सब महात्माओं और अवतारो ने यही कार्य किया। चैतन्य, वल्लभ, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य इत्यादि सब आचार्यों ने यही प्रयत्न किया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस और उनके समर्थ शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने इसी दिशा में प्रयास किया। योगी अरविन्द और महर्षि रमण ने मनुष्य को आदर्श की इसी दिशा मे अग्रसर करने का स्तुत्य प्रयत्न किया।

सूर्य, दिन में जिस प्रकाश से दुनिया को आलोकित करता रहता है रात आ कर उसी प्रकाश के स्थान में अन्धकार फैला जाती है। महात्माओं के जीवन के द्वारा फैलाया हुआ ज्ञान का प्रकाश भी इसी तरह कालचक्र के प्रभाव से जब धूमिल पड़ने लगता है तब किसी दूसरे ज्ञान के सूर्य का उदय होता है। भगवान् कृष्ण ने इसी स्थिति को समझाने के लिए अर्जुन से कहा था कि जब-जब धर्म का लोप और अधर्म का अभ्युदय होता है तब-तब मैं दुनिया के भले लोगों की रक्षा करने के लिए, बुरे लोगो का विनाश करने के लिए और धर्म की स्थापना करने के लिए इस पृथ्वी पर आता हूँ।

गोस्वामी तुलसीदास का रामचरित मानस अवधी भाषा में है। खड़ी बोली के ऐसे क्षेत्र में जहाँ अवधी समझने मे लोगो को कष्ट होता है या अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में जहाँ हिन्दी की खड़ी बोली की केवल एक भाषा-शैली का प्रचार ही हितकर होगा, वहमी जी का यह ग्रन्थ ऐसे क्षेत्रों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। पूरे भारत में जहाँ-जहाँ के लोग उर्दू शैली की खड़ी बोली को सहज रूप में बोलते हैं, उन प्रदेशो की जनता को जीवन के सम्पूर्ण सौन्दर्य को एक ही स्थान मे पा जाने मे वहमी जी का यह ग्रन्थ बहुत अधिक सहायक सिद्ध होगा।

जो लोग केवल संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही जानते हैं और उर्दू के शब्द सुनते ही जिन्हे भाव समझने में कठिनाई होने लगती है, ऐसे लोग भी इस ग्रन्थ को नागरी लिपि के द्वारा यदि एक बार पढ़ जाएँगे तो उन्हे सरल उर्दू का अच्छा ज्ञान हो जाएगा।

उर्दू वाली अरबी-फारसी की शैली का अधिक अभ्यास हो जाने के कारण जो लोग संस्कृत के शब्द नहीं समझ पाते उनके लिए भी यह ग्रन्थ हिन्दी के कुछ आवश्यक शब्द सीख लेने में सहायक होगा।

वहमी जी के इस ग्रन्थ की शैली में प्रवाह है। वार्तालाप का नाटकीय ढंग बड़ा आकर्षक और हृदय को छूने वाला है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वहमी जी ने अपने जीवन में भी आदर्शों की साधना करके बहत्तर वर्ष के इस वय में इस स्तुत्य कार्य को आरम्भ किया। जीवन को आदर्शों से सज्जित करके सतहत्तर वर्ष के वय में गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने जीवन को सतहत्तर वर्षों की साधना को रामचरित मानस के रूप में संसार को दिया था। वहमी जी ने भी प्राय उसी वय में इस स्तुत्य कार्य को सम्पन्न किया है। इनका यह कार्य यदि घर-घर में पहुँचाया जा सके तो मुझे विश्वास है कि राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, दशरथ कौशल्या, सुमित्रा, हनुमान, वाल्मीकि, भरद्वाज, अरुन्धती, अनसूया, शबरी, मन्दोदरी तथा विभीषण का आदर्श शील हम अपने देश में उत्पन्न कर सकेंगे।

आज के युग में खड़ी बोली में इस प्रकार के ग्रन्थों की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हमारी सीमा और हमारे राष्ट्र का अपमान एक पड़ोसी देश कर चुका है और अब हम अपने घरों में निश्चिन्त नहीं बैठ सकते। भारतीय वीर अपनी शारिरीक शक्ति से शत्रु के शरीर को ही नहीं पराजित करते थे, वरन् अपनी आत्मिक शक्ति और उसी के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुए अपने विश्वरक्षक शील से वे शत्रु के हृदय को अपने वश में करके उसके शील को भी सुधार देते थ। अपने उद्दंड पड़ोसी के शील को जगन्माता शक्ति से विनम्र बनाये बिना हम विश्व की रक्षा-योजना में भाग नहीं ले सकते। वहमी जी का यह स्तुत्य प्रयास मनुष्य के हृदय को वह स्वस्थ बल प्रदान करेगा जिससे विश्व के शरीर और मन दोनों स्वस्थ होते हैं। परमात्मा से मेरी प्रार्थना है कि ऐसे अनेक स्तुत्य और सफल शुभ प्रयत्नों को पूरा करने के लिए उन्हें दीर्घायु बनाये।

वैशाख कृष्ण दशमी, शुक्रवार,
संवत् २०२०। १९ अप्रैल १९६३,

—रामनिरंजन पांडेय,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उसमानिया
विश्वविद्यालय, हैदराबाद

अनुवादक के दो शब्द

मार्च १९६० मे तुलसीकृत 'रामचरितमानस' का उर्दू पद्यानुवाद मैंने 'रामायण-मजूम' नाम से प्रकाशित किया था। बाद मे मित्रो ने राय दी कि उसका हिन्दी सस्करण भी निकाला जाए। हिन्दी संस्करण अब आपके हाथो मे है।

रामायण का महात्म्य वर्णनातीत है। यह प्रेम और दया, शील और विनय, वीरता और साहस तथा प्रीति और रीति का अद्वितीय कथानक है। विद्वानो ने इसे ज्ञान और दर्शन का भंडार कहा है। इसे पढ़ कर मनुष्य अपना लोक और परलोक दोनो सँवार सकता है।

'रामायण-मजूम' लिखने की प्रेरणा मुझे अपनी दिवगता धर्मपरायणा पत्नी प्रेमरानी से मिली। अप्रैल १९५९ मे उनका गोलोकवास हुआ और प्रायः दस वर्ष तक वे फालिज के कारण रोगशैया पर रही। उनकी इच्छा थी कि मैं तुलसीकृत 'रामचरितमानस' का सरल उर्दू अथवा हिन्दी भाषा मे अनुवाद करूँ, और यह पुस्तक उसी का फल है। दुख इस बात का है कि उनके रहते यह पुस्तक प्रकाशित न हो सकी, सतोष इतना-सा है कि पुस्तक उनके रहते लिखी जा चुकी थी और इसके कई अश मैंने उन्हे पढ कर सुनाये थे।

'रामायण-मजूम' के इस सस्करण का सम्पादन मेरे नौजवान दोस्त श्री मुरलीधर शर्मा ने किया है और इसके प्रकाशन मे भी उन्होंने बड़ी सहायता की है। मैं हृदय से उनका आभार मानता हूँ।

साथ ही, कमर्शियल प्रिंटिंग प्रेस के मैनेजर श्री मुनीन्द्र का भी मैं आभारी हूँ जिनके बहुमूल्य सुझाव समय-समय पर मिलते रहे है।

हैदराबाद,
रामनवमी, २-४-१९६३

हकीम बाइसराय 'वहमी'

अथ रामायण मनजूम

सिद्धिदाता गनपति की क्या बयां हों खूबियां, नाम ही लेने से जिनका सहल हों दुश्वारियां।
शारदा जी की दया से लिख रहा हूँ यह किताब, ध्यान जिनका दिल में है और नाम है विद्देजबां।
राम का अवतार दुनिया में हुआ था इसलिए, ताकि बदकारो का दुनिया से मिटे नामोनिशां।
अब श्री रघुनाथ की लीला सुनाता हूँ तुम्हें, जिसको सुन कर लोग हो जायेंगे खुर्रम शादमाँ।

थी अयोध्या इक हुकूमत, राजा दशरथ हुक्मराँ, नरल से सूरज के थे वो सूर्यवंशी खानदाँ।
खानदाँ इनका बहुत मशहूर था उस दहर मे, नामवर गुजरे है अक्सर बादशाह उनके यहाँ।
राजा दशरथ को था हासिल हर तरह का ऐशोतर्ब, दबदबा उनका बडा था जाहो शोकत इज्जोशाँ।
उनका हमसर कोई उस दम था न अब तक हो सका, वो महाराजा हुए मशहूर थकनाए जहाँ।
अदल और इन्साफ मे मशहूर थे मारूफ थे, हर तरह उनकी रअइयत शाद थी और शादमाँ।
वो सखी थे रहमदिल थे और शुजाअत के धनी, तूल हो जाये सुखन गर मैं लिखूं सब खूबियाँ।
मालो दौलत की कमी कुछ भी न थी राजा के घर, तीन थी उनके महल मे खूबसूरत रानियाँ।
हर तरह का चैन हासिल राजाए दशरथ को था, घर मे था लेकिन नही कोई चिराग खानदा।
जो वशिष्ठ उनके गुरु थे, हाल सब उनसे कहा, वो दिलासा उनका दे कर यूँ हुए गौहरफशाँ।
आप यग कीजेगा राजा चार फरजंद होएंगे, बात यह मेरी नही जाएगी हरगिज रायगाँ।
राजा दरशथ ने किया यग आरजू अरमान से, थे शिरगीजी ऋषि यक उनको बुलवाये यहाँ।
जब मिला परशाद यग का खीर उनको दी गयी, हो गये राजा उसे ले कर निहायत शादमाँ।
खीर वो ले जाके दे दी रानियो को राजा ने, खायी उस परशाद को वो होके शादो शादमाँ।
कुछ अगर ऐसा निहाँ था यज्ञ के परशाद मे, चंद ही दिन मे हमल से रह गयी सब रानियाँ।
जो बडी रानी थी कौशल्या उन्हे लडका हुआ, फिर• हुआ एक और लडका कैकेई के भी यहाँ।
और दो लड़के हुए रानी सुमित्रा जी को भी, चार लडके हो गये राजा हुए बस शादमाँ।
राजये आलीकदर बेहद हुए ममरूरो शाद, क्योंकि रोशन हो गया अब उनका आली खान्दाँ।
दूर कुलफत हो गयी हर एक शादाँ हो गया, शादो खुर्रम हो गये मरदोजनो पीरोजवाँ।
जब हुए फरजद पैदा जरने शाहाना रचे, क्या लिखूं तारीफ उनकी मेरी ताकत है कहाँ।
राम कौशल्या के बेटे कैकेई के भरत थे, लक्षमण और शत्रुघन थे दो सुमित्रा जी की जाँ।
परवरिश उनकी हुई चाहत से लाड़ और प्यार से, बाप फरजदों पे अपने थे निहायत मेहरबाँ।
जब हुए पढने के काबिल फिक्र की तालीम की, जो वशिष्ठ इनके गुरु थे, ये गये उनके यहाँ।
दी गुरुजी ने भी इनको हर तरह तालीम खूब, इल्म मे और फज्ल मे ये चार थे रश्केजमाँ।
और सिपहगिरी मे भी चारो बडे मुश्ताक थे, ये शिकारी थे, अजीज इन सब को थे तीरोकमाँ।
था कमाल हासिल इन्हे हर इल्म मे हर बात में, सब फनून आते थे इनको थे जो जेबे खुशरवाँ।
उस जमाने मे ऋषि एक और विश्वामित्र थे, आ गये इक रोज वो राजा के घर पर नागहाँ।
दर पे आके अपने आने की खबर राजा को दी, अर्ज कर बैठे महाराजा से जा कर पासबाँ।
जब सुना राजा ने आये है ऋषि घर पर मेरे, बहर इस्तकबाल अपने घर से वो निकले दवाँ।

की बहुत ख़ातिर मुदारात उनकी बाअदब एहतमाम, यह समझ कर आये है घर में बुज़ुर्ग इक मेहमाँ।
उनसे जब राजा ने पूछा उनके आने का सबब, यूँ ऋषि ने उनसे की तकलीफ़ सब अपनी बयाँ।
मैं जहाँ जंगल में रहता हूं कुछ ऐसे लोग है, जो मुझे करने नहीं देते है यग हरगिज वहाँ।
वो शरारत करते है हरदम सताते है मुझे, जुल्म से उनके बहुत लाचार हूँ और तंग जाँ।
इसलिए आया हूं दर पर मै बडी उम्मीद से, भेजिए मुझको यहाँ से कामगारो कामराँ।
राम और लक्ष्मण को मेरे साथ भिजवा दीजिए, ताकि मैं यग कर सकूँ और वो रहेंगे पासबाँ।
जब सुना राजा ने यह हैरत हुई अज़हद उन्हे, रंग चेहरे का उड़ा और हो गये वो बेज़बाँ।
आख़िरश दिल थाम कर राजा ने की यो अर्जेहाल, राम और लक्ष्मण ये दोनों है मेरे आरामेजाँ।
छोड़ कर इक लमहा दोनो को मैं रह सकता नहीं, ये न हों गर पास मैं जिन्दा रहूँ कैसे यहाँ।
वहशियों से क्या मुकाबिल हो सके नौउम्र है, इनमें इतनी है कहाँ ताकत कहाँ ताबोतवाँ।
मैं हूँ हाज़िर और मेरी अफवाज हाजिर है तमाम, जो रहेंगी आपके यग की महाफिज पासबाँ।
कुछ ऋषि नाराज-से राजा के कहने से हुए, और विश्वामित्र राजा से हुए कुछ बदगुमाँ।
कुछ वशिष्ठ आख़िर में कहके उनको राजी कर दिया, राम और लक्ष्मण को भेजे राजा हो कर शादमाँ।
जब चले जंगल को ये तब राह ही में मिल गयी, ताडका नामी जो वहशी एक रहती थी वहाँ।
जब ऋषि ने उसको रेता हाथ से दतला दिया, ले लिए दोनों बिरादर हाथ में तीरोकमाँ।
काम उसका हो गया बस इक ही नावक से ख़तम, कब ख़ता करता था ऐसे तीरे अफ़गन का निशाँ।
राम या रघुनाथ जिनका नाम है मारे उसे, मिल गयी राहत उसे वो पायी उमरे जावेदाँ।
मार कर उसको ये तीनो मिल के उस जा पर गये, जिस जगह रहते ऋषि थे यग वो करते थे जहाँ।
राम और लछमन वहाँ पहुँचे ऋषि थे और भी, इनको आता देख कर होने लगे सब शादमाँ।
सब ऋषि करने लगे यग भी हवन भी शौक से, राम और लछमन लगे रहने हर इक के पासबाँ।
ये ख़बर सुन कर वहा मारीच फौरन आ गया, फेका सौ योजन पे जिसको राम जी ने नागहाँ।
और सुबाहु का भी किस्सा ख़तम कर डाला वहीं, दूसरे बदकार भी मारे गये जो थे वहाँ।
ख़त्म यग सब हो गये पहुँची अजियत कुछ नही, दी दुआ उनको मुनीने होके दिल से शादमाँ।
सब उलूम उनको पढाये और मनतर भी दिये, खुद बड़े कामिल थे वो और हक के थे वो राजदाँ।
राजाए मिथलेश थे राजा जनक आलीकदर, ख़ुसरवाने दहर जिनका चूमते थे आस्ताँ।
इक धनुष यग कर रहे है अपनी बेटी के लिए, जा रहा था देखने को यग वहाँ सारा जहाँ।
यह ख़बर सुन कर ऋषी ने उनको चलने को कहा, बहर शिरकत ये जनकपुर हो गये तीनो रवाँ।
उस ज़माने में जनकपुर मे बहुत ही धूम थी, जमा होते चौतरफ से थे वहाँ पीरोजवाँ।
रास्ते मे आश्रम एक था वहाँ कोई न था, एक पत्थर की शिला मौजूद थी लेकिन वहाँ।
बद्दुआ से बन गयी थी यह जो पत्थर की शिला, कर दिया गौतम की बीबी का ऋषीजी ने बयाँ।
राम ने अपने चरण जब उसके सर पर रख दिये, हो गयी जिन्दा वह फिर और आ गयी कालिब में जाँ।
नाम था उसका अहिल्या पैर पर उनके गिरी, स्तुति करने लगी हो कर निहायत शादमाँ।
तुम जगत के पालने वाले हो ऐ आका मेरे, आपकी मुझ पर दया की नजर होवे बेगुमाँ।
इस कदर कह कर वहाँ से वह रवाना हो गयी, और यह सब हो गये उस जाय से आगे रवाँ।
जब जनक को यह हुआ मालूम आये है ऋषि, दौड़ कर आये उन्हे वह ले गये अपने यहाँ।
राम-लछमण का तआरुफ़ उनसे करवाये मुनी, देख कर जिनको हुए राजा निहायत शादमाँ।

पूछा राजा ने मुनी से देख कर दोनों को यों, क्या ऋषि के है ये जेवर या कोई शहज़ादगाँ।
या ये ब्रह्मा तो नहीं आये हैं मेरे रूबरू, जिसकी निसबत नेति कह कर वेद है ज़ादूबयाँ।
चन्द्रमा को देख कर जैसे चकोर होता मग्न, मैं भी यों ही हो गया हूँ देख कर इनको यहाँ।
जब मिली फ़ुर्सत चले वह शहर को भी देखने, दीद के मुश्ताक उनके थे जहाँ पीरोजवाँ।
हो रही थी जा बजा तारीफ़ उनके खुल्क की, इनके हक़ में सब दुआगो और सब थे मदहख्वाँ।
चाहते थे सब कि सीता की हो शादी राम से, सब दुआ करते थे दिल में और थे सब हमज़वाँ।
सब से ये मिलते रहे अखलाक से आदाब में, देख कर फिर शहर वापस आये ठहरे थे जहाँ।
फिर चले यगशाला को ये देखने के वास्ते, देखने को जिसके आते थे तमाम अहलेजहाँ।
फूल लाने के लिए एक दिन गये ये बाग में, खुश हुआ दिल में इजाज़त इनको देकर बागबाँ।
बाग में तालाब के नजदीक एक मन्दिर भी था, दुख्तरे राजाजी पूजा के लिए आयी वहाँ।
ये वही सीता थीं जिनका था स्वयम्बर हो रहा, उनकी हमराही में आयी थी वहाँ कुछ लड़कियाँ।
एक लड़की ने जो इन दोनों को देखा बाग में, लग गयी चश्मे उसे बन्द हो गयी उसकी ज़बाँ।
आखिरश उसने कहा सीता से जा कर हाल सब, फिर रहे हैं दो जवाँ महले चमन के दरमियाँ।
राम का जब रूप देखा हो गयी बेखुद सिये, कुलबे नाज़ुक पर लगी एक चोट उनके नागहाँ।
ये उन्हें कुछ दूर से देखीं वो इनको दूर से, कल्ब में फ़ौरन उठा दोनों तरफ दर्दे निहाँ।
वो फ़िदा इन पर हुए ये हो गयी उन पर निसार, दिल में इन दोनों के तीरे इश्क़ ने लीं चुटकियाँ।
जिस घड़ी पाजेब की आवाज कानों में पड़ी, राम भाई से मुखातिब हुए यों गोहरफ़शाँ।
कामयाबी का बजाया है यह डंका इश्क ने, मुझको होना है यकीं इसमें नहीं शक ओ गुमाँ।
टकटकी बाँधे हुए देखा न झपकाई पलक, कर लिया आँखों में अपने रूए सीता को निहाँ।
थी जो हमराही में देखा इस तरह सीता का हाल, ले गयी उनको वहाँ गौरी का मंदिर था जहाँ।
जा के गौरीजी की खिदमत में ये सीता ने कहा, आप माता हैं हमारी और हम पर मेहरबाँ।
मेरे दिल की है जो ख्वाहिश उसको पूरी कीजिए, आप से मैं क्या कहूँ जी आप पर है सब अयाँ।
थी गले में एक माला फूल की गौरी के जी, गिर गयी माला वो सीताजी के ऊपर नागहाँ।
ले लिया सीता ने फौरन और समझा फाले नेक, ले के उस माला को वापस आयी घर को शादमाँ।
फूल ले कर राम-लछमन बाग से वापस हुए, आके विश्वामित्र से वो कर दिये सब कुछ बयाँ।
था स्वयंबर का जो दिन उस रोज विश्वामित्रजी, यज्ञ भूमि को गये थे साथ दो शहज़ादगाँ।
राम और लछमन भी विश्वामित्रजी के साथ है, शहर में फैली खबर यह सुनते बादेदवाँ।
हो गये सब लोग इकट्ठा भीड़ अच्छी हो गयी, सब तमाशा देखने को आ गये पीरोजवाँ।
जो बहादुर आये थे रस्मे स्वयम्बर के लिए, जमा सब आ कर हुए थे यज्ञशाला थी जहाँ।
नामवर जितने भी आये थे वो सब मौजूद थे, थे कई राजा महाराजा कई थे खुसरवाँ।
बैठे सब आदाब से अखलाक से एजाज से, इनको बिठलाया गया था—जेब देता था जहाँ।
सीताजी को भी महल से उस जगह लाया गया, हुस्नो जेबाइश की उनके क्या लिखूँ मैं खूबियाँ।
राजाए आली जनक के हुक्म देते ही के साथ, उस बड़े मैदान के आगा नकीब एक दरमियाँ।
और ब आवाजे बुलन्द उसने पुकारा इस तरह, फैल जाती है चमन में जिस तरह बादे रवाँ।
हाज़रीन इसको सुने राजा जनक का अहद है, अपनी बेटी उसको दें, जो धनुष तोड़े यहाँ।
राजाए आली जनक का मरतबा ज़ाहिर किया, और सुनाया कैसा है राजा जनक का खानदाँ।

जमा थे जो सूरमा वो हो गये सब मुजतरब, वलवले थे सब के दिल में लग रही थीं बरछियाँ।
बारी-बारी से उठे वो सब धनुष को खीचने, जितने राजा और महाराजा इकट्ठे थे वहाँ।
जो बहादुर थे शुजाअत में बहुत मशहूर थे, कोशिशें की सबने पैहम ताकि उठ जाये कमा।
उठाना तो दूर उसको हिलाया तक भी नहीं, हो गये नाकाम सब, जाते रहे तावोतवाँ।
इनफ़िरादन जब किसी ने भी न खीची वह कमाँ, फिर लगे उसको उठाने चन्द मिल कर राजगाँ।
वह धनुष अपनी जगह से हिल भी सकता था कहीं, हो गये वह सब खाजिल और बन्द थी उनकी जवाँ।
पानी-पानी हो गये मारे खिजालत के तमाम, बैठे जा कर उस जगह पहले से बैठे थे जहाँ।
राजाए आली जनक ने हाल जब देखा ये सब, हो गये मायूस यों होने लगे गौहरफशाँ।
प्यारी सीता की है शादी क्या मुकद्दर में नहीं, हो गया क्या हाय खाली सूरमाओं से जहाँ।
मेरी बेटी ने उठाया था धनुष एक हाथ से, मिल के सब उसको हिलाये भी नहीं ये राजगाँ।
थे शुजाअत मे बहुत मशहूर और मारूफ़ सब, कूवतों ताकत का उनकी हो गया बस इम्तेहाँ।
जनक के मुँह से ये जुमले जब निकलने लग गये, लक्ष्मण खामोश रह सकते थे गुस्से मे कहाँ।
तैश मे आये, हुआ बस उनका चेहरा लाल-लाल, इस क़दर गर्जे कि थर्राये जमीनो आसमाँ।
ये कहा—रघुवंशियों के सामने वाजिब नहीं, इस तरह दिखलाये तेजी ये जबाँ की गरमियाँ।
देख कर मजलिस की ये हालत उठे फिर रामचन्द्र, और गुरु जी ने हिदायत की कि तुम जाओ वहा।
राम जब चलने लगे सब खैरख्वाह तब खुश हुए, और जो बदख्वाह थे वो हो गये सब नीमजाँ।
चाहता था हर कसोनाकस कि वे हो कामयाब, राम को ये फ़ौकियत मिल जाय हों ये कामराँ।
वो महारानी जनक की था सुनैना जिनका नाम, मुन्तजिर थी क्या बदलता रंग है अब आसमाँ।
था खयाल उनका कि बच्चा क्या उठायेगा धनुष, इस धनुष को ये उठा ले इसमे ताकत है कहाँ।
रावण और बाना सुर जैसे जब उठा पाये नहीं, इससे क्योंकर ये उठेगा होगा कैसे कामराँ।
राम की ताकत औ कुदरत की सुनी जो खूबियाँ, दिल को उनके चैन आया मिट गया सारा गुमाँ।
नीची नजरों से जो सीताजी ने देखा राम को, दिल में वे कहने लगी गो बन्द थी मुह मे जबाँ।
आज तक गौरीजी मैंने की है पूजा आप की, आप मेरे हाल पर हो जाये इस दम मेहरबाँ।
राम के हाथों पर हो जाए सुबकतर यह धनुष, ये उठा लें सहल और मुतलक न हो बारेगराँ।
बाप के इस अहदे मुश्किल को वो जब थी सोचती, चोट-सी लगती थी एक सीता के दिल के दरमिया।
कामयाबी इनको हासिल हो उठा ले यह धनुष, और हो शरमिन्दगी खिफ्फत नसीबे दुश्मनाँ।
राम जाकर जब धनुष के पास इस्तादा हुए, और नजर चारों तरफ़ दौड़ाई अपनी नागहो।
सब बड़े छोटों को देखा हो रहे है बेकरार, और सीता को भी हर लमहा था एक बारेगराँ।
जिनको इक-इक पल बरस से भी ज्यादा तूल थी, सब अब वो कर सके ताकत ये थी उनमें कहाँ।
खेत जब सब सूख जाएँ बादे अजाँ बारिश हो खूब, फायदा उससे नहीं कुछ, बात है बिलकुल अयाँ।
बाद मरने के जो प्यासे को मिले आबे हयात, है वो बेकार और कोशिश है वह ऐसी रायगाँ।
सोच कर इतना धनुष की सिम्त. कुछ देखे बगैर, और धनुष को हाथ में अपने उठाया नागहाँ।
हाथ में उनके जो आया जगमगा उट्ठा धनुष, देखने वाले ये सब समझे कि है बरके तपाँ ?
किस तरह जल्दी उठाया किस तरह खींचा उसे, महवे हैरत लोग वो सब हो गये जो थे वहा।
जमा थे जितने वहाँ देखा उन्होंने बस यही, हाथ में ले कर खड़े हैं रामजी तीरोकमाँ।
तोड़ कर फिर उस धनुष को राम ने टुकड़े किये, सख्त और वजनी धनुष की उड़ गई बस धज्जियाँ।

तोड़ कर फेंका जमी पर तब गरज ऐसी हुई, सब के सब घबड़ा उठे, खायफ़ हुआ सारा जहाँ।
सब ने रक्खा हाथ कानों पर लगे सब काँपने, और जमी हिलने लगी पहुँची सदा ता आसमाँ।
जब हुआ सब को यकी तोड़ा धनुष को राम ने, राम की जय हो, पुकारे होके वह सब शादमाँ।
शादमानी के बजे डंके वहाँ चारों तरफ, गूँज उठे शोर से जिसके जमीनों आसमाँ।
शोर बरपा हो गया हरसू मुबारकबाद का, शाद और खुर्रम हुए सब मरदोजन पीरोजवाँ।
हो गये अहले जनकपुर इससे शादाँ और खुश, और लगे करने तमद्दुक मिस्ले गौहर अपनी जाँ।
किस कदर राजा जनक को थी ममरत क्या कहूँ, शादमानी के निशाँ चेहरे से उनके थे अयाँ।
उनकी महारानी को भी हासिल मसर्रत हो गयी, और दीगर रानियाँ भी थीं महल में शादमाँ।
तब पुरोहित जी शतानन्द जो जनक के थे गुरू, देख कर सीता की जानिब वो हुए गौहरफ़शाँ।
जो सहेली रात दिन रहती थी सीताजी के साथ, उनको ले कर साथ अहिस्ता चली वो शादमाँ।
उनकी सज धज का अदा का वस्फ हो क्यों कर रकम, है कहाँ ताकत कलम में क्या करे उसको बयाँ।
हाथ में जयमाल ले कर वो चली सखियों के बीच, राम ही थे कल्ब में और राम ही विर्देजबाँ।
हाथ से जयमाल वह पहना न सकती थी उन्हें, कुछ लिहाजे बज्म था और कुछ खिजालत दर्मियाँ।
आखिरस जयमाल पहनाने को बोली इक सखी, और कहा पहना दो माला राम को अब मेरी जाँ।
सुनके यह सीता गयी जिस जा खड़े थे रामचन्द्र, डाल दी जयमाला वो इनके गले के दर्मियाँ।
किस कदर वह जेब देती थी गले में राम के, कह नहीं सकता वो मंजर लाख हो जादूबयाँ।
सब हुए शादाँ ओ फ़रहाँ सब हुए मसरूरो शाद, सब के चेहरों से अया थे शादमानी के निशाँ।
राजा ओ अहले जनकपुर इससे बेहद शाद थे, फूल बरसाने लगे और हो गये गौहरफशाँ।
एक सहेली ने कहा झुक कर कदम को चूम लो, रह गयी सीता झिझक कर क्योंकि वो थी रम्जदाँ।
साकिनाने शहर को जिस दम हुई यह इत्तला, राम-सीता के स्वयम्बर में हुए ही कामराँ।
शादियाने ऐश के बजने लगे चारों तरफ, फिकर और अन्दोह का बाकी न था नामों निशाँ।
और जो बदखाह थे सब दिल में अपने जल उठे, होके खिसियाने उन्हें देने लगे बस गालियाँ।
गीज में आ कर उठे और इस तरह गोया हुए, कोई सीता को छुड़ा ले हमसे ये हिम्मत कहाँ।
क्या धनुष को तोड़ने से जीत सकता है कोई, ले के शहजादी को जाये किस में है ताबो तवाँ।
राम और लछमन है बच्चे कैद कर डालो इन्हें, गर जनक हो कुछ मआवन उसको डालो बेड़ियाँ।
और जो राजा थे दाना सुन के हैरत में पड़े, उनसे देखी जा नहीं सकती थी ये रुसवाइयाँ।
बोले यों क्या जाम करते हो बड़े बेशर्म हो, कुछ समझ सकते नहीं इस बात का सूदोजयाँ।
खींचना था जब धनुष उस वक्त तो खींचे नहीं, अब दिखाते हो शुजाअत बन गये हो पहलवाँ।
तब फिखर ताकत गई थी अब कहाँ से आ गई, किसने अब तुमको बना डाला बहादुर पहलवाँ।
देख कर यह रंग सीता दिल में खालिफ हो गयी, ले गई रानी के पास आखिर उन्हें हमजोलियाँ।
राम ने सीता की उल्फत का जो अन्दाजा किया, उनसे और उल्फत के दरिया हो गये दिल में रवाँ।
जब गई सीता यहाँ से वह रवाना हो गये, आके ये बैठे वहाँ बैठे गुरुजी थे जहाँ।
अब खुदा जाने नतीजा इसका क्या हो क्या न हो, सोचती दिल में थी सीता और दीगर रानियाँ।
जब कि नाहिन्जार राजाओं ने बलवा कर दिया, लछमण खामोश कैसे बैठ सकते थे वहाँ।
राम का पारा अदब था मुँह से कह सकते न थे, सुर्ख चेहरा हो गया हम सूरते बर्कतपाँ।
इस तरह घूरा उन्हें कहरो गजब से यकबयक, देखता है गीदड़ों को जिस तरह शेरे ज़ियाँ।

खलबली-सी पड़ गई बेकल हुई सब औरतें, और देने लग गई राजाओं को बस गालियाँ।
भृगु वंशी एक ऋषि थे नाम उनका परसुराम, नाम से होते थे ख़ालिफ़ जिसके सब अहले जहाँ।
वो धनुष ला कर जनक के पास रक्खे थे कभी, दी थी शिवजी ने उन्हें जो वो यही थी एक कमाँ।
जब धनुष टूटा ख़बर इसकी उन्हें भी हो गई, आ गये अपनी जगह से वो धनुष-यग था जहाँ।
देख कर इनको वो राजा हो गये खामोश सब, लरजा बरअन्दाम था और बन्द थी सबकी ज़बाँ।
जिस तरह से बाज़ झपटे और सब भागें बटेर, रूह हो जाये फना झाँके वो अपना आशियाँ।
थे ऋषि कामिल शुजाअत में भी यकता शान थी, उनके आगे सर झुका देते थे सारे राजगाँ।
उनके गोरे जिस्म पर क्या खूब सजती थी भभूत, जेब देती थी जटा सर पर मिसाले कहकशाँ।
उनके शाने दोनों ऊँचे और गले जनार था, एक काँधे पे था तेग़ा हाथ में तीरोकमाँ।
उनके आते ही वहाँ एक खौफ तारी हो गया, सब यह कहने लग गये मैं हूँ फलाँ इब्ने फलाँ।
मेहरबानी की नज़र से भी अगर वो देख लें, जिसको देखें वो समझ ले अब नहीं मुझको अमाँ।
जाके महाराजा जनक ने पायबोशी उनकी की, और सीता को भी बुलवाया जनाने से वहाँ।
भृगु केतु ने दुवा दी देख सीता की शकल, मेहरबाँ पा कर उन्हें कुछ आ गई हरएक में जाँ।
ठहरना उस जा ज़्यादा कुछ मुनासिब ही न था, साथ वापस ले गई सीता को सब हमजोलियाँ।
आये विश्वामित्र दोनों मे बग़लगीरी हुई, दोनों जानिब से हुए जाहिर मुहब्बत के निशाँ।
उनके कदमो पर ये डाले राम और लक्ष्मण को भी, और कहा दशरथ के है फ़रज़न्द ये दो नौजवाँ।
देख कर वो नूर इनका, दंग से कुछ रह गये, और दुआ दी इनको यह कह कर, रहे ये शादमा।
और जनक से इस तरह पूछा कि क्यों ये भीड़ है, पूछा यों अनजान बन कर गो वो खुद थे रमजदाँ।
तब जनक ने हाल सारा दस्त बस्ता कह दिया, हाल ये सुन कर उन्हें तैश आ गया बस नागहाँ।
और भी गुस्सा बढ़ा आपे से बाहर हो गये, जब कि देखा उस धनुष की उड़ गई हैं धज्जियाँ।
ये कहा-नादान बतला किसने तोड़ा है धनुष, वर्ना मैं फौरन उलट दूँगा जमीनों आसमाँ।
सुन के ये राजा के दिल पर खौफ़ तारी हो गया, मुह से कुछ निकला नही और बन्द थी उनकी जबाँ।
जो कि बदनीयत थे राजा वो हुए सब शादकाम, अब बनी सब कुछ बिगड़ जायेगी वो समझे यहा।
और सुनैना जी के भी दिल मे बड़ी तशवीश थी, ये हुआ ऐसा कि जिसका था न कुछ बहमोगुमाँ।
राम ने देखा कि सीता और सब खायफ़ है अब, हाथ जोड़े उनसे वो गोया हुए जादूबयाँ।
इस धनुष को जिसने तोड़ा आपका खादिम है वो, हुकुम क्या होता है उसके वास्ते हाजिर है जाँ।
यो ऋषि बोले कि खादिम वो है, जो खिदमत करे, जो करे हमसे उदू वह आये मैदाँ दरमियाँ।
आज इस महफ़िल से जल्दी वो चले जाये कहीं, वर्ना मारे जायेंगे जितने यहाँ हैं राजगो।
बात यह सुन कर जरा लछमन को भी आई हँसी, और मुखातिब उनसे हो कर खोली अपनी यो जबाँ।
गोसाई, हमने लड़कपन में बहुत तोडे धनुष, आप हम पर आज तक हरगिज न थे नामेहरबाँ।
इस धनुष से आपको उल्फ़त है इतनी किसलिए, जिस सबब से आप इतने हो गये आतिशफशाँ।
यह मिला उनको जवाब ए नासमझ ओ राजपूत, यह धनुष वैसा ही है क्या जैसी वो सब थी कमाँ।
लक्ष्मण जी फिर हँसे और यो दिया उनको जवाब, सब धनुष एक-सा हैं नज़रों में मेरे ऐ पहलवाँ।
यह तो था कोहना भला इसमें तो था रक्खा ही क्या, राम ने उसको समझ कर नौ, छुआ था बेगुमाँ।
हाथ लगते ही ये टूटा राम की तक़मीर क्या, हो रहे है किसलिए आप ऐ ऋषि जी बेदनाँ।
बोले वे बच्चा समझ कर रुक रहा हूँ मारने, क्या फ़कत मुझको ऋषि समझा है तू—ऐ बदजबाँ।

बारहा राजाओं को मारा हूँ इन शानों के जोर, मेरी ताकत और शुजाअत है जमाने पर अयाँ।
थे सहस्रबाहु के भी शाने कटे जिस तेग़ से, है मेरे काँधे पै वह इस वक़्त भी जलवा कुनाँ।
दाग अब माँ-बाप को अपने न दे ऐ तिफ़्ल तू, हमिला का हम्ल गिर जाता है डर से नागहाँ।
फिर कहा लक्ष्मण ने हँस कर वाह वाह क्या बात है, आप अपने को है समझे ऐ मुनीजी पहलवाँ।
आप दिखलाते है मुझको जो कुल्हाड़ी बारहा, फूंकने से कोह उड़ जाये ये मुमकिन है कहाँ।
मैं नही बच्चा हूँ कुछ जो आप से डर जाऊँगा, तेग ही को देख कर मैंने भी खोली ही जबाँ।
आपके अच्छे नसब को देख कर ख़ामोश हूँ, फर्ज से अपने नही टलता हमारा ख़ानदाँ।
आप मारें भी तो झुक जाये ये मेरा सर अभी, कुछ नही नुकसान इसमें—कुछ नहीं इसमें जियाँ।
आपके अल्फ़ाज ही खुद तेग से है तेजतर, किसलिए रखते हैं तेग़ा और ये तीरोकमाँ।
देख कर इनको अगर मैंने कहा कुछ आप से, कीजिएगा अफ़ू मेरी ऐ ऋषि गुस्ताखियाँ।
तब ऋषि हो कर खफा कहने लगे कौशिक से ये, मौत के मुँह में ये आया क्या बचेगी इसकी जाँ।
ये बडा जाहिल निडर है और बड़ा गुस्ताख है, इसको हो जाये अभी हासिल हयाते जावेदाँ।
गर बचाना हो मेरी ताकत बयाँ कर दीजिए, वर्ना फिर तोहमत न देना कर दिया है सब अयाँ।
कह उठे लछमन कि तारीफ आप की हम क्या करें, आप ने खुद बारहा अपनी ज़बाँ से की बयाँ।
इस पै भी ताकत न हो गर रोकने को ऐ मुनी, और भी कह दीजिए तो सब पै हो जाये अयाँ।
है बहादुर आप है सखो शुजाअत आप में, जेब देती ही नही है आपको यों गालियाँ।
जो कि होते है दिलावर मुँह से कुछ कहते नहीं, काम करते है फ़कत खुलती नहीं उनकी जबाँ।
आप हरदम मौत को मेरी बुलाते हैं क़रीब, हाँक कर लाने की कोशिश जायगी सब रायगाँ।
सुन के ये अलफ़ाज फिर बरहम हुए कुछ परसुराम, हाथ में ले कर हुए वह तेग ओ खंजर दवाँ।
अब तो यह लड़का सजा पाने के काबिल हो गया, अब न दें इल्जाम मुझको पीर हों या हों जवाँ।
अफ़ू कीजे, ये है बच्चे—आप साधु है बड़े, आगे बोले इस तरह कौशिक ऋषी जी दर्मियाँ।
मेरा तेगा है भयानक और मैं हूँ रहमदिल, कुछ नहीं पासे अदब लाता है ये गुस्ताखियाँ।
मैं तुम्हारी ही तो खातिर दर गुजर करता रहा, वर्ना सह सकता नहीं इस तरह की रुसवाइयाँ।
बे अदब हो कोई गर लाजिम गुरू को है वही, जल्द ही से जल्द वो हल्का करे बारेगिराँ।
सुनके यह कौशिक ऋषी भी दिल में कुछ हँसने लगे, ये जो समझे है गलत है और है खवाबेगिराँ।
लक्ष्मण इस तरह उनसे फिर मुखातिब हो गये, ऐ महाराज आपके अफ़आल हैं सब पर अयाँ।
बाप और माँ के फ़रायज से सुबगदोशी तो थी, इक गुरू का कर्ज बाकी था जो था अब तक निहाँ।
उसकी बेबाकी हमारे ही तो माथे पर रही, लाइएगा हो अगर कोई यहाँ पर नुकतदाँ।
खोल कर थैली अभी इसकी अदाई कर सकूँ, देख भी लीजे है इसमें किस क़दर सूदोंजियाँ।
भृगुकेतू ने सँभाला तेग को सुन कर कलाम, खौफ़ से थर्रा गये लरजाँ हुए पीरोजवाँ।
लखन बोले—ब्राह्मण हो इसलिए खामोश हूँ, वर्ना तेगे की तुम्हारे मैं उड़ा दूँ धज्जियाँ।
अपने ही घर में बड़े है आप हैं कुछ भी नहीं, हो गया मालूम यह है आप कैसे पहलवाँ।
साबिका तुमको बहादुर से पड़ा कोई नही, है यही बाइस कि करते जा रहे हो शोखियाँ।
सुनके ये अलफाज बोले लोग सब वाजिब नहीं, गैर वाजिब है कहा लोगों ने हो कर हम ज़बाँ।
मना फौरन रामचन्दर ने इशारे से किया, और बुलाया पास अपने रोक दी उनकी ज़बाँ।
राम उठ कर तब ऋषी से इस तरह कहने लगे, जैसे रोशन आग पर पानी है पड़ता नागहाँ।

माफ इसको कीजिए, यह जानता कुछ भी नहीं, वर्ना क्या मक़दूर इसकी और क्या नाबोतवाँ।
गर ख़ता होती है बच्चे से तो ये दस्तूर है, शाद होते हैं गुरु जी और उसके बापो माँ।
सुनके ये अल्फ़ाज कुछ ख़ामोश-से थे परसुराम, फिर कहा आहिस्ता कुछ लछमन ने इसके दर्मियाँ।
भृगुकेतू जी के दिल में फिर बहुत जोश आ गया, वो मुख़ातिब राम से हो कर हुए आतिशबयाँ।
भाई तो तेरा है टेढ़ा और है यह गुनहगार, हो बजाहिर जिस्म गोरा, इसमें है ज़ुल्मत निहाँ।
बाते ज़हर आलूद इसकी है नहीं शीरीं दहन, तुझ-सी समझत इसमें हो इसका नहीं वहमो गुमाँ।
कुछ नहीं इसको अदब मेरा न इसको खौफ है, यह नहीं मुझको समझता मौत का अपनी निशाँ।
फिर कहा लछमन ने गुस्सा ऐ मुनीजी थूक दो, अब धनुष टूटा हुआ जुड़ जाय, मुमकिन है कहाँ।
इस धनुष ही के लिए गर आप को इसरार है, इसके जुड़ जाने की भी कोशिश करेंगे हम यहाँ।
हम बुलाते हैं किसी को इस धनुष को जोड़ने, है अगर यहाँ कोई और कोई कारेदाँ।
ऐसा कहने से जनक पर खौफ तारी हो गया, कह उठे—ऐसा न कहिये गैर वाजिब है बयाँ।
लोग सब कहने लगे छोटा है शहज़ादा निडर, खौफ से डरने लगे सब मरदोजन पीरोजवाँ।
लक्ष्मण जी की ये जुर्रत और दिलेरी देख कर, भृगुकेतू की जशारत हो रही थी नातवाँ।
रख के एहसाँ राम पर कहने लगे यों परशुराम, तरह दे जाता हूँ मैं अब छोड़ देता हूँ यहाँ।
इसकी सूरत और सीरत की यही होगी मिसाल, जैसे सोने के घड़े में जहर हो कोई निहाँ।
सुनके ये बातें जरा लक्ष्मण ने फिर कुछ हँस दिया, राम ने तिरछी नजर से उनको देखा नागहाँ।
खौफ़ से भाई के लक्ष्मण जी हुए ख़ामोश तब, जाके बैठे वह गुरु जी अपने बैठे थे जहाँ।
जोड़ कर हाथ इस तरह कहने लगे फिर रामचन्द्र, आप इस बच्चे के कहने से न हो कुछ बदगुमाँ।
असल में पूछो तो मुझसे भूल यह सरज़द हुई, इसमें लछमन की ख़ता का कुछ नहीं नामोनिशाँ।
जो सजा हो या जजा उसका तो मैं हकदार हूँ, जल्द सादिर कीजिए जो हुक्म हो हाजिर है जाँ।
फिर मुनी बोले कि वह गुस्सा मेरा किस काम का, जब तेरे भाई की गरदन पर न हो फंजर दवाँ।
आज मेरे पास है वह तेग जिसके खौफ़ से, लरजबर अन्दाज होते है बहादुर पहलवाँ।
हामिला का भी अभी इस्क़ात हो जाये हमल, और ये क्षत्री का बच्चा हो रहा है बदज़बाँ।
क्यों तबियत मेरी बदली क्यों नहीं चलती है तेग़, हाथ क्यों उठता नहीं गो दिल में है सबकुछ निहाँ।
रहम क्यों दिल में मेरे है इस तरह छाया हुआ, किसलिए मुझको है महँगी पड़ रही रुसवाइयाँ,
सर झुका कर फिर कहा लछमन ने बेशक ऐ मुनी, आप क्या फ़रमा रहे हैं और हैं क्यों गुलफिशाँ।
रहम खाने पर भी इतने तेज़ हो जाते हैं जब, हालते गीजो गजब का जिक्र कैसे हो बयाँ।
यों जनक से कह उठे हो कर मुख़ातिब परसुराम, रह नहीं सकती है अब इस तिफ़्ल के कालिब में जाँ।
मेरी नज़रों से इसे क्यों दूर कर देते नहीं, है अभी नौ उम्र लेकिन है बड़ा यह बदज़बाँ।
आँख अपनी मूँद लो कोई न आयेगा नज़र, यों कहा लछमन ने उनसे होके ख़ुद ख़नदा दहाँ।
राम से कहने लगे इस तरह वो—ऐ बदशऊर, तोड़ कर उल्टा धनुष तू बन गया जादूबयाँ।
कह रहा है सब तेरी हिम्मत पे ये भाई तेरा, और तू इस तरह बनता है हमारा मददख़्वाँ।
राम है जो नाम तेरा आज से वह छोड़ दे, वर्ना हो जाये यहाँ मैदान में ही इम्तेहाँ।
छोड़ कर यह सब बनावट मुझसे लड़ जी भरके आज, वर्ना तुम दोनों का बाकी मैं न रक्खूँगा निशाँ।
राम बोले आपके आगे है हाज़िर सिर मेरा, है मुनासिब गर तो तेग़ा कीजिए इस पर रवाँ।
आप ही मालिक मेरे और आपका खादिम हूँ मैं, आप है एकता बहादुर और मैं हूँ नातवाँ।

आपको समझा बहादुर इसलिए उसने कहा, वर्ना वह इस तरह से होता नहीं आतिशज़बाँ।
नाम से वाकिफ था। लेकिन तुमको पहचाना नहीं, आ गया कुछ जोश दिल में है था रगे खानदाँ।
भेष में आते मुनी के तुम, कदम वह चूमता, हो गया धोखा उसे, आये जो बन कर पहलवाँ।
आप हैं मखदूम मेरे आपका खादिम हूं मैं, आपके हूं मैं बराबर, बात यह मुमकिन कहाँ।
राम मेरा नाम छोटा आप तो हैं परसुराम, आप ताकत में बड़े हैं और मैं हूँ नातवाँ।
एक ही गुण हम में है वह यह कि रखते हैं धनुष, आप तो गुण के हो मालिक बात है सब पर अयाँ।
आस्तिकता शम, क्षमा, विज्ञान, दम, तप, सरलता, ज्ञान, शौच—आगाह इनसे हैं हर एक खुर्दोकलाँ।
की ऋषी की हर तरह मिन्नत समाजत राम ने, गैज़ में हँस कर कहा—तू है बड़ा रतबुल लसाँ।
क्या मुझे खाली ब्राह्मण ही है समझा राम तू, मेरे तबरे से सिपाही के भी जौहर हैं अयाँ।
मौत के घाट उतरे मेरे हाथ से राजा कई, हो गये ताराज ऐसे हैं न बाकी अस्थियाँ।
लश्करे जर्रार उनके हो गये ताराज यों, जिस तरह जलती हवन के कुण्ड में हों लकड़ियाँ।
तू ने जो तोड़ा धनुष को हो गया मगरूर भी, तेरी नज़रों में ही समाता नहीं है सब जहाँ।
राम यूँ कहने लगे महाराज क्या कहते हैं आप, नाज मैं क्यों कर करूँ और मैं करूँ क्यों शोखियाँ।
वह पुराना था धनुष टूटा तो क्यों हैरत हुई, ताब भी उसमें आन बाकी क्या थी उसमें गेरी जाँ।
आपका गुस्सा बहुत है और खता मेरी है कम, आपके मेरे नहीं कुछ भी तनाज़ुअ दरमियाँ।
आवे कोई गर मुकाबिल मुस्तइद लड़ने को है, हम उड़ा देंगे अभी मैदां में उसकी धज्जियाँ।
क्षत्रिय हो कर के अगर मैदान से भागे कोई, वह बहादुर ही नहीं है, बल्कि नंगे खानदाँ।
खास कर मेरे घराने का यही दस्तूर है, मौत भी आ जाए तो मिट जाएँ उससे बेगुमाँ।
जो ब्राह्मण से हो खायफ़ खौफ़ उसको कुछ नहीं, हर लड़ाई में वो हो जाता है मर्द नुसरत निशाँ।
राम ने जब यह कहा उनकी समझ में आ गया, हो गया नूरे हकीकत कल्ब में जलवा कुनाँ।
दे के अपना ही धनुष कहने लगे यह परसुराम, खींच कर इसको करो खतम अब मेरा वहमो गुमाँ।
वह धनुष उस जगह से गायब यकायक हो गया, कुछ समझ में ही न आया रह गया आखिर कहाँ।
कुदरते कामिल की उनके हो गये वह मोतरिफ, हो गई पैदा अकीदत हो गये वो शादमाँ।
हर तरह वह राम की तारीफ करने लग गये, और सच्चे दिल से इनके हो गये वह मदहख्वाँ।
आपके दर्जे से नावाकिफ़ था सब कुछ कह दिया, इसलिए मैं बात करने में रहा हूं बदजबाँ।
आप दोनों भाई कर दें मेरी गलती को मुआफ, दरगुज़र करके खता को बख्श दें अब मेरी जाँ।
जय का नारा फिर लगाया राम जी के नाम का, भृगुसुत हो गए तप करने को बन को रवाँ।
कुछ बिगड़ कर कह दिया था जिन महाराजाओं ने, देख कर यह हाल उनमें भी न थी ताबो तवाँ।
दिल में सोचें राम जी से हार बैठे परसुराम, हम कहाँ कमजोर बुजदिल, राम की ताकत कहाँ।
अपनी-अपनी जाय से जल्दी से उठ कर चल दिये, छोड़ कर सारा दिखावा, छोड़ कर सब इज्ज़ो शाँ।
रह गये जो बाकी वो सब हो गये मसरूरो खुश, राजये आली जनक बेइन्तिहा थे शादमाँ।
और सीता का तो सब खौफो खतर जाता रहा, जान के लाले पड़े थे, आ गई फिर जाँ में जाँ।
पाँव विश्वामित्र के पड़ कर जनक कहने लगे, आपके बाइस हुए हैं राम-लक्ष्मण कामराँ।
आपका जो हुक्म हो उसके मुआफ़िक काम हो, मुझको अब क्या चाहिए करना, यह कीजेगा बयाँ।
यों ऋषी कहने लगे जो शर्त की थी आप ने, हो गई पूरी वह पहले ही ये सब पर है अयाँ।
अब मरासिम आप शादी के करें दस्तूर से, जिस तरह बोलें पुरोहित और घर की बूढ़ियाँ।

राजाए दशरथ को भी इस बात की कीजे ख़बर, ताकि वह भी जल्द आ जाएँ यहाँ बाइज़्ज़ो शाँ।
राजा दशरथ के यहाँ भेजे गये पैग़ामबर, और वहाँ सजने लगी हर एक गली, हर एक दुकाँ।
हो गया हुक्म एक मंडप बनाने के लिए, हों जवाहरदार खम्भे मोतियों की हो कमाँ।
नक्शकारी में भी दिखलाई गई कारीगरी, और बना ऐसा कि दुनिया में न था ऐसा मकाँ।
दीद के काबिल थी उस फर्श और पर्दो की बहार, हर तरफ थे झाड़ लटके और तिलाई शमादाँ।
राम और सीता की शादी हो रही हो जिस जगह, उस जगह की किस तरह रौनक करे कोई बयाँ।
दूत जब पैगाम को ले कर अयोध्या आ गये, देख कर खुश हो गये उस शहर की हर एक शाँ।
दर पे राजा के पहुँच कर अर्ज करवाया पयाम, याद फरमा कर किया राजा ने उनको शादमाँ।
खुद ही ली राजा ने चिट्ठी हाथ में एजाज से, हो गये बेहद वो खुश और हो गये वो शादमाँ।
राम-लक्ष्मण की मुहब्बत दिल पे उनके छा गई, हाथ में चिट्ठी थी लेकिन बन्द थी मुँह में ज़बाँ।
कह नहीं सकते थे चिट्ठी में है क्या लिक्खा हुआ, और मुहब्बत के थे आँसू आँख से उनके रवाँ।
आखिरस कुछ ठहर कर राजा ने चिट्ठी को पढ़ा, हो गये सुन कर खुशी की यह खबर सब शादमाँ।
भरतजी थे खेलते बाहर कहीं भाई के साथ, हाल उस चिट्ठी का सुन कर दौड़ कर आये वहाँ।
बाप से पूछा कि खत किसका है यह फरमाइए, हैं जो प्यारे भाई मेरे—आज-कल है वो कहाँ।
खत में जो लिक्खा था सुन कर हो गये मसरूर वो, शत्रुघन और भरत का दरबार था सब मदहख्वाँ।
नामावर से राम और लछमन की पूछी खैरियत, दस्त-बस्ता उसने की यों अर्ज—ऐ शाहे शहाँ।
आप हैं तकदीर वाले आप का क्या पूछना, आपके दोनों पिसर हैं आज एकताये जहाँ।
आप हम से पूछते है कैसे पहचाना उन्हें, सूर्य को क्या देखना है कोई ले कर शमादाँ।
राजा महाराजा बहुत आये स्वयम्बर में मगर, उस धनुष को तोड़ने में राम निकले कामराँ।
रावनो बानासुर जैसे भी हुए माज़ूर सब, आये थे जितने बहादुर हो गये वो नातवाँ।
राम ने शिव के धनुष को तोड़ डाला इस तरह, तोड़ता है जिस तरह हाथी कमल की डालियाँ।
हाल यह सुन कर धनुष का आ गया गुस्सा बहुत, परशुराम आये जनकपुर और थे आतिश बयाँ।
आखिरस जब राम की ताकत का अन्दाजा हुआ, हो गये वापस हवाले कर दिये तीरोंकमाँ।
राम जैसे है बहादुर वैसे ही लक्ष्मण भी है, जिनके चेहरों से है आसारे जवाँबख्ती अयाँ।
दोनों शहजादों को जब से हमने देखा है शहा, अब समाता ही नहीं नज़रों में कोई पहलवाँ।
गरचे दशरथ ने दिया ईनाम दूतों को बजत्र, ये खिलाफ़े धर्म था इसको वो ले लेते कहाँ।
खुश हुए सब लोग इनका यह तरीका देख कर, धर्म के पाबन्द पा कर इनको सब थे शादमाँ।
तब महाराजा गुरु वशिष्ठ जी के घर गये, नामावर से जो सुना था सब किया उनसे बयाँ।
जो कहा राजा ने उसको नामावर ने भी कहा, सुनके ये अहवाल वो भी हो गये बस शादमाँ।
यों कहा उनसे गुरु ने तुम मुजस्सिम नेक हो, काम आई हैं महाराजा तुम्हारी नेकियाँ।
हुक्म दे दीजे महाराजा कि सब हो इन्तज़ाम, हो बरात अब जल्द अयोध्या से जनकपुर को रवाँ।
फिर महल मे जाके अपने कह दिया सब खत का हाल, हो गई खुश और खुर्रम जिसको सुनके रानियाँ।
रानियों ने अपने सीनों से लगाया ले के खत, और महाराजा ने दोहरा कर किया सारा बयाँ।
फिर हुई खैरात और ईनाम भी बटने लगे, इस क़दर दौलत लुटी जैसे बहे आबे रवाँ।
जब खबर शहरे अयोध्या में हुई मशहूर ये, कूचओ बाज़ार में सजने लगी हर एक दुकाँ।
रंगबिरंगी थीं कमानें और परदे भी चँवर, तोरनो झालर बँधी थीं और बँधी थी झंडियाँ।

फूल बरसाये गये हर कूचओ बाज़ार में, इत्र से सब थे मुअत्तर और थे अम्बरफ़िशाँ।
थे खड़े हर जा नक़ीब आदाब कहने के लिए, और कहीं बैठे हुए थे ब्राह्मण भी वेदख़्वाँ।
अब रवाना हो रही है यह अयोध्या से बरात, चोट डंके पर लगी चलने लगा आगे निशाँ।
हो गया मालूम सबको चल रहा है अब जलूस, औरतें गाने लगीं मिल कर मुबारकबादियाँ।
भरत ने आ कर किया खुद अस्तबल में इन्तज़ाम, क्या कहूं मैं किस क़दर खुशरंग थे अस्पेदवाँ।
एक से था एक घोड़ा तेज़ अपनी चाल में, चाल भी ऐसी थी उनकी जैसे चमके बिजलियाँ।
एक घोड़े पे थे राजा भरत जी भी खुद सवार, और जो घोड़े थे बाक़ी उन पे थे सब नौजवाँ।
हो गये सब लोग जब इस तरह घोड़ों पर सवार, साथ हर घोड़े के पैदल चल रहे थे दो जवाँ।
और रथों की किस तरह तारीफ़ लिख सकते है हम, फ़र्श ज़र्री जिनमें था बजती थी जिनमें घंटियाँ।
और हाथी भी जिलो में चल रहे थे सैकड़ों, थी अमारी भी बरंगे सब्ज़ो सुर्खो जाफ़राँ।
सब लवाज़िम थे शहाना पालकी भी खास थी, जिसमें बैठे थे ऋषी भी और ब्राह्मण वेददाँ।
अपने-अपने मरतबे से हो गये इन पर सवार, ऊंट भी घोड़े भी थे रथ भी थे और थी गाड़ियाँ।
और दो रथ आ गए आरास्ता पैरास्ता, एक में थी सादगी और दूसरे में इज्ज़ो शाँ।
पहले रथ मे तो गुरुजी को बिठाया शाह ने, दूसरे में खुद हुए रौनकफ़िज़ा जलवाकुनाँ।
शंख की आवाज़ जब गूँजी तो आगे बढ़ चले, बज रही थी और बाजों की तरह शहनाइयाँ।
हो रहे थे लुत्फ़ से खेल और तमाशे जा बजा, थे जवाँमर्दी के करतब देख कर सब मदहख़्वाँ।
और जो बहुरूपिये थे रूप भरते थे वो खूब, देख कर जिनको हँसी से लग रही थी हिचकियाँ।
हर तरफ़ छाई खुशी थी और शगूं भी नेक थे, ऐसे वो ज़ाहिर हुए जिनका न था कोई गुमाँ।
राजा दशरथ आ रहे है जब वहाँ पहुँची खबर, उनकी अगवानी की होने लग गई तैयारियाँ।
जा बजा खेमे लगे और पुल भी दरिया पर बने, और नौकर भी मुकर्रर हो गये राहतरसाँ।
आ गई जब कुर्ब में शहरे जनकपुर के बरात, पेशवाई को चले अहले जनकपुर शादमाँ।
खाने-पीने का बहुत सामान भिजवाया गया, और सवारी के लिए हाथी भी और अस्पेदवाँ।
जेवर और कपड़े भी भिजवाये गये थे भेंट में, और चीजें भी थीं लेकिन हम करें क्या-क्या बयाँ।
ये तहायफ़ पेश जब राजा की खिदमत मे हुए, देख कर इनको हुए महाराजा दशरथ शादमाँ।
जिन को जो देना था उसमे से उन्हें भी दे दिया, मखमलो कमख्वाबो अतलस भी बँटा और परनियाँ।
बँट गया ईनाम जब फिर बढ़ गई आगे बारात, जिस जगह जनवासा था वो ले गये इनको वहाँ।
ऐसा आलीशाँ जनक ने उनको जनवासा दिया, जो कि खुद के और दशरथ के भी था शायाने शाँ।
हर तरह के ऐश का सामां वहाँ मौजूद था, था किसी को भी न उस सामान का शानों गुमाँ।
लोग अपनी अपनी जा पर जब फरोकश हो गये, हो गये मसरूफ़ खातिर मे हर एक के मेज़बाँ।
बाप के आने की दोनों को हुई जिस दम खबर, राम और लछमण हुए बेताब जाने को वहाँ।
खौफ़े विश्वामित्र से कुछ कह नहीं सकते थे वो, दिल में उलफ़त थी पिदर की बन्द थी लेकिन जबाँ।
जब मुनी पर हाल बेताबी का उनके खुल गया, खुश हुए होने लगे आँसू मुहब्बत के रवाँ।
लेके दोनो शाहज़ादों को मुनी उस जा चले, राजये आली अयोध्या के फ़रोकश थे जहाँ।
राजा दशरथ ने जो देखा आये है कौशिक ऋषी, और दोनो दिल के टुकड़े है बसद इजलालोशाँ।
दौड़ कर आये मुनी के वो क़दम को चूमने, और हुए बेताब फर्ते ऐश से शाहेशहाँ।
दी मुनी ने उनको सीने से लगा कर के दुआ, बाप की ताज़ीम की झुक कर मिले शहज़ादगाँ।

दोनों बेटे बाप के क़दमों पे जा कर गिर गये, देख कर उनको हुए महाराजा दशरथ शादमाँ।
था जुदाई का जो उनको रंज वह सब मिट गया, हो गई हासिल खुशी फिर आ गई कालिब में जाँ।
जो वशिष्ठ उनके गुरु थे उनसे भी बढ़ कर मिले, और जो थे ब्राह्मण वो भी हुए सब शादमाँ।
अपने भाई भरत से और शत्रुघन से भी मिले, किस कदर थी उनमें उल्फ़त हो नहीं सकती बयाँ।
और सब छोटे बड़ों से भी मिले फिर रामचन्द्र, था तरीका मिलने का हर एक के शायानेशाँ।
सब ने जब राजा को देखा चार फरज़न्दों के साथ, इज़्दयादे शौक से होने लगे वो गुलफशाँ।
एक दिन शादी से पहले आ गई थी यह बरात, छा गई थी शहर पर गोया बहारे जाबेदाँ।
राजा दशरथ की हर एक जा कर रहे तारीफ थे, राजए मिथिलेश के भी लोग थे सब मदहख्वाँ।
राम और सीता की वह जोड़ी निहायत खूब है, सब यही कहते थे सब के था यही विरदे ज़बाँ।
सब यही कहते थे सीता जी यहाँ जब आएँगी, उनके लेने को ये दोनों भाई आएँगे यहाँ।
हमको हासिल इनका दरशन इस तरह हो जाएगा, धन हमारे भाग है यह है उसी की खूबियाँ।
शत्रुघन और भरत का भी हो रहा था ज़िक्रेख़ैर, हो रही थी गुफ़्तगू पुरलुत्फ सबके दरमियाँ।
भरत तो है राम के बिलकुल मुताबिक शक्ल में, शत्रुघनजी पर हुआ करता है लछमन का गुमाँ।
चारों शहज़ादों की शादी हो हमारे शहर में, कहते थे आपस में यह मिथिलापुरी के साकिनाँ।
था महीना यह अगहन का और थी हेमन्त ऋतु, अच्छी सायत चाहते थे वाकिफे सैयारगाँ।
थे पुरोहित जो शतानन्द शौक से आगाज की, राजये आली जनक के हुक्म से तैयारियाँ।
जब कि शादी का यहाँ सामान सब कुछ हो गया, अर्ज़ जनवासे में करवाई गई, आवें यहाँ।
हुक्म दशरथ ने दिया खुश होके चलने के लिए, चोट डंके पर लगी और हो गये वो सब रवाँ।
ब्राह्मण साधू जो थे सब शाद थे सरशार थे, ऐशो इशरत का समाँ चारों तरफ़ जलवाकुनाँ।
हुस्ने नौशा देख कर हर शख्स दीवाना हुआ, सब यही कहते थे कर दें राम पर कुर्बान जाँ।
जेवरों मलबूस शाहाना थे जिनके जिस्म पर, और चेहरे पर थी रौनक हुस्न की बिलकुल अयाँ।
भाई सब उनके थे अपने अपने घोड़ों पर सवार, जो दिखाते जा रहे थे चाल में भी शोखियाँ।
अस्पे नौशा की बयाँ तारीफ कर सकते नहीं, लाख लस्सानी करे कोई अगर रतबुल लसाँ।
जब बरात आयी जनक जी के महल के कुर्ब में, शोर से बाजों के गूँज उठे जमीनों आसमाँ।
औरतें जो माहरू थीं अपनी मीठी राग से, गा रही थीं फर्ते शादी में मुबारकबादियाँ।
देख कर नौशाह को होने लगे सब शादमाँ, एक महारानी सुनैना और दीगर रानियाँ।
सास दरवाजे पे आके ले गई नौशाह को, सब मरासिम की अदा हसबे तरीके खानदाँ।
शादीखाने में बिठाया शान से नौशाह को, थे जहाँ मौजूद सारे अकरबा और मेहमाँ।
लालो मोती और कपड़ों की कमी कोई न थी, वार कर नौशाह पर से दे रहे थे दोस्ताँ।
राजा दशरथ की तवाज़े की जनक जी ने बहुत, एक से थे एक बढ़ कर शादो खुर्रम समधियाँ।
लाके बिठलाया वशिष्ठ को और विश्वामित्र को, सब को बुलवाया जनक ने होके बेहद शादमाँ।
राजा दशरथ की बड़ी तारीफ और तौसीफ की, जज़बये अख़लाक़ से दो नज़र भी शायानेशाँ।
और जितने थे बराती की मुदारात उनकी भी, जिनको जो देना था दे कर हो गया खुश मेज़बाँ।
कुल पुरोहित थे शतानन्द उनसे ये बोले वशिष्ठ, लाइए दुल्हन को जा कर देर है अब क्यों यहाँ।
जब खबर अन्दर गई दुल्हन को बाहर भेजने, निकली दुल्हन को लिए गाती हुई हमजोलियाँ।
हो नहीं सकता बयाँ दुल्हन के उस सिंगार का, औरतें दुनिया की सब कर दें निछावर अपनी जाँ।

मुझसे दुल्हन का कोई पूछे अगर हुस्नो जमाल, कर सकूँ उसको बयाँ मुझमें ये ताकत है कहाँ।
जब दुल्हन को लाके बिठलाया गया दूल्हे के पास, वेद के मंतर पढे मौजूद जो थे वेददाँ।
और भी जो जो मरासिम घर में होने आये हैं, दोनों जानिब से हुए पूरे बतर्जे खानदाँ।
वेदपाठी जो ब्राह्मण थे वो करवाये हवन, जिसकी खुशबू से महक उठ्ठे जमीनों आसमाँ।
तब सुनैनाजी महारानी को बुलवाया गया, बेबदल थी जिनकी सजधज थी अनोखी जिनकी शा।
बैठी जब आ कर जनक के पास ये बाँये तरफ़, सामने नौशह के रक्खी दो सुनहरी थालियाँ।
पैर दूल्हा और दुल्हन के धोये अपने हाथ से, और कन्यादान दे कर हो गये वो शादमाँ।
तब पुरोहित दोनो जानिब के कराये शाखोचार, और गठ-बन्धन हुआ और पड़ गई फिर भाँवराँ।
हाथ से नौशह ने सेंदुर जब दिया दुल्हन के सर, उसकी है तफ़सील लिखने से मेरी कासिर जबा।
दूल्हा और दुल्हन को एक मसनद पे बिठलाया गया, देख कर इनको हुए महाराज दशरथ शादमा।
फिर जनक ने मांडवी श्रुतकीर्ति और उर्मिला, उनको भी बुलवा लिया जो तीन थी शहजादियाँ।
उनके भाई कुस्व ध्वज की थी जो बेटी मांडवी, भरत से शादी हुई थी जिनमे लाखो खूबियां।
और सीता की बहन छोटी जो वो थी उर्मिला, करके शादी उनकी लक्ष्मण से हुए सब शादमाँ।
हो गई उनकी भी शादी शत्रुघन राजा के साथ, थी श्रुतकीर्ति जो तीसरी बाकी वहाँ।
देखा जब चारों बहू को चारों फर्जन्दों के साथ, हो गये महाराजा दशरथ शादमानो कामराँ।
तीनों शहजादों की भी शादी हुई उस शान से, जिस तरह की हमने आगे राम की शादी बयाँ।
फिर जहेज अनवाअ और अक़्साम का लाया गया, उनकी मैं तफसील कुछ भी कर नही सकता बयाँ।
थे जवाहर बेबहा और खिलअते अनमोल थी, रथ भी थे गाये भी थी हाथी भी थे अस्पे दवाँ।
सारा ये सामान पेशे राजाए दशरथ हुआ, देख कर जिनको हुए महाराजा दशरथ शादमाँ।
जो मुलाजिम मुस्तहक थे उनको मुँह मांगा दिया, उनका पल्ला भर दिया जो थे गरीबो बेकसाँ।
बच गया जो कुछ वह जनवासे में सब भेजा गया, तब जनक जी दस्तबस्ता यों हुए गौहरफशाँ।
जो ब्राह्मण आप सब है उनका एक नौकर हूँ मैं, आपकी कुछ हो सके सेवा यह मुमकिन है कहाँ।
फिर मुखातिब हो के दशरथ से जनक ने यह कहा, ऐ करमफरमाय बन्दा ए शफीके मुखलिसो।
आप से रिश्ता जो जोड़ा हो गई इज्जत बड़ी, बढ गया रुतबा हमारा बढ गई है इज्जो शाँ।
आज से हम दोनो भाई हो गये अदना गुलाम, है हुकूमत आप ही की, आप ही है हुक्मराँ।
मेरी चारों लड़कियाँ अब आपकी बहुएं हुई, कीजिए इन पर इनायत और रहिए मेहरबाँ।
आप जो तकलीफ़ फर्मा कर यहाँ पर आये है, दरगुजर करने के काबिल है मेरी गुस्ताखिया।
राजा दशरथ ने जनक की भी बड़ी तारीफ की, दोनो समधी एक-से थे एक बढ़ कर शादमाँ।
हो के फ़ारिग फिर गई जनवासे को वापस बरात, दूल्हा दुल्हन को उठा कर ले गई हमजोलियाँ।
जेवरो मलबूस से थे किस कदर आरास्ता, हुस्न की नौशह के हो सकती नहीं खूबी बयाँ।
फिर जनाने मे भी पूरे हो गये सारे रसम, होते आये जो अदा हमवे रिवाजे खानदाँ।
थे जो हमसिन रस्म की लैकोर की फ़ौरन अदा, कर रहे थे सब बराबर बाते मिल कर शोखियाँ।
दूल्हा और दुल्हन का जनवासे मे फिर लाया गया, आ गई गोया चमन मे फिर बहारे जावेदाँ।
शाद और आबाद ये चारों दुल्हन-दुल्हा रहें, दे रहे थे यह दुआ दिल से उन्हें पीरोजवाँ।
फिर बसद फर्ते खुशी मेहमान सब तशरीफ लाये, क्योंकि तैयारी वहाँ दावत की थी शायाने शाँ।
राजा दशरथ के जनक ने पाँव धोये हाथ से, पाँव औरों के भी धोये मिल के बैठे समधियाँ।

सैंकड़ों अक्साम के खाने वहाँ मौजूद थे, जोकि हो सकते थे मुश्किल से नसीबे खुशरवाँ।
थी कई नमकीन चीज़े और मीठे बेशुमार, चार हैं अक्साम जो खाने में मशहूरे जहाँ।
चूसने के चाबने के चाटने पीने के भी, बस यही अक्साम हैं आगे हुआ जिनका बयाँ।
पुरतक्कलुफ थी जियाफ़त पुरतक्कलुफ इन्तजाम, क्यों न हो मेहमान सब खुश जब जनक हों मेजबाँ।
जब कि आगाज़े तनावुल समधियों ने कर दिया, और मजाक़न समधनों में हो रही थी गालियाँ।
जिनको सुन कर हँस रहे थे राजा दशरथ और सब, क्योंकि ये थी वक्त की बेबाकियाँ गुस्ताखियाँ।
पा के खाने से फ़राग़त लोग सब उठ कर चले, हाथ मुँह धो कर लिये पान और फूल और इत्रदाँ।
खत्म जब खातिर हुई वापिस गये जनवासे को, हो गये महाराजा दशरथ शादकामो शादमाँ।
जिस तरह से धूम और यह शान की दावत हुई, मुद्दतों ऐसे हुए जलसे जनक जी के यहाँ।
राजा ने मुनियों को बुलवाया गुरु से करके अर्ज, और की हर तरह खिदमत जो कि थी शायाने शाँ।
ब्राह्मण जो थे उन्हें बख्शे जवाहर और गाय, दी दुआ राजा को सबने हो के बेहद शादमाँ।
हर मुलाजिम को उम्मीदों से भी ज्यादा मिल गया, राजाए दशरथ थे साजहनों के अपने क़द्रदाँ।
राजा दशरथ हर घड़ी कहते थे विश्वामित्र से, आप ही की मैं दया से हो गया हूँ शादमाँ।
राजा दशरथ वापसी के वास्ते कहते थे रोज, रोक रखते थे बहुत इसरार करके मेजबाँ।
सब जनकपुर इस तरह था मस्रूफ़े ऐशोसरूर, नित नई तक़रीब थी हर रोज़ और जलसे वहाँ।
यों ही जब कुछ रोज गुज़रे तब शतानन्द ने कहा, राजा दशरथ को इजाजत दीजिए जो हों रवाँ।
वापसी की जब खबर फैली जनकपुर शहर में, दिल उदास होने लगे और छा गयीं खामोशियाँ।
ठहरने का खाने-पीने का हुआ सब इन्तजाम, राह के आराम की होने लगी तैयारियाँ।
कर दिया लालो जवाहर सीमोज़र राजा के साथ, हाथी और गाये भी थी और भैंस और अस्पे दवाँ।
इस तरह सब कुछ जनक ने फिर मुक़र्रर दे दिया, हो गया सब साज़ो सामाँ यह अयोध्या को रवाँ।
जब खबर इस रुखसती की हो गई रनिवास में, हो गई अफ़सुर्दा दिल पज़्मुर्दा सूरत रानियाँ।
कहती थी वो गोद में सीता को ले कर प्यार से, तुम रहो हर वक्त शादो कामगारो कामराँ।
और अटल बन कर रहे क़ायम तुम्हारा यह सुहाग, तुम रहो शौहर के ताबे वह तुम्हारे क़द्रदाँ।
तुम श्वसुर की सास की हर दम रहो खिदमतगुजार, मर्ज़ियें शौहर पे चल कर खुश रहो और शादमाँ।
बीवियों के जो फरायज हैं वो सिखलाये गये, दुल्हनों से मिल के शादाँ हो गई सब रानियाँ।
भाइयों के साथ मिलने राम अन्दर आ गये, सास ने मोती निछावर किये हो कर शादमाँ।
राम ने माँगी इजाज़त घर को जाने के लिए, सास की आँखों से होने लग गये आँसू रवाँ।
दुल्हनों को शाहज़ादों के हवाले कर दिया, मुँह से कुछ कहने न पायी हो गई वो बेज़बाँ।
राम ने भी सास को अपनी तसल्ली दी बहुत, बात ऐसी की जो थी मीठी भी और राहतरसाँ।
दुल्हनें जाती हुई यों अपनी माँओं से मिलीं, जिस तरह कम उम्र बछड़ी छोड़ती है अपनी माँ।
तोता-मैना जिनको सीता ने रखा था पाल कर, पिंजरों से कह रहे थे, प्यारी सीता है कहाँ।
जब परिन्दे हिज्र में उनके थे इतने बेक़रार, क्यों न हो इन्सान बेकल, बात है बिलकुल अयाँ।
राजाए मिथलेश भी भाई के हमरह आ गये, साबिरो जाबित थे लेकिन कुछ न था ताबोतवाँ।
पालकी मँगवा ली जब सब दुल्हनों से मिल चुके, और बिठलाया हर एक दुल्हन को उसके दरमियाँ।
जो फ़रायज उनके थे वो सब उन्हें बतला दिये, और समझाया उन्हें जो था तरीक़े खानदाँ।
सैंकड़ों नौकर दिये साथ उनके जाने के लिए, जब हुई रुखसत तो आये देखने पीरोजवाँ।

उनको पहुँचाने वज़ीरों को लिए राजा गये, हो गये दशरथ रवाना बढ़ चला आगे निशाँ।
राजा दशरथ कह रहे थे यह जनक से बार बार, आप अब तकलीफ़ फ़रमायें न मेरे मेहरबाँ।
आख़िरश दशरथ उतर कर रथ से अपने रुक गये, तब जनक कहने लगे इनसे कि ऐ शाहेशहाँ।
आपने इज़्ज़त बढ़ाई मेरी और तौक़ीर की, आपका ममनूँ रहूँगा जिस्म में जब तक है जाँ।
राजा दशरथ ने भी समधी की बड़ी तारीफ़ की, उनके गुण और शील गाने लग गये थे, मदहख़्वाँ।
चारों दामादों से भी राजा जनक जा कर मिले, मिल के विश्वामित्र से भी हो रहे थे शादमाँ।
जब जनक वापस हुए बढ़ती चली आगे बरात, मंज़िलों पर ठहरती पहुँची अयोध्या थी जहाँ।
जब अयोध्या के क़रीब आये तो दी डंके पे चोट, जिस क़दर बाजे ख़ुशी के थे हुए सब नग़माख़्वाँ।
जब ख़बर पहुँची अयोध्या में कि आती है बरात, हो गये तब आदमीग़रैस हो गये सब शादमाँ।
महल्ले शाही की तो रौनक़ का बयाँ मुमकिन नहीं, शहर का था हर मकान आरास्ता, हर एक दुकाँ।
जब महल पर राजाए दशरथ के थे पहुँची बरात, पेशवाई के लिए आयीं महल से रानियाँ।
ऊद और काफ़ूर इतना जल रहा था बेशुमार, हर तरफ़ फैला हुआ में उसकी ख़ुशबू का धुआँ।
औरतें जिस दम छतों से देख कर हट जाती थीं, यों नज़र आता था जैसे हैं चमकती बिजलियाँ।
चारों दुल्हन और दूल्हों को ले गये रनिवास में, सब मरासिम को अदा हस्बे रिवाजे ख़ानदाँ।
पाये अच्छा आब सा श्रृंगार पाये जब नज़र, उनको जैसी हो ख़ुशी वैसी हो ख़ुश थी रानियाँ।
राजा दशरथ ने दिये कपड़े जवाहर सीमोज़र, हो गये ख़ुश पाके ये इनाम अवध के साकिनाँ।
और भी जो थे बराती उनको भी तोहफ़े मिले, जिसने जो माँगा वो पाया हो गये सब शादमाँ।
हर ब्राह्मण और साधीपुत्र की सेवा हुई, जिनके थे मशकूर सिता राजा और सब रानियाँ।
और की ख़ातिर गुरु की अपने हस्बे मरतबा, नेग ले कर दी दुआएँ हो गये फ़ौरन रवाँ।
थे सवासन और नेगी भी वहाँ आये हुए, इस क़दर पाया न था जिसका उन्हें शानोगुमाँ।
और थे मेहमान जितने वो भी सब रुख़सत हुए, राजा दशरथ ने किया हर एक को बेहद शादमाँ।
राजाए दशरथ भी ख़ुद रनवास में तशरीफ़ लाये, हर बहू को हर पिसर को देख कर थे शादमाँ।
जो मुदारात और ख़ातिर राजा दशरथ की हुई, कर रहे थे सब बयाँ राजा जनक की ख़ूबियाँ।
बात ख़ासा वो थी रुख़सत हो गये बाक़ी जो थे, ले के गुलदस्ता गुलों के और इत्रो पानदाँ।
दुल्हनों को हर तरह आराम देने कह दिया, रानियों से यह कहा रखना निहायत शादमाँ।
राजा दशरथ जब गये आराम करने ख़्वाबगाह, रतजगा करने लगीं मिल कर महल की रानियाँ।
दूसरे दिन लोग सब हाज़िर हुए दरबार में, और शहज़ादे भी सब मौजूद थे नुसरत निशाँ।
गुरु वशिष्ठ कौशिक ऋषी जी को भी बुलवाया गया, धर्म के सब शास्तर मजलिस में करते थे बयाँ।
रोज़ ऐसी ही ख़ुशी से हर घड़ी कटने लगी, हर तरफ़ छाई अयोध्या में बहारे जावेदाँ।
चन्द दिन रह कर वहाँ कौशिक ऋषी राही हुए, जिस जगह रहते थे ये, था आश्रम इनका जहाँ।
राम की शादी के गुनले गर कोई कुछ वाक़यात, हर तरह फूले-फले तो और हो वह शादमाँ।
जब हुई ये शादियाँ सब, राजा दशरथ शाद थे, और ख़ुश थीं शाद थीं रनवास में सब रानियाँ।
अहलियाने मुल्क भी सब शाद थे आबाद थे, हर तरह का ऐश था मसरूर थे पीरोजवाँ।
सब की ख़्वाहिश थी कि राजा राम को दें सल्तनत, अपने जीते जी बना दें राम को वो हुक्मराँ।
रोज़ सुनते थे रिआया की दिली ख़्वाहिश को वो, हर कोई करता बयाँ था रोज़ उनकी ख़ूबियाँ।
शान की मैं राजा दशरथ का बयाँ क्यों कर करूँ, सारी दुनिया पे था जिनके नाम का सिक्का रवाँ।

एक दिन ऐसा हुआ आइना ले कर हाथ में, अपने चेहरे को जो देखा, थी जईफ़ी कुछ अयाँ।
राम को राजा बना दूँ और मैं आराम लूँ, यह ख्याल आया महाराजा के दिल में नागहाँ।
जा के राजा ने गुरु से अपना मंशा कह दिया, जो छुपा था दिल मे उसको कर दिया उन पर अयाँ।
कुल अजीजो बन्धुवाँ सारे वज़ीर और सब अमीर, याने थी सारी रिआया राम जी से शादमाँ।
आपकी किरपा से राजा ने कहा सब मिल गया, आपकी सेवा से मैं हूँ हर तरह से कामराँ।
अब मेरी जो आरजू है इसको पूरी कीजिए, राम को मसनदनशीं करके बना दो हुक्मराँ।
आपकी किरपा से ख्वाहिश हो जो ये पूरी मेरी, खत्म हो जाये कि या बाक़ी रहे उम्रे रवाँ।
सुन के ये गुरुदेव बोले आरज़ू अच्छी है ये, राजगद्दी की करो महाराज अब तैयारियाँ।
जब गुरु जी से इजाज़त मिल गई महाराज को, महल से आकर हुए दरबार में जलवा कुनाँ।
सब रिआया और वजीरों को भी बुलवाया गया, हाज़िरे दरबार शाही सब हुए पीरोजवाँ।
यों कहा महाराज ने सबको अगर मंज़र हो, राम को युवराज करके कीजिएगा हुक्मराँ।
हाथ जोड़े सब वजीरो ने कहा राजा से यों, आपने यह खूब सोचा, हो गये हम शादमाँ।
आपका यह हुक्म सबके वास्ते है जॉफिजा, दीजिए जल्दी इजाजत ता करें तैयारियाँ।
जिस तरह कहते गुरु है आप कीजे इन्तज़ाम, राजाए दशरथ ने यों फ़रमाया हो के शादमाँ।
शहर में होने लगी तैयारी सब और इन्तज़ाम, राजगद्दी के लिए था जिस कदर शायाने शाँ।
चो तरफ जब यह खबर फैली तो सब खुश हो गये, हो गये बेइन्तिहा खुश सब अवध के साकिनाँ।
राम को भी कुछ सुगून अच्छे नजर आने लगे, होके सीता से किया इर्शाद यों खंदादहाँ।
भरत को जा कर हुआ अर्सा बहुत ननिहाल में, मैं समझता हूँ कि जल्दी लौट आयेंगे यहाँ।
भरत से कितनी मुहब्बत है मैं कह सकता नहीं, वह नहीं हैं पास मेरे, तो नहीं आरामें जाँ।
महल शाही में खबर इस शादमानी की हुई, हो गयी मसरूरो शादाँ सब महल की रानियाँ।
खैर और खैरात जैसी चाहिए होने लगी, बेहिसाब इनाम दीं हर एक को हो कर शादमाँ।
काम यह ऐसा करे जिसमें हो इसका फायदा, यह दुआ दी राम को और हो गयी खुश उनकी माँ।
राजा दशरथ ने कहा उपदेश दीजे राम को, गुरु वशिष्ठ आये महल में राम रहते थे जहाँ।
राम ने जब यह सुना घर पर गुरु जी आये हैं, आये इस्तकबाल को और ले गये बाइज्जो शाँ।
उनकी खातिर की बहुत और हाथ जोड़े यह कहा, आपके तसरीफ़ लाने से है बारौनक़ मकाँ।
आप खुद तशरीफ लाये यह बड़ी तकलीफ की, याद फरमाते मुझे हाज़िर मैं हो जाता वहाँ।
आपका जो हुक्म हो तामील को हाजिर हूँ मैं, आप क्यों तशरीफ़ लाये ऐ गुरु जी हैं—यहाँ।
सुनके यह खुश हो गये गुरुदेव यों कहने लगे, क्यों न इस तरह कहोगे तुम हो नूरे खानदाँ।
आज महाराजा बनाने आपको युवराज है, हो रही हैं राजगद्दी की बड़ी तैयारियाँ।
व्रत और पूजा हवन भी आपको लाज़िम है आज, और जिन बातों को कहना था किया उनसे बयाँ।
जब गये वापस गुरु जी दिल में सोचा राम ने, चार बेटे बाप के है फ़र्क़ हममें है कहाँ।
सब हुए पैदा बराबर और सब एकसाँ पढ़े, सबका बचपन मिल के गुजरा सब की हो गई शादियाँ।
राजगद्दी एक ही को क्यों मिले क्या बात है, यह नहीं अच्छा हकीक़त में है तर्जे खानदाँ।
राम से मिलने को आये लक्ष्मण जी भी वहीं, जो बहुत हश्शाश और बश्शास थे और शादमाँ।
चो तरफ़ आनन्द छाया था खुशी छाई हुई, बज रहे डंके खुशी के थे गवैये नग्माख्वाँ।
चाहते थे सब कि आ जाये भरत ननिहाल से, ता शरीके जलसा होकर आन का देखें समाँ।

ख़त्म हो जाये ये रात और सुबह भी हो जाये जल्द, ताजपोशी की वो सायत देख ले पीरोजवाँ।
देवताओं को अवध की यह खुशी भाती न थी, सरस्वती के पैर पड़ते थे वो हो कर हमजबाँ।
चाहते थे ताजपोशी में पड़े बाधा कोई, छोड़ दे कर राज, वन को राम हो जाएँ रवाँ।
सरस्वती सुन कर बुरी ख्वाहिश निहायत दंग थी, कुछ नहीं कहती थी मुख से बन्द थी गोया ज़बाँ।
सब ने मिल कर उनकी विनती की बड़ी मिन्नत के साथ, भेद जो उसमें छूपा था सब किये उनसे बयाँ।
फिर ये सरस्वती ने समझा राम जाएँ वन अगर, हाथ से उनके सज़ा पायेगा हर इज्ज़ारमाँ।
धर्म के जो है मुख़ालिफ़ जुल्म के आदी है जो, उनका ये बाकी न रक्खेंगे कोई नामों निशाँ।
इल्म का चर्चा बढ़ेगा, कद्र होगी इल्म की, जब कि यह किस्सा लिखेंगे शायरे जादू बयाँ।
सोच कर यह सरस्वती शहरे अयोध्या को गयीं, जिस तरह कोई बला आती है बिलकुल नागहाँ।
कैकेई की एक दासी मन्थरा नामी जो थी, कर दिया उसकी समझ को सरस्वती ने रायगाँ।
मन्थरा ने शहर में देखा कि हलचल है बहुत, शादो खुर्रम थे निहायत सब अवध के साकिनाँ।
पूछने पर उसके जब उस पर सबब ज़ाहिर हुआ, सीने में उसके लगी लाखों करोडों बर्छियाँ।
उसने सोचा रात ही में चाल कुछ ऐसी चलो, काम ये होने न पाये, रंग बदले आसमाँ।
कैकेई के पास जा बैठी बहुत हो कर उदास, और उस बदकार की आँखो मे आँसू थे रवाँ।
साँस लम्बी ले रही थी मुँह से कुछ कहती न थी, कैकेई ने वजह पूछी बन्द थी उसकी ज़बाँ।
हँस के पूछा कैकेई ने क्या लखन ने मारा है, क्योंकि तेरी गुफ़्तगू होती है गर्म ऐ बदज़बाँ।
फिर भी वह खामोश थी, रानी को इससे डर हुआ, फिर भी नागन ने निकाला आह का अपनी धुवाँ।
चारों फ़रजंदो की पूछी खैरियत रानी ने जब, तन बदन में आग उसके लग गयी बस नागहाँ।
मन्थरा ने यों कहा किस मुँह से किस बल पर कहूँ, मेरी किस्मत ही बिगड़ बैठी है मुझसे नागहाँ।
राम को बस छोड़ कर आराम ही किसको नसीब, कर रहे है राजाए दशरथ जिन्हें अब हुक्मराँ।
आज कौशल्या से बढ़ कर कोई खुशकिस्मत नहीं, देख लो खुद जा के अपनी आँख से सब इज्ज़ोशाँ।
भरत बाहर हैं तुम्हें तो फ़िक्र उनकी कुछ नही, ऐशो राहत मे पड़ी रहती हो हरदम शादमाँ।
उसकी इन बातों से रानी हो गई नाराज कुछ, डाँट कर बोली कि घरफोड़ी न बकबक कर यहाँ।
काने, लँगड़े, कूबड़े होते है सब दिल के बुरे, औरतों को इसमें है तरजीह मर्दों पर अयाँ।
इतना कह कर कैकेई ने हँस दिया फिर कह उठी, मन्थरा मैं तेरी बातों से नहीं हूँ बदगुमाँ।
बाखबर करती हूँ तुझको इससे तू आगाह हो, ताजपोशी राम की होगी मुझे राहत रसाँ।
जो बड़ा भाई हो, हो जाते है महकूम उसके सब, इस अमल के आज तक आदी है अहले खानदाँ।
राम की इस ताजपोशी की जो सच्ची है खबर, मैं तुझे इनाम वो दूंगी जो हो शायाने शाँ।
कुछ बड़ापन राम कौशल्या को देते ही नहीं, उनकी नज़रों में है सब माँओं की इज्ज़त बेगुमाँ
मेरी खातिर है बहुत मलहूज़ मेरे राम को, बारहा मैंने लिया है इसका उनसे इम्तेहाँ।
राम भी प्यारा है मुझको और सीता भी अज़ीज, क्यों हुई जाती है इस शुभ कार्य से तू नीमजाँ।
भरत की तुझको क़सम है साफ कह दे मन्थरा, क्या सबब है इस खुशी से हो रही है बदगुमाँ।
यह कहा उसने कि कहना जिस क़दर था कह दिया, उसके आगे बोलने में बन्द है मेरी ज़बाँ।
जो खुशामद करते हैं करते है मुँह देखी जो बात, हाँ वही रहते हैं अच्छे और शादो शादमाँ।
है नसीबा ही बुरा मेरा शिकायत क्या करूँ, मुझको क्या राजा बने कोई, कोई हो हुक्मराँ।
जो मेरा दर्जा है वह हरगिज़ बदल सकता नहीं, कह दिया था सोच कर कुछ आपका मूदोज़ियाँ।

कैकेई भोली थी बातों का असर लेने लगी, उसकी तीनत में भी कुछ होने लगी तब्दीलियाँ।
आजिजी से कैकेई रानी जो पेश आने लगी, मन्थरा समझा हुआ अब कारगर मेरा वयाँ।
यों कहा—क्या पूछती हो मुझसे रानी बार-बार, नाम परफोड़ी मेरा रखा है तुमने मेरी जाँ।
साफ कहती हूँ लगा कर कान तुम सुन लो इसे, जो समझती हो नहीं बाकी रहेगा वह समाँ।
राम सीता तुमको प्यारे और उनको तुम अजीज, वह ज़माना चल बसा, बाकी रहेगा अब कहाँ।
दिन पलट जाते किसी के है तो बस चलता नहीं, खुद मुखालिफ वे भी बन जाते है, जो थे मेहरबाँ।
आपकी सौतन है कौशल्या फकत इस घात में, जब मिले मौका तो पहुँचाये मजर्रत और जियाँ।
नाज अपने हुस्न पर है तुमको रानी कैकेई, तुम समझती हो कि राजा तुम पे हैं मारिफ़ना जाँ।
तुम भरोसा मत करो राजा है नीयत के बुरे, देखने मे तो नजर आते है वो शीरीदहाँ।
तुम बहुत सीधी हो कौशल्या बहुत चालाक है, उनकी सब चालाकियाँ हैं बरतर अज वहमो गुमाँ।
भरत को भिजवाया बाहर पहले कहके राजा से, और राजा को फ़राहम कर लिया इस दरमियाँ।
वह समझती है कि ताबे है मेरी सब सौतनें, उनके हक में है फ़कत एक कैकेई वारेगराँ।
नाज है जिनको बहुत शौहर की अपने चाह पर, अपने दिल मे इस लिए वह बुगुज रखती है निहाँ।
देख सकती हैं नही कौशल्या इसको आँख से, राजाए दशरथ जो तुम पर हैं निहायत मेहरबाँ।
इन्तहाये होशियारी से चली हैं चाल यह, भरत के रहने में उनका काम बनता था कहाँ।
जब कि वह इस जा नही है उसने यों ठहरा लिया, शान से पूरा कराया अपना मन्शा नागहाँ।
राम की गद्दीनशीनी किसको है भाती नहीं, और मैं भी इसमें होती हूँ निहायत शादमाँ।
मुझको जो डर है वह आइन्दा का है ऐ कैकेई, फल मिलेगा उसको उल्टा जो कि है ईजारसाँ।
अलगरज हर बात उल्टी उनको समझाने लगी, और झूठे किस्से भी कहने लगी वह बदजबाँ।
गुफ्तगू ने मन्थरा की खो दिये रानी के होश, क्योंकि होनी ही थी ऐसी, रंग बदले आसमाँ।
मन्थरा कहने लगी—क्या अब भी तुम समझी नहीं, जानवर भी है समझते अपना जब सूदोजियाँ।
पन्द्रह दिन हैं हो गये इस काम को होते हुए, आप पर ज़ाहिर हुआ है आज यह राजे निहाँ।
और वह भी मैंने जब तुमसे कहा जाहिर हुआ, मैं नमक खाई हुई हूँ इसलिए खोली जबाँ।
खौफ मुझको कुछ नही, कहती हूँ तुम से साफ-साफ, राम हो जाएँ अगर कल सल्तनत पर हुक्मराँ।
तुमको भी घर से निकाला जाएगा बस इस तरह, फेंक दी जाती है जैसे दूध पर से मक्खियाँ।
भरत और तुम दोनों मिल कर उनकी सेवा गर करो, फिर तो शायद दोनों मिल कर रह सकोगे तुम यहाँ।
क़ैदखाने मे पड़ेंगे भरत, तुम तकलीफ में, और लक्ष्मण को करेंगे नायब अपना बेगुमाँ।
मन्थरा की ऐसी बातें सुनके कैकेई डरी, काँपने वह लग गई और खुश्क थी उसकी जबाँ।
मन्थरा ने जब यह देखा खौफ़ से थर्रा गई, दम न रुक जाये कही रानी का इस दम नागहाँ।
हो गया ऐसा तो हो जाएगा उल्टा काम सब, मैंने भी जितना किया हो जाएगा सब रायगाँ।
मन्थरा ने कह के कुछ रानी को फिर तसकीन दी, कुछ सुनाये उसको किस्से और सुनाई दास्ताँ।
तब तो रानी को बहुत कुछ उसपे आया एतबार, यह न समझी, है यह दुश्मन या है मेरी मेहरबाँ।
यों कहा रानी ने सच कहती है तू ऐ मन्थरा, कुछ गुण भी बदनजर आते हैं मुझको बेगुमाँ।
मुझको सपने भी नज़र आते हैं कुछ मनहूसी के, यह मेरी थी भूल जो रक्खा इन्हें तुझसे निहाँ।
आज तक मैंने किसी का भी बुरा चाहा नहीं, मुझपे क्यों ऐसी मुसीबत आ गई है नागहाँ।
जाके मैं माँ-बाप के घर उम्र भर रह जाऊँगी, मैं रहूँ सौतन मे दब कर मुझसे है मुमकिन कहाँ।

फिर बड़ी मिन्नत समाजत कैकेई ने उसकी की, मन्थरा कहने लगी क्यों हो रही हो खस्ताजाँ।
आपके शौहर सलामत आपके सर पर रहें. तुम को दिन दूनी तरक्की हो, रहो तुम शादमाँ।
जो बुराई आपकी चाहेगी खुद फल पाएगी, जब से यह मैंने सुना है नींद आँखों में कहाँ।
ज्योतिषी से मैंने पूछा तो कही उसने यह बात, भरत ही राजा बनेंगे और होंगे हुक्मराँ।
मैं तुम्हें तरकीब बतलाती हूँ रानी कैकेई, तुम पे राजा निछावर करते हैं अपने कल्बो जाँ।
कैकेई कहने लगी तू जो कहे मैं वह करूँ, तू यकीं कर मन्थरा, मुझसे न हो अब बदगुमाँ।
छोड़ दूँ बेटे को अपने छोड़ दूँ दूल्हे को भी, तू जो कह कुएँ में गिर जाऊँ मैं जा कर नागहाँ।
मन्थरा ने जब यह देखा चल गया रानी पे दाँव, फिर तो कोई शक रहा उसको न रानी से गुमाँ।
हाथ जोड़े यों कहा तुमने कहा था एक बार, याद है या तुम उसे भूली हुई हो मेरी जाँ।
राजाए दशरथ ने दो वरदान थे तुम को दिये, कीजिए पूरा उन्हें अब तावने राहत रसाँ।
राम को जंगल मिले और भरत पाये सल्तनत, अपनी सौतन की जगह हो जाओ तुम खुद शादमाँ।
राम की राजा कसम खा ले तो कहना बात ये, काम की तकमील को है रास्ता यह दमिगाँ।
मन्थरा बदजात ने कह सुनके राजी कर दिया, कर दिया रानी को बेहद राम जी से बदगुमाँ।
जेवर और कपड़ों को फेंको और खफा हो जाओ तुम, जाके सो जाओ महल मे और करो आंसू रवाँ।
कैकेई के हक मे कुबड़ी जान से प्यारी हुई, वाली-दूरन्देश तू है और तू है नुक्तदाँ।
तुझसे बढ़ कर मुझको प्यारा कोई दुनिया में नहीं, मैं बही जाती थी बस तूने बचाया नागहाँ।
मेरे दिल की आरज़ू पूरी अगर हो जाय यह, आँख की पुतली बना कर मैं रखूँगी बेगुमाँ।
कह के यह बिखरा दिया रानी ने सब अपना सिंगार, सो गई बिस्तर पे अपने जाके बा आहोफ़ुगाँ।
कैकेई थी इस तरह अपने महल में रो रही, उस तरफ़ थीं शहर में सब जश्न की तैयारियाँ।
हो रहा है क्या, खबर इसकी किसी को भी न थी, था महल हंगामये इशरत से बारौनक़ मकाँ।
राम के साथी जो थे सब जा रहे थे उनके पास, कह रहे थे हो मुबारक होके बेहद शादमाँ।
चार जानिब था मसर्रत का समा छाया हुआ, शाद थे छोटे-बड़े और मर्दोज़न पीरोजवाँ।
बह रही थी शहर मे हरसू हवा आनन्द की, कैकेई अपने महल में थी मगर मातमकुनाँ।
हो अगर नासेह दुश्मन फिर बुराई क्यों न हो, अक्ल हो जाती अकलमन्दों की भी है रायगाँ।
जब महल में कैकेई के शाम को राजा गये, उस जगह पाया नहीं हर रोज़ रहती थी जहाँ।
जब सुना यह ग़मकदे मे रो रही रानी है आज, उड़ गये राजा के होश और हो गये वो नीमजाँ।
डर गये ग़ुस्से से औरत के महाराजा बहुत, सर झुका देते थे जिनके आगे सारे राजगाँ।
सह नहीं सकते थे राजा काम के फूलों की मार, उफ नहीं करते थे जो सीने पे खा कर बर्छियाँ।
खौफ़ से राजा गये डरते हुए रानी के पास, हाल यह उनका जो देखा खो दिये ताबो तवाँ।
फेंक कर ज़ेवर व कपड़े थी जमी पर लोटती, दिल मे था रंजो अलम और लब पे थी आहो फ़ुगाँ।
उसकी सूरत इस तरह उस वक्त आती थी नजर, जैसे बेवा, बाद शौहर के रहे नालाकुनाँ।
कैकेई के पास जा कर राजा यों कहने लगे, क्या सबब है रंज का मुझको बताओ मेरी जाँ।
इतना कह कर रानी को जो हाथ से छूने गये, हाथ को उनके झटक कर हो गई आतिशबयाँ।
देखती थी इस तरह जैसे हो नागन ग़ुस्सावर, और डसने के लिए अपनी निकाले वह जबाँ।
इस अमल से राजा दशरथ ने बुरा माना नहीं, और यह समझे कि यह सब नाज है और शोखियाँ।
चन्द्रमुख, नाज़ुक तबीयत, खुशअदा, नाज़ुकखराम, कर तू अपने रंज का बेसाख़्ता मुझसे बयाँ।

किसने की तौहीन तेरी मौत किसकी आ गई, किसने जाने की नरक में अपने की तैयारियाँ।
कौन-से मुहताज को राजा बना दूँ आज मैं, कौन-से राजा के पैरों में मैं डालूँ बेड़ियाँ।
हो बहादुर से बहादुर भी तेरा दुश्मन अगर, चीर कर मैं फेंक दूँ औरों का है ही क्या बयाँ।
बखुदा तेरे वास्ते है सब रिआया और अजीज़, धन भी और औलादो इकबालो हुकूमत, मेरी जाँ।
कुछ बनावट है नहीं, खाता कसम हूँ राम की, जो हो तेरी आरज़ू जल्दी से कर मुझसे बयाँ।
जब कहा राजा ने इतना हो गई वो दिल मे खुश, थम गया आँसू का बहना हो गई खन्दादहाँ।
उठ के बैठी और पहना अपना जेवर और लिबास, हँस के देखी राजाए दशरथ को हो कर शादमाँ
कैकेई को खुश जो देखा राजा दशरथ ने कहा, है खुशी का आज दिन यह, तू भी हो जा शादमाँ।
शहर के हर एक मकां में है खुशी छाई हुई, राम को कल मैं बना दूंगा अवध का हुक्मराँ।
ऐसी अच्छी बात सुन कर तुझको भी होगी खुशी, यह सुखन सुनते ही रानी हो गई बस तिफ्ता जाँ।
टाल दी रानी ने बात और मुस्करा कर रह गई, अपनी चालाकी यह राजा पर न होने दी अयाँ।
राजा उसकी चाल को हरगिज समझ सकते न थे, क्योंकि थी उस्ताद उसकी मन्थरा मौजिज़ बयाँ।
फेर कर मुँह अपना राजा की तरफ़ कहने लगी, मैं जो माँगूंगी—मुझे मिलने में उसके है गुमाँ।
वह जो दो वादे किए थे आपने मुझसे कभी, आज तक फरमाइए पूरा किया उनको कहाँ।
यों कहा राजा ने मतलब मुझपे अब जाहिर हुआ, दिल में रक्खा तुमने उनको मुझ से माँगा है कहाँ।
बेवफाई का मुझे इल्जाम यों हरगिज न दो, चार वादे ले लो तुम, दो के एवज में मेरी जाँ।
है यहा दस्तूर रघु के खानदाँ का आज तक, दम निकल जाये तो जाये टल नहीं सकती जबाँ।
गुदमंदी है सचाई की अयाँ हर एक पर, झूठ से बढ़ कर ज़माने में नही कोई ज़ियाँ।
इसलिए मैंने क़सम खाई है तुझसे राम की, राम से बढ़ कर नहीं कोई मुझे आरामेजाँ।
इस तरह राजा से जब मज़बूत वादा ले लिया, कैकेई करने लगी फिर अपने मकसद को बयाँ।
अर्ज की—महाराज है यह मेरी पहली आरजू, भरत की हो राज गद्दी, हो वही अब हुक्मराँ।
दूसरी जो आरजू है वह भी प्यारी है मुझे, दस्त-बस्ता वह भी कह देती हूँ ऐ शाहेशहाँ।
छोड़ कर यह महल-नगरी राम जंगल में रहें, और चौदह साल वह फिरते रहे बेखानेमाँ।
बात यह सुन कर बड़ी हैरत में राजा पड़ गये, जिसका उनको हो न सकता था कभी वहमो गुमाँ।
हो गये खामोश एकदम ज़र्द चेहरा हो गया, गिर गई जैसे यकायक ताड़ पर बर्क़े तयाँ।
हाथ माथे पर वो रख कर सोचने कुछ लग गये,' दिल में अपने कह रहे थे, हो गया क्या नागहाँ।
मेरे दिल की आरज़ू पूरी जो होने को थी अब, कर दिया कमबख्त रानी ने उसे अब रायगाँ।
हाय रानी की समझ पर कैसे पत्थर पड़ गये, बीज बरबादी का बोया है अवध के दरमियाँ।
फल मिला उसका, जो औरत पर भरोसा था मुझे, कल के दिन होने को क्या था, हो गया क्या नागहाँ।
इस तरह राजा को जब रानी ने देखा सोच मे, गुस्से में आयी बहुत और यों हुई आतिश बयाँ।
भरत क्या बेटा तुम्हारा है नही, ऐ बादशाह, दाम दे कर लाये हो क्या तुम मुझे अपने यहाँ।
बात यह मेरी तुम्हे क्यों कर लगी है तीर-सी, क्यों नही कहते हो कुछ, अब बन्द कर ली क्यों ज़बाँ।
नाज़ अपने दिल में है तुमको सचाई का बहुत, साफ़ अब इन्कार ही कर दो, कहो या मुझ से हाँ।
मुझसे जो वादे किये थे, कीजिए पूरा उन्हें, खुद सचाई की कहा करते थे मुझसे खूबियाँ।
वादा करना आपने आसान समझा था बहुत, कौल से फिर जाइए, कर लीजिए झूठी ज़बाँ।
जो बुजुर्गों ने कहा कर के दिखाया आपने, वो सचाई पर तसद्दुक अपनी कर देते थे जाँ।

कैकेई ने इस तरह कुछ सख़्त उनको कह दिया, जख़्म पर छिड़का नमक जैसे किसी ने नागहाँ।
राजा दशरथ जो धरम के नाम पर देते थे जाँ, साँस ठंडी ले के सर पकड़ा किया जब्ते फ़ुग़ाँ।
कहा यों मारा मुझे तूने निहायत बेतरह, जिससे बचने का नहीं बाकी रहा कोई निशाँ।
ग़ुस्सावर कैकेई उनको इस तरह दिखलायी दी, म्यान से बाहर कोई तलवार जैसे हो अयाँ।
राजा दशरथ ने यह सोचा यह बुरी तलवार है, यह तो ले कर ही रहेगी इक न इक दिन मेरी जाँ।
सब्र करके नरम शब्दों में यह राजा ने कहा, ऐ मेरी राहतरसाने दिल, मेरी आरामे जाँ।
क्या नहीं तुझको भरोसा मुझ पे अजराहे ख़ुलूम, भरत हो या राम राजा, दोनों हैं ये मेरी जाँ।
मैं क़सम शंकर की खा कर कह रहा हूँ तुमसे यह, दूत को कल सुबह होते ही करूँगा मैं रवाँ।
जब भरत और शत्रुघन पैगाम मेरा पायेंगे, अपनी वो ननिहाल से आ जाएँगे अल्दी यहाँ।
देख कर मैं अच्छी सायत और अच्छा कोई दिन, भरत को ही बना दूँगा मैं यहाँ का हुक्मराँ।
राम को हरगिज न थी ख़्वाहिश हुकूमत की कभी, भरत से उसको है उल्फत उसपे है वो मेहरबाँ।
मेरे ही पेशे नजर छोटे-बड़े का था लिहाज, जिस तरह इस रस्म के पाबन्द है अहले जहाँ।
साफ़ कहता हूँ कि कौशल्या की कुछ साजिश नहीं, तुम से बिन पूछे किया जो, हो गया वह रायगाँ।
भरत को अब जल्द ही बिठलाऊँगा मैं तख़्त पर, थूक दो गुस्से को अपने, हो भी जाओ शादमाँ।
दूसरी ख़्वाहिश तुम्हारी है बड़ी तकलीफ़-दे, तुमने क्यों सोचा नहीं इस माँग का सूदोज़ियाँ।
तुमने जो कुछ कह दिया है सच है वो या है मजाक, राम की भी क्या ख़ता इसमें करो मुझसे बयाँ।
सारी दुनिया राम की तारीफ़ करती है बहुत, और तुम भी राम पर रहती थी हरदम मेहरबाँ।
क्या इनायत तेरी उस पर आज तक झूठी ही थी, क्या हुआ वह जोशे उल्फत, खो गया आखिर कहाँ।
यह हँसी की बात हो या हो हकीकत की, मगर, सोच कर माँगो जो तुमको माँगना हो, मेरी जाँ।
भरत की मैं ताजपोशी देख लूँ आँखों से जल्द, यह तमन्ना रह न जाए मेरे दिल के दरमियाँ।
है बहुत आसान नामुमकिन भी मुमकिन हो सके, राम को देखे बिना पर चैन पाऊँगा कहाँ।
राम ही पर है मेरी इस ज़िन्दगी का इनहसार, सुन के ये अलफ़ाज़ कैकेई के गये ताबोतवाँ।
हो गई आपे से बाहर और उट्ठी यों भड़क, आग में घी जिस तरह पड़ने से हो चिंगारियाँ।
यों लगी राजा से कहने लाख हीले कीजिए, चालबाजी आपकी यह चल नहीं सकती यहाँ।
क़ौल पूरा कीजिए या साफ़ कह दीजे नहीं, यह मुझे अच्छी नहीं मालूम होती ईनोआँ।
राम साधू, तुम सयाने—राम की माँ भी भली, हो गई है आज अलत मुझ पे इन सबकी अयाँ।
राम गर बन को न जाए कल फ़कीरी भेस मे, आपकी रुसवाई होगी, और मैं दे दूँगी जाँ।
खा के पेंचोताव वो अपनी जगह से उठ गई, गुफ्तगू उसकी थी राजा के लिए ईजारसाँ।
राजा यह समझे कि शायद मौत मेरी आ गई, इस तरह जो हो गया है यकबयक गम का समाँ।
फिर भी राजा ने बिठा कर उसकी मिन्नत की बहुत, और कहा ऐ कैकेई, तू बन न नंगे खानदाँ।
दुश्मनी मे राम की क्यों जान लेती है मेरी, चाहती है और जो कुछ ले ले मुझसे मेरी जाँ।
जिस तरह भी हो सके तू राम को बन मे न भेज, उम्र भर पछतायेगी, हो जायगी मातम कुनाँ।
जब यह देखा काम बनने की कोई सूरत नहीं, गिर गये बेचैन हो कर, छा गई बेहोशियाँ।
था ज़बाँ पर राम-राम और ओठ थे सूखे हुए, जैसे पानी के बिना मछली तड़पती नागहाँ।
इस दशा को देख कर थी कैकेई पिघली नहीं, और कहा—ख़्वाहिश पे मेरी, किस लिए करते थे हाँ।
खर्च भी हो कुछ नहीं, दाता भी कहलाये कोई, गाल फूले रहें हँस भी दे कोई, मुमकिन कहाँ

जंग में लड़ने को जा कर जो कभी घायल न हो, क्यों उसे कहिए बहादुर कब वो होगा पहलवाँ।
काम लीजे सब्र से या क़ौल से फिर जाइए, औरतों की तरह यों कीजे न फरयादो फुगाँ।
उनको आ सकता नहीं औलादो दौलत का खयाल, कौल के पक्के जो है, फिरते नहीं दे कर ज़बाँ।
राजा फरमाने लगे—सच तो यह है ऐ कैकेई, मौत मेरी तुझसे यह कहला रही है बेगुमाँ।
भरत करने का नहीं इस राजगद्दी को कबूल, फिर नहीं मालूम क्या-क्या रंग बदले आसमाँ।
तू अयोध्या की तबाही पर जो यों तैयार है, फिर बसेगी एक दिन नगरी यही बा इज्जोशाँ।
भाई सब ताबे रहेंगे राम ही होगा बड़ा, उसका ही सिक्का चलेगा और वो होगा हुक्मराँ।
मेरा यह अफ़सोस और बदनामी तेरी रह जाएगी, उम्र भर इनको भुला पाएँगे ना अहले जहाँ।
जो तेरा जी चाहे कर, मैं कुछ नहीं कहता तुझे, अब न मुझको मुँह दिखा, हो मेरी आँखों से निहाँ।
ज़िन्दगी भर अब न मुझसे बात करना तू कभी, याद रख ऐ शर की पुतली फ़ितनागर ईजारसाँ।
वजहे बरबादी ए ताजो तख्त तू हो कर रही, ता क़यामत जगत सारा तुझे देगा गालिया।
इस तरह फर्मा के राजा गिर गये बरा फ़र्श पर, और वह खामोश थी खुलती न थी उसकी ज़बाँ।
जिस तरह बेपर के है पंछी तड़पता बेतरह, राजा दशरथ थे तड़पते, राम था विरदेजबाँ।
चाहते थे वे सुबह होने न पाये आज की, राम से जा कर न कोई हाल ये कम्बे बयाँ।
अपने पुरखा सूर्य से यों प्रार्थना करने लगे, रोशनी सुबह की दुनिया पर न कीजैगा अयाँ।
आप की ही है अयोध्या, यह अगर बरबाद हो, आप कर लेंगे गवारा, यह नहीं मुझको गुमाँ।
यों तड़पते ही तड़पते सुबह होने लग गई, और दरवाज़े पे बजने लग गई शहनाइयाँ।
हो गये ड्योढ़ी पर हाज़िर भाट और चारण सभी, रागनी बाजों की राजा के लिए थी सोज़े जाँ।
राजा दशरथ को ये सामाने खुशी थे नापसन्द, जैसे जेवर सती के तनपर बनें बारेगराँ।
आ गये ड्योढ़ी पे राजा के मुलाजिम और वजीर, बोले यों—सोते हैं अब तक किसलिए शाहेशहाँ।
रोज हो जाते थे वो बेदार पिछली रात में, जाके ले आये सुमित्र इस वक़्त कैफ़ीयत यहाँ।
जब महल में वो गये, देखा कि नक्शा और है, इससे पहले तो कभी देखा न था ऐसा समाँ।
पूछते है तो कोई उनको नहीं देता जवाब, कोई कहता ही न था उनसे कि राजा है कहाँ।
राजा और रानी जहाँ थे, आखिरस उस जा गये, देख कर राजा की हालत खो दिये ताबो तवाँ।
खौफ़ के मारे वजीर उनसे न कुछ भी कह सके, कैकेई बिगड़ी बहुत और इस तरह खोली ज़बाँ।
रात भर राजा को मेरे नींद आई ही नहीं, कुछ सबब कहते नहीं, बस राम है विरदे ज़बाँ।
जाके अब जल्दी, यहाँ ले आइएगा राम को, आप पर हो जाएँगे अस्बाब इसके सब अयाँ।
वो समझ बैठे कि रानी ने बिगाड़ा है ये काम, देख कर राजा की हालत हो गये जल्दी रवाँ।
सोचते जाते थे दिल में राम से क्या काम है, किसलिए राजा ने उनको अब बुलाया है यहाँ।
फ़िक्र में डूबे हुए थे पैर उठता ही न था, जब गये बाहर तो चेहरे से उदासी थी अयाँ।
वजह इनसे पूछते थे लोग, ये खामोश थे, हो गये उस जगह हाज़िर राम रहते थे जहाँ।
राम ने देखा सुमित्र आते है मेरे पास जब, उनका स्वागत करके उनको ले गये अपने यहाँ।
याद फरमाया यहाँ राजा ने है, बोले वज़ीर, रामचन्दर हुक्म सुनते ही हुए फौरन रवाँ।
सादगी से जा रहे थे राम उनके साथ जब, देख कर कहने लगे सब, ये नहीं शायाने शाँ।
राम ने देखा कि राजा है निहायत बेकरार, उनकी हालत दूसरी है लब पे है आहोफ़ुगाँ।
पास उनके कैकेई है और वे बेचैन है, बात करने की भी उनमें है नहीं तावोतवाँ।

इससे पहले राम ने ऐसा कभी देखा न था, जानने ही वो न थे, होती है क्या दुश्वारियाँ।
फिर भी कुछ मौक़ा महल पा कर लिया हिम्मत से काम, दस्त बस्ता कैकेई से यों कहा—ऐ प्यारी माँ।
पिता के इस रंज का क्या है सबब बतलाइए, ताकि हो तदबीर उसकी और मिले आरामे जाँ।
चाहते है तुमको राजा, कैकेई ने यों कहा, छोड़ कर तुमको जियें ये, ऐसा मुमकिन है कहाँ।
मुझसे दो वादे किये थे, मैंने जो चाहा कहा, वक्त ईफा कर रहे हैं मुझसे नाहक ईनो आँ।
इक तरफ बेटे की उल्फत, इक तरफ़ वादे का डर, कैफियत दो हो गई हैं इनके दिल के दरमियाँ।
तुम अगर चाहो तो कठिनाई अभी आसान हो, और राजा की परेशानी भी जाये नागहाँ।
कड़वी-कड़वी बात कहती जा रही थी कैकेई, राम जी के हक में था हर लफ्ज तीरे बेकमाँ।
अपनी बातों के चलाती जा रही थी तीर वो, और राजा बन रहे थे उनके तीरों का निशाँ।
राम जी बोले कि माँ-बाप की खिदमत करे, है वही औलाद लायक और इज्जे खानदाँ।
जाऊँगा जंगल खुशी से मैं, मुझे कब उज्र है, मैं उसे पूरा करूँगा, हुक्म जो दें बाप-माँ।
जगलों में जब रहूँगा होगा मुनियों से मिलाप, क्यों खुशी मुझको न होगी भरत हो गर हुक्मराँ।
मेरे अच्छे भाग्य से मौका ये हाथ आया मुझे, मान लूँगा इसको मैं, इसमें छुपी है खूबियाँ।
कोई जाहिल से भी जाहिल हो तो क्यों छोड़े इसे, ऐसा मौका फिर सुनहरी हाथ आता है कहाँ।
सिर्फ़ इतनी बात का महाराज को क्यों रंज है, है तआमुल इसमें मुझको हो रहा है कुछ गुमाँ।
हैं यहाँ राजा बहुत साबिर भी दूरन्देश भी, क्या कोई मुझसे हुई है भूल सरजद कहिए माँ।
कह रहे थे राम अपने दिल की बातें साफ-साफ़, कैकेई दिल की बुरी थी, हो रही थी बदगुमाँ।
राम के अल्फाज सुन कर यह कहा, खा कर क़सम, दूसरा कोई सबब मुझ पर नहीं इसका अयाँ।
फर्ज से तुम अपने टल जाओ कभी मुमकिन नहीं, हुक्म से माँ-बाप के फिर जाओ, ये होता कहाँ।
मैं निछावर तुम पे जाती हूँ करो तुम काम वह, इस बुढ़ापे मे न खो बैठें ये अपनी खूबियाँ।
इनके अच्छे भाग्य से तुम-सा पिसर पैदा हुआ, अब न इनकी हों जमाने में कहीं रुसवाइयाँ।
कैकेई जो कह रही थी यह बुरी नीयत से सब, राम को अल्फाज उसके थे बड़े राहतरसाँ।
जो महाराजा को बेहोशी थी वो जानी रही, राम हाजिर है, कहा उनसे वजीरे नुक्ता दाँ।
बात यह सुन कर वहाँ राजा ने आँखें खोल दीं, उठ नहीं सकते थे वो अब, इस कदर थे नातवाँ।
जब सुमित्र उनको उठा कर सामने बिठला दिये, राम चरणों पर गिरे अपने पिदर के नागहाँ।
अपनी छाती से लगाया राम को महाराज ने, मुँह से कुछ कहते न थे, थे आँख से आँसू रवाँ।
दुखभरे इतने थे मुँह से कह नहीं सकते थे कुछ, अंधमरा सा हो के तड़पा जा रहा था मुर्गेजाँ।
और दुआ करते थे जंगल को न जाये यह कभी, राम रह जायें मकाँ में टाल दे अपनी जबाँ।
जो मुझे पाप इससे होगा उसको सह लूँगा जरूर, इस जमाने में मेरी हो लाख हों रुसवाइयाँ।
राम ने देखा पिता को अपने बेहद रंज है, कैकेई कुल और कह देगी अगर इस दरमियाँ।
इसलिए वो हाथ जोड़े बाप से कहने लगे, कीजिए मुझ पर दया और उफू हों गुस्ताखियाँ।
बात है बिलकुल जरासी आप क्यों है बेकरार, दी खबर ऐसी किसी ने भी न पहले से यहाँ।
आपकी हालत जो देखी माँ से पूछा हाल सब, होके वाकिफ वजह से मैं हो रहा हूँ शादमाँ।
इस खुशी के वक्त ऐसा रंज क्यों करते है आप, जल्द जंगल की तरफ़ कर दीजिए मुझको रवाँ।
करके मैं तामील इसकी जल्द आऊँगा पलट, दीजिए मुझको इजाजत आप हो कर शादमाँ।
माँ से अपनी मैं इजाज़त ले के आता हूँ अभी, चूम कर चरणों को फिर हो जाऊँगा वन को रवाँ।

इस तरह कह कर वहाँ से राम जल्दी चल दिये, शहर मे फैली खबर यह जिस तरह बादे रवाँ।
यह खबर जिसने सुनी हैरतज़दा-सा रह गया, हर कसो नाकस की आँखो से हुए आँसू रवाँ।
आग जगल मे लगे सब जानवर हो बेकरार, कर रहे थे सब अयोध्या वाले यों आहोफ़ग़ाँ।
काम सब कुछ बन गया था क्या हुआ यह वक्त पर, कह के यह सब कैकेई को दे रहे थे गालियाँ।
जो न होना चाहिए कमबख्त करती है उसे, किस तरह उसने बिगाड़ा काम सारा नागहाँ।
राम प्यारे थे हमेशा उसको अपनी जान से, खाक मे उसने मिला दी अयोध्या की इज्जो शाँ।
मकर औरत का कभी मालूम हो सकता नही, है बहुत मुश्किल कि हो जाये अयाँ, जो है निहाँ।
कोई कहता था कि राजा को तो ये जेबा न था, कैकेई क्या थी, हुए क्यो इतने पाबन्दे ज़बाँ।
कैकेई है अपनी हठ पर राजा उसके बस में है, इसलिए राजा को ये सहनी पड़ी कठिनाइयाँ।
कोई कहता था कि राजा का नहीं इसमे कसूर, कोई उनके पुरखों की करता बयाँ था खूबियाँ।
कोई कहता था कि इसमें भरत भी शामिल है क्या, कोई तो खामोश-सा था बन्द थी गोया ज़बाँ।
कोई कहता था कि हरगिज बात यह मुमकिन नही, भरत और है राम दो कालिब, मगर है एक जाँ।
चाँद से भी आग बरसे और अमृत जहर हो, राम के वो हो मुखालिफ़, यह तो झूठा है गुमाँ।
जो बड़ी बूढ़ी थी, कैकेई को समझाने लगी, कह रहे थे सब, मगर वो मानने वाली कहाँ।
राम को तुम भरत से बढ़ कर थी अब तक चाहती, आज क्यों कर, कर रही हो राम को जंगल रवाँ।
आज तक सौतन से अपनी तुम रही हो मेल से, और कौशल्या से अब क्यों हो गयी हो बदगुमाँ।
कब रहेंगे घर में सीता और लछमन राम बिन, और यह भी गैर मुमकिन है, भरत हो हुक्मराँ।
और यह भी है नहीं मुमकिन कि राजा जी सकें, इस तरह सारी अयोध्या की तबाही है अयाँ।
इस तरह तू गौर करके अपने हठ से बाज आ, भरत को दे तख्त, लेकिन राम को रख ले यहाँ।
राम को ख्वाहिश नही है ताज की और तख्त की, कुछ न वो साजिश करेंगे, गर वो रह जाएँ यहाँ।
चाहती हो तुम अगर राजा से यह वर माँग लो, छोड कर घर राम रह जाएँ गुरु जी के यहाँ।
तुम अगर कहना हमारा यह न मानो कैकेई, लाभ के बदले तुम्हें हो जाएगा हासिल ज़ियाँ।
राम क्या हैं वन के लायक, क्या कहेंगे सब तुम्हें, काम जल्दी यह करो, जिसमे हो खुश सारा जहाँ।
अयोध्या से राम का सम्बन्ध कुछ ऐसा ही है, जिस तरह सूरज हो दिन को, जिस्म को परकार जाँ।
इस तरह जो औरतों ने लाख समझाया उसे, कैकेई, कुबड़ी की जो शागिर्द थी, सुनती कहाँ।
कुछ न देती थी जवाब इसका किसी को कैकेई, और सब उस पर उडाती जा रही थीं फब्तियाँ।
डालती थी सब पे गुस्से की नजर यो कैकेई, जैसे भूखी शेरनी देखे हिरन की टोलियाँ।
सब ने जब देखा कि समझाना उसे बेकार है, उठ गई उस जा से सब और लगीं देने गालियाँ।
लोग रंजीदा थे सब और इस तरह थे बेकरार, सूखे दरिया में तड़प उठती हैं जैसे मछलियाँ।
राम हो कर खुश वहाँ से अपनी माँ के आये पास, मिट गयी सब फिक्र उनकी खो गये वहमोगुमाँ।
फिक्र थी उनको बराबर के है भाई चार हम, क्या बडापन मुझको है, मैं ही बनूँ क्यों हुक्मराँ।
कैकेई के हुक्म से वह फ़िक्र अब जाती रही, पिता है खामोश और खुलती नही उनकी जबाँ।
राज के जंजाल से भी उनको छुटकारा मिला, मिल गया आराम इनको हो गये वो शादमाँ।
पाँव पर जा कर वो माँ के अपने सर को रख दिये, देख कर लड़के को अपने माँ थी बेहद शादमाँ।
दे रही थी ज़र-जवाहर वार कर उन पर से खूब, और मुहब्बत के थे आँसू उनकी आँखो से रवाँ।
गोद में ले राम को वो प्यार करने लग गयी, इज़दियादे शौक से था दूध छाती से रवाँ।

किस क़दर वो शाद थीं इसकी यही होगी मिसाल, जिस तरह नादार को मिल जाय दौलत नागहाँ।
फिर कहा लड़के से अपने कब है बेटा वह घड़ी, तख़्त पर बैठोगे तुम और मैं रहूँगी शादमाँ।
जिस घड़ी के वास्ते है इन्तेजार हर शख़्स को, जल्द बतलाओ उसे तुम, ऐ मेरे आरामे जाँ।
मैं निछावर तुम पे हो जाऊँ, नहा लो जल्द अब, मेरे बेटे बैठ कर कुछ नाश्ता कर लो यहाँ।
जब मुहब्बत से भरे अल्फ़ाज़ कानों में पड़े, हाथ जोड़े अपनी माँ से यों हुए गौहर फ़शाँ।
बाप ने मुझको दिया है आज से जंगल का राज, चैन से अब मैं रहूँगा ख़ुर्रमो शादा वहाँ।
अपनी ख़ुशनूदी से अब मुझ को इजाज़त दीजिए, वन में जाने से मेरे दहशत न खायें मेरी माँ।
जल्द ही ये बीत जाएँगे मेरे चौदह बरस, हुक्म की तामील करके लौट आऊंगा यहाँ।
आप मेरे वास्ते कुछ भी न अन्देसा करें, लौट कर आऊँगा जब, देखेंगे मुझको शादमाँ।
बात यह सुन कर हुई कौशल्या रानी दंग-सी, नर्म थे अलफ़ाज गो चुभते थे दिल के दरमियाँ।
जिस तरह बारिश के पानी से जवासा सूख जाए, इस तरह थीं राम के अल्फ़ाज से ख़ुश्क उनकी माँ।
कुछ जलन दिल की कही जाती नहीं उस वक़्त की, जिस्म था थर्रा रहा, थे आँख से आँसू रवाँ।
फिर कहा बेटे से राजा प्यार करते थे तुम्हें, ख़ुद वही तुमको बनाना चाहते थे हुक्मराँ।
क्या किया अपराध जो जंगल में जाने को कहा, क्या सबब इसका हुआ है तुम करो मुझसे बयाँ।
राम का मंशा जो पाया कह दिये सब वाक़यात, था वजीरे सल्तनत का एक लड़का जो वहाँ।
जब हुआ मालूम यह सब हो गई गूँगी-सी वो, कर नहीं सकता हूँ उनके हाल का मैं कुछ बयाँ।
घर में रख सकती नहीं, जाने को कह सकती नहीं, दोनों बातों से उन्हें होने लगा दर्दे निहाँ।
धर्म को मैं छोड़ कर गर रोक लूंगी राम को, भाइयों में रंज होगा और बढ़ेगी तल्ख़ियाँ।
वन को जाने को भी कहना है मसीबत ही मुझे, थीं ये दो बातें ही बस उनकी तबीयत पर गिराँ।
हुक्म शौहर का बजा लाना समझती थी जरूर, राम में और भरत में है फ़र्क़ ही कोई कहाँ।
थाम कर दिल फिर कहा कौशल्या जी ने राम से, तुम करो तामील जो कह दें पिता, ऐ मेरी जाँ।
राज के बदले मिले वन, इसका कुछ भी दुःख नहीं, भरत और महाराज को तुम बिन मिले राहत कहाँ।
बाप ही का हुक्म होता और गर मैं रोकती, वन का जाना मुल्तवी कर देते तुम, ऐ मेरी जाँ।
बाप और माँ ने दिया है हुक्म जाने के लिए, वन को तुम समझो अयोध्या से बहुत राहतरसाँ।
सब करेंगे आ के ख़िदमत जितने हैं वन के परिन्द, लोग जंगल के जो है वो हैं तुम्हारे बाप-माँ।
उम्र आख़िर में मुनासिब है कि जंगल में रहे, है फ़क़त अफ़सोस इसका तुम अभी हो नौजवाँ।
है बड़ी तक़दीर जंगल की, अवध है बदनसीब, कर रहा है इस तरह से जो तुम्हें बन को रवाँ।
मैं अगर हमराह चलने के लिए वनको कहूँ, रोक लेने की है यह तरकीब, ये होगा गुमाँ।
दिल का टुकड़ा मेरा मुझसे ये कहे—वन जाऊँगा, और मैं यह सुन रही हूँ बैठ कर, ऐ मेरी जाँ।
यों दिखावा करके क्यों मैं रोक लूँ इस राह से, जाओ लेकिन भूलना हरगिज़ न मुझको मेरी जाँ।
देवताओं की रहे तुम पर इनायत की नज़र, और पितर अपने रहें तुम पर हमेशा मेहरवाँ।
आँख के तारे हो सबके छोड़ कर तुम इस तरह, जा रहे हो तुम खुशी से आज वन को, मेरी जाँ।
काम सबके आ गयी थी नेकियाँ हमने जो कीं, क्या मुसीबत आ गयी, कैसा भयानक है समाँ।
इस तरह कहती हुई क़दमों पे गिरके राम के, ख़ुद को बदक़िस्मत समझ कर रो रही थीं उनकी माँ।
दुख उन्हें था किस क़दर, यह कोई कह सकता नहीं, दी तसल्ली राम ने चरणों में गिर कर नागहाँ।
हाल जब यह सब सुना सीता भी फ़ौरन आ गयी, पाँव छू कर सास के ख़ामोश वह बैठी वहाँ।

सास ने दिल से दुआ दी और उनको देख कर, हो गयीं बेचैन, आँखों से हुए आँसू रवाँ।
सोचती सीता थी बैठी यों ज़मीं को देखती, मेरे शौहर आज वन को होने वाले है रवाँ।
साथदारी इनकी देगा कौन अब है देखना, जान ही यह साथ जाएगी मेरी, या ज़िस्मों जाँ।
पैर के नाखून से वो थीं ज़मीं को खोदतीं, कैफ़ियत जो लिखूँ उनकी, मुझमें ताक़त है कहाँ।
हाल सीता का बयाँ क्यों कर करूँ उस वक़्त का, नीची नज़रें उनकी थी, आँखों से आँसू थे रवाँ।
उसकी हालत देख कर माँ ने कहा यों राम से, यह बहू सबको है प्यारी और है आराम जाँ।
किसकी बेटी है, बहू किसकी है, यह ज़ाहिर है सब, जान से बढ़ कर इसे मैं चाहती हूँ बेगुमाँ।
इस शजर को मैंने पाला लाड़ से और चाह से, फूलने फलने का इसके हो रहा था अब समाँ।
कुछ नहीं मालूम क्या मंज़ूर है भगवान को, इनको अब बरबाद करने आ रही हैं आँधियाँ।
तख़्त पर से यह कभी उतरी जमीं पर भी नहीं, दीप की बाती मिलाना था इसे बारेगराँ।
मैंने अपनी जान से बढ़ कर रखा इसको अज़ीज़, और हमेशा हर तरह रहती थी इसकी निगहबाँ।
साथ चलने के लिए वह कह रही है वन को अब, हुक्म क्या होता है इसके वास्ते अब मेरी जाँ।
क्या मुनासिब होगा इसका साथ भी ऐसी जगह, शेर, हाथी और जंगली जानवर फिरते जहाँ।
वास्ते जंगल के, भील और कोल हैं पैदा हुए, है जिगर पत्थर का जिनका और हैं जो सख़्तजाँ।
और जो औरत तपस्विन हो उसे मौजूँ हैं यह, जिसमें छूटा हो ज़माना—जिसने छोड़ा हो जहाँ।
देख ले बन्दर अगर तसवीर में डर जाए जो, ऐसी सीता किस तरह वन में रहेगी, मेरी जाँ।
यह अगर घर में रहे, आराम मुझको भी मिले, जो मुनासिब हो करो, सब कर दिया तुम पर अयाँ।
माँ की प्यारी-प्यारी बातें राम को अच्छी लगीं, और वे अल्फ़ाज़ बोले जो कि थे राहत रसाँ।
फिर मुख़ातिब होके सीता की तरफ़ कहने लगे, जो मुसीबत वन में पेश आती है तुम पर है अयाँ।
कायदा यह था कि माँ के सामने कुछ ना कहें, वक़्त की देखी नज़ाकत, यों हुए गौहरफ़साँ।
दिल लगा कर तुम सुनो शहज़ादी मेरी बात ये, तुम न लाना दिल में अपने और कुछ वहमोगुमाँ।
ख़ैरियत मेरी और अपनी चाहती हो तुम अगर, मान लो कहना मेरा, रह जाओ घर ही में यहाँ।
हुक्म की तामील होगी सास की ख़िदमत के साथ, और श्वसुर की रोज़ सेवा कर सकोगी बेगुमाँ।
उनका दिल बहला सकोगी, उनको तुम समझाओगी, होगी जब बेचैन मुझको याद करके मेरी माँ।
मैं कसम खा कर तुम्हें कहता हूँ, ऐ प्यारी मेरी, छोड़ता माँ के लिए ही तुमको हूँ मैं बस यहाँ।
बात मानोगी तो इसमें फ़ायदा हर तरह .है, गर करो इसरार चलने को तो इसमें है ज़ियाँ।
मैं पिता के हुक्म की तामील करके आऊँगा, दिन गुज़र जाते हैं जल्दी, कुछ नहीं इसमें गुमाँ।
हठ अगर करती हो चलने, सामने तकलीफ़ है, धूप, जाड़ा और बारिस है वहाँ आफ़ाते जाँ।
रास्ते में खार हैं, कंकर बहुत हैं, घाम है, गर न हों पैरों में जूते चल सके कोई कहाँ।
पैर नाज़ुक हैं तुम्हारे किस तरह तुम चल सको, रास्ते में जब मिलेंगे सैकड़ों कोहेगराँ।
ग़ार और दर्रे नदी-नाले मिलेंगे सैकड़ों, देखने से जिनके हो जाता है इन्साँ नीमजाँ।
जानवर जंगल में जो रहते हैं उनके शोर से, सब्र और हिम्मत रहे इन्सान के दिल में कहाँ।
खाक पर सोना पड़ेगा वर्ग से ढाँकोगी तन, कन्द मूलो फूलो फल ही खाने को मिलते वहाँ।
और इसका भी क्या निश्चय, वो हमेशा मिल सकें, वक़्त पर मिलते हैं सब कुछ, बात है बिलकुल अयाँ।
और वो इन्सान जंगली जोकि इन्साँ को भी खाएँ, जंगलों में फिरते रहते हैं सदा बेखानमाँ।
और पहाड़ों का भी पानी सर्द होता है बहुत, अलगरज़ तकलीफ़ें जंगल है न मुहताजे बयाँ।

साँप रहते हैं भयानक ओर पक्षी खौफ़नाक, ओर लुटेरों की भी रहती हैं वहाँ पर टोलियाँ।
तुम निहायत नर्मदिल हो और हो नाजुक मिज़ाज, खौफ़ से जंगल में थर्राते हैं नामी पहलवाँ।
नामुनासिब है कि तुम को साथ ले जाऊँ मैं वन, मोतरिज़ होंगे वो मुझ पर लोग हैं गो नुक्तादाँ।
मान सरवर में हमेशा है जो रहती हंसनी, खारे दरियां में वो रह कर जी भी सकती है कहाँ।
आम के जो झाड़ पर कोयल सदा है कूकती, क्या वह रेगिस्तान में हो सकती खुर्रम शादमाँ।
अपने शौहर का गुरु का जो न मानेगी कहा, दिल में पछताती रहेगी और न होगी शादमाँ।
राम का कहना था सीता के लिए गो नेक राय, लेकिन उनके वास्ते वह था नहीं राहतरसाँ।
जानकी जी को तो कुछ इसका नहीं सूझा जवाब, चाहते शौहर है मुझको छोड़ना समझी यहाँ।
सास के वह पैर छू कर इस तरह कहने लगी, दरगुज़र कीजे महारानी मेरी गुस्ताखियाँ।
गर चे शौहर ने दिया है मुझको अच्छा मश्वरा, सह सकूँ उनकी जुदाई,- मुझमें ताकत है कहाँ।
राम से हो कर मुखातिब फिर कहा सीता ने यों, ऐ बहादुर मेरे प्यारे, ऐ मेरे राहतरसाँ।
आप से हो कर जुदा बैकुंठ भी मुझको मिले, है नहीं बैकुंठ वह मुझको नरक है बेगुमाँ।
ख्वाह वह बन्धू हो कोई ख्वाह वह बेटा हो हो, हों ससुर या सास या भाई बहन या बाप-माँ।
पति पर अधिकार जिसका है नहीं, मजलूम है, सब नज़र आते हैं उसको सूरते बर्क़तयाँ।
रुपया, दौलत और हुकूमत और सारी जायदाद, हो न शौहर, तो है औरत के लिए सब रायगाँ।
ऐश बीमारी है, दुनिया है जहन्नुम यह मुझे, ऐ मेरे मालिक नहीं गर आप, तो राहत कहाँ।
जैसे पानी है नदी में और तन मे जान है, है तआलुक़ इस क़दर शौहर के जन के दरमियाँ।
आप ही के साथ रह कर, देख कर मुँह आपका, हर तरह मैं खुश रहूँगी और रहूँगी शादमाँ।
मुझको जंगल भी नज़र आयेगा जैसे शहर इक, झोपड़ी मुझको नज़र आयेगी बारौनक़ मकाँ।
सब परिन्दे भी नजर आयेंगे मुझको रिश्तेदार, बस नज़र आता रहेगा ऐशो राहत का समाँ।
देवता वन के जो है होंगे महाफ़िज मेरे सब, सेज पत्तों घास की होगी मुझे राहतरसाँ।
मुझको खाने को मिलेंगे कन्दो मूलो फूलो फल, मिस्ले महले शाही होंगे कोह भी राहतरसाँ।
आपके क़दमों को अपने सर पे रख कर हर घड़ी, जैसे चकवी शाद रहती है, रहूँगी शादमाँ।
आपने मुझको सुना दी वन की सारी दास्तान, और जो तकलीफ़ होती है, वो सब करदी बयाँ।
सब मिला कर वह मुझे इतनी नहीं तकलीफ़दे, जिस क़दर होगी जुदाई आप की ईज़ारसाँ।
ग़ौर फरमा लीजिए लेकिन मुझे ले चलिए साथ, और ज़्यादा अर्ज करने की मुझे जुर्रत कहाँ।
रहमदिल हैं आप और है सारी बातें जानते, आप से कोई नहीं है राज़दिल मेरा निहाँ।
गर अयोध्या में मुझे चोदह बरस छोडेंगे आप, यह समझ लीजे कि बचने की नहीं फिर मेरी जाँ।
राह चलने में थकावट कुछ नही होगी मुझे, आप के जब मैं चरन चूमूंगी हो कर शादमाँ।
आपकी खिदमत करूँगी मेरे मालिक रात दिन, आपको तकलीफ़ कुछ होने न दूंगी हर ज़माँ।
आपको पंखा झलूंगी पैर धोऊँगी मुदाम, देख कर मैं मोहनी सूरत को हूँगी शादमाँ।
और मगन हर दम रहूँगी आपकी सेवा से मैं, वक़्त मुझको रंज सहने का मिलेगा ही कहाँ।
घास पत्तों की बना लूंगी हमेशा सेज मैं, पैर दाबूंगी, रहूँगी आप ही की निगहबाँ।
आप जब होंगे तो मुझ पर कौन डालेगा नज़र, शेरनी को देख ले खरगोश, यह जुर्रत कहाँ।
आपको जंगल है जेबा, मुझको सेवा आपकी, आप तो हैं मर्दे मैदाँ और मैं हूँ नातवाँ।
यह कठिन अलफ़ाज़ सुन कर जो रही हूँ किस तरह, खदशए फरक़त से अब तक क्यों न निकली मेरी जाँ।

इतना कह कर हो गयी सीता निहायत बेकरार, बात भी सुन के जुदाई की, ये मुमकिन था कहाँ।
राम ने देखा कि इनको घर में छोड़ूंगा अगर, जिन्दगी इनकी नहीं बाकी रहेगी बेगुमाँ।
राम ने उनसे कहा अब फ़िकरो गम को छोड़ दो, साथ चलने की जरा जल्दी करो तैयारियाँ।
राम ने सीता को अपनी इस तरह समझा लिया, गिर पड़े फिर अपनी माँ के पाँवों पर वो नागहाँ।
दी दुआ माँ ने कहा, जल्दी से आना लौट कर, और सबको शाद करना, ऐ मेरे आरामजाँ।
क्या मेरी तकदीर पलटेगे कभी परमात्मा, क्या यह जोड़ी मेरे आगे होगी फिर जलवाकुनाँ।
शुभ दिन वह कौन-सा होगा मेरे बेटा कहो, जब कि देखेगी तुम्हारी शकल फिर यह खस्ताजाँ।
लाल और रघुवर तुम्हें कह कर पुकारूंगी मैं कब, देख कर सूरत यह प्यारी हूँगी मैं कब शादमाँ।
राम ने देखा कि माँ अपनी बहुत है बेकरार, गम की शिद्दत से था उनको बात करना भी गिराँ।
राम ने उनको तसल्ली दे के समझाया बहुत, खींच सकता ही नहीं उस वक़्त का मैं कुछ समाँ।
पैर पड़ कर सास के सीता ने ऐसी अर्ज की, आपकी खिदमत करूँ, है मेरी किस्मत में कहाँ।
वक़्त यह खिदमत का था, जाना मगर बन को है अब, मेरे दिल की आरजू यह रह गयी दिल में निहाँ।
जो नसीबे का लिखा है, हो के रहता है जरूर, आपकी मुझ पर इनायत की नजर हो बेगुमाँ।
बात यह सुन कर बहू की सास बेकल हो गयीं, हाल कुछ उस वक़्त का लिक्खे कोई मुमकिन कहाँ।
सास ने सीने से सीता को लगाया बार-बार, की नसीहत और उनसे यों हुई गौहरफशाँ।
जेरे साया अपने शौहर के रहो हर वक़्त शाद, अब हो जिस वक़्त तक गंगा में जमना में रवाँ।
सदके दिल से फिर दुआएं सास ने सीता को दीं, और अदब से पैर छू कर हो गई सीता रवाँ।
जब कि लक्ष्मण पर हुए हालात यह सब मुनकशिफ, हो गए बेताब, आँखों से हुए आँसू रवाँ।
दौड़ कर वह गिर गये क़दमों पे आके राम के, और उल्फ़त के सबब बाकी न थे ताबो तवाँ।
मुँह से कुछ कहते न थे, खामोशियां थी छा गयीं, बेकरारी के निशाँ थे उनके चेहरे से अयाँ।
माहिए बेआब जैसा उनका दिल बेचैन था, सोचते थे अपने दिल में, हो गया क्या नागहाँ।
क्या कहेंगे भाई मुझको बस इसी की फ़िक्र थी, साथ रक्खेंगे मुझे या छोड़ जाएँगे यहाँ।
राम ने देखा कि भाई हाथ जोड़े है खड़े, तोड़ कर संसार से नाता वह अपना बेगुमाँ।
राम ने उनसे कहा जो पेश आगे आएगा, है वह जाहिर तुम पे सब, ठहरो यही तुम भाईजाँ।
जिन्दगी है कामयाब उसकी जो फौरन मान ले, जो कहें स्वामी, गुरु, और हुक्म जा दे बापमाँ।
घर में रह कर ही करो माँ-बाप की खिदमत अदा, बे तआमुल मान लो मेरा कहा यह मेरी जाँ।
शत्रुघन और भरत घर पर अब नहीं मौजूद है, बाप अपने हो गये है अब जईफो नातवाँ।
बाप को सदमा है मेरा गम तुम्हारा भी जो दूँ, ऐसी हालत में कहेंगे क्या मुझे अहले जहाँ।
मुल्क सब हो जाएगा बरबाद होंगे सब तबाह, तुम अगर घर पर रहोगे, होंगे सबके पासबाँ।
इसलिए ठहरो यही और सबको तुम आराम दो, वर्ना क्या इसका नतीजा होगा है तुम पर अयाँ।
रहती है जिसकी रिआया रंज और तकलीफ में, दाखिले दोजख हुआ करते है ऐसे हुक्मराँ।
राम की लक्ष्मण ने सारी गुफ्तगू जब यह सुनी, उड़ गये होशोहवास और खो गये ताबोतवाँ।
राम की बातों से लक्ष्मण यों हुए अफ़सुर्दा दिल, जैसे पाले से मुरझ जाता कमल है नागहाँ।
कुछ जवाब उनको न सूझा हो गये वह बेकरार, राम के चरणों पे सिर था और थे आँसू रवाँ।
यों कहा है आप मालिक और मैं सेवक हूँ एक, आप से मैं कुछ कहूँ, मुझमें यह ताकत कहाँ।
छोड़ देंगे आप गर मुझको नहीं इसरार कुछ, घर में रहने की समझ में आ गयी सब खूबियाँ।

अपनी बद वक़्ती के बाअस उसके मैं ल.यक़ नहीं, धर्म पर चलते हैं जो होते हैं वो अजमतनिशाँ।
आपके साये में मालिक मैं पला हूँ आज तक, आपही मेरे गुरु है, आप ही हैं बाप-माँ।
जिस क़दर सम्बन्ध है दुनिया में बतलाये गये, आप ही पर खत्म हैं सब, कुछ नहीं इसमें गुमाँ।
क़ायदे और रीत सब उसको सुनाना चाहिए, जो हो क़ाबिल उनके, जो हो दिल से उनका क़द्रदाँ।
सदक़े दिल से मैं तो सेवक ओर हूँ ख़िदमतगुजार, छोड़ जाना ऐसे ख़ादिम को है फिर जायज कहाँ।
राम ने देखा कि भाई हो रहे है बेकरार, अपने सीने से लगा कर यों हुए गौहरफ़शाँ।
जाओ जल्दी अपनी माता से इजाज़त ले के आओ, देर कुछ होने न पाये जल्द होना है रवाँ।
इतना सुनते ही परेशानी हुई सब उनकी दूर, हो गये मसरूर बेहद, हो गया दिल शादमाँ।
लक्ष्मण जल्दी गये माता सुमित्रा जी के पास, अपने सर को रख दिया चरणों पे उनके नागहाँ।
लक्ष्मण से हाल जब पूछा सुमित्रा जी ने कुछ, इब्तेदा से इन्तेहा तक कर दिया उनसे बयाँ।
जब सुना यह वाकया इस तरह से वह डर गयीं, जिस तरह डरते हिरन है, जब जले बन नागहाँ।
लक्ष्मण थे सोचते दिल में कि यह क्या हो गया, मुझको जाने को कहेंगी या नही अब मेरी माँ।
राम और सीता की उल्फत उनके दिल मे थी बहुत, और राजा के तसव्वुर ने किया महबे फ़ुगाँ।
पीट कर सर को सुमित्रा ने कहा—अफ़सोस है, हाय पापिन कैकेई ने कर दिया क्या नागहाँ।
आ गई उनकी समझ में कुछ नज़ाकत वक़्त की, और मुख्वातिब होके लक्ष्मण से हुई गौहरफ़शाँ।
राम तुमको चाहते हैं, बाप के मानिन्द है, समझो वैदेही को तुम ऐ मेरे प्यारे अपनी माँ।
राम का जिस जा ठिकाना हो अयोध्या है वही, हो जहाँ खुर्शीद की तनवीर, दिन भी हो वहाँ।
जा रहे है वन को जब सीता भी मेरे राम भी, फिर ज़रूरत कुछ नहीं है तुमको रहने की यहाँ।
बाप-माँ भाई-गुरु मालिक तुम्हारे राम है उनके अहकामात पर क़ुर्बान कर दो अपनी जाँ।
लोग है दुनिया के प्यारे राम के बाअस हमे, इसलिए तुम भी चले जाओ वहाँ, वह हो जहाँ।
साथ उनके जाओ, जंगल में रहो सेना करो, अपने जीवन का करो यों लुत्फ हासिल मेरी जाँ।
राम की सेवा में बेटा जो तुम्हारा ध्यान है, मैं हूँ किसमत की धनी, कुर्बान तुम पर मेरी जाँ।
जिसका का बेटा भक्त निकले, है वही माँ खुशनसीब, वर्ना इस जनने से बेहतर है जने कोई न माँ।
तुम करो ख़िदमतगुज़ारी वन में रह कर उनके साथ, यह तुम्हारे ही मुक़द्दर की हैं सारी खूबियां।
ऐश और आराम में हरगिज न पड़ना ऐ पिसर, उनकी ख़िदमत मे लगे रहना हमेशा बेगुमाँ।
हर तरह आराम हासिल होगा जंगल में तुम्हें, राम-सीता साथ है, बन कर तुम्हारे बाप-माँ।
है यही मेरी हिदायत काम करना तुम यही, राम-सीता को न हो जिसमे कोई जहमत वहाँ।
राम को घरदार का आने न पाये कुछ खयाल, ऐसी खिदमत तुम करो जिससे रहे वह शादमाँ।
इस तरह रानी सुमित्रा ने हिदायत की उन्हें, और दुआ दे कर ये फरमाया कि हो जाओ रवाँ।
पैर पड़ कर माँ के वो जल्दी रवाना हो गये, ताकि फिर कोई रुकावट हो न पैदा दरमियाँ।
राम और सीता जहाँ थे उस जगह लक्ष्मण गये, देख कर दोनों को दिल में हो गये बस शादमाँ।
राम को आदाब करने का सरफ़ हासिल किया, हो गये तीनो रवाँ, ऐवाने शाही था जहाँ।
शहर में हर एक कहता था कि यह क्या हो गया, बन गया था काम जो, किस तरह बिगड़ा नागहाँ।
हर कसोनाकस का दिल बेचैन था चेहरा उदास, रंज में डूबे हुए थे और थे महबे फ़ुगाँ।
हाथ मलता था कोई और पीटता था सर कोई, और महल पर हो रहे थे जमा सब खुर्दो कलाँ।
लोग सब बेचैन थे जैसे कि बेपर हो परिन्द, कसरते ग़म से दुखी थे और थे मातमकुनाँ।

कसरे शाही पर रियाया का लगा बढ़ने हुजूम, रंज और सदमे का आलम कर नहीं सकता बयाँ।
रामचन्दर लाये हैं तशरीफ़ जब बोले वजीर, सुनते ही यह खो गये राजा के सब तावोतवाँ।
जब पड़ी दोनों पे नज़रें हो गये बेचैन वो, हाय इन तीनों को किस दिल से करूँ वन को रवाँ।
थे तड़पते राजा दशरथ मुँह से कुछ कहते न थे, थी जलन दिल में छुपी और लब पे थी आहो फ़ुगाँ।
राम ने फिर अपना सर चरणों पे वालिद के रखा, और फिर वन की इजाज़त माँगी बा इज्ज़े बयाँ।
की गुजारिश राम ने हो दस्तबस्ता बाप से, ये खुशी का वक़्त है, क्यों आप हैं महवेफ़ुगाँ।
राम को राजा ने पास अपने बिठा कर यों कहा, होके रहता है वही, तक़दीर में है जो निहाँ।
जो करता जिस तरह पाता है वैसा ही वो फल, आज यह बर अक्स इसके हो रहा है क्यों यहाँ।
हो खता सरजद किसी से, और सज़ा पाये कोई, है यह परमेश्वर की लीला बहतरज़ वहमोंगुमाँ।
जिस कदर मुमकिन हुआ राजा ने समझाया बहुत, और कोशिश की न होने पाये वन को ये रवाँ।
आखिरस देखा कि अपनी बात के पक्के हैं राम, रुक नहीं सकते किसी के रोकने से वो यहाँ।
फिर तो राजा ने लिया सीता को छाती से लगा, और जंगल की जो थीं तकलीफ़ सब कर दी बयाँ।
सब सुनाया उनको जो आराम था आठों पहर, बाप के घर में हो या ससुरे के घर में पुत्रियाँ।
राम के चरणों मे सीता का लगा था दिल तमाम, बन उन्हें प्यारा था, कुछ भाता न था अपना मकाँ।
लोग जो मौजूद थे उस वक़्त समझाने लगे, बन में पेश आती हैं क्या-क्या मुश्किलें-दुश्वारियाँ।
मंत्री सुमंत जी ने और गुरु जी ने कहा, दी इजाजत बन को तुमको राजा दशरथ ने कहाँ।
ससुर सासें और गुरु जो कुछ कहें तुम वह करो, इस तरह सब ने कहा सीता से हो कर हमज़बाँ।
ये मुहब्बत के वचन सीता को नागवार थे, हो गयी बेचैन वह बाक़ी न था ताबोतवाँ।
जानकी के मुँह से कुछ अल्फाज़ तो निकले नहीं, कैकेई ग़ुस्से में आयी, उठ गयी वह नागहाँ।
और मुनियों का लिबास इसके मुकाबिल रख दिया, राम से हो कर मुखातिब इस तरह खोली ज़बाँ।
जान से बढ़ कर तुम्हें राजा जो रखते हैं अज़ीज, तुम को वन को भेज देंगे, यह तो मुमकिन है कहाँ।
कौल जाये आबरू जाये कि मिट जाये सबाब, तुम को जंगल को नहीं हरगिज़ करेंगे वे रवाँ।
इस तरह तुम ग़ौर करके जो मुनासिब हो करो, राम ये अल्फ़ाज़ सुन कर हो गये बस शादमाँ।
राजा दशरथ को लगे अल्फाज़ ये मानिन्दे तीर, सोचते थे क्यों नहीं अब भी निकलती मेरी जाँ।
आ गया राजा को गश और लोग सब बेचैन थे, सूझता कुछ भी न था जाते रहे तावोतवाँ।
जो लिबास उनके लिए मुनियों का था लाया गया, राम उसको पहन कर जल्दी हुए वन को रवाँ।
साथ सीता और लक्ष्मण को लिए फिर रामचन्द्र, वन को जाने के लिए सब से मिले वो शादमाँ।
मिल के वे तीनों रवाना कसरे शाही से हुए, और पहुँचे शादमाँ ये सब गुरुजी थे जहाँ।
लोग जितने थे वहाँ सब हो रहे थे बेकरार, राम के कहने से सब की आ गयी कालिब में जाँ।
ब्राह्मणों को दान दे कर खुश किया श्रीराम ने, नौकरों को भी किया ईनाम दे कर शादमाँ।
सौंप कर सब को गुरु को यों कहा फिर राम ने, आपकी इन पर इनायत की नज़र हो बेगुमाँ।
हाथ जोड़े रामचन्दर और विनती सबसे की, हर तरह तुम सब रहो महाराज के राहत रसाँ।
ऐ अयोध्या के निवासी आप सब ऐसा करें, हिजर में मेरे नहीं बेचैन सब खुर्दो कलाँ।
पाँव छू कर फिर गुरु के और सब को चूम कर, हो गये शादाँ ब फरहाँ रामजी बन को रवाँ।
ज्यों ही वह चलने लगे कोहराम-सा एक मच गया, पीटने छाती लगे, करने लगे आहो फ़ुगाँ।
और लंका में उधर होने लगे सब बद सुगून, देवता कुछ रंज में थे और कुछ थे शादमाँ।

राजा दशरथ की गशी कुछ दूर होने लग गयी, और यों कहने लगे निकली नहीं क्यों मेरी जाँ।
हो के राजा ने मुखातिब यों कहा दीवान से—ले के रथ सौमित्र तुम जल्दी से हो जाओ रवाँ।
रथ में बिठला कर उन्हें ले जाओ वन में हर तरफ़, चार दिन समझा-बुझा कर लाओ फिर वापस मकाँ।
बात के अपने धनी रह कर न आये राम गर, अर्ज़ करना तुम कि सीता को वो भेजें बेगुमाँ।
ख़ौफ़ से जंगल के सीता जिस घड़ी डर जाएगी, मेरा यह पैग़ाम तुम सीता से भी करना बयाँ।
सास के घर में कभी रहना, कभी माँ बाप के, इस तरह समझा-बुझा कर इनको फिर लाना यहाँ।
वह अगर आजाएगी मुझ को तसल्ली होगी कुछ, वर्ना यह समझो कि बचने की नहीं यह मेरी जाँ।
इस तरह कहते हुए राजा को फिर गश आ गया, वो ज़मीं पर गिर गये करते हुए आहोफ़ुगाँ।
हुक्म सुनते ही ये फ़ौरन रथ को ले कर चल दिये, शहर के बाहर वो तीनों जा के ठहरे थे जहाँ।
और कह-सुन कर किया उन तीनों को रथ पर सवार, याने फ़ौरन हो गये वो सब अयोध्या से रवाँ।
राम को जाते हुए देखा जो अहले शहर ने, साथ चलने लग गये करते हुए आहोफ़ुगाँ।
राम के समझाने पर भी कुछ नहीं थे मानते, लौटते थे, फिर पलट जाते थे चलते नागहाँ।
मर्द औरत रो रहे थे और सब थे बेकरार, छा गई थी इक उदासी और भयानक था समाँ।
उनको था समशान घर अहबाब मानिन्दे उदू, झाड़ भी और फूल-फल कुम्हला रहे थे नागहाँ।
जानवर जितने थे सब अपनी जगह ख़ामोश थे, गोया था तस्वीर का आलम वो मंज़र वो समाँ।
फूल फल बागों में जितने थे वो सब मुरझा गये, इस तरह बागे अवध में आ गयी फ़सले ख़िज़ाँ।
कैकेई ने भीलनी बन कर लगा दी आग सब, जिस सबब से यह अवध में मच गयी आहोफ़ुगाँ।
लोग सब कहने लगे हम सब रहें किस वास्ते, राम सीता और लक्ष्मण जब नहीं रहते यहाँ।
इस तरह कहते हुए सब लोग हमराह हो गये, रह गये घर में वही जो बच्चे थे या नातवाँ।
राम ने देखा रिआया आ रही है मेरे साथ, इनको उसका दुःख हुआ और वह हुए गौहरफशाँ।
उनको समझाया बहुत कुछ और मनाया राम ने, धर्म के सब तौर भी करने लगे उनसे बयाँ।
राम की उल्फ़त के मारे वो नहीं वापस गये, राम की भी बन्द आखिर हो गयी मुँह में ज़बाँ।
ग़म में सब डूबे हुए थे और थकावट राह की, सो गये सब रात में, ठहरे वो थे जा कर जहाँ।
जब बजे बारह तो ग़ाफ़िल नींद में थे सब पड़े, राम जी ने मंत्री से कह दिये राज़ निहाँ।
रथ को ले कर चल पड़ो आहिस्ता जब सोते हैं सब, बात बनने की नहीं इसके सिवा अब बेगुमाँ।
राम लक्ष्मण और सीता हो गये रथ पर सवार, मंत्री ने रथ चलाया चल दिये वो नागहाँ।
सुबह उठ कर सबने देखा राम उस जा थे नहीं, और रथ का ढूँढ़ने से भी नहीं पाया निशाँ।
हर तरफ़ थे देखते, रोने लगे सब रंज से, हाथ थी लब पर हर एक के और थे मातमकुनाँ।
डूब जाता है कोई जैसे जहाज़ एक माल का, ताजरों को रंज कितना हो, जो हो ऐसा ज़ियाँ।
जीस्त पर अपनी मलामत कर रहे थे लोग सब, और कहते थे कि बिन रघुनाथ के जीना कहाँ।
वो हुए वापस अयोध्या को निहायत रंज से, रंज और सदमे का उनके हो नहीं सकता बयाँ।
इस तवक्को पर कि चौदह साल जब हो जाएँगे, राम के दर्शन करेंगे इसलिए थी तन में जाँ।
चैन और आराम छोड़ा सबने उनके वास्ते, चकवा चकवी की नज़र में फिर रही थी दास्ताँ।
राम-सीता हो के राही पहुँचे शृंगावेरपुर, और गंगा जी के दर्शन करके थे उतरे वहाँ।
मिलके सबने दण्डवत्-प्रणाम गंगा को किया, देख कर गंगा की लहरें हो गये सब शादमाँ।
वाक़यात और हाल गंगा का कहा तफ़सील से, राम ने गंगा की खूबी और बड़ाई की बयाँ।

सब नहाये, दूर उनकी सब थकावट हो गयी, पी के जल गंगा का वो सब हो गये बस शादमाँ।
राम की ऐसी है लीला जो समझ से है परे, पार हो जाता है बेड़ा उसका जो है रमजदाँ।
गोह लोगों का था राजा, नाम था जिसका निषाद, जब खबर उसने ये पायी राम आये है यहाँ।
भाई-बन्धों को सब अपने जमा उसने कर लिया, और तहायफ ले के हाजिर हो गया जल्दी वहाँ।
कर दिया सब पेश बाद आदाब के, लाया था जो, देख कर रघुनाथ की सूरत हुआ बस शादमाँ।
राम ने उसको बिठाया पास, पूछी खैरियत, गुफ्तगू की उससे जो थी राम के शायाने शाँ।
अर्ज की धन और दौलत मुल्क है सब आपका, आपके तशरीफ लाने से हुआ मैं शादमां।
शहर में तशरीफ ले चलिए दया कीजे हुजूर, ताकि बढ़ जाए नजर मे सबकी मेरी इज्ज़ोशाँ।
राम ने ऐसा कहा मुझको नहीं इन्कार था, हुक्म से मैं बाप के अपने हूँ बेताबोतवाँ।
काटना है साल चौदह बस इसी इक भेष में, किस तरह मैं पाँव रक्खूँ फिर शहर के दरमियाँ।
हो गया खामोश राजा, लोग उनको देख कर, थे ताज्जुब में, बयाँ करते थे सारी खूबियाँ।
कोई कहता था कि वो माँ-बाप कैसे उनके है, होनहार अपने पिसर को कर दिया बन को रवाँ।
कोई कहता था कि अच्छा ही हुआ अपने लिए, इस बहाने से ही ये तशरीफ़ ले आये यहाँ।
राम-सीता के ठहरने के लिए राजा ने फिर, जाय कर दी मुन्तखिब एक झाड़ के नीचे वहाँ।
उसने ले जा कर दिखाई रामचन्दर को जगह, देखते ही जिसको बेहद हो गये वो शादमाँ।
शहर के जो लोग थे सब अपने घर वापस गये, लग गये वो लोग भी सब अपने कामों में वहाँ।
घास-पत्तों की बनायी गोह ने एक सेज भी, और फल पानी भी ला कर रख दिया उनके यहाँ।
कन्दमूलो फल इन्होंने खाये बेहद शौक़ से, राम जब लेटे कदम लक्ष्मण ने दाबे बेगुमाँ।
राम को नींद आ गयी सामंत भी सोने लगे, वन के पहरेदार लक्ष्मण रात भर थे निगहबाँ।
करके राजा ने मुकर्रर पहरे, यह ताकिद की, हर तरह से सब रहें इनके महाफिज निगहबाँ।
आप खुद तलवार बाँधे चल दिया लक्ष्मण के पास, काट दी सब रात ले कर हाथ में तीरोकमाँ।
राम को सोते हुए खाली जमीं पर देख कर, रंज गुजरा उसके दिल पर हो गये आँसू रवाँ।
कह उठा—महाराजा दशरथ का जो है शाही भवन, उससे बेहतर आज दुनिया में नहीं कोई मकाँ।
हर तरह से वह सजा था और था आरास्ता, थे जवाहर के जहाँ फानूस रौशन बेगुमाँ।
थे जड़ाऊ तख्त जिसजा तोसकी जरतार थी, राम जी सीता के साथ आराम करते थे जहाँ।
घास पर जो आज सीताराम हैं सोये हुए, देख कर यह चैन क्योंकर आएगा मुझको यहाँ।
बाप-माँ, अहले अवध, नौकर तमाम और अक़रूबा, थे महाफ़िज रात दिन, रहते थे उनके निगहबाँ।
बाप जिनके है महाराजा जनक, दशरथ श्वसुर, आज वो सीता जमीं पर सो रही हैं क्यों यहाँ।
राम और सीता को यह जंगल तो मौजूँ ही नहीं, सच है जो लिक्खा है किसमत में वो होता है अयाँ।
कैकेई की बुराई का ही नतीजा है यह सब, राम और सीता को जिसने कर दिया वन को रवाँ।
उसने दुनिया भर को रंजीदा किया इस काम से, सूर्यवंशी खानदाँ में हैं यह नंगे खानदाँ।
यों कहा लक्ष्मण ने उससे यह शिकायत है फ़िज़ूल, भाई, दुःख और सुख कोई देता नहीं हमको यहाँ।
अपने ही कर्मों का मिलता भी है फल हर एक को, इस तरह से ज्ञान की बातें उन्होंने की बयाँ।
हो बुराई या भलाई और जुदाई या मिलाप, जीना-मरना, दोस्त-दुश्मन, है ये सब ख्वाबे गिराँ।
जर ज़मीनों मुल्कों दौलत और जहन्नुम या बहिश्त, और दुनिया भर के जितने काम हैं पिनहाँ अयाँ।
असल में अज्ञान का असबाब है दुनिया तमाम, देखने-सुनने में हो या बायसे वहमोगुमाँ।

ख्वाब में कोई अगर महाराजा हो जाए ग़रीब, या किसी कंगाल को मिल जाए दौलत बेशुमाँ।
काम दुनिया के हैं सब यों ही समझना चाहिए, क्योंकि बेदारी में है बेकार यह सूरोजियाँ।
दर्द दुख और रंज का करना गिला बेकार है, और शिकायत करके औरों से न होना बदगुमाँ।
लोग दुनिया के फँसे माया के है जंजाल में, काम दुनिया के है उनके हक मे एक ख्वाबेगिराँ।
इस अँधेरी रात में बस जागता जोगी ही है, छोड़ कर दुनिया को हो जाता है आखिर रमजदाँ।
याद में परमात्मा की जो लगा दे अपना दिल, है वही बेदार हर सोये हुए के दरमियाँ।
लक्ष्मण जी रात भर उसमे योंही कहते रहे, सुबह तक करते रहे वो ज्ञान की बातें बयाँ।
राम उठे नींद से, जब सुबह का तड़का हुआ, हाथ-मुँह धो कर नहा कर हो गये फारिग वहाँ।
दूध से बढ़के जटा बाँधी जो लक्ष्मण-राम ने, देख कर इसको हुए सुमंत के आँसू रवाँ।
दस्त बस्ता अर्ज की उसने कि, ऐ मालिक मेरे, जो महाराजा के है अहकाम करना हूँ बयाँ।
रथ पर बिठला कर जरा जंगल दिखा कर आपको, और गंगा में निल्हा कर लाओ वापस बेशुमाँ।
राम लक्ष्मण और सीता जल्द वापस आ सकें, फ़िकर का और रंज का बाकी न हो शानोगुमाँ।
कहते-कहते राम के चरणों पे एकदम गिर गये, तिफ़्ल के मानन्दि करने लग गये आहोफ़ुगाँ।
और कहा लाजिम है करना आपको इस वक्त वह, मुल्क की क़ायम रहे जिससे वहारे जावेदाँ।
राम ने उनको उठाया और समझा कर कहा, धर्म से है आप वाकिफ खूब, और है रमजदाँ।
शिबि व ध्वज राजा हरिश्चन्द्र व रंतिदेवो बली, ये यहाँ राजा हुए मशहूर आफाके जहाँ।
धर्म के पाबन्द थे ये और टले हर्गिज नहीं, गरचे पेश आयी इन्हें इस राह में दुश्वारियाँ।
है सचाई का धर्म में सबसे बढ़ कर मरतबा, शास्त्रों और वेदों मे इसकी बयाँ है खूबियाँ।
कैसी आसानी से मैंने धर्म को है पा लिया, छोड़ दूँ इसको अगर सारी खराबी है अयाँ।
आप से मैं क्या कहूँ कहना ज्यादा है फ़िजूल, बाप के चरणों पे गिर कर आप यों कीजे बयाँ।
अब नहीं कोई जरूरत फ़िक्र करने की उन्हें, हर तरह आराम राहत से है हम तीनों यहाँ।
आप भी मेरे बड़े है, इल्तेजा है आप से, काम ऐसा कीजिए, हो बाप मेरे शादमाँ।
गुफ़्तगू दोनों की सुन कर थे वहाँ जितने निषाद, हो गये बेचैन और करने लगे आहोफ़ुगाँ।
लक्ष्मण जी तल्ख बातें कुछ जो करने लग गये, दखल दे कर राम ने बस रोक दी उनकी जबाँ।
दे के फिर सौगन्ध अपनी यों कहा सुमंत से, आप जा कर ये न हर्गिज बाप से कीजे बयाँ।
बोले फिर सुमंत यों राजा ने यह भी है कहा, है ये नामुमकिन कि सीता सह सके दुश्वारियाँ।
बस यही लाजिम है तुम को, भूल मत जाना कहीं, जिस तरह भी हो सके सीता को ले आना यहाँ।
वर्ना मेरी जिन्दगी की कुछ नही उम्मीद है, जिस तरह पानी न होने से है मरती मछलियाँ।
बाप के घर में रहे वह या रहे ससुराल में, जिस जगह चाहे रहे, हरजा रहेगी शादमाँ।
जिस तरह राजा ने मुझ से यह कहा है क्या कहूँ, आजिजी उनकी नही हो सकती है मुझसे बयाँ।
राम जी ने बाप के पैग़ाम को जब सुन लिया, हो के सीता से मुखातिब यों हुए गोहरफशाँ।
तुम अगर घर लौट जाओ सब अजीजो अकरबा, मेरे माता-पिता क्यों सारा अवध हो शादमाँ।
सुनके ये अल्फ़ाज शौहर के कहा सीता ने यों, ऐ मेरे मालिक, कहूँ क्या आप तो है नुक्तादाँ।
जिस्म से परछाई हो जाए अलग मुमकिन नहीं, रोशनी सूरज न हो तो रह भी सकता है कहाँ।
इस तरह सीता ने की शौहर से अपने इल्तेजा, मंत्री से फिर मुखातिब हो के यों खोली जबाँ।
यह नहीं लाजिम है मुझको आप को मैं दूँ जवाब, आप हैं मेरे बड़े भी और मुझ पर मेहरबाँ।

दस्त बस्ता आप से यह इल्तेजा करती हूँ मैं, आप कुछ बिगड़ें न मुझ पर, हों न मुझ से बदगुमाँ।
छोड़ दूँ चरणों को शौहर के तो फिर मेरे लिए, हेच हैं सब अकरुबा और हेच है सारा जहाँ।
बाप मेरे महाराजा हैं कि जिनके सामने, सर झुका देते है मारे ख़ौफ के सब खुशरवाँ।
उस पिता का घर भी मेरे मन को भाता है नहीं, मेरे शौहर गर न हों, मुझको मिले राहत कहाँ।
और श्वसुर मेरे महाराजा हैं कोशलराज हैं, इन्द्र जिनके सामने अपने को समझे नातवाँ।
राजधानी ऐसे राजा की अयोध्या का क़याम, सब अजीजो अकरुबा और साथ सब हों मेहरबाँ।
सब खुशी आरामो राहत कुछ नहीं हैं काम के, छोड़ कर चरणों को इनके कब मिले आरामे जाँ।
साथ इनके मैं रहूँगी बस यहीं आराम है, रास्ते में पेश आये भले ही दुश्वारियाँ।
साम ससुरे के मेरे चरणों का छू कर यों कहें, वह परेशाँ कुछ न हों, अच्छी रहूँगी मैं यहाँ।
मेरे शौहर और देवर साथ है दोनों मेरे, दोनों पर है नाज़ मुझ को, दोनों मेरे पासबाँ।
राह की मुझ को थकावट है न कोई फ़िक्र है, हर तरह मैं खुश रहूँगी, हर तरह मैं शादमाँ।
मंत्री यह बात सुन कर हो गये बस बेकरार, आँख से आँसू थे जारी, बन्द थी मुँह में ज़बाँ।
राम ने समझाया उनको और तसल्ली दी बहुत, लेकिन इनकी गुफ़्तगू उनको न थी राहतरसाँ।
सीता जी हो जाएँ वापस उनका ये इसरार था, राम जी कब मानते थे, इसपे कब करते थे हाँ।
हो गये मजबूर वो वापस अकेले लौटने, राम के आगे किसी की पेश चलती थी कहाँ।
हो के वो मायूस लौटे उस जगह से इस तरह, जैसे व्यापारी कोई लूटा गया हो नागहाँ।
हाँकते हैं रथ को वे घोड़े नहीं चलते मगर, हिनहिना कर देखते पीछे है हो कर नीमजाँ।
जब निषादों ने ये देखा हो गये वो बेकरार, वन के रहने वालों की आँखों से आँसू थे रवाँ।
जानवर जिनकी जुदाई में हों इतने बेक़रार, किस तरह जिन्दा रहेंगे लोग सब और बाप-माँ।
राम ने इनको भी समझा कर रवाना कर दिया, और खुद गंगा पे आये जिस की मौजें थी रवाँ।
नाव लाने के लिए जब बोले वे मल्लाह से, हाथ जोड़े अर्ज की उसने कि ऐ शाहेशहाँ।
आप को मैं जानता हूँ क्या छुपाते मुझसे हैं, चरण-रज से आप की पत्थर में पड़ जाती है जाँ।
आप के चरणों मे पत्थर की शिला इन्साँ बनी, नाव तो मेरी है लकड़ी की ये सब पर है अयाँ।
अगर ये इन्साँ बने तो मेरा क्या होगा हुजूर, छोटे-छोटे बच्चे है, कैसे पलेगी उनकी जाँ।
ये मेरी रोजी का ज़रिया, पेट इससे पलता है, भूखों मर जायेगा इसके बिन हमारा खानदाँ।
आप को जाना अगर है पार, बैठें, नाव में चरण धो डालूँ मैं पहले, मिटे सब वहमोगुमाँ।
पैर धो कर आप के मैं नाव पर बिठलाऊँगा, आप से मैं कुछ न लूंगा है मेरी कुर्बान जाँ।
मैं कसम खा कर हूँ कहता आपकी दशरथ की भी, ख्वाह लक्ष्मण मार डालें, तीर से ले मेरी जाँ।
बात यह मल्लाह की सुन कर हँसे कुछ रामचन्द्र, और कहा वह काम कर, जिससे न हो तेरा ज़ियाँ।
जल्द पानी लाके धो ले पैर, और ले जा हमें, पार कर दरिया के, यह सायत न जाए रायगाँ।
पार गंगा के लगाने कह रहे हैं आज वो, जिनकी ताकत और लीला मानता है सब जहाँ।
दौड़ कर ले आया पानी धो लिये उनके क़दम, खुशनसीबी पे थे उसकी देवता हसरतकुनाँ।
पैर धो कर खुद पिया पानी दिया औरों को भी, और बिठा कर नाव में उनको चला बस शादमाँ।
था निषादों का भी राजा साथ और लक्ष्मण तो थे, राम सीता हो गये दरिया किनारे से रवाँ।
कर गये जब पार दरिया और उतरे नाव से, रेत पर दरिया की जा कर रुक गये सब नागहाँ।
गिर के चरणों पर खड़ा जब हो गया मल्लाह वह, राम ने सोचा कि देना चाहिए कुछ बेगुमाँ।

राम की यह बात दिल की ताड़ ली सीता ने जब, हाथ की अपनी अँगूठी बस निकाली नागहाँ।
राम ने ले कर अँगूठी यों कहा मल्लाह से, यह सिला ख़िदमत का ले कर जाओ तुम अपने मकाँ।
वह पकड़ कर पैर बोला मेरे पालनहार हो, मेरी क़िस्मत सो रही थी, हो गयी बरुते जवाँ।
मैंने मज़दूरी बहुत की आज तक लेकिन मुझे, आज ही यह मिल गयी भरपूर मज़दूरी यहाँ।
आज लेना कुछ नहीं मैं चाहता हूँ आप से, वापसी में आप जो देंगे वो लूंगा बेगुमाँ।
बावजूद इसरार के कुछ भी नहीं उसने लिया, राम आशीर्वाद दे कर कर दिये उसको रवाँ।
फिर नहाया रामजी ने और पूजा शिव की की, और सीता ने कहा गंगा से ऐ आबे रवाँ।
अर्ज़ है यह मेरे शौहर और देवर खुश रहें, आप की पूजा करूँगी हो के फिर मैं शादमाँ।
यों जवाब उनको मिला गंगा से—प्यारी जानकी, हैं अयाँ सारे ज़माने पर तुम्हारी खूबियाँ।
मुझसे तुम क्या माँगती हो, दे भी सकती हूँ मैं क्या, फिर भी कहती हूँ कि तुम लौटोगी हो कर शादमाँ।
जो तुम्हारी कामना हो दिल की सब बर आएगी, वस्फ़ दुनिया में तुम्हारे होंगे हर लहज़ा बयाँ।
यह दुआ गंगा की सुन कर हो गयी सीता जी खुश, बन गया सब काम उनका हो गयी वो कामराँ।
राम ने जब गोह को वापस पलट जाने कहा, सुनते ही वह हो गया अफ़मुर्दा दिल और नीमजाँ।
आपके हमरह रहूँगा रास्ता बतलाऊँगा, और जो ख़िदमत हो जेबा कर सकूंगा बेगुमाँ।
आप जिस जंगल में जा कर ठहरना चाहेंगे सब, मैं बना दूंगा कुटी पत्तों की अच्छी इक वहाँ।
कुछ दिनों रह कर मैं ख़िदमत आपकी कर लूँ ज़रा, आप फिर जो हुक्म देंगे होगा वह शायानेशाँ।
राम ने हमरह उसको ले लिया सुन कर ये बात, पा लिया अर्माने दिल और हो गया वह शादमाँ।
उसने अपनी जाति के लोगों को फिर बुलवा लिया, माजरा उनको कहा और कर दिया सबको रवाँ।
राम लक्ष्मण और सीता गोह को ले साथ में, बढ गये आगे किनारे से हुए बन को रवाँ।
झाड़ के नीचे हुआ उस रोज़ उन सब का मुक़ाम, गोहो लक्ष्मण ने किया सब इन्तेज़ाम अच्छा वहाँ।
राम ने फिर सुबह तीरथराज के दर्शन किये, नाम जिसका है प्रयाग और जिसकी लाखों खूबियाँ।
जिस जगह जाने से हासिल होते हैं चारों पदार्थ, कल्ब रोशन हो सचाई और श्रद्धा से जहाँ।
क़िला वह मज़बूत ऐसा है कि जिसको ख्वाब में, पाप जो दुश्मन है उसको पा सके मुमकिन कहाँ।
और जो तीरथ हैं सब करते हैं उसकी चाकरी, पाप की सेना है जिससे भाग जाती बेगुमाँ।
और संगम ही सिंहासन अक्षवट है छत्र एक, देख कर जिसको मुनी और सब के दिल हो शादमाँ।
गंगा और जमना की लहरें झिल रही मिसले चँवर, जिनके दर्शन से मुसीबत का मिटे नामोनिशाँ।
उसकी ख़िदमत करते हैं साधू जो है पुण्यात्मा, आरज़ू उनकी है बस इतनी हमेशा बेगुमाँ।
पाप हो जाते हैं ग़ायब जिसकी बरकत से मुदाम, ऐसे तीरथ राज के दर्शन से थे सब शादमाँ।
फिर रहे थे जब ये बाग़ीचे को बन को देखते, राम ने तीरथ की अज़मत अपने मुँह से की बयाँ।
त्रिवेणी पर आये सब और स्नान से फ़ारिग़ हुए, और पूजा शिव की करने हो गये फिर शादमाँ।
इस जगह से राम लक्ष्मण और सब उस जा गये, आश्रम मशहूर भारद्वाज ऋषि का था जहाँ।
राम को देखा मुनी ने दंण्डवत करते हुए, हो गये मशरुर बेहद हो गये वो शादमाँ।
अपने सीने से लगा कर दी दुआ दिल से उन्हें, और समझा यह कि है क़िस्मत की अपनी खूबियाँ।
उनको बिठलाया, नवाज़े और खातिर की बहुत, कन्द मूल ऐसे दिये जिससे कि हो शीरीं दहाँ।
राम सीता और लक्ष्मण गोह ने खाये ये कन्द, और थकावट दूर होने से हुए सब शादमाँ।
यह कहा उनसे मुनी ने नर्म अल्फ़ाज़ों में—राम, आज जप और तप हमारे हो गये पूरे यहाँ।

आपके दर्शन से बढ़ कर और कोई शै नहीं, आज दिल की आरजू पूरी हुई है बेगुमाँ।
राम ने तारीफ की उनकी निहायत शौक से, और सबसे कह सुनायी फिर मुनी की खूबियाँ।
और कहा जिस पर मेहरबाँ आप होते हैं, मुनी, सर झुका देता है उसके सामने सारा जहाँ।
राम के आने की जब फैली खबर उस तीर्थ में, लोग इकट्ठा हो गये सब उनके दर्शन को वहाँ।
राम फिर सबसे मिले सब इनसे मिल कर खुश हुए, करके दर्शन इनके वापस हो गये पीरोजवाँ।
शब वही आराम करके सुबह बाद स्नान के, फिर इजाज़त ली मुनी से और हुए आगे रवाँ।
राम ने पूछा मुनी से जाएँ हम किस राह से, यों कहा जिस राह से जाओगे होगे कामराँ।
जब मुनी ने राह बतलाने को शिष्यों से कहा, साथ जाने को हज़ारों हो गये हाज़िर वहाँ।
राम से थी सब को उल्फत, इसलिए कहते थे यह, राह सब देखी हुई हैं जानते हैं सब निशाँ।
साथ जाने चार लोगों का हुआ इनमें चुनाव, और मुनी से ली इजाज़त, हो के निकले शादमाँ।
जब गुजरते थे किसी ये गाँव से चलते हुए, दौड़ कर आते थे इन को देखने को सब वहाँ।
राम ने वापस किया चारों को थोड़ी दूर से, और ये सब शादोखुर्रम हो गये वापस रवाँ।
जो रहा करते थे जमनाजी के तट पर लोग सब, जब सुना आये निषाद हमराह हैं दो नौ जवाँ।
एक हसीन औरत भी हमराही में इन दोनों के है, दौड़ कर आये वो इनको देखने को बेगुमाँ।
जानना यह चाहते थे कौन है, कहते न थे, देख कर वह दिल ही दिल में हो रहे थे शादमाँ।
जो बड़े बूढ़े थे जिनको हाल सब मालूम था, वह गये पहचान इनको, कर दिया सब कुछ बयाँ।
सब हुए रंजीदा बेहद जब हुआ मालूम यह, बाप के अहकाम से बन को हुए हैं ये रवाँ।
एक छोटा सा तपस्वी जिसका चेहरा पुर जलाल, नम थी दोनों आँखें उसकी, गिर गया आकर वहाँ।
राम ने उसको उठाया और फिर लिपटा लिया, खुश किया उसको बहुत, और हो गया वह शादमाँ।
फिर मिला लक्ष्मण से भी वह गोहों के राजा से भी, और गिरा चरणों पे सीता के यकायक बेगुमाँ।
राम के दर्शन से हासिल हो गई उसको खुशी, हम बता सकते नहीं उसका कोई नामोनिशाँ।
लोग आपस में वहाँ करने थे ऐसी गुफ्तगू, जिन्होंने भेजा इन्हें बन, कैसे है वो बाप-माँ।
हो गये सब दंग और मोहित हुए बेहद सभी, देख कर नूर इनके चेहरों का और इनकी खूबियाँ।
राम ने समझा बुझा कर गोह को जाने कहा, हुक्म की तामील में वह हो गया वापस रवाँ।
राम सीता और लक्ष्मण आगे बढ़ने लग गये, राह में करते चले जमना की अज़मत का बयाँ।
राह में जो राहरो मिलते थे इनको देख कर, पूछते थे आप हैं कौन और जाते हैं कहाँ।
आप में तो शाहजादों के से हैं आसार सब, बन में पैदल फिर रहे है इस तरह क्यों बेगुमाँ।
शेर हाथी फिरते है हरदम भयानक इस जगह, आपके हमराह औरत भी है नाजुक नातवाँ।
साथ चलने के लिए कहिए तो हम तैयार है, हम भी आएँगे वहाँ तक आप जाते है जहाँ।
रामने कह सुनके उनको राह में वापस किया, सब की आँखों से मगर होने लगे आँसू रवाँ।
राह में जो लोग दर्शन से हुए थे मुस्तफीद, खूबिए किस्मत का उनका कर नहीं सकते बयाँ।
राम सीता और लक्ष्मण के जिन्हें दर्शन मिले, खुशनसीब उनसा है कौन, और ऐसी क़िस्मत हैं कहाँ।
रास्ते में देखते जाते थे सब जंगल पहाड़, हर परिन्दा और दरिन्दा मिल रहा था दरमियाँ।
राम जी का जब किसी कस्बे से होता था गुजर, दौड़ कर सब मर्द और औरत चले आते वहाँ।
इस तरह वो खुश थे जैसे उनको पारस मिल गया, दूसरों को भी वे कहते, जल्द आ जाओ यहाँ।
कोई तो पीछे चले जाता था सीता राम के, कोई चुप हो कर खड़ा था बेवजह और बेगुमाँ।

कोई बड़ के झाड़ के नीचे बिछा देता था घास, और कहता था कि दम ले लीजिए थोड़ा यहाँ।
ज़र्फ़ में पानी कोई लाता था पीने के लिए, और कहता था कि थोड़ा पीजिए पानी यहाँ।
रामने देखा कि सीता भी थकी माँदी है कुछ, झाड़ के नीचे वो बैठे, आ गये पीरों जवाँ।
राम का तेजस्वी चेहरा देख कर वो शाद थे, जिसकी है तारीफ़ और तौसीफ बेरून-अजबयाँ।
और लक्ष्मण का भी चेहरा था निहायत पुर जलाल, वो नज़र आते थे सबको सूरते मेहरेनयाँ।
सर पे आती थी जटा मिसले मुकट सबको नज़र, देख कर खुश थे पसीना उनके चेहरों पर रवाँ।
राम सीता और लक्ष्मण को थे ये सब घूरते, और करते थे इन्हीं पर सब निछावर अपनी जाँ।
सब मुहब्बत के थे प्यासे, वो थे ऐसा देखते, जिस तरह देखे हिरन रौशन किसी जा शमादाँ।
औरतें जाती थीं सीता के क़रीब और ख़ौफ से, पूछ न सकती थी उनका नाम, उनका खानदाँ।
पैर सीता के वो छू लेती थी जा कर बार-बार, रौब से खुलती न थी लेकिन किसी की भी जबाँ।
बाअदब हो कर कहा —रानी ज़रा बतलाइए, ये जो दो बैठे हुए है खूब सूरत नौजवाँ।
किस क़दर पुरनूर चेहरा है रसीली आँखें है, इक अनोखी शान इनकी हर अदा से है अयाँ।
आपके ये कौन होते हैं हमें मालूम हो, बेअदब हम लोग हैं, हों अफ़ू सब गुस्ताखियाँ।
मुसकुरायीं दिल में सीता और कुछ शर्मा गयीं, सोचती थी दिल मे, कैसी पड़ गयो आफ़त में जाँ।
नाम शौहर का बताने शर्म दामनगीर थी गर रहें खामोश तो हो जाएगी ये बदगुमाँ।
मृगनैनी थी जो सीता आखिरस कहने लगी, शर्म हायल थी, मगर इस पर भी कुछ खोली जबाँ।
छोटे जो देवर हैं मेरे नाम इनका लक्ष्मण, वह जो गोरे रंग के है खूबसूरत नौजवाँ।
अपने नज़रों के इशारे से दिखा कर राम को, यों कहा—यह है मेरे 'वो', मुसकुरा दी देखियाँ।
सुनके इतना इनसे वह सब औरतें खुश हो गयीं, जिस तरह जर पा के हो जाते है मुफलिस शादमाँ।
और कहती थीं रहे क़ायम तुम्हारा यह सुहाग, है ज़मी जब तक ये कायम और जमीं पर आसमाँ।
और मुहब्बत की नजर तुम पर रखे शौहर मुदाम, हो नज़र अल्ताफ़ की, हम पर रहो तुम शादमाँ।
वापसी में आप फिर दर्शन हमें देना जरूर, आपके सेवक है हम, करते है सरके अपनी जाँ।
जो मुनासिब था दिया सीता ने भी उनको जवाब, हो गये वो सब निहाल और हो गये सब शादमाँ।
राम का रुख देख कर लक्ष्मण खड़े चलने हुए, सबरो बोले राह जाने को करो हम पर अयाँ।
सबके चेहरों पर उदासी छा गयी जब यह सुना, राम लक्ष्मण और सीता हो रहे हैं अब रवाँ।
सब खुशी ग़ायब हुई और हो गये रंजीदा दिल, जिस तरह दौलत किसी की छिन गयी हो बेगुमाँ।
सब्र से बस काम ले कर दिल बड़ा अपना किया, रास्ता बतला दिया किस मिस्त से हो वे रवाँ।
राम सीता और लक्ष्मण खन्दा पेशानी के साथ, सब से मिल-जुल कर वहाँ से हो गये फ़ौरन रवाँ।
लौटते थे जब घरों को लोग होते थे उदास, और कहते थे कि हे सब काम जग के रायगाँ।
चाँद को रोगी बनाया और खारा बहर को, है अजब लीला किया शहजादों को बन को रवाँ।
ऐसे लोगों के नसीबों में अगर बनवास है, फिर महल ऐवानो ड्योढ़ी का है रहना रायगाँ।
जब ज़मीं पर और पत्तों पर है सोते लोग ये, सेज सुन्दर होगी फिर किसके लिए राहत रसाँ।
जब यह नंगे पैर चलते जा रहे हैं राह में, फिर यह रथ किस के लिए है फील और अस्पेरवाँ।
झाड़ के नीचे बसर होती अगर ऐसो की है, क्यों बने यह कसर आलीशान मिसले आसमाँ।
ऐसे तेजस्वो पुरुष पहने अगर मुनियों का भेष, किसलिए कमखाबो अतलस और है यह गनियाँ।
ये जो खाते फिर रहे है कंद मूल और फूल फल, किसलिऐ खाने पकाते हैं लजीज अहलेजबाँ।

हमने दुनिया में बहुत कुछ है सुना, देखा मगर, हस्तियाँ ऐसी जो सच पूछो तो मिलती है कहाँ।
उनका सानी कोई दुनिया में नहीं जब बन सका, लाके जंगल में किया परमात्मा इनको निहाँ।
सब यह कहते थे कि क़िसमत के धनी हम लोग हैं, इनके दर्शन से हुए हैं कामगारों कामराँ।
और कहते थे कि जगल में ये कैसे जाएँगे, अलगरज हर एक की आँखों से आँसू थे रवाँ।
कोई कहती थी अगर भगवान सुन ले मेरी बात, मैं यह चाहूँगी रहे ये मेरी आँखों में निहाँ।
लोग जो आये नहीं, दर्शन नही वो पा सके, देख लेते इनको, उनकी ऐसी क़िस्मत थी कहाँ।
बाद इसके आये जो वह दौड़ कर आगे गये, चूम कर चरणों को उनके हो गये सब शादमाँ।
जितने भी माजूर थे जाने से जो मजबूर थे, रह गये अफ़सोस करते, हाथ मलते बेगुमाँ।
रास्ते में बस्तियों से इनका होता था गुज़र, लोग दर्शन पा के हो जाते थे खुर्रम शादमाँ।
जब उन्हें मालूम होता वन को जाने का सबब, राजाओरानी के होते थे वह शाकी बेगुमाँ।
कोई कहता था कि राजा ने किया अच्छा ये काम, जिसके बाअस इनके दर्शन पाये हमने नागहाँ।
बापोमाँ और गाँव इनका क़ाबिले तारीफ़ है, और वह जा भी मुक़द्दस है, ये जाते हैं जहाँ।
हर तरफ जंगल में होता है इन्हीं का ज़िक्र खैर, और हर एक गाँव में होती बयाँ हैं खूबियाँ।
रास्ते मे देखते जाते थे जंगल की बहार, राम लक्ष्मण और सीता होते थे जिस दम रवाँ।
राम लक्ष्मण को किया खालक ने पैदा खूबतर, हो रहा है जिनकी जंगल में बयाँ यह खूबियाँ।
रास्ते में इस तरह लोगो को खुश करते हुए, राम सीता और लक्ष्मण होते जाते थे रवाँ।
सामने थे राम और पीछे थे भाई लक्ष्मण, बीच में दोनों के सीता चल रही थी बेगुमाँ।
बीच में दोनो के यह जो थी यह है इसकी मिसाल, जिस तरह माया ब्रह्म और जीव के हो दरमियाँ।
या ये समझो चन्द्रमा मौजूद हों और बुध भी हों, रोहनी बैठी हुई हो साथ में जलवा कुनाँ।
नक्शे पा को राम के हर एक क़दम पर देखती, पैर इन पर पड़ न जाए हो रही थीं यों रवाँ।
लक्ष्मण जो राम और सीता की हमराही में थे, वह बचा कर चल रहे थे इनके पैरों के निशाँ।
राम लक्ष्मण और सीता की मुहब्बत देख कर, सब दरिन्दे और परिन्दे हो रहे थे शादमाँ।
हो गया दर्शन जिसे बस उसका बेड़ा पार था, मिल गयी उसको नजात और हो गया वह कामराँ।
आज भी जो याद करले ख्वाब ही में देख ले, बिल यकीं उसको मयस्सर हो हयाते जावेदाँ।
राम ने देखा कि चलते-चलते सीता थक गयी, एक बड़ का झाड़ था और एक कुआँ भी था वहाँ।
ठहर कर उस जा इन्होंने खा लिये कुछ कन्द-मूल, रात भर रह कर वहाँ से हो गये तड़के रवाँ।
राह में वह देखते थे वन को और तालाबों को, आश्रम था वाल्मीकि जी का ये सब पहुँचे वहाँ।
राम ने देखा मुनी की है जगह रहने की खूब, खूबसूरत है पहाड़ और वन में पानी भी वहाँ।
थे कमल फूले हुए उन पर थे भौंरे गूंजते, सब परिन्दे और चरिन्दे शादोखुर्रम थे जहाँ।
राम ने देखा यह मंज़र अपने दिल में खुश हुए, वाल्मीकि ने भी सुना, हैं राम जी आए यहाँ।
पेशवाई के लिए उनको वो आगे आ गये, राम जी ने अर्ज़ की दण्डोत् बढ़ कर नागहाँ।
देख कर इनको मुनी बेहद हुए मसरूरो शाद, ले कर आये आश्रम में इनको हो कर शादमाँ।
अपने मेहमानों को खाने को दिये वो कन्दमूल, और सोने के लिए इनको जगह भी दी वहाँ।
वाल्मीकि जी के मन का हाल कहना है मुहाल, देख कर वह राम की सूरत थे बेहद शादमाँ।
राम जी ने उनसे अपना हाल सारा कह दिया, किस तरह कैकेई ने उनको किया वन को रवाँ।
बाप-माँ के हुक्म की तामील मुझसे हो गयी, और होने वाले हैं भाई भरत अब हुक्मराँ।

खुशनसीबी से हमारी सब यह सामाँ बन गया, आप यह बतलाइए हम जा के ठहरें अब कहाँ।
हो अगर कोई मुनी हमसे न उनको दुख मिले, क्योंकि गुस्सा भी मुनी का होता है ईज़ा रसाँ।
राम की यह बात सुन कर वाल्मीकि खुश हुए, और फ़रमाने लगे तुम हो चिराग़े खानदाँ।
आप ज्ञानी वेद के है और मर्यादा पुरुष, आपकी कृपा से ही मिलता है यह सारा जहाँ।
और लक्ष्मण जी जो हैं वे शेष के अवतार है, जिनकी कर सकता नहीं हूँ मैं बयाँ कुछ खूबियाँ।
आप दोनों ने लिया औतार है इस वास्ते, ता सजा पायें वह दुनिया में जो हैं ईज़ा रसाँ।
आपकी तारीफ़ करने की मुझे ताक़त नहीं, इसको लिखने की कलम में है मेरे ताक़त कहाँ।
ब्रह्मा, विष्णु और शंकर आपके ताबे है सब, आपकी माया है बाला, आप सब पर हुक्मराँ।
आप जिसको चाहते हैं आपको पाता है वह, जो भगत है आपका रहता है हरदम शादमाँ।
आप ने औतार दुनिया में लिया किस वास्ते, भेद इसका जानते है लोग जो है रमज़दाँ।
लोग जो नादान हैं समझे हैं राजा आपको, और जो ज्ञानी हैं, उन पर भेद है यह सब अयाँ।
आप जो कुछ कर रहे हैं ठीक है इस रंग में, काम वैसा चाहिए, जैसा कि बाँधा है समाँ।
पूछते हो मुझसे यह क्यों—मैं कहाँ जा कर रहूँ, वह जगह है कौन-सी रहने नहीं हो तुम जहाँ।
फिर भी सुनलो मुझमे रहने की जगह है कौन-सी, जिस जगह रहना है तुमको उसका करता हूँ बयाँ।
आपकी तारीफ़ जो सुनते हैं अपने कान से, फिर भी वह भरते नहीं नदियों के जैसे बेगुमाँ।
उनके दिल में आप कीजेगा मुकाम ऐ राम जी, फ़ौज से जो आपके होते हैं हरदम शादमाँ।
याद करते हैं जो खाने और पीने में तुम्हें, सर झुका देते गुरु के सामने हैं बेगुमाँ।
देवी की पूजा जो करते हैं लगा कर अपना मन, जो ब्राह्मण के हुआ करते हैं दिल से कद्रदाँ
आप ही का जिनको रहता है भरोसा रात दिन, आप ही का नाम जिनके रहता है विरदे जबाँ।
जो हवन तपणं करें या जो ब्रह्म भोजन करें, दान देते है ब्राह्मण को जो हो कर शादमाँ।
जो गुरु को आप ही-सा जान कर हैं पूजते, और उन पर अपनी कर देते निछावर हैं जो जाँ।
करके सब कुछ फिर भी उसके फल की इच्छा ना करें, हासिले मकसूद का जिनको न हो शानोगुमाँ।
आपके चरणों में जिनका दिल लगा हो रात-दिन, आप ऐसों के ही दिल में जाके रहिए बेगुमाँ।
काम, क्रोध और मद न हो और मोह भी अभिमान भी, लोभ और माया का जिनमें न हो कुछ शानोगुमाँ।
जिनको दुःख और सुख नज़र आते बराबर हों मुदाम, और हों सबके लिए आरामदेह राहत रसाँ।
सोच के करते है बातें और जो कहते हैं सच, आपकी तौसीफ़ में रहते हैं जो रतबुललसाँ।
ग़ैर की दौलत को जो कोई समझता ज़हर हो, जानता है ग़ैर औरत को बहन और अपनी माँ।
ग़ैर की तकलीफ़ को देखे जो कोई दर्द से, ग़ैर के आराम को देखे जो हो कर शादमाँ।
आपको मालिक गुरु साथी जो समझा है कोई, आप ही को जो समझता है वह अपने बाप-माँ।
आप सीता और लक्ष्मण जाके रह जाएँ वहीं, उनका दिल ही आपके रहने की जा है बेगुमाँ।
जो बुराई छोड़ कर करते भलाई के हैं काम, गाय माता और ब्राह्मण पर हैं रहते मेहरबाँ।
आपको अच्छा समझ कर खुद को जो समझे बुरा, आपके सेवक पै करता हो फ़िदा जो अपनी जाँ।
आप को जो याद करता हो उसे कब चाहिए, जात पाँत और धन हुकूमत इज़्ज़ो दौलत खानदाँ।
स्वर्ग हो या हो नरक कुछ इम्तियाज़ उसको नहीं, आप हों नैनों में जिसके रात दिन जलवाकुनाँ।
जानोदिल से आपका सेवक जो हो ऐसे का दिल, आपके रहने के क़ाबिल हैं वही बेहतर मकाँ।
प्रेम जिसको आपसे सच्चा हो लेकिन बेग़रज़, उसके मन में आप बसिए और हो जाएँ निहाँ।

वाल्मीकि ने बता दी इस तरह रहने की जा, राम उनकी गुफ्तगू से थे निहायत शादमाँ।
फिर कहा उनसे मुनी ने राम जी सुनिएगा अब, हालते मौजूदा की निसबत भी करता हूँ बयाँ।
चित्रकूट है एक पर्वत आप उस जा जाइए, हर तरह की है सहूलत और वन भी है वहाँ।
उस जगह मंदाकिनी नामी नदी भी एक है, जो कि गंगा जी के जल की एक धारा है वहाँ।
उसको अनुसूया ने अपने तप के बल जारी किया, अत्री जी की वो है बीबी आज मशहूरे जहाँ।
जिसके जल से पाप हो जाते है गायब इस तरह, जिस तरह बच्चो को खाती डाकिनी है नागहाँ।
और रहते है वहाँ पर और भी अक्सर ऋषी, रात दिन करते है जप तप योग यग वह बेगुमाँ।
आप चलिए उस जगह पर्वत को इज्जत दीजिए, और जा कर कीजिएगा आप सबको शादमाँ।
वाल्मीकि की बात सुन कर आप उसको मान कर, राम सीता और लक्ष्मण हो गये थे सब रवाँ।
ये गये मंदाकिनी मे और किए स्नान सब, राम ने दिल में यह सोचा, अब ठहर जाएँ यहाँ।
लक्ष्मण जी तब चले उत्तर नदी पै के करीब, देख आये थे धनुष की तरह एक नाला रवाँ।
वह धनुष ऐसा था जिससे पाप रूपी जानवर, सम व दम और दान से बनते थे तीरों का निशाँ।
चित्रकूट है एक शिकारी जो कि आगे था खड़ा, और निशाने से बुराई की था करता धज्जियाँ।
राम को ले जाके लक्ष्मण ने दिखाई वह जगह, राम ने जब उसको देखा हो गये बस शादमाँ।
देवता सब बन के आये उस जगह सब भील कौल, घास और पत्ते फ़राहम कर दिये ला कर वहाँ।
खूबसूरत झोंपड़ी दो जल्द बनवायी गयी, एक छोटी खूबसूरत दूसरी थी एक कलाँ।
राम सीता और लक्ष्मण जिसमें करते थे कयाम, उस जगह की खूबियाँ हम कर नहीं सकते बयाँ।
देवता और नाग किन्नर आये मिलने चित्रकूट, राम के प्रणाम से वो हो गये सब शादमाँ।
देवताओं ने निहायत आजिजी से अर्ज की, अपनी जो तकलीफ थी, की राम जी से सब बयाँ।
राम ने उनको तसल्ली दी दिलासा भी दिया, अपने अपने घर गये वो हो के शादो शादमाँ।
राम का आना सुना जब आये मिलने के लिए, सब ऋषि भी और मुनी भी और हर पीरोजवाँ।
मंडली आती हुई देखी ऋषि की राम ने, राम ने दण्डवत् की उन सबको हो कर शादमाँ।
हो के खुश इनको लगा लेते थे सीने से मुनी, और दुआ देते थे तुम हो शादकामों कामराँ।
देख कर लक्ष्मण को सीता राम को होते थे खुश, और समझते थे कि क़िस्मत की हैं अपनी खूबियाँ।
राम ने सबको रवाना कर दिया खातिर के बाद, मंडली सब की रवाना हो गयी वापस रवाँ।
राम के आने से बेखौफ़ी खतर सब हो गये, जग व तप अपनी जगह करते थे हो कर शादमाँ।
कौल भीलों ने सुना जब राम आये चित्रकूट, कन्द मूल और फल वो ले कर आये हो कर शादमाँ।
इनको जिसने था न देखा वह था सबसे पूछता, और जो देखा हुआ था हाल करता था बयाँ।
जो तहायफ साथ लाये थे दिये वे राम को, देखते ही तेज उनका छा गयी खामोशियाँ।
हाथ जोड़े सब खड़े थे सामने तसवीर-से, दिल में उनके थी उमंगे और थे आँसू रवाँ।
राम ने भी प्रेम से की गुफ्तगू उन सब के साथ, और वह कहते थे—मालिक आप आये हैं यहाँ।
यह हमारे ही मुक़द्दर से तो आना है हुआ, आपके चरणों से सब को मिल गया आरामेजाँ।
यह दरिन्दे और चरिन्दे और जंगल के परिन्द, आपकी तारीफ में है रात दिन रतबुललसाँ।
आपने रहने की अपने यह जगह की है पसन्द, शादो खुर्रम रह सकेंगे हर जमाने में यहाँ।
हम रखेंगे हर तरह महफ़ूज हर तकलीफ से, हम यहाँ के हाल से वाक़िफ़ हैं और हैं राज़दाँ।
आपको हम वन में लेजा कर कराएंगे शिकार, आपकी खिदमत बजा लाने को हैं सब बेगुमाँ।

आपके इरशाद की तामील को हाजिर हैं हम, हुक्म देने में ताम्मुल हो न ऐ शाहेशहाँ।
राम उनकी बात को सुनते तवज्जो से थे यों, जिस तरह है बाप सुनता अपने बच्चों का बयाँ।
राम ने भी गुफ़्तगू की नर्मी व एखलाक से, सुनके जिसको हो गये सब भील खुर्रम शादमाँ।
राम सीता और लक्ष्मण उस जगह रहने लगे, और जो आये थे उनको कर दिया वापस रवाँ।
राम जब से आ कर उस जंगल में रहने लग गये, हो गया सरसब्ज़ वह छाई बहारें जावेदाँ।
चलती रहती थी हमेशा हर तरफ़ बादे बहार, और भौरे गूंजते रहते थे वन के दरमियाँ।
कोयल और तोते पपहिये और चकवे भी चकोर, दिल लुभाने वाली ये सब बोलते थे बोलियाँ।
शेर हाथी हो कि बन्दर या कि हो कोई हिरन, मिलके सब आपस में रहते थे मिसाले दोस्ताँ।
जितने वन दुनिया में थे सब उसके आगे हेच थे, और नदी नाले थे सब मंदाकिनी के मदहख्वाँ।
वह हिमालय जो कि है मशहूर—या दीगर पहाड़, सब यह कहते थे कि विंध्याचल बना इज्ज़तरसाँ।
उस जगह के सब परिन्दे जानवर डाली व झाड़, ऐसे फूले जिनकी खूबी देख करते थे बयाँ।
जानदारों को तो दर्शन से मिला दर्शन का फल, और बेजानों को रजचरणों की थी राहतरसाँ।
हम बड़ाई क्या करें उस कोह के एजाज़ की, रामचन्दर ने किया जा कर मुकाम अपना जहाँ।
छोड़ कर आये अयोध्या को ये जिस जा रामचन्द्र, किस तरह हम कह सकेंगे उस जगह की खूबियाँ।
रामचन्द्र की इनायत से थे लक्ष्मण जी मुदाम, याद उनको घर कभी आया न अपने बाप-माँ।
और सीता भी रहा करती थी हरदम शादकाम, याद उनको भी कभी आये न अहले खानदाँ।
देख कर शौहर का मुखड़ा इस तरह रहती थी शाद, जिस तरह है चाँद से रहती चकोरी शादमाँ।
राम की अपने से उल्फ़त देख कर वह शाद थीं, इसलिए उनको अयोध्या से था वन राहतरसाँ।
साथ शौहर का जो था, थी झोपड़ी प्यारी उन्हें, जानवर ऐसे थे प्यारे जैसे अहले खानदाँ।
ऋषि-पत्नी पास थीं, और श्वसुर थे ऋषिगण सभी, कन्दमूल और फल पे होता उनको अमृत का गुमाँ।
सेज पत्तों की हज़ारों सेज से बेहतर थी वह, साथ शौहर का उन्हें हर तरह था राहतरसाँ।
राम की पत्नी से क्योंकर हो न मुमकिन इस तरह, ऐश और आराम का उनको न था शानोगुमाँ।
राम भी वह काम करते जिससे भाई लक्ष्मण, और सीता भी रहें हर वक़्त शादोशादमाँ।
दिल लगा कर लक्ष्मण सीता सुना करते थे सब, राम जो किस्से कहानी रोज करते थे बयाँ।
याद आ जाती अयोध्या की कभी या भरत की, या कभी जब याद आ जाते उन्हें थे बाप-माँ।
फ़िक्र में और सोच में थे डूब जाते रामचन्द्र, और भरत का नाम रहता था फकत विरदे जबाँ।
सोच कर फिर खुद नजाकत वक्त की रहते थे चुप, भाई और पत्नी से करते रहते थे क़िस्से बयाँ।
अलग़रज वह इस कुटी में इस तरह थे शादकाम, जैसे रहता इन्द्र है अमरावती में शादमाँ।
जिस तरह पलकें हैं आँखों की महाफिज रात दिन, राम सीता और लक्ष्मण के थे रहते निगहबाँ।
राम सीता का रहा करता था लक्ष्मण को खयाल, जैसे अपने जिस्म का होता है जाहिल क़दरदाँ।
राम जो सबको थे प्यारे और थे सब को अजीज, इस तरह वन में रहा करते थे हो कर शादमाँ।
राम की जैसे गुजर होती थी सब कुछ कह दिया, किस तरह सुमंत लौटा अब सुनो मुझसे बयाँ।
देखता क्या है कि रथ है, मंत्री हैं बेकरार, राम को जब छोड़ कर वापस निषाद आया—यहाँ।
हो गया बेचैन वह भी देख कर यह कैफ़ियत, मैं नहीं उस वक़्त का कुछ हाल कर सकता बयाँ।
उसने जब देखा कि वापस आ गया तनहा निषाद, हाय का नारा था लब पर राम था विरदे जबाँ।
हाय लक्ष्मण हाय सीता हाय प्यारे रामचन्द्र, इस तरह कहते हुए करता था वह आहो फुगाँ।

रथ के घोड़े हिनहिनाने—उस तरफ थे दौड़ने, हो गये थे जिस तरफ राम और सीता रवाँ।
जिस तरह बेचैन पक्षी हों, न हों गर उसको पर, रथ के घोड़े मुज़तरिब थे और थे आँसू रवाँ।
दाना और चारा नहीं खाते थे घोड़े मुतलक़न, देख कर ये लोग सब करने लगे आहोफ़ुगाँ।
कुछ सँभल कर बाले यूँ सुमंत से राजा निषाद, सब्र से कुछ काम लीजै आप तो है नुकतादाँ।
कुछ सुनाये उनको क़िस्से और समझाया बहुत, आखिरस ला कर बिठाया उनको रथ के दर्मियाँ।
हाँक सकते थे नहीं घोड़ों को अपने हाथ से, इस क़दर वह राम के दुख में हुए थे नातवाँ।
इस क़दर घोड़े थे बेकल राह पर चलते न थे, जंगली जैसे कोई घोड़े जुते हों नागहाँ।
देखते जाते पलट कर थे वे पीछे दम बदम, राह चलने में वे ठोकर खा रहे थे बेगुमाँ।
राम लक्ष्मण का किसी के मुँह से सुन लेते जो नाम, प्यार से वह देखते जाते थे उसको बेगुमाँ।
अलग़रज़ घोड़े बहुत बेचैन थे और बेक़रार, उनकी बेचैनी की हालत हो नहीं सकती बयाँ।
देख कर राजा ने मंत्री और इन घोड़ों का हाल, चार अच्छे नौकरों को कर दिया हमराह रवाँ।
भेज कर सबको हुआ रंजीदा दिल वह इस क़दर, हो नहीं सकता है उसके हाल का कोई बयाँ।
जानिबे मुल्के अवध रथ को लिए जाते थे वो, देख कर घोड़ों को हो जाते थे खुद जारी कुनाँ।
सोचते थे मंत्री जीना मेरा बेकार है, राम की फ़ुरक़त में क्यों जाती नहीं है मेरी जाँ।
जिस्म मेरा बन गया है पाप का भंडार एक, क्यों न हो टुकड़े मेरे इस जिस्म के हो नागहाँ।
हाथ मलते थे वो अपने और छाती पीटते, जिस तरह कंजूस ने खोयी हो दौलत नागहाँ।
या कोई हो सूरमा जो जंग में जाये मगर, भाग कर मैदान से वापस हुआ हो बेगुमाँ।
या कोई अच्छा ब्राह्मण सुरा धोके से पिये, और फिर पछताये खुद—करने लगे आहोफ़ुगाँ।
नेकख़ू औरत कोई शौहर से अपने हो जुदा, ज़िन्दगी अपनी उसे हो जाती है बारेगिराँ।
यों ही थी सुमंत जी के मन में ज्वाला और जलन, मूँद ली थी आँखें लेकिन अश्क थे पैहमरवाँ।
अक़्ल हैराँ, कान बहरे, होठ थे सूखे हुए, रंज और दुख दर्द में वो हो गये थे नीमजाँ।
जब गुज़र जाएँगे चौदह साल वो फिर आएँगे, इस भरोसे पर निकलती ही नहीं थी उनकी जाँ।
रंग चेहरे का उड़ा था ऐसे आते थे नज़र, क़त्ल माँ का बाप का जैसे हुआ हो नागहाँ।
जा रहा हो नरक में कोई पापी जिस तरह, सोचता जाता है कैसे राह में वह बेगुमाँ।
सोचते जाते थे जा कर मैं अयोध्या क्या करूँ, लोग मेरी शक्ल तक देखें नहीं मुमकिन वहाँ।
क्या जवाब मैं उनको दूँगा लोग सब पूछें अगर, राम और सीता कहाँ है और लक्ष्मण है कहाँ।
उनकी माताएँ जो पूछेंगी तो दूँगा क्या जवाब, कौन-सा होगा जवाब ऐसा मेरा राहतरसाँ।
गाय माता जिस तरह नौजाद बछड़े के लिए, दौड़ कर आएँ, अगर आएँ वहाँ भी उनकी माँ।
मुझको कहना ही पड़ेगा राम-सीता-लक्ष्मण, कोई भी वापस न आये हो गये वन को रवाँ।
हाय मुझको हर कमीनाकस से यह कहना पड़ा, है ये गोया लौट कर आने की मेरी खूबियाँ।
दुख-भरे महाराज जब पूछेंगे क्या बोलूँगा मैं, किस तरह उनको सुनाऊँ जा के सारी दास्ताँ।
वन को वह तीरों गये मालूम हो जाये अगर, बस तड़प कर ही निकल जाएगी उनकी अटकी जाँ।
राम की फ़ुरक़त में मेरी जान क्यों जाती नहीं, राम सहने के लिए कालन में है यह मेरी जाँ।
इस तरह वह सोचते तमसा नदी पर आ गये, कर दिया कह-सुनके उन चारों निषादों को रवाँ।
शहर में होते थे दाख़िल इस तरह छुपते हुए, जैसे हो कातिल गुरु या, गो-ब्राह्मण का निहाँ।
दिन गँवाया झाड़ के नीचे ठहर कर एक जगह, शहर में दाख़िल हुए जब रात का छाया समाँ।

जब महल पर शाह के पहुँचे तो रथ को छोड़ कर, हो गये चुपके से खामोशी के साथ अन्दर रवाँ।
हो गयी मालूम जिनको इनके आने की खबर, दौड़ कर आने लगे वो रथ खड़ा था वह जहाँ।
देख कर घोड़ों को बेकल हो गये सब बेकरार, जैसे पानी की कमी से है तड़पती मछलियाँ।
ये अकेले आये हैं सुन कर हुए बेचैन सब, छा गयी सब पर उदासी हो गये सब नीमजाँ।
शहर की ड्योढ़ी उन्हें लगती थी जैसे एक मसान, रानियाँ सब पूछती थी हो के बेताबोतवाँ।
मंत्री जी को इसका कुछ उत्तर नहीं था सूझता, आँख से दिखता न था और बन्द थी उनकी जबाँ।
सामने जो इनके आता था वह उससे पूछने, यह बताओ हमको तुम राजा हमारे है कहाँ।
देख कर इनको निहायत मुजतरिब और बेकरार, महल मे कौशल्या जी के ले गयीं सब दासियाँ।
वो यहाँ राजा को जा कर देखते है इस तरह, जैसे अमृत के बिना हो चन्द्रमा जलवा कुनाँ।
फेंसी जेवर कुछ नहीं था, थे जमीं पर लोटते, सांस लम्बी ले रहे थे, छायी थी खामोशियाँ।
आबदीदा हो रहे थे हर घड़ी हर लमहा वो, मुजतरिब हो कर वो खो देते थे सब ताबोतवाँ।
जिस तरह संपाती पर जलने से बेकल हो गया, यों ही राजा के तड़पता जिस्म मे था मुर्झा।
हाय राम और राम प्यारे कह रहे थे बार-बार, राम-लक्ष्मण-जानकी के नाम थे विर्देजबाँ।
मंत्री जी ने बाअदब झुके किया प्रणाम जब, सुनके उठ बैठे और पूछा राम मेरा है कहाँ।
जिस तरह डूबे हुए को कुछ सहारा मिल गया, उनको सीने से लगाया गरचे आँसू थे रवाँ।
यों मुखातिब हो के राजा ने कहा सुमंत से, ऐ मेरे सच्चे, वफादार और मेरे मेहरबाँ।
खैरियत का राम-लक्ष्मण का सुनाओ मुझको हाल, राम-लक्ष्मण किस तरह हैं, और सीता है कहाँ।
उनको पलटा कर हो लाये, या कि बन में छोड़ कर, सुनके यह थे मंत्री की आँख से आँसू रवाँ।
वो गुणों का राम के थे जिक्र करते बार-बार, और कहते थे वह उनका हाल हो मुझसे बयाँ।
राजगद्दी दूँगा कह कर बन को भिजवाया उसे, राम इस पर भी न था गमगीन—ना कुछ शादमां।
मुझ-सा पापी हाय दुनिया में न होगा कोई और, ऐसे बेटे के बिछड़ने पर न क्यों जाती है जाँ।
राम-लक्ष्मण हो जहाँ मुझको भी पहुँचा दो वहीं, वर्ना थोड़ी देर मे तन से निकल जाएगी जाँ।
मुझको अब जल्दी दिखा दो मेरे बच्चों की शकल, और उनकी कैफियत मुझसे करो जल्दी बयाँ।
सब करके मंत्री भी इस तरह कहने लगे, आप पण्डित है महाराज और ज्ञानी बेदराँ।
आप साबिर है फ़कीरों का रहा हर वक्त साथ, जानते है दुःख व सुख क्या है व क्या सूदोजियाँ।
जिन्दगी और मौत—प्यारों का बिछड़ना या मिलाप, अपने-अपने कर्म की गोया है सब पाबन्दियाँ।
काम ज्ञानी का है कि आराम में हँसता रहे, और जब तकलीफ मे हो वह रहे जारी फुगाँ।
दोनो हालत में रहे वह एक-सा ज्ञानी है जो, आप भी अब सब्र से ले काम ऐ शाहेजहाँ।
यों कहा तमसा नदी पर उनका पहला था मुकाम, दूसरा उस जा हुआ जिस जा कि गंगा है रवाँ।
दोनों भाई और सीता पानी पी कर रह गये, और गंगा जी पे आ कर कर लिया स्नान वहाँ।
केवट आया और खिदमत इनकी अच्छी तरह की, रात को सिंगौर ही में रह गये सब बेगुमा।
दूसरे दिन सुबह बड़ का दूध मँगवाया गया, अपने अपने सिर पे दोनो ने जटा बाँधी वहा।
राम के कहने से केवट ने फराहम कर दी नाव, सीता पहले राम फिर उसमें हुए जलवाकुनाँ।
बाद इसके लक्ष्मण ले कर इजाजत राम से, चढ़ गये उस पर लिए एक हाथ मे तीरोकमाँ।
बेक़रारी देख कर मेरी कहा यों राम ने, बाप की खिदमत में आदाब अर्ज कीजे बेगुमाँ।
पैर छू कर यह भी कहना फ़िकर कीजै कुछ न आप, राह और जंगल में हर जा हम रहेंगे शादमाँ।

आपके एहकाम की तामील करके आऊँगा, आपके परताप से हर जा-रहूँगा शादमाँ।
और सब माताओं से भी आप करना इल्तेजा, फ़िक़र का उनको न कुछ बाक़ी रहे नामोनिशाँ।
बाप के आराम का सबको रहे हरदम लिहाज़, कीजिए वह काम जिससे खुश रहें और शादमाँ।
अर्ज़ करना यह गुरु जी से कि वह उपदेश दें, जो कि हों महाराज को हर तरह से राहतरसाँ।
शहर के लोगों को कहना मुझको होगा वह अजीज़, जिसकी खिदमत से महाराजा रहेंगे शादमाँ।
भरत से मेरा संदेश यह कहो जब आये वह, रीत से हरगिज़ न हटना भाई बन कर हुक्मराँ।
जानोदिल से तुम रिआया परवरी करते रहो, और समझो है बराबर जितनी है सब अपनी माँ।
बाप-माँ की और सबकी हर तरह सेवा करो, बाप को कुछ सोग का हरगिज़ न हो शानोगुमाँ।
लक्ष्मण कुछ सख्त कहने को थे कि रोका राम ने, और कसम दे कर कहा कहना न जा कर यह वहाँ।
जानकी भी दस्तबस्ता अर्ज़ करने को जो थीं, हो गये लब बन्द आंखों से हुए आँसू रवाँ।
राम का रुख देख कर केवट ने किश्ती दी बढ़ा, इस तरह वो चल दिये और मैं रहा मातमकुनाँ।
किस क़दर तकलीफ़ मुझको है कहूँ क्या आप से, जिन्दा रह कर आपसे यह कर रहा हूँ सब बयाँ।
इस क़दर कहते हुए वो हो गये खामोश कुछ, आँख में आंसू भर आये बन्द थी मुँह में ज़बाँ।
सारथी से सुन के यह राजा ज़मी पर गिर गये, माहिये बेआब से तड़पे ज़मीं पर नागहाँ।
रानियाँ रोने लगीं और शोर बरपा हो गया, कर नहीं सकता कोई उस वक़्त की हालत बयाँ।
शोर अन्दर का सुना जब मच गया कोहराम एक, शहर का हर आदमी हो कर रहा नालाकुनाँ।
राजा दशरथ के तमाम आज़ा हुए बेकार से, दम लबों पर आ गया और खुश्क थी मुँह में ज़बाँ।
जिस तरह पानी न हो तो सूख जाता है कमल, यों ही राजा के भी सब जाते रहे ताबोतवाँ।
देखा कौशल्या ने सूरज डूबने को आ गया, वक़्त की देखी नज़ाकत, यों हुई गौहरफ़शाँ।
ऐ महाराजा निहायत सब्र से अब काम लो, राम सीता की जुदाई बहर है एक बेकराँ।
यह अयोध्या है जहाज़ और आप ही मल्लाह हैं, यात्री सब लोग है बैठे हैं इनके दर्मियाँ।
आप हिम्मत गर करेंगे पार हो जायेगी नाव, वर्ना हम सब डूब जायेंगे ये है बिल्कुल अयाँ।
इल्तेजा मेरी यह सुन लें आप ऐ आक़ा मेरे, राम लक्ष्मण और सीता फिर मिलेंगे बेगुमाँ।
सुनके रानी के वचन राजा ने आंखें खोल दीं, जैसे पानी गिर के बिजली की तड़प हो रायगाँ।
करके हिम्मत राजा उठ बैठे कहा बतला सुमंत, राम मेरा है कहाँ लक्ष्मण व सीता है कहाँ।
हो के बेकल रो रहे थे राजा दशरथ बार-बार, रात आ थी हर घड़ी सबके लिए बारेगिराँ।
याद राजा को तपस्वी का वह किस्सा आ गया, जिसने दी थी बद्दुआ राजा ने फर्माया बयाँ।
इस तरह कहते हुए राजा हुए बेचैन फिर, और कहा है राम मेरा लख्तेदिल आरामेजाँ।
जब नहीं वह पास तो यह जिन्दगी बेकार है, किसलिए बाक़ी रखूं यह अपना तन और अपनी जाँ।
हाय प्यारे राम तुम से छूट कर अर्सा हुआ, तुम कहाँ हो और लक्ष्मण और सीता है कहाँ।
राजा दशरथ की ज़बाँ पर राम ही का नाम था, और महाराजा हुए वैकुन्ठ को आखिर रवाँ।
सच जो पूछो जीने मरने का मजा उनको मिला, जिन्दगी में देख कर उनको हुए ये शादमाँ।
और मरे भी तो फ़क़त उनके ही सदमें से मरे, खुशनसीबी कर नहीं सकता कोई इनकी बयाँ।
रानियाँ गिर कर ज़मी पर रो रही थी ज़ार-ज़ार, और राजा की बयाँ करती थी सारी खूबियाँ।
वहाँ पर शाही मुलाज़िम जो थे सब रोने लगे, और बाहर लोग सब होने लगे मातमकुनाँ।
हर गली कूचे में मातम एक पल में छा गया, सब यही कहते थे डूबा आफ़ताबे ख़ानदाँ।

और यही कहते थे दुनिया में अँधेरा छा गया, कैकेई को मर्दोज़न सब दे रहे थे गालियाँ।
इस तरह वह रात गुज़री जब सवेरा हो गया, हो गये सब जमा ज्ञानी और मुनी जो थे वहाँ।
गुरु वशिष्ठ आये, हुए ख़ामोश सुन कर उनसे सब, जब कि बातें ज्ञान की कुछ कीं गुरुजी ने बयाँ।
तेल भर कर नाव में रख दी गयी राजा की लाश, भरत को लाने किया दूतों को भी फ़ौरन रवाँ।
और कहा राजा के मरने का न कहना हाल कुछ, बस यही कहना कि दोनों भाई आ जाएँ यहाँ।
हुक्म सुन कर यह गुरु का चल दिये पैग़ामबर, इस तरह जाते थे जल्दी जिस तरह अस्पेदवाँ।
जब से होने लग गये उल्टे अयोध्या में ये काम, भरत को भी ख़्वाब पड़ते थे नहीं अच्छे वहाँ।
सुबह उठ कर रोज़ करते थे वो इनका तज़करा, रात में जब देखते थे वो कोई ख़्वाबेगिराँ।
ब्राह्मण भोजन हुआ करता था, देते दान थे, और रुद्र अभषेक भी होता कभी था बेगुमाँ।
और दुआ करते थे भाई दोनों और सब अक़रबा, ख़ैरियत से हों अयोध्या में हमारे बाप-माँ।
पहुँच कर पैग़ामबर ने भरत से जा कर कहा, आप को अपने गुरु ने है कहा जल्दी वहाँ।
भरत ने पैग़ाम जब अपने गुरु का यह सुना, दिल में करके याद गनपति के हुए फ़ौरन रवाँ।
रास्ते में जो नदी नाले पहाड़ उनको मिले, तेज रफ़्तारी से जाते उनके थे अस्पेरवाँ।
सोचते जाते थे मैं जल्दी पहुँच जाऊँ अवध, हो अगर मुमकिन तो मैं उड़ कर चला जाऊँ वहाँ।
हर घड़ी उनके लिए मालूम होती थी बरस, अलग़रज़ चलते हुए वह आ गये क़ुर्बेमकाँ।
सब नजर आने लगे उनको वहाँ पर बदगुमान, खर सियार उल्टी ही अपनी बोलते थे बोलियाँ।
सब नदी तालाब सूखे और बग़ीचे खुश्क थे, और वहशतनाक था शहरे अयोध्या का समाँ।
जानवर जितने थे आते थे नजर वे सब दुःखी, भरत हैराँ हो गये बस देख कर ऐसा समाँ।
शहर से सब मर्द-औरत रंज में डूबे हुए, जिस तरह खोयी किसी ने अपनी पूँजी नागहाँ।
राह में मिलते थे जो कहते नहीं थे मुँह से कुछ, सिर झुका कर चुपके बाज़ू से वो हो जाते रवाँ।
भरत को भी पूछने मे कुछ तआम्मल हो गया, क्योंकि उनके दिल में बढ़ने लग गए वहमोगुमाँ।
रास्ते बाज़ार मे रौनक नही बाकी थी कुछ, आग जैसे लग गयी हो हर तरफ एक नागहाँ।
जब सुना कैकेई ने कि भरत उसका आ गया, वह निहायत हो गई मसरूर खुश और शादमाँ।
आरती ले कर वो दरवाजे पर आयी दौड़ कर, शत्रुघ्न और भरत को वह ले गयी अपने मकाँ।
भरत ने देखा कि घर मे हर कोई है रंज मे, जिस तरह पड़ जाए पाला कमल-दल पर नागहाँ।
कैकेई थी एक ही जो खुश नजर आती थी कुछ, भीलनी जैसे लगा कर आग होती शादमाँ।
देख कर लड़के को रंजीदा वो यों थी पूछती, मेरे मैके में तो सब है लोग शादोशादमाँ।
कैफ़ियत उनकी सुना कर भरत ने फिर यों कहा, ख़ैरियत से तो यहाँ है मेरे अह्लेखानदाँ।
भरत ने पूछा मेरी माँएँ कहाँ है और बाप, और सीता प्यारे भाई राम लक्ष्मण हैं कहाँ।
कैकेई ने अपने बेटे की ज़बाँ से जब सुना, अपनी आँखों से बनावट के किए आँसू रवाँ।
और जवाब ऐसा दिया जो तीर-सा उनको लगा, इस तरह आग़ाज कर दी उसने अपनी दास्ताँ।
प्यारे बेटे काम सब मैंने बनाए खूब थे, मन्थरा ने भी मदद की मेरी बेवहमोगुमाँ।
क़ुदरतन कुछ काम थोड़ा-सा बिगड़ कर रह गया, हो गये बैकुण्ठ को महाराजा दशरथ जी रवाँ।
इस क़दर सुनते ही दुःख से हो गये वो बेक़रार, और जमी पर गिर पड़े करते हुए आहोफ़ुगाँ।
आप जन्नत को गये मैंने मगर देखा नही, राम को भी—हैफ़ है—सौंपा नहीं शाहेशहाँ।
फिर ज़रा उठ कर वो बैठे और सँभल कर यों कहा, मौत का कारण हुआ क्या कुछ कहो तो मेरी माँ।

जहर भर दे चीर कर सीना कोई जिस तरह यों, कैकेई ने भरत से कर दी बयाँ सब दास्ताँ।
जब भरत ने सुना भाई राम वन को चल दिये, बाप का ग़म भूल कर चुप हो गये वो नागहाँ।
और समझे सब ख़राबी का हूँ बाइस मैं बना, हो गये ख़ामोश वो और बन्द थी मुँह में ज़बाँ।
देख कर बेटे को हैरां फिर वो समझाने लगी, ज़ख्म पर जैसे नमक छिड़का हो कोई नागहाँ।
ऐ पिसर महराज के दुख की ज़रूरत है नहीं, जिन्दगी में वो रहे हरदम निहायत शादमाँ।
हर तरह का सुख उठाया थे वो पाबन्दे धरम, और मर कर हो गये हैं ख़ुल्दकी जन्नतनिशाँ।
काम लो हिम्मत से और रंजो अलम को छोड़ दो, और तुम हो जाओ अब मुल्के अवध के हुक्मराँ।
भरत ने जब यह सुना उनकी हुई वह कैफ़ियत, ज़ख्म पर जैसे किसी ने रक्खी हों चिनगारियाँ।
साँस लम्बी ले कर उसने यों कहा है पापनी, कर दिया बरबाद तूने हाय मेरा ख़ानदाँ।
ऐसी बदनीयत अगर थी मुझको जिन्दा क्यों रखा, मैं हुआ जिस वक़्त पैदा क्यों न ले ली मेरी जाँ।
काट कर तू पेड़ को, पत्तों को है जो सींचती, फ़ायदे के बदले तू ने कर दिया मेरा ज़ियाँ।
राम लक्ष्मण से हों भाई और दशरथ से हों बाप, सूर्यवंशी नामवर मशहूर मेरा ख़ानदाँ।
क्या कहूँ तक़दीर को, कुछ बस मेरा चलता नहीं, कोख से तेरे हुआ पैदा मैं, तू है मेरी माँ।
यह बुराई जिस घड़ी दिल में तेरे पैदा हुई, टुकड़े-टुकड़े हो गया क्यों दिल न तेरा नागहाँ।
जब किये वरदान दो महाराज से तू ने तलब, क्यों न कीड़े पड़ गये मुँह में न क्यों टूटी ज़बाँ।
किस तरह राजा ने तुझ पर कर लिया था एतबार, अक्ल क्या मरने से पहले हो गयी उनकी रवाँ।
औरतों की चाल कुछ आती समझ में है नहीं, दांव उनके पेंच उनके समझ आते हैं कहाँ।
थे महाराजा हमारे या निहायत सादा दिल, किस तरह थे वो समझ सकते तेरी चालाकियाँ।
राम जिसको हो न प्यारा कौन है दुनिया में वह, ऐसा कोई भी नहीं जो है न उनका मदहख़्वाँ।
ऐसे अच्छे राम की तू क्यों मुख़ालिफ़ हो गयी, सच बता तू कौन है ऐ बदतरीं ईज़ारसाँ।
कोई हो तू सामने से मेरे जा फ़ौरन निकल, अब न दिखला मुझको मुँह तू अपना नंगे ख़ानदाँ।
राम की तू है मुख़ालिफ़ तुझसे मैं पैदा हुआ, मुझसे बढ़ कर कोई पापी होगा दुनिया में कहाँ।
है मेरी किस्मत ही फूटी मैं किसी से क्या कहूँ, और कुछ कहना मेरा तुझसे है बिलकुल रायगाँ।
शत्रुघ्न ने ये सुना जब और गुस्से में भरे, थे बड़े भाई के आगे बन्द थी मुँह में ज़बाँ।
आ गयी कुबड़ी वहाँ जब ज़ेवरों मलबूस से, उनको इसकी ये नहीं अच्छी लगी गुस्ताख़ियाँ।
जैसे जलती आग में डाला गया हो घी कहीं, वह भड़क उठे उसी दम जिस तरह बरकेतपाँ।
खींच कर एक लात मारी शत्रुघ्न ने ज़ोर से, चीख़ मारी, गिर गयी कुबड़ी ज़मीं पर नागहाँ।
उसका सिर फूटा, कमर टूटी, गये कुछ दांत टूट, ख़ून भी कुछ उसके मुँह से लग गया होने रवाँ।
कोसती उसने कहा अफ़सोस मैंने क्या किया, मिल रहा है क्या भलाई का समर मुझको यहाँ।
जब ये कुबड़ी ने कहा उनका बढ़ा गुस्सा मज़ीद, बाल सिर के खींच कर उसको घसीटा नागहाँ।
भरत ने उसको छुड़ाया और दोनों भाई फिर, रानी कौशल्या की ख़िदमत में हुए फ़ौरन रवाँ।
जिस्म पर रानी के देखा था बहुत मैला लिबास, उड़ गया था रंग चेहरे का भी उनके बेगुमाँ।
रंज में डूबी हुई थी वह निहायत बेक़रार, जिस्म दुबला हो गया था और नहीफ़ो नातवाँ।
जिस घड़ी देखा भरत को दौड़ कर मिलने लगीं, आ गया चक्कर ज़मीं पर गिर गयी वो नागहाँ।
भरत ने हालत जो देखी हो गये बेचैन ख़ुद, गिर के चरणों पर वो माँ के यों हुए गौहरफ़शाँ।
बाप मेरे हैं कहाँ बतलाइए अम्मा मुझे, राम सीता और लक्ष्मण भाई मेरे हैं कहाँ।

कैकेई पैदा हुई क्यों हाय दुनिया मे अबस, बाँझ हो जाती तो बेहतर था मेरी कमबख्त माँ।
कोख मे जिसके हुआ पैदा हूँ मैं वह बदनसीब, अपने प्यारों का मुखालिफ़ और नंगे खानदाँ।
कोई पापी मुझ-सा दुनिया मे न होगा दूसरा, जिसके कारण आप ऐसी हो गयी है खस्ता जाँ।
बाप है बैकुण्ठ में और भाई है बन मे मेरे, मेरे ही कारण हुई है सब खराबी बेगुमाँ।
मेरे जी पर है लानत दीजिए धुतकार आप, मैं बना सबके लिए तकलीफ़दे ईज़ारसाँ।
भरत की बाते ये सुन कर कुछ सँभल कर उठ गयी, अपने सीने से लगाया और आँसू थे रवाँ।
इस तरह उनसे मिली जैसे कि आये राम हो, शत्रुघ्न को भी बिठाया पास अपने नागहाँ।
रंज था गो उनके दिल मे थी मुहब्बत भी मगर, देख कर यह हाल उनका लोग सब थे मदहरुवाँ।
पोंछ कर बेटे के आँसू यों कहा फिर भरत से सब्र से तुम काम लो सदके तुम्हारी तुम पे माँ।
वक्त की देखो नजाकत धैर्य से कुछ काम लो, साब कर करमों को तुम अब छोड़ दो वहमोगुमाँ।
मेरी ही तकदीर उल्टी है किसे मैं दोष दूँ, इस क़दर दुःख होने पर बाक़ी है मेरे तन में जाँ।
और क्या होने को है यह भी नहीं मालूम अब, उनको क्या मंजूर है यह बात है बिल्कुल निहाँ।
जेवर और कपड़ों को फेंका बाप के एहकाम से, भेस मुनियों का पहन कर हो गया बन को रवाँ।
राम को इसकी खुशी थी और न इसका रंज था, बस गया था एक ही उसकी निगाहों मे समाँ।
रंज था उसको न कोई चल दिया आनन्द से, सुन के ये सीता भी हमरह हो गयी उसके रवाँ।
लक्ष्मण भी साथ जाने को हुए जब मुस्तइद, राम ने रोका बहुत लेकिन वो रुकना था कहाँ।
राम सबको सिर झुका कर खुश व खुर्रम चल दिये, राम लक्ष्मण और सीता हो गये बन को रवाँ।
वो गये बन को मगर मैं यों ही बैठी रह गयी, मैं गयी साथ आह उनके और न हमरह मेरी जाँ।
मुझको आती ही नही है शर्म यह अफ़सोस है, किस सआदतमन्द लड़के की मै कहलाती हूँ माँ।
जीन मरने के मजे राजा ने पाये खूब ही, जो रहा हूँ देख कर भी हाय मैं ये सख्तियाँ।
सुन के कौशल्या की बातें भरत रोने लग गये, लोग सब करने लगे रनिवास में आहो फुगाँ।
भरत और शत्रुघ्न दोनों ही बहुत बेचैन थे, दोनो भाई रो रहे थे और थे मातमकुनाँ।
रानी कौशल्या ने सीने से लगाया दोनों को, और समझाया मनाया उनको बाहुस्ने बयाँ।
भरत जी ने भी पुराणों और वेदों में जो है, कुछ कथाएँ अपनी हालत के मुआफिक की बयाँ।
नेक नीयत उनकी थी, वो हाथ अपने जोड़ कर, रानी कौशल्या के आगे यों हुए गौहरफ़साँ।
कत्ल से माँ-बाप के फरजन्द के जो पाप हो, खून से बच्चे के या जन के जो होना है जियाँ।
जहर जो देना किसी राजा को या हो दोस्त को, या जो गौशाला जला दे या ब्राह्मण का मकाँ।
सिर्फ़ कहने से हो या दिल से हो या हो कर्म से, पाप होने जिस क़दर दुनिया मे है खुर्दोकलाँ।
हो अगर इस काम में मेरा जरा-सा भी लगाव, उनके सहने के लिए तैयार हूँ मै मेरी माँ।
जो नहीं भगवान की पूजा किया करता कभी, जिन को और सीतारा को जो पूजते है हर जमाँ।
जो सजा उनकी है मै भी हूँ उसी का मुस्तहक़, दूसरो की लोग जो खाते है अक्सर चुगलियाँ।
वेद को जो बेचते हो या मुखालिफ वेद के, दूसरों के पाप जो लोगों पर करते है अयाँ।
धोखाबाजी जो हैं करते या हैं होते गुस्साबर, लालची बदकार बदखू बेअमल और बदगुमाँ।
दूसरे के धन पे या औरत पे रखते हों नज़र, जो फ़क़ीरों से रहा करते हों हरदम बदगुमाँ।
रास्ते पर जो नहीं चलता हो कोई बदनसीब, जिसको पूजा का खयाल आता नही हो बेगुमाँ।
जानते कुछ भी नहीं लेकिन बताते हैं बहुत, झूठ कहते हैं जो लोगों से कि हूँ मैं वेददाँ।

वह सजा मुझको मिले जो उनको मिलनी चाहिए, कुछ अगर वाकिफ़ मैं पहले से था इससे मेरी माँ।
सदके दिल से भरत ने जो कुछ कहा, सब ने सुना, रानी कौशल्या ने समझा कर कहा ऐ मेरी जाँ।
जानो दिल से राम को प्यारे हो और हो तुम अजीज़, और तुम करते हमेशा हो निछावर उनपे जाँ।
राम के प्यारे हो तुम और राम तुमको है अजीज, इस तरह हरदम रहे तुम दोनों एक कालिब दो जाँ।
चन्द्रमा से जहर बरसे आग पानी से गिरे, जानवर दरियाई को भाये नहीं आबे रवाँ।
ज्ञान हो जाने पे भी ज्ञानी को लालच हो मगर, राम के तुम हो मुखालिफ ये तो मुमकिन है कहाँ।
जो कोई इस बात का मुलजिम तुम्हें ठहराएगा, होगा बद अंजाम उसका वह न होगा शादमाँ।
इस तरह कहते हुए छाती से फिर लिपटा लिया, दूध छाती से और आँसू आँख से बस थे रवाँ।
रात सारी इस तरह रोते हुए गुजरी तमाम, कसर था मातमकदा और लोग थे मातमकुनाँ।
वामदेव आये, वशिष्ठ आये, और आये सब वजीर, और महाजन जो अवध के खास थे बाशिन्दगाँ।
जिस तरह कहना था लाजिम गुरु वशिष्ठ जी ने कहा, भरत को उपदेश दे कर कुछ कथाएँ की बयाँ।
अब तआमुल सब से कुछ काम लो ऐ भरत तुम, और ये सोचो कि क्या करना है तुमको अब यहाँ।
यों गुरु का कहना सुन कर भरत उस जा से उठे, और तैयारी शुरू करने को कह शायाने शाँ।
गुस्ल करवाया गया राजा की पहले लाश को, और फिर रखी गयी थी वह बीयाँ के दर्मियाँ।
रोका माँओं को जो लेना चाहती थीं सती-व्रत, राम के दर्शन के खातिर रुक गयीं सब रानियाँ।
गूगल और काफ़ूर, अगर की बत्तियाँ सन्दल भी था, टोकरों से भरके थे लाये गये सब बेगुमाँ।
और चिता तैयार सरयू के किनारे पर हुई, जैसे ये जन्नत में जाने को बनी हों सीढियाँ।
इस तरह उनके जलाने की हुई क्रिया तमाम, फिर नहा कर दे कर तिल अनजन हुए वापस रवाँ।
वेद के अहकाम पर पूरा हुआ क्रिया करम, भरत ने दस दिन किया हस्बे रिवाजे खान दाँ।
जिस तरह कहते गुरु थे भरत ने वैसा किया, बल्कि उससे भी ज़ियादा भरत था आलीनिशाँ।
गाय भी, हाथी भी और घोड़े भी बख्शे दान में, ज़र भी, ज़ेवर भी जमीं भी और गल्ला भी मकाँ।
अपनी उम्मीदों से बढ़ कर दान पाया विप्र ने, भरत ने जो कुछ दिया मुमकिन नहीं उसका बयाँ।
जब फरागत हो गयी एक रोज अच्छा देख कर, गुरु वशिष्ठ खुद आये और बुलवाया वजीरों को वहाँ।
सब महाजन और उमरा आ गये दरबार में, भरत की और शत्रुघ्न की भी हुई तलबी वहाँ।
अपने पहलू में बिठा कर भरत से कहने लगे, धर्म के जो थे तरीके कर दिये उनसे बयाँ।
कैकेई ने जो किया सब कुछ गुरु ने कह दिया, फिर हुए वह राजा दशरथ के निहायत मदहखाँ।
किस तरह राजा ने अपने कौल को पूरा किया, और मुहब्बत के एवज दी जान अपनी बेगुमाँ।
राम की तारीफ़ करते वक़्त आँसू आ गये, लक्ष्मण गीता की हमदर्दी भी कर दी सब बयाँ।
दिल भर आया जब मुनी का अश्क जारी हो गये, और कहा यह होने वाली होके रहती है अयाँ।
है वही होता जो कुछ मंजूर हो भगवान को, नेकनामी हो कि बदनामी हो या सूदोज़ियाँ।
तुम बताओ इस सबब से हम किसे इल्जाम दें, किससे हम नाराज हों और किससे हो हम बदगुमाँ।
राजाए मरहूम का हम गम करें ये है अबस, उस ब्राह्मण का करे गम जो नहीं है वेदखाँ।
छोड़ कर अपने फ़रायज चैन में लग जायें जो, जिन्दगी जिनकी रहे इशरत तलब राहत रसाँ।
ऐसा महाराजा न हो इन्साफ का पाबन्द जो, और रैयत को नहीं रखता हो अपनी शादमाँ।
और वह बनिया जो रख कर मालोज़र कन्जूस हो, ऐसे ही लोगों का करना चाहिए गम बेगुमाँ।
शूद्र का हो गम अगर करना तो ऐसे का करें, जो ब्राह्मण को न माने और करे गुस्ताखियाँ।

बोलता हो जो ज्यादा खुदसिताई जिसमें हो, इल्म की और फ़ज़ल की करता हो अपने नाज़ियाँ ।
और वह औरत दग़ा जो अपने शोहर से करे, ब्रह्मचारी छोड़ दे ब्रह्मचर्य की पारसाइयाँ ।
वह गृहस्थी लालची जो धर्म से हट कर चले, और सन्यासी जो दुनिया में फँसा हो बेगुमाँ ।
छोड़ कर तप लग गया हो चैन में जो वानप्रस्थ, या जो चुगली का हो आदी और हो ईज़ारसाँ ।
बेसबब गुस्से में आये, बाप-माँ और भाई का, अहलिया का और गुरु का हो उदू जो बेगुमाँ ।
जिसको हरदम दूसरों की हो खराबी का ख़याल, जिनको दुनियाँ भर में प्यारे अपने हों हों जिस्मो जाँ ।
भूल कर करते न हों भगवान् की पूजा कभी, ऐसे लोगों का है गम अंजाम बिला वहमोगुमाँ ।
राजाए दशरथ नहीं थे रंज के लायक़ कभी, जिनकी नेकी और सखी है ज़माने पर अयाँ ।
कोई दुनिया में नहीं उनसा हुआ है आज तक, और न आइन्दा होगा कोई उनसा हुक्मराँ ।
इन्द्र और दिग्पाल ही क्या ब्रह्मा विष्णु और महेश, राजा कौशल राज की करते थे हैं मद्दहाँ ।
उस महाराजा की कोई कर सके तारीफ़ क्या, राम लक्ष्मण और तुम जैसे पिसर हों बेगुमाँ ।
वे मुकद्दर के धनी थे उनका ग़म बेकार है, उनकी मंशा पर अमल करते रहो उम्रे रवाँ ।
बाप के अहकाम की तामील लाज़िम है तुम्हें, तुम को राजा ने अवध का कर दिया है हुक्मराँ ।
कौल की तकमील में जो राम को भिजवा दिया, और खुद मुल्के अदम की राह ले ली नागुमाँ ।
जान उनको थी न प्यारी, बात थी उनको अज़ीज़, तुम को पाबन्दी है लाज़िम, यह न है बिल्कुल अयाँ ।
बाप ही के हुक्म की तामील में जब परशुराम, कत्ल कर डाले थे मा को जानता है सब जहाँ ।
और ययाति के पिसर ने उम्र दे दी बाप को, हुक्म की तामील की—जिसमें न था कोई ज़ियाँ ।
वाजबी नावाजबी का ध्यान जिसके दिल में हो, बाप के अहकाम का जो न होगा क़दरदाँ ।
जिन्दगी में वह रहेगा शाद और खुर्रम मुदाम, बाद मरने के वह होगा बिहिश्ती जन्नत निशाँ ।
तुमको भी लाज़िम है पाबन्दी करो अहकाम की, छोड़ दो ग़म हाथ में ले लो हुकूमत की इनाँ ।
खुश महाराजा की होगी रूह पाओगे सवाब, कुछ नहीं है दोष तुम पर बात है बिल्कुल अयाँ ।
वेद में और शास्त्र में भी है यही लिखा हुआ, बाप जिस बेटे को चाहे कर सकेगा हुक्मराँ ।
बात मेरी सच समझ लो और इसको मान लो, मैं मुहब्बत से हूँ कहता, छोड़ दो आहोफ़ुगाँ ।
कोई पंडित भी न बोलेगा कि ये है कुछ गलत, राम-सीता जब सुनेंगे वो भी होंगे शादमाँ ।
खुश रहेगी जब रिआया आपके जेरे नगीं, शाद हो जाएगा कौशल्या व दीगर रानियाँ ।
जो तअल्लुक राम से तुमको है सुन लेगा कोई, वह भी इससे खुश रहेगा वह भी होगा शादमाँ ।
राम जब आएँगे वापस राज दे देना उन्हें, और तुम खिदमत में लग जाना उन्हीं की बेगुमाँ ।
अर्ज करते थे ये सब कहना गुरु का मानिए, हाज़िरे दरबार जो अरकाने दौलत थे वहाँ ।
राम जब आएँगे जो होगा मुनासिब कीजिए, हाथ में फ़िलहाल ले लीजे हुकूमत की इनाँ ।
रानी कौशल्या भी यों कहने लगी—मेरे जिगर, अब नहीं है नफ़ा जा करने यहाँ आहोफ़ुगाँ ।
जो गुरु कहते है उसको मान लो ऐ भरत तुम, फ़िक्र अब कोई न करना और न कुछ वहमोगुमाँ ।
राम वन में और राजा स्वर्ग में जलवाफ़गन, और होते जा रहे हो इस तरह तुम सख्तजाँ ।
सब रिआया और बराया का सहारा हो तुम्ही, जी रही है देख कर तुम को ही अब हर एक माँ ।
वक़्त को जानो गनीमत, सब्र से अब काम लो, ऐ पिसर, तुम पर निछावर करती हूँ मैं अपनी जाँ ।
ग़म ग़लत सबका करो, कहना गुरु का मान लो, और खबरगीरी करो तन जाओ सबके पासबाँ ।
भरत ने खामोश हो कर सबका कहना सुन लिया, गुफ़्तगू यह उनको भायी और थी राहत रसाँ ।

सबकी बातें इस तरह सुन कर हुए बेचैन वो, फर्ते ग़म से उनकी आँखों से हुए आँसू रवाँ।
देख कर हालत ये उनकी लोग सब बेचैन थे, उनकी उल्फ़त और अकीदत के हुए सब मदहख्वाँ।
सब्र से फिर काम ले कर दस्त बस्ता हो गये, और नरम अलफ़ाज में फिर यों हुए गौहरफशाँ।
की हिदायत है गुरु ने और माँ ने भी कहा, मुत्तफ़िक हैं सब अजीज़, इससे रिआया हमज़बाँ।
चाहता हूँ मैं भी ऐसा ही करूँ इस वास्ते, हुक्म जो देते गुरु हैं और मेरी प्यारी माँ।
उसकी है तामील लाज़िम वह हो वाजिब या न हो, वर्ना सब बरबाद हो जाती हैं अपनी नेकियाँ।
दे रहे है आप सब मुझको मुनासिब मशवरा, लेकिन इससे कुछ नहीं मिलना मुझे आरामेजाँ।
आप सबसे इल्तेजा है पहले सुन लें अर्जे हाल, हो मेरी तकरीर से हरगिज न कोई बदगुमाँ।
बाप है जन्नतनशी और राम सीता वन में है, आप सब मुझको बनाना चाहते है हुक्मराँ।
क्या मेरी कोई भलाई आप हैं समझे हुए, या कोई काम आपका निकलेगा इससे बेगुमाँ।
राम-सीता की करूँ खिदमत तो मेरा है भला, माँ की बद खसलत से अब तक हो गया जो रायगाँ।
गौर काफ़ी कर लिया है मैंने हर एक बात पर, राम की खिदमत मुझे होगी बहुत राहतरसाँ।
राम और सीता ओ लक्ष्मण को न देखूँगा अगर, फिर न हल्का हो सकेगा ग़म का यह बारेगराँ।
ईश्वर को जानने लाज़िम हैं बैरागी बने, गर न हों कपड़े तो जेवर जेब देता हैं कहाँ।
जिस्म गर बीमार हो तो चैन हैं सारे फिजूल, खूबसूरत जिस्म है किस काम का गर हो न जाँ।
यों ही मेरे वास्ते है राम का होना जरूर, वर्ना सब बेकार है यह मरतबा और इज्जोशाँ।
इसलिए दीजै इजाज़त जाऊँ उनके पास मैं, है छुपी इसमें भलाई और मुज़मिर खूबियाँ।
कुछ न कुछ होगी जरूर इसमें भलाई की गरज, आप जो मुझको बनाना चाहते है हुक्मराँ।
कैकेई है वालिदा मेरी निहायत बदनसीब, गोया मेरे राम के है दुश्मनी एक दर्मियाँ।
ऐसे राजा से मिलेगा फ़ायदा क्या आपको, आप खुद फरमायें कब है बात यह राहतरसाँ।
है जो पाबन्दे धर्म उसको ही जेबा राज है, यह जमीं धँस जाएगी गर मैं बनूँगा हुक्मराँ।
राम-सीता जिसके कारण राहीए सहरा हुए, मुझसा पापी कोई दुनिया में न होगा बेगुमाँ।
वन के जानिब राम को भिजवा दिया महाराज ने, उनकी फुर्कत में हुए खुद आज जन्नत को रवाँ।
हाय मैं कमबख्त हूँ अक्ल और समझ रखते हुए, सुन रहा हूँ अपने कानों से ये सारी दास्ताँ।
राम को घर में न पा कर रंज सबका देख कर, जिस्म से मेरे निकल जाती नहीं क्यों मेरी जाँ।
किस क़दर पत्थर का दिल है क्या बताऊँ आपको, मेरा दिल फ़ौलाद से भी हो गया बढ़ कर गिराँ।
काम है मुशकिल से भी मुशकिल, नहीं मेरी खता, क्योंकि लोहे की जो ताक़त है वह पत्थर में कहाँ।
कैकेई के पेट से पैदा हुआ मैं बदनसीब, इसलिए है राम की फुर्कत में भी बाक़ी ये जाँ।
और नहीं मालूम आगे देखना है क्या मुझे, राम को भेजा है जिसने वन को वह है मेरी माँ।
बाप को मेरे रवाना कर दिया बैकुण्ठ को, और खुद बेवा बनी बैठी है कैसी शादमाँ।
खुद हुई बदनाम औरों पर मुसीबत डाल दी, सब रिआया और बराया को किया मातमकुनाँ।
राजगद्दी पर बिठाया उसने मुझको शौक से, काम ये सब करने वाली है फ़क़त मेरी ही माँ।
और इससे क्या ज्यादा चाहिए मेरे लिए, फिर मुझे तुम क्यों बनाना चाहते हो हुक्मराँ।
मैंने यह माना कि मैं हूँ कैकेई का लख्तेदिल, आप सब शायद इसी कारण हैं इसके हमज़बाँ।
ईश्वर की ही तरफ़ से बन गये सब मेरे काम, दखल फिर क्यों आप सब देते है नाहक दर्मियाँ।
हो कोई बीमार गर और काट ले बिच्छू उसे, हो नहीं सकता है मै देना कभी राहतरसाँ।

माँ के रिश्ते से मुझे ज़िल्लत मिले तो है बजा, बाप की मुझसे मगर मिट जाएगी सब इज़्ज़ोशाँ।
राम का भाई बना कर क्यों मुझे पैदा किया, क्यों दिया रुतबा मुझे ख़ालिक ने ऐसा बेगुमाँ।
सबको गर मंज़ूर है कि मैं ही अब राजा बनूँ, जिस तरह चाहे कहो क्या रोक सकता हूँ ज़बाँ।
जुज़ मेरी माँ के नहीं करता कोई इसको पसन्द, चाहते हैं राम और सीता को अर्बाबे जहाँ।
लोग जिसको फ़ायदा समझे हैं वह नुकसान है, यह मेरी तक़दीर की हैं सारी बद उनवानियाँ।
आप जो कुछ कह रहे हैं ठीक हो सकता है वह, क्योंकि हैं सब लोग मेरे जाँनिसार और मेहरबाँ।
राम की माँ का भी कहना है निहायत वाजबी, जो निहायत नर्म दिल हैं और मुझ पर मेहरबाँ।
और गुरु जी तो हमारे ज्ञान के भण्डार है, जिनकी नज़रों में समाता ही नहीं सारा जहाँ।
वह भी मेरी राजगद्दी के लिए तैयार हैं, ईश्वर ही जब ख़फ़ा हो दोस्त हो क्यों कर जहाँ।
राम-सीता के सिवा कोई यह कह सकता नहीं, इस बुराई में मेरी शिरकत नहीं है बेगुमाँ।
ऐसी बदनामी को मैं बेशक सुनूँगा शौक़ से, क्योंकि पानी जिस जगह हो, होती कीचड़ है वहाँ।
कुछ नहीं है इसकी परवाह लोग यह समझें अगर, आकिबत का सोचता ही मैं नहीं सूदोज़ियाँ।
मेरे दिल में है जो सोज़िश है वह बस इस बात की, राम और सीता के हक़ में मैं हुआ ईज़ारसाँ।
ज़िन्दगी का फल हकीकत मे तो लक्ष्मण को मिला, छोड़ कर सब कुछ जो करदी राम पर कुर्बान जाँ।
फ़ायदा क्या यों जो मैं पछता रहा हूँ रात दिन, मै हुआ पैदा कि वन को राम को कर दूँ रवाँ।
दस्त बस्ता इल्तेजा सबसे यही करता हूँ मैं, राम के दर्शन न हों तो चैन हासिल हो कहाँ।
और कोई बात मुझको सूझनी ही अब नहीं, सुबह कल होते ही दर्शन को मैं हो जाऊँ रवाँ।
मैं बुरा हूँ और ख़राबी का भी कारण मैं हुआ, जब चरण उनके पकड़ लूँगा वो होंगे शादमाँ।
वो मुरौव्वत मुहब्बत और रहम के भण्डार है, अपने दुश्मन के लिए भी वह नहीं ईज़ारसाँ।
गो बुरा हूँ मैं मगर भाई तो उनका हूँ जरूर, उनका सेवक हूँ नहीं इसमें किसी को भी गुमाँ।
यह समझ कर है भलाई मुझको जाने दीजिए, और दुआ कीजे होऊँ मैं कामगारो कामराँ।
इल्तेजा सुन कर मेरी और अपना सेवक जान कर, राम वापस राजधानी को चले आएँ यहाँ।
जो हुआ पैदा हूँ मैं बेअक्ल माँ के पेट से, छोड़ देंगे मुझको वह इसका नहीं मुझको गुमाँ।
भरत की यह गुफ़्तगू सबको पसन्द आयी बहुत, राम से जो प्रेम था उनको हुआ सब पर अयाँ।
जो जुदाई राम की सहते हुए जलते थे सब, हो गये वो ये वचन सुन कर निहायत शादमाँ।
माँ गुरु अरकाने दौलत और जितने लोग थे, हो गये मसरूर, और थे भरत के सब मदहख़्वाँ।
था ज़बाँ पर सबके यह ऐ भरत इस में शक नहीं, तुम हो प्यारे राम जी के और हो तस्कीने जाँ।
माँ की करतूतों से तुम पर ऐब कोई गर रखे, वह नरक की आग में जलता रहेगा बेगुमाँ।
कुछ मणी को साँप के पापों से मतलब है नहीं, उसके ऐबों का नहीं जिससे ताल्लुक बेगुमाँ।
वन को चलिए भरत जी यह राय अच्छी है बहुत, ग़म के दरिया में जो डूबे थे बचा लो उनकी जाँ।
मोर जैसे सुन के बादल की गरज हैं नाचते, मर्द और औरत अवध के हो गये सब शादमाँ।
दूसरे दिन सुबह चलने का इरादा कर लिया, भरत की तारीफ़ थी हर एक के बिरदे ज़बाँ।
भरत को आदाब करके होके ख़म पेशे गुरु, हो गये सब लोग वापस अपने-अपने घर रवाँ।
दम गनीमत भरत का है—कहते जाते थे यही, उनके औसाफ़े हमीदा करते जाते थे बयाँ।
सब यह कहते थे कि यह सूरत बहुत अच्छी हुई, घर ही मे रहने कहा जिसको हुआ वह ख़स्ताजाँ।
सब यही कहते थे चलने को हमें रोको नहीं, कौन होगा जो न चाहेगा हयाते जावेदाँ।

राम के चरणों में नातिस्ता न होवे जिनका प्रेम, जल वो जाएँ माल, दौलत, दोस्त, भाई, बाप-माँ।
लग गयी सजने सवारी मुख़्तलिफ़ अक़साम की, सुबह को चलने की बस होने लगी तैयारियाँ।
भरत ने घर जा के सौंपा राज घर और जायदाद, राम की सब मिल्क है इसमें नहीं शक ओ' गुमाँ।
इन्तज़ाम इनका हिफ़ाज़त का है मुझ पर लाज़िमी, वर्ना बदनामी मेरी इसमें सरासर है अयाँ।
फ़र्ज़ सेवक का है मालिक की करे सेवा ज़रूर, लाख उस पर नुकताचीं हों बेख़िरद अहलेजहाँ।
जिन पे था मालिक भरोसा उनको बुलवाया गया, हो नहीं सकता था उनकी जात पर शक ओ' गुमाँ।
जो था जिस लायक़ किया तफ़वीज़ उसके काम वह, कह दिया सब को रहें अच्छी तरह से पासबाँ।
सब को समझा कर फ़रायज़ अपने-अपने काम के, भरत फिर उस जा गये रहती थी कौसल्या जहाँ।
भरत ने देखा वहाँ पर माजरा है सब का सब, गम में है डूबी हुई राजा की सारी रानियाँ।
पालकी तैयार करने का हुआ इज़्हार जब, हो गयी तैयार फ़ौरन, थी बहुत राहतरसाँ।
शहर के सब लोग चलने के लिए थे जागते, सब के दिल में था यही अब जल्द हो जाएँ रवाँ।
सुबह होते ही वज़ीरों को बुलाया भरत ने, और कहा अब ताजपोशी की करो तैयारियाँ।
वन ही में जो जाएँगी बस राजगद्दी राम को, गुरु वशिष्ठ उनका तिलक कर देंगे वन में बेगुमाँ।
सुन के यह अहकाम सब सामाँ इकट्ठा हो गया, क्या बताऊँ हाथियों घोड़ों रथों की आन वाँ।
गुरु वशिष्ठ और उनकी बीबी हो गये पहले सवार, उनके पीछे और सब थे ब्राह्मण-ज्ञानी रवाँ।
शहर वाले भी खुशी से थे रथों पर सब सवार, पालकी हर एक सुन्दर थी, थीं जिन पर रानियाँ।
शहर का जब इन्तज़ाम अच्छी तरह से कर दिया, भरत जी और शत्रुहन दोनों हुए वन को रवाँ।
राम के दर्शन के प्यासे इस तरह थे लोग सब, जैसे हाथी घोड़े पानी की तरफ़ तिशनादहाँ।
राम सीता वन में हैं जब भरत को आया ख़याल, छोड़ कर अपनी सवारी हो गये पैदल रवाँ।
लोग भी उतरे सवारी से ये मंज़र देख कर, भरत जी के प्रेम के दिल से हुए सब मदहख़्वाँ।
लोग पैदल चल रहे हैं देखा कौसल्या ने जब, भरत के नज़दीक जा कर यों हुई गौहरफ़र्मा।
मेरा कहना मान लो तुम रथ पे हो जाओ सवार, ऐ मेरे लख़्तेजिगर तुम पर निछावर मेरी जाँ।
तुम अगर पैदल चलोगे सब भी पैदल जाएँगे, यों ही सब हैं गमज़दा और हो गये हैं नातवाँ।
माँ का कहना सुन के हाँ, सर उनके क़दमों पर रखा, चढ़ गये रथ पर वे दोनों हो गये जल्दी रवाँ।
है जहाँ तमसा नदी पहला हुआ उनका मुक़ाम, दूसरा उस जा हुआ, थी गोमती बहती जहाँ।
कोई नहाता था दूध पीता कोई करता था फलार, कोई खाता था फक़त सबही मे खाना बेगुमाँ।
चैन और आराम छोड़े लोग सब थे इस तरह, राम की फ़ुर्क़त में वह करते थे सब पाबन्दियाँ।
रात को तमसा किनारे लोग सब ठहरे रहे, और तड़का होने से पहले हुए वन को रवाँ।
चलते-चलते आ गया नज़दीक जब शृंगवेरपुर, राजा ने जब यह सुना करने लगा दिल मे गुमाँ।
किसलिए है भरत वन को जा रहे क्या काम है, कुछ बुराई आ गयी है इनके दिल के दर्मियाँ।
क्या सबब है फ़ौज भी ले ली है अपने साथ यह, मुझको होता है यही शक और होता है गुमाँ।
वह समझते हैं कि लक्ष्मण-राम को मारूँ अगर, मैं अटल बन जाऊँगा मुल्के अवध का हुक्मराँ।
यह ख़िलाफ़ आईन के चल कर हुआ बदनाम जब, अब तो खोनी ही पड़ेगी इस को शायद अपनी जाँ।
रण में कोई राम को है जीतने वाला नहीं, देवता हों, दैत्य हों जो, या कि हो सारा जहाँ।
भरत ने ऐसा अगर सोचा तो हैरत ही है क्या, ज़हर की बेलों से अमृत फल निकलता है कहाँ।
गोह के राजा ने ऐसा सोच कर सबसे कहा, मुस्तइद हो जाएँ मेरे लोग सब जल्दी यहाँ।

नाव जितनी है यहाँ सब उनको कब्जे में करो, और डुबा दो उनको रोको घाट सारे बेगुमाँ।
भरत से लड़ने को सब तैयार हो जाएँ अभी, और मरने के लिए हो जाएँ आमादा यहाँ।
मैं लड़ूंगा भरत से दिल खोल कर मैदान में, पार गंगा के न जाने दूंगा उनको बेगुमाँ।
साहिले गंगा पै मरना और वह भी जंग में, राम की खिदमत में अपनी जब निकलती है ये जाँ।
राम ही के भाई के हाथों से मारा जाऊँगा, मैं समझ लूंगा कि है यह खूबिये वक्ते जवाँ।
अपने मालिक के लिए मैं जान कर दूंगा निसार, हर दो हालत में रहूँगा कामगारो कामराँ।
साधुओं की मंडली में हो नहीं जिसका शुमार, राम के चरणों में जो रखता नहीं है अपना ध्याँ।
जिन्दगी बेकार है उसकी जमी पर बोझ है, वह कुल्हाड़ी बन के काटेगा दरख्ते खान्दाँ।
इस तरह वह सोच कर लड़ने को आमादा हुआ, नाम ले कर राम का ली हाथ में तीरो कमाँ।
और कहा सब भाइयो तैयार अब हो जाओ तुम, जंग से फेरे न मुँह कोई हमारा पहलवाँ।
बोल उट्ठे सब खुशी से आपका जो हुक्म हो, हम बजा लाने को है तैयार अच्छे हुक्मराँ।
और हिम्मत भी बढ़ाने लग गये आपस में वो, हो गये आदाब करके गोह सब वापस रवाँ।
एक से वह एक बढ़ कर थे बहादुर जंगजू, हाथ मे अपने लिये फिरते थे सब तीरो कमाँ।
पहन कर वे कवच और सिर पर चढ़ाये खोप सब, और सीधी कर रहे थे अपनी-अपनी बर्छियाँ।
कोई तो है मश्क करता फेंक के तलवार को, और कोई उड़ रहा था जैसे पहुँचे आसमाँ।
इस तरह तैयार हो कर जम गये वह सफ़बसफ़, हो गये आ कर खड़े राजा के आगे बेगुमाँ।
यों कहा राजा ने देखो भाइयो धोखा न हो मौत से कोई न घबराये हमारा पहलवाँ।
बोल उट्ठे सब कि क्यों है आप घबराये हुए, हम भरत की फ़ौज की बस उड़ा देंगे धज्जियाँ।
जितने घोड़े होंगे उनकी फ़ौज में या सूरमा, उनका बाकी ही नहीं रक्खेंगे हम नामोनिशाँ।
जान जब तक तन में है हम मुँह न फेरेंगे कभी, हर तरफ सब को नजर आयेंगी धड़ और मुंडियाँ।
देख कर उनकी उमंगें हुक्म राजा ने दिया, जंग का बाजा बजाने की करो तैयारियाँ।
इतना बस कहते ही बायें तरफ से छींका कोई, कामयाबी का मुगूँ है कह उठे सब नुक़तादाँ।
एक बूढ़ा उनमे था उसने कहा बेहतर है ये, भरत से पहले मिलो मुज़मिर है इसमें खूबियाँ।
ये भी मुमकिन है कि तुमको जंग की नौबत न आय, भरत जाते हों मनाने राम को शायद वहाँ।
सुन के राजा ने कहा यह बात बेशक ठीक है, काम जल्दी में अगर कर दे तो मुमकिन हैं जियाँ।
भरत का मंशा नहीं मालूम हो जब तक हमें, जंग करना होगा अपने वास्ते नुकसाँरसाँ।
भरत से जा कर हूँ मिलता भेद ले आता हूँ मैं, रोक लो सब घार को तैयार ठहरो तुम यहाँ।
उनकी क्या नीयत है जब मालूम यह हो जाएगा, वह अदू बन कर है आये, या के मिस्ले मुखलिसाँ।
सोच कर हम करेंगे जिस तरह वाजिब होगा तब, उमसे मै हो जाऊँगा वाकिफ़ जो है राजे निहाँ।
दुश्मनी-उल्फ़त छुपाने से नहीं छुपती कभी, साथ ले चलने तहायफ़ उसने की तैयारियाँ।
कन्द मूल और फल किये तैयार उसने और परिन्द, टोकरों में भर के मँगवाई गयी थी मछलियाँ।
ले के सब सामान मिलने को रवाना हो गया, और सुगुन अच्छे नजर आने लगे उसको वहाँ।
गुरु वशिष्ठ को उसने देखा और किया प्रणाम जल्द, नाम अपना ले कर उन पर कर दिया सब कुछ अयाँ।
यह समझ कर राम का प्यारा है उसको दी दुआ, और मुनी ने भरत से उसको मिलाया बेगुमाँ।
भरत ने जब यह सुना रथ से वे नीचे आ गये, गोह ने आदाब करके अर्ज की मैं हूँ फलाँ।
भरत ने उसको जमी पर से उठाया जल्द ही, और सीने से लगाया मिस्ले लक्ष्मण बेगुमाँ।

और सच्चे दिल से जाहिर प्रेम को अपने किया, देख कर उनकी मुहब्बत लोग सब थे मदहुखाँ।
गोह के राजा की किस्मत को कहूँ मय धन्यवाद, देवता तारीफ़ करते और थे गौहरफसाँ।
और कहते थे जमाने मे जो सबसे नीच है, छाँव पड़ जाये तो वाजिब है नहाना बेगुमाँ।
राम के भाई हैं मिलते उससे कितने प्रेम से, बन गया यह नीच कितना आज है इज्जत निशाँ।
राम का जो नाम लेता है मुहब्बत से कभी, पाप सारे उसके हो जाते है बिलकुल बेनिशाँ।
राम ने सीने से ऐसे गोह को लिपटा लिया, क्यों न उसकी कद्र होगी क्यों न होगा कामराँ।
आवे गंगा में जो मिल जाती है आ कर कर्मनास, कौन उसको है नहीं सिर पर छिड़कता बेगुमाँ।
वाल्मीकिजी नाम उल्टा राम का जपते हुए, ब्रह्म का रुतबा जो पाया जानता है सब जहाँ।
बेवकूफ हो या कोई हो नीच या हो चांडाल, नाम ही जपने से पाते है हयाते जावेदाँ।
हर जमाने में यही दस्तूर दुनिया का रहा, कुछ नहीं इसमें ताज्जुब जानता है सब जहाँ।
किसको रुतबा और इज्जत राम ने बख्शी नहीं, सुनके कहना देवता का लोग थे सब शादमाँ।
इस क़दर उल्फ़त से जब दोनों मिले भरतो निषाद, भरत ने फिर खैरियत भी उससे पूछी बेगुमाँ।
भरत के एखलाक जब देखा निषादे नेक ने, उसको हैरत हो गयी और बन्द थी मुँह में जबाँ।
फ़िक्र थी कुछ उसको दिल में प्रेम था दिल मे भरा, था ब हसूरत वह अपने जी में बेहद शादमाँ।
दस्त बस्ता हो के राजा भरत से कहने लगा, ऐ मेरे आका, तुम्हारे हो गये दर्शन यहाँ।
आपके दर्शन से हासिल हो गयी सब खैरियत, पीढ़ी दर पीढ़ी रहूँगा शाद और शादी कुनाँ।
राम ने मुझ जैसे का अपनाया ऐसा देख कर, जो अजीज़ उनको न होगा कब रहेगा शादमाँ।
मैं था कपटी और बुजदिल और था मै बेवकूफ, राम ने अपना लिया और हो गया मैं कामराँ।
शत्रुहन उससे मिले जिस दम यह कह उठा निषाद, फिर गया वह बाअदब हो कर जहा थी रानियाँ।
रानियों ने दी दुआ जैसे कि लक्ष्मण आ गये, और कहा लाखों बरस जीते रहो और शादमाँ।
और नगर के लोग भी सब शाद और खुर्रम हुए, जिस तरह लक्ष्मण के मिलने से वे होते शादमाँ।
दर हकीकत जिन्दगी का लुत्फ़ तो पाया यहाँ, राम ने उसको गले मिल कर किया इज्जत निशा।
सुन के हर एक से बड़ाई अपनी, बेहद शाद था, और सब को ले गया वह हो के खुश अपने यहाँ।
लोग सब हाजिर थे ज्यों ही यह इशारा कर दिया, उनको ठहराने की होने लग गयी तैयारियाँ।
भरत कांधे पर दिये थे हाथ जाते शहर में, देख कर शृंगवेरपुर को हो गये वो शादमाँ।
उनका चलना इस तरह आता था हर एक का नजर, इन्तेजा उलफ़त मुजस्सिम चल रहे हो बेगुमाँ।
इस तरह चलते हुए सब लोग पहुँचे राम घाट, था जो गंगा का किनारा राम ठहरे थे जहाँ।
शादमानी की न थी कुछ भरत जी को इन्तेहा, जब सुना उनने कि भाई राम ठहरे थे वहाँ।
लोग सब पानी नहा कर आखिरस फारिग हुए, भरत ने गंगा के पड़ कर पैर यों खोली जबाँ।
आप की बरकत से गंगा हो मेरा ऐसा नसीब, राम के क़दमों मे हरदम हो लगा यह मेरा ध्याँ।
जब हुआ मालूम यह सब लोग फ़ारिग हो गये, हो गये फिर भरत सब को ले के उस जा से रवाँ।
लोग सब जा कर हुए जब अपने डेरों पे मुकीम, भरत ने सब की खबर मालूम कर ली बेगुमाँ।
दोनो भाई फिर गये महारानी कौशल्या के पास, पैर दाबे गुफ्तगू भी की जो थी राहत रसाँ।
भाई से अपने कहा मां की खबर लेते रहो, जिस क़दर है रानियां रनवास में, हे अपनी माँ।
कह के इतना शत्रुहन से भरत राही हो गये, गोह के राजा को खुद बुलवा लिया अपने यहाँ।
हाथ में हाथ उसके दे कर चल रहे थे भरत जी, पूछते जाते थे लक्ष्मण राम ठहरे थे कहाँ।

जिस जगह सोये थे सीता, राम, लक्ष्मण देख कर, भरत की आँखों से आँसू हो गये फ़ौरन रवाँ।
देख कर यह प्रेम उनका हो गया बेचैन वह, ले गया उस झाड़ के नीचे वो सोये थे जहाँ।
सेज सब्जे की बिछी थी जिस जगह सोये थे राम, सिर झुकाया भरत ने चूमा ज़मीं को बेगुमाँ।
राम के चरणों की मिट्टी को लगाया आँख मे, प्रेम उनका किस क़दर था कर नही सकता बयाँ।
कुछ सुनहरी तार सीता के गिरे साड़ी के थे, उनको अपने सिर पर रक्खा हो के बेहद शादमाँ।
दिल भर आया उनका और यों गोह से कहने लगे, हिज्र मे सीता के इन तारों मे अब रौनक कहाँ।
राम के दुख में हुए बेहाल जैसे लोग सब, मर्दोज़न मुल्के अयोध्या के और सब पीरो जवाँ।
जिनकी बेटी है ये सीता नाम उनका है जनक, आज दुनिया में नही कोई है उन-सा हुक्मराँ।
और किस महाराज की है ये बहू मैं क्या कहूँ, नाम नामी जिनका दशरथ जो है फ़ख्रे ख़ुसरवाँ।
और बीवी है ये किसकी नाम जिनका राम है, जिनकी तारीफ़ का नहीं हो सकता है मुझसे बयाँ।
ऐसी सीता जमी पर सोयी थी, सुन कर बात यह, जिस्म से मेरे निकल जाती नहीं क्यों मेरा जाँ।
और लक्ष्मण भाई मेरे काबिले तारीफ़ है, चाहते जिनको अवध के लोग सब और बाप-माँ।
जो बहुत नाज़ुक बदन है उम्र गुजरी चैन में, आज जंगल मे उठाते है वो कैसी सख्तियाँ।
मैं कठोर इतना हूँ दिल का देख कर यह हाल भी, कुछ नही मालूम होता है मुझे बारेगिराँ।
राम के अवतार मे है साथ यह सब हो गये, बाप माँ अहले वतन उस्ताद अहले खानदाँ।
देख कर एख्लाक जिनके गुन के जिनकी गुफ्तगू, जो मुखालिफ भी हो जाता है उनका मदहख्वाँ।
हों करोड़ों शेष या वह हो करोड़ों सरस्वती, हो नही सकती बयाँ है जिनसे उनकी खूबियाँ।
सो रहे है वह जमीं पर आज ऐसे रामचन्द्र, क्या है परमेश्वर की मर्जी कर नहीं सकता बयाँ।
जिनको महाराजा ने पाला अपनी जाँ से भी अजीज, जानते ही जो न थे तकलीफ का नामोनिशाँ।
साँप जैसे हो मणी का और पलक आँखों की हो, उनकी जितनी माँये है—रहती थी जिनकी निगहबाँ।
हाय जंगल मे है फिरते आज ऐसे रामचन्द्र, कन्दमूल और फल वह खा कर जी रहे है बेगुमाँ।
सब खराबी की ये जड़ है कैकेई अफ़सोस है, कर दिया अपने पती को हाय जिसने बदगुमाँ।
और माँ धिक्कार है मुझ पर हूँ ऐसा बदनसीब, मौजबे तकलीफ़ आका मैं हूँ नंगे खानदाँ।
सुन के बातें भरत की कहने लगा राजा निषाद, राम ने है प्यार तुमको वो हैं तुम पर मेहरबाँ।
यह तो चतुराई जमाने की हुई है आसकार आप क्यो बेवजह करते इसमें है शक ओ गुमाँ।
ईश्वर की भी ये मरजी इसमे कुछ चारा न था, कर दिया अक्ल और समझ को कैकेई की रायगाँ।
आप की तारीफ करते राम जी थे बारबार, रात भर बस आप ही का जिक्र था विरदेज़बाँ।
मैं कसम खा कर हूँ कहता फिक्र कीजै कुछ न आप, हर तरह होगा भला और आप होंगे कामराँ।
राम है दिल के धनी भी और हैं जो ज्ञानवान, सोचिएगा अब नहीं सोजाइएगा बेगमाँ।
गोह की बातें ये सुन कर कुछ तसल्ली-सी हुई, भरत उस जा से हुए फिर अपने डेरे को रवाँ।
मर्दोजन सारे अवध के देखने उस जा गये, राम, लक्ष्मण और सीता आ के ठहरे थे जहाँ।
और चक्कर था लगाता जा के इस जा हर कोई, कोई देता था हजारों कैकेई को गालियाँ।
भरत के औसाफ की तारीफ करता था कोई, राजा दशरथ की मुहब्बत कोई करता था बयाँ।
सब यही कहते थे बेशक हम बड़े हैं बदनसीब, गोह के राजा की करते थे बयाँ सब खूबियाँ।
रात भर ऐसे ही गुजरी सुबह जब होने लगी, पार दरिया करने होने लग गयी तैयारियाँ।
सबसे पहले नाव पर बिठला दिया गुरुदेव को, दूसरी जो थी नयी उस पर चढ़ी सब रानियाँ।

खुश हुए सुन कर मुनी—कहने लगे भारद्वाज, राम के दर्शन से हो जाओगे तुम अब शादमाँ।
इस तरह उनको दिलासा दे के फिर कहने लगे, आप सब मेहमाँ हमारे आज हो जाएँ यहाँ।
कन्दमूल और फल जो हाज़िर हैं उन्हें कीजै कबूल, आप मेहमाँ हे हमारे आपके हम मेजबाँ।
भरत ने सोचा कि बेढ़ब हो गयी है बात यह, हाथ जोड़े और मुनी से यों किया अर्जेवयाँ।
आपका जो हुक्म हो तामील को हाज़िर हूँ मैं, यह जवाब उनका सुना और हो गये बस शादमाँ।
कन्दमूलो फल ले आएँ शिष्यों से यह कह दिया, चल दिये वह काम पर सब हो के बेहद शादमाँ।
फिर मुनी जी ने यह सोचा हमने रोका भरत को, उनकी मेहमानी भी लाजिम है जो हो शाहानेशाँ।
आपका क्या हुक्म है फरमाइए कहने लगीं, हाथ जोड़े हो के हाजिर ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ।
राम की फ़ुरकत में भरत और शत्रुहन गमगीन हैं, साथियों को अपने ले कर आज आये है यहाँ।
इन्तजाम ऐसा हो उनकी दूर सब तकलीफ़ हो, हर तरह आराम में हों हर तरह राहतरसाँ।
भरत का रुतबा जो सोचा फिक्र उनको भी हुई, किस तरह मेहमानी इनकी हम करें शायानेशाँ।
वह मुनी का हुक्म सुन कर सिर झुकाये बाअदब, पल ही भर में कर दिया तैयार आलीशाँ मकाँ।
हर तरह के चैन सुख का उस जगह था इन्तज़ाम, और सेवक भी थे हाजिर जो कि थे राहत रसाँ।
देवता भी देख कर जिसको थे ललचाये हुए, हर तरह का साज और सामाँ इकट्ठा था वहाँ।
ऐसा था सामाँ मुहैया स्वर्ग में भी जो न हो, जैसी जिसको चाहिए थी मिल गयी चीजे वहाँ।
साथियों का जबकि पहले हो गया सब इन्तज़ाम, भरत भी डेरे में आये और अन्दर खानदाँ।
कूवते ग़ैबी से एक पल में ही सब कुछ हो गया, यह मुनी की थी करामत बरतरज बहमांगुमाँ।
भरत भी यह देख कर हालत हुए कुछ दंग से, यम, कुबेर और इन्द्र को भी ऐसा सुख हासिल कहाँ।
थे बिछौने और कपड़े बाग-बागीचे बहुत, बावली, तालाब और नहरें थी जिनके दर्मियाँ।
थे परिन्द अक्साम के और फूल रंगबिरंग के, सारे मेवे भी रसीले मिसले अमृत बेगुमाँ।
मुख्तलिफ़ अक्साम के खुश ज़ायका खाने भी थे, देख कर सब लोग थे अंगुश्ते हैरत दर दहाँ।
इन्तज़ाम ऐसा था जिससे लोग दिल में खुश हुए, राम के दुख में उन्हें लेकिन ये भाता था कहाँ।
अल ग़रज वह रात बस योंही गुज़ारी भरत ने, क्योंकि सामाने खुशी वो चाहते ही थे कहाँ।
सुबह तीरथराज के स्नान से फारिग़ हुए, और मुनी से रुखसती माँगी मये हमराहियाँ।
रास्ता बतलाने वाकिफ़कार लोगों को लिया, हो गया यह काफिला उस जा से फिर आगे रवाँ।
गोह राजा से मिलाये हाथ चलते थे भरत, जिस तरह उल्फ़त मुजस्सिम चल रही हो बेगुमाँ।
पैर में जूता न उनके और सिर पर था न छत्र, पूछते जाते थे उनसे राम की सब दास्ताँ।
दिल में उनके प्रेम का दरिया उमड़ जाता था बस, जब वह बतलाता था सीता-राम ठहरे थे यहाँ।
प्रेम इनका देख कर सब देवता मद्दाह थे, रास्ते में लोग उन पर कर रहे थे गुलफ़िशाँ।
छाये बादल थे हवा चलती थी धीमी राह में, राम को भी यह सहूलत थी न हासिल बेगुमाँ।
रास्ते में जिस क़दर मिलते थे उनको जानदार, हो गये सब खुश व खुर्रम कामगारो कामराँ।
क्यों न हो जब भरत जी हैं राम को दिल से अजीज, राम ही के नाम से होना है इन्सा शादमाँ।
राह में आसानियाँ क्यों हो न उनके वास्ते, राम के ये भाई है यह बात है बिलकुल अयाँ।
इन्द्र को यह दगदगा था भरत के अतवार से, राम के दिल में मुरौवत आ न जाए बेगुमाँ।
भरत की खातिर जो वापस घर को जाएँ रामचन्द्र, जिस क़दर अब तक किया है होगा यह सब रायगाँ।
थों कहा अपने गुरु से कीजिए अब काम वह, जिस तरह भी हो न हो, आपस में मिलना बेगुमाँ।

भरत में भक्ति बहुत है राम में खातिर बहुत, इस लिए ऐसा न हो उल्टा न हो जाए समाँ।
कीजिए तदबीर ऐसी काम ये होने न पाए, अपने मन की बात पूरी हो और हम हों कामराँ।
इन्द्र की इस बात से गुरुदेव भी हँसने लगे, और समझे हैं अक़लमन्दी की इनकी खूबियाँ।
और मुख़ातिब उनसे हो कर यों कहा ऐ देवराज, राम के सेवक से ये लाज़िम नहीं गुस्ताखियाँ।
उनसे चालाकी करें तो उसका उल्टा फल मिले, नफ़ा कैसा काम हो जाएगा सब नुकसाँरसाँ।
उस घड़ी कुछ राम की मन्शा का था इसमें लगाव, अब अगर ऐसा करोगे तुम न होगे शादमाँ।
राम से कोई बुराई गर करे कुछ डर नहीं, भक्त की अपने बुराई सुन ही सकते हैं कहाँ।
राम का हैं नाम जपते रात दिन दुनिया के लोग, भरत का खुद नाम जपते राम जी है हर जमाँ।
इसलिए ऐसी बुराई का न हो हरगिज़ ख़याल, वर्ना दुनिया में बुराई आपकी होगी अयाँ।
इसलिए कहना हमारा मान लो ऐ देवराज, राम को है भक्त प्यारे वो हैं उन पर मेहरबाँ।
दुश्मनी की ना कपट की है नहीं आदत मगर, काम को वह देख कर करते दया है बेगुमाँ।
बादे मुद्दत तार देते है न हों जो कोई भक्त, और जो हों भक्त उसको रखते है वो कामराँ।
इसलिए दिल से ख़याल ऐसा निकालो जल्द तुम, भरत के चरणों में अपना दिल लगाओ बेगुमाँ।
राम के भक्तों मे ऊँचा मरतबा है भरत का, दूसरों को यह भलाई से है रहने शादमाँ।
देवताओं की है ख़ातिर राम के पेशेनज़र, भरत उनके हुक्म के बाहर हों ये मुमकिन कहाँ।
इन्द्र से गुरुगुरु जब इस तरह से कहने लगे, दग दगा दिल का मिटा और हो गये वो शादमाँ।
भरत की तारीफ अपने मुँह से यों करने लगे, आसमाँ से फूल वर्षा कर हुए वह मदहुशाँ।
इस तरह थे भरत चलते जा रहे उस राह में, प्रेम उनका देख कर होता था हर एक शादमाँ।
साँस लम्बा खींच कर जब नाम लेते राम का, खुदबखुद आता नज़र है हर सिम्त उलफ़त का समाँ।
अपनी हमराही को ले कर राह में करते मुक़ाम, आखिरस पहुँचे वहाँ जमना जी बहती थी जहाँ।
देख कर जमना को फौरन राम की याद आ गयी, दिल भर आया सब का और आँखों से आंसू थे रवाँ।
लोग जब थे गमज़दा यह भरत को आया खयाल, ठहर कर हम क्या करें यह वक़्त होगा रायगाँ।
हम अगर जल्दी पहुँच जाएँ तो दर्शन हो सके, फ़िक्र और ग़म का नहीं बाकी रहे नामोनिशाँ।
रात मे जमना पे ठहरे हो गया सब इन्तेज़ाम, किश्तियों भी सारे घाटों से तलब कर ली यहाँ।
सुबह होते ही रवाना हो गए सब नाव पर, पार दरिया कर गये थे जितने अहले कारवाँ।
हो के फारिग़ सब ज़रूरत से वहीं से चल दिये, और हुआ यह काफिला उस जा से फिर आगे रवाँ।
सबसे पहले थे मुनी अपनी सवारी पर सवार, और उनके पीछे थे अहले अयोध्या सब रवाँ।
शत्रुहन और भरत पैदल चल रहे थे सबके बाद, गोह का राजा भी चलता जा रहा था दर्मियाँ।
लोग कुछ पैदल भी हमराही में उनके साथ थे, नाम सीता-राम और लक्ष्मण का था विरदे ज़बाँ।
इनके आने की खबर सुन कर चले आते थे जल्द, राह मे जो लोग रहते और थे जिनके मकाँ।
गाँव की वह औरतें आपस मे थीं यों पूछती, राम, लक्ष्मण ही से आते है नज़र यह बेगुमाँ।
लेकिन इनका तो नज़र आता नहीं उन-सा लिबास, और सीता भी नज़र आती नहीं है दरमियाँ।
साथ इनके देखिए सेना भी चतुरंगी है एक, इनके चेहरों पर उदासी है, नहीं दिल शादमाँ।
इस तरह जब एक ने उनसे कहा सब माजरा, दूसरी ने हाल सारा कर दिया उनसे बयाँ।
और कहा ये भरत है जो हुकमरानी छोड़ कर, जा रहे है राम की वापस बुला लाने मकाँ।
इस तरह कह कर भरत जी की बड़ी तारीफ़ की, और बयाँ करने लगी हर इक से उनकी खूबियाँ।

अपनी क़िस्मत पर थे नाज़ाँ उनकी सूरत देख कर, कहते थे कि कैकेई क्योंकर बनी है इनकी माँ।
कोई कहती थी कि रानी की नहीं तकसीर कुछ, होने वाली बात जो होती है, टलती है कहाँ।
यों ही हर एक गाँव में आपस में होती गुफ़्तगू, देख कर सब लोग ख़ुर्रम और होते शादमाँ।
इस तरह तारीफ़ अपनी और भाई राम की, सुनते जाते राह में थे, होते जाते थे रवाँ।
रास्ते के लोग अपने को थे कहते ख़ुशनसीब, भरत के दर्शन से हो जाते थे वो जब शादमाँ।
बाअदब होते थे वह जिस जा कि रहते थे मुनी, और रुक जाते थे तीरथगाह होते थे जहाँ।
माँगते थे अपने ही दिल में वह आशीर्वाद यह, राम के चरणों में हरदम हो मेरा दिल बेगुमाँ।
भील कोल उनको थे मिलते और वनवासी कहीं, ब्रह्मचारी और संन्यासी कहीं जलवाकुना।
जो कोई मिलता था उनसे पूछते जाते थे ये, राम लक्ष्मण जानकी जी वन मे रहते है कहाँ।
वह निहायत शाद हो जाते थे यह सुन कर जवाब, राम लक्ष्मण जानकी को हमने देखा शादमाँ।
चलते-चलते इस तरह आखिर हुआ एक जा मुकाम, सुब्ह होते ही वहाँ से भी हुए ये सब रवाँ।
जिस तरह थी राम से मिलने की ख़्वाहिश भरत को, यों ही सब साथी भी उनके थे तड़पते बेगुमाँ।
रास्ते में सब सुगून अच्छे नजर आने लगे, और उमंगें बढ़ती जाती उनके दिल के दर्मियाँ।
मस्त सब दर्शन के प्यासे चल रहे थे राह में, दिल में यह कहते थे मिल जाए हमारे जाविदाँ।
जब नज़र आने लगा कामदगिरी का वह पहाड़, राम का सच्चा सखा यह कह उठा बस नागहाँ।
कोह के नीचे बहा करती है पैं नामी नदी, राम लक्ष्मण और सीता है रहा करते वहाँ।
देख कर उस कोह को सब लोग शादाँ हो गये, जय का नारा भी लगाता हो के हर एक हम जबाँ।
इस तरह वह ख़ुश हुए जैसे कि लक्ष्मण राम आज, फिर अयोध्या की तरफ़ चलने की है तैयारियाँ।
भरत को कितनी ख़ुशी थी कोई कह सकता नहीं, बल्कि शायर के लिए मुश्किल है लिखना वह समाँ।
अल गरज दो कोस ही उस रोज़ वह सब चल सके, और ठहरे एक जगह पानी वग़ैरह था जहाँ।
राम भी अपनी जगह जागे थे पिछली रात से, और सीता ने भी देखा ख़्वाब शब मे एक वहाँ।
साथियों को भरत ले कर आ रहे है इस जगह, राम की फ़ुर्क़त ने उनके है नहीं ताबोतवाँ।
लोग सब है ग़मज़दा और साम है सब दुख भरी, राम ने जब यह सुना आँखों से आँसू थे रवाँ।
अपने भाई से कहा ताबीर इसकी है यही, कुछ ख़बर हमको बुरा मालूम होगी नागहाँ।
फिर नहा कर हो गये फ़ारिग वो पूजा पाठ से, और बैठे जाके सारे साधुओं के दर्मियाँ।
देखते क्या है कि उत्तर की तरफ एक धूल है, और गर्दआलूद है उस सिम्त का सारा समाँ।
मुजतरिब हो कर चले आते परिन्दे और तयूर, राम ने सोचा कि इसका क्या सबब है बेगुमाँ।
ग़ौर ही करते थे वह इतने में आये भील कोल, और सारा माजरा आ कर किया उनसे बयाँ।
राम ने ज्यों ही सुना वो हो गये ख़ुश और शाद, शादमानी के निशाँ चेहरे से उनके थे अयाँ।
राम को ये भी ख़याल आया क्यों आते है भरत, फिर हुआ मालूम लश्कर साथ है एक बेकराँ।
बाप के अहकाम का उनको हुआ कुछ तो ख़याल, कुछ लिहाजे भरत भी उनके था दिल के दर्मियाँ।
दगदगे में पड़ गये थे इस तरह जब रामचन्द्र, सूझता कुछ भी न था और बन्द थी मुँह मे ज़बाँ।
आख़िरस उनको ख़याल आया भरत है अक़लमंद, मेरे कहने से नहीं बाहर वो होंगे बेगुमाँ।
देखा लक्ष्मण ने कि भाई राम है कुछ फ़िक्र में, वक़्त की देखी नज़ाकत यों किया अर्ज़े बयाँ।
आपके इरशाद से पहले ही कहता हूँ मै कुछ, वक़्त पर कहना नहीं सेवक की है गुस्ताख़ियाँ।
आप तो सब जानते है क्या कहूँ मैं आपसे, फिर भी जो कुछ मुझको है मालूम करता हूँ बयाँ।

बेसबब ही आप सब पर रहम करते हैं मुदाम, आपको है प्रेम सबसे आप सब पर मेहरबाँ।
मरतबा पा कर जो नादाँ भूलता है हैसियत, है यही दस्तूर जग का कुछ नहीं शक्को गुमाँ।
आपके चरणों में अब तक भरत का था दिल लगा, बात ये बिलकुल है ज़ाहिर जानता है सब जहाँ।
तख्तेशाही मिल गया है आज उनको आपका, आपके बदले हुए हैं वो अवध के हुक्मराँ।
देख कर यह आप जंगल में हैं तनहा फिर रहे, और जंगल में है सहने फिर रहे दुश्वारियाँ।
है धरम के रास्ते से हट कर अब वह चल रहे, आ गयी है कुछ बुराई उनके दिल के दर्मियाँ।
सोच कर ऐसी बुराई जोड़ कर सारा समाज, फ़ौज के हमराह दोनों भाई आते है यहाँ।
हाथी, घोड़े और रथ भी साथ क्यों लाते थे वह, हैं बुराई पर वो आमादा बिला शक्को गुमाँ।
भरत की इसमें फ़क़त बतलाइए तक़्सीर क्या, कौन पागल हो नहीं जाता है बन कर हुक्मराँ।
चन्द्रमा, राजा नहुष से और राजा वेन से, जो हुए अफ़आले उद्दू हैं आज तक सब पर अयाँ।
इन्द्र, त्रिशंकु सहस्रबाहु हुए बदनाम सब, हो गये जामे से बाहर थे ये सारे हुक्मराँ।
भरत ने ऐसा किया तो क्यों ताज्जुब कीजिए, कर्जो दुश्मन का न बाक़ी चाहिए नामोनिशाँ।
हाँ ज़रूर इसमें हुई है भरत से भूल इस कदर, आपको समझा हुआ है वह नहीफ़ो नातवाँ।
आज मैदाँ में उसे मालूम सब हो जाएगा, आप कैसे हैं बहादुर और हैं शेरेजियाँ।
इस कदर कहते हुए आपे से बाहर हो गये, राम के चूमे क़दम और यों हुए आतिश बयाँ।
मेरे कहने को बुरा समझो न तुम मालिक मेरे, भरत ने हमसे बहुत बेजा है की गुस्ताखियाँ।
हम कहाँ तक सह सकेंगे क्यों रहे खामोश हम, आप है हमराह और है हाथ में तीरोकमाँ।
जाति का छत्री हूँ रघुकुल खानदाँ का फ़र्द हूँ, आपका सच्चा है सेवक जानता है सब जहाँ।
धूल से बढ़ कर नहीं है कोई शै हलकी मगर, लात लगने से वह चढ़ जाती है सिर पर बेगुमाँ।
यह कहा, और बाअदब हो कर खड़े जब हो गये, वीरता के सब निशाँ चेहरे पे उनके थे अयाँ।
बाध कर अपनी जटा तरकश कमर में बाँध कर, जल्द हो वह ले लिये फिर हाथ में तीरोकमाँ।
आपकी सेवा का फल मैं आज पाऊँगा ज़रूर, भरत को नीचा दिखाऊँगा मैं मैदाँ दर्मियाँ।
दोनों भाई आज मैदाँ में गिरेंगे लौटते, फल मिलेगा उसका जो की आपसे गुस्ताखियाँ।
ये भी अच्छा ही हुआ सारा समाज आया है साथ, आज मैं पिछला भी बदला लूँगा सबसे बेगुमाँ।
जिस तरह जदहा लबे चुगल मे फँसते बाज के, और कुचलता हाथियों के झुण्ड को शेरे ज़ियाँ।
भरत का सब शत्रुहन मारूँगा मै मैदान में, आये शंकर भी मदद को तो उड़ा दूँ धज्जियाँ।
राम की सा कर क़सम कहता हूँ यों कहने लगे, ऐसे गुस्से से वो गरजे जिस तरह बर्केतवाँ।
उनका यह सौगन्ध सुन कर और गुस्सा देख कर, लोग सब डरने लगे और हो गये बस नीमजाँ।
आसमाँ से देवता इस तरह कहने लग गये, कौन है तुम-सा बहादुर और तुम-सा पहलवाँ।
काम कोई भी जो कीजै गौर करके कीजिए, वर्ना जल्दी में खराबी का है अन्देशा निहाँ।
सुन के यह आवाज लक्ष्मण भी ज़रा चुप हो गये, राम सीता ने भी की दिलजोई उनकी बेगुमाँ।
राम लक्ष्मण से मुखातिब होके यों कहने लगे, तुमने जो कुछ है कहा इसमें नहीं शक्को गुमाँ।
तख्ते शाही का नशा किसको होता है नहीं, कौन है वह जो नहीं मगरूर बन कर हुक्मराँ।
साधुओं की जो सभा मे है रहा करता कोई, नशे से ऐसे वही बचता है बेशक बेगुमाँ।
भरत जैसा नेक इन्सां कोई दुनिया में नहीं, वह फ़क़त मुल्के अवध ही के बने है हुक्मराँ।
ब्रह्मा और विष्णु व शिव का भी अगर दर्जा मिले, नशाए शरवत न होगा उनको हरगिज बेगुमाँ।

है जो नामुमकिन से नामुमकिन वह हो सकती है बात, भरत को होगा घमण्ड इसका नहीं शानोगुमाँ।
मैं क़सम खा कर तुम्हारी और अपनी जान की, बिलयकीं कहता हूँ यह मानो इसे तुम मेरीजाँ।
भरत जैसा नेक भाई कोई दुनिया में नहीं, जिसने दुनिया पर करी ज़ाहिर हैं अपनी खूबियाँ।
भरत की तारीफ़ करते हर तरह थे रामचन्द्र, कहते-कहते राम के जाते रहे तावोतवाँ।
राम की वह गुफ्तगू सुन कर हुए सब लोग दंग, और कहने लग गये हैं राम इन पर मेहरवाँ।
भरत ही की जात से है धर्म की रक्षा हुई, उनकी खूबी और कोई कह ही सकता है कहाँ।
सुनके कहना देवता का राम सीता लक्ष्मण, किस क़दर मसरूर थे ये कर नहीं सकता बयाँ।
और यह भी हाल सुनिए भरत और सारा समाज, जिस जगह मन्दाकिनी थी जाके ठहरे सब वहाँ।
ले के सबसे यह इजाजत दोनों भाई और निषाद, हो गये उस जा रवाँ थे राम और सीता जहाँ।
सोचते जाते थे दिल में मेरी माँ के काम से, हाय मुझको है ये सहनी पड़ रहीं दुश्वारियाँ।
मेरा आना सुन के सीता, राम और लक्ष्मण कहा, जिस जगह हैं अब न हो जाएँ वहाँ से भी रवाँ।
माँ के बाअस वह जो समझेंगे वो वाजिब है मगर, अपना सेवक जान कर मुझ पर रहेंगे मेहरबाँ।
ख्वाह मुझ पर हो इनायत की नजर या हो खफा, दोनों हालत मे मेरे सिर पर है उनकी जूतियाँ।
इस तरह थे दिल में उनके मुख्तलिफ़ आते ख्याल, और आगे वो बढ़े जाते थे दोनों भाइयाँ।
सोचते थे माँ की करतूतों से वापस लौट जाएँ, सोच कर फिर राम की खसलत वो होते थे रवाँ।
इश्तियाके दीद में वह तेज भी चलते कभी, जिस तरह बहता नदी मे तेज है आबे रवाँ।
भरत की यह देख कर हालत था मुज़्तर गोहराज, हो गया बेचैन और बस खो दिये तावोतवाँ।
रास्ते में कुछ सुगुन अच्छे नजर आने लगे, कह उठा—दुख दर्द सारे दूर होंगे बेगुमाँ।
आखिरश चलते हुए जब भरत पहुँचे आश्रम, देख कर वन और पहाड़ी हो गये वो शादमाँ।
आसमानी हो कि सुल्तानी मुसीबत आये जब, रहना अपनी जा किसी को होता है ईसारमाँ।
दूसरी जा जब किया करता है वह नक्ले मुकाम, शाद और मसरूर हो जाता है बस जा कर वहाँ।
राम के रहने से वह वन इस तरह शादाब था, जिस तरह हो खुश रिआया नेक हो गर हुक्मराँ।
उसकी है तफसील ऐसी वन है गोया सलतनत, है वहाँ वैराग दीवाँ और विवेक है हुक्मराँ।
नेम और दम है सिपाही कोह दारुल सलतनत, समृद्धि और शांति दोनों वहाँ की रानियाँ।
ये जो राजा हैं इसे हर तरह का हासिल है चैन, राम के चरणों के बाअस ये है हरदम शादमाँ।
मोह रूपी है जो राजा इस पर हो कर फतह याब, कर रहा है यह हुकूमत कामगारो कामराँ।
सल्तनत में हर तरह का ऐश और आराम है, है मुसीबत मुल्क मे गोया नसीबे दुश्मनाँ।
जानवर भी और परिन्दे है रिआया मुल्क के, हम कहाँ तक कह सकें, मुमकिन नहीं इसका बयाँ।
शेर, हाथी और गीदड़, भैंस, गायों है सुनी, ऐसे राजा की सना करना है लाजिम बेगुमाँ।
नहर में पानी है बहता फील है चिंघाड़ते, गोया नक्कारे बजाते जा रहे है वो वहाँ।
चकवा और तोता, पपीहा, हंस, कोयल और चकोर, बोलते हैं अपनी बोली होके बेहद शादमाँ।
छोड़ कर ये बैर अपना मिल के रहते है ये सब, गोया राजा के यही है फौज के सब पहलवा।
मोर भी है नाचते भौंरे भी करते है गुजार, गोया उनकी सल्तनत में है हजारो खूबियाँ।
फूल फल और बेलबूटे ताजओ सरसब्ज है, हर तरह का सबको हासिल है वहाँ आरामे जाँ।
वन के जो हिस्से है वो गोया है सूबे मुल्क के, और मुनी जितने हैं, है सब उस जगह के साकिनाँ।
राम जिस टीले पे थे जब देखी उनकी यह बहार, भरत बेहद खुश हुए और हो गये बस शादमाँ।

जिस तरह कोई तपस्वी ख़तम तप होने के बाद, उसका फल पा कर हुआ करता है दिल में शादमाँ।
दौड़ कर केवट वहाँ पर चढ़ गया ऊँची जगह, आम और जामुन के बतला कर दरख्त उनको वहाँ।
और कहा—एक झाड़ वड़ का आ रहा है जो नज़र, जिसका साया है घना फल लाल है जिसके अयाँ।
एक नदी के है किनारे झाड़ पे वाक़े हुआ, रामो सीता ने बनायी है कुटी अपनी वहाँ।
और तुलसी के बहुत से झाड़ भी ऊगे हुए, जिनको सीता और लक्ष्मण ने लगाया है वहाँ।
वड़ के साये के है नीचे एक वेदी भी बनी, बैठते हैं राम और सीता उसी के दर्मियाँ।
रोज आते हैं मुनी भी सब इसी वड़ के तले, वेद और पुराण को करते हैं जा हरदम बयाँ।
कैफ़ियत यह सुनके और सारी बहारें देख कर, भरत की आँखों से आँसू हो गये फौरन रवाँ।
सिर झुका कर दोनों भाई चल रहे थे राह में, किस कदर था प्रेम उनमे हो नहीं सकता बयाँ।
राम के चरणों का नक्शा देख लेते थे वो जब, धूल आँखों में लगाते हो के बेहद शादमाँ।
जानवर और सब परिन्दे देख कर हैरान थे, गोह भी हैरतजदा कुछ हो रहा था बेगुमाँ।
राह बतलाने में भी कुछ भूल उससे हो गयी, आख़िरश फिर राह सीधी मिल गयी उनको वहाँ।
जो कि कामिल और साधु थे वो सब मल्लाह थे, भरत की तारीफ करते थे वो हो कर हमजबाँ।
उनको लक्ष्मण ने न देखा चूँकि जंगल था घना, भरत ने खुद देख ली जा राम रहते थे जहाँ।
आश्रम में पहुँचते ही उनका दुःख सब मिट गया, ईश्वर को पा लिया हो जैसे योगी रमजदाँ।
भरत ने देखा कि लक्ष्मण राम के आगे खड़े, पूछते जाते थे जो कुछ वो थे करते थे बयाँ।
जटा सिर पर कमर में उनके मुनियों का लिबास, और तरकश है कमर में हाथ मे तीरोकमाँ।
साधुओं की टोलियाँ है और मुनी है जमा सब, राम और सीता भी बैठे है उन्हीं के दर्मियाँ।
अपने हाथों से धनुष को फेरते जाते थे राम, जिसकी जानिब देख ले ये उसका दिल हो शादमाँ।
मंडली में इस तरह दिखते थे सीता-रामचन्द्र, सच्चिदानन्द और भक्ति दोनों हो जल्वाकुनाँ।
भरत भी और शत्रुहन भी गोह का राजा निषाद, भूल कर रंजों अलम दिल में हुए सब शादमाँ।
रहम कीजै रहम कीजै इस तरह कहते हुए, गिर पड़े नीचे जमीं पर नाम था जिनके जबाँ।
लक्ष्मण आवाज से पहचान कर कहने लगे, भरत है यह तो मुझे मिलना है इनसे बेगुमाँ।
फर्ज खिदमत का भी उनके दिल में था बेहद ख्याल, जोड़ कर हाथ अपने भाई से किया अर्जेबयाँ।
राम का रुख था जिधर पीछे से उसके आये थे, इसलिए उनको नज़र वो लोग आते थे कहाँ।
करते हैं प्रणाम आका आपको यह भरत जी, सुनते ही उल्फत मे डूबा राम का दिल नागहाँ।
वो उठे अपनी जगह से हो के कुछ बेहाल से, एक जगह कपड़े गिरे और एक जगह तीरो कमाँ।
राम ने उनको जमीं पर से उठाया जब्र से, और छाती मे लगाया उनको अपने बेगुमाँ।
देख कर दोनों का मिलना लोग थे हैरतजदा, बल्कि शायर के लिए मुश्किल है लिखना वह समाँ।
इजदियादे शौक से दोनों थे भाई बेकरार, कुछ जुदाई का न था दोनों तरफ नामोनिशाँ।
इस हकीकी प्रेम का कोई बयाँ कैसे करे, सिर्फ़ अल्फ़ाजों से क्योंकर शेर में आये समाँ।
भरत की और राम की उल्फत बड़ी मजबूत थी, ब्रह्मा विष्णु और महेश इसको थे पा सकते कहाँ।
देवता डरने लगे जब देखा उनका यह मिलाप, जब गुरु ने उनको समझाया गिरे शकओ गुमाँ।
शत्रुहन से राम मिल कर बाद केवट से मिले, भरत और लक्ष्मण मिले दोनों निहायत शादमाँ।
शत्रुहन से फिर मिले लक्ष्मण निहायत शौक़ से, और केवट से मिले हो कर बहुत खन्दादहाँ।
जो मुनी मौजूद थे उनका किया आदर-प्रणाम, शत्रुहन और भरत आशीर्वाद पाये बेगुमाँ।

शत्रुहन और भरत सीता जी के चरणों पर गिरे, हाथ सिर पर रख दिया सीता ने हो कर मेह्रबाँ।
जब दुआ सीता ने दी दिल उनका बेहद खुश हुआ, वलवले सब मिट गये और मिट गये वहमोगुमाँ।
हर कोई खामोश था कहना नही था मुँह से कुछ, तब तो केवट ने अदब से झुकके यों खोली ज़बाँ।
सब नगर के लोग सेवक और सरदाराने फ़ौज, गुरु वशिष्ठ आये हुए हैं आपकी आयी हैं माँ।
शत्रुहन को पास सीता के रखा और खुद चले, जब हुआ मालूम आये है गुरुजी भी यहाँ।
लक्ष्मण और राम दर्शन करके गुरु महाराज के, दण्डवत करने लगे वो होके बेहद शादमाँ।
उनको छाती से गुरु ने भी लगाया दौड़ कर, और केवट ने भी अपना कह दिया नामोनिशाँ।
फिर गुरु जी ने लगाया अपने सीने से उसे, जिस तरह लूटी हुई उल्फ़त मिली हो बेगुमाँ।
देवता सब मौतरिफ़ थे नीच केवट-सा नही, मरतबा आला मुनो जी का भी था सब पर अयाँ।
ऐसे कमतर शख्स से मुनीराज कैसे मिल लिये, राम की जिस पर नज़र हो क्यों न हो वह कामराँ।
राम ने देखा अवध के लोग जो आये है सब, सबके दिल कुम्हलाये है और लोग सब है नीमजाँ।
जिससे जैसा चाहिए मिलना था उन सबसे मिले, राम-लक्ष्मण से वो मिल कर हो गये सब शादमाँ।
फिर वो सब अहले अयोध्या जा के केवट से मिले, और कहते थे कि किस्मत की हैं उसकी खूबियाँ।
राम ने देखा कि अपनी माँएँ सब गमगीन है, कोंपलों पर जैसे पाला पड गया हो नागहाँ।
सबसे पहले राम जा कर कैकेई माँ से मिले, गिरके कदमों पर मिटाये उनके सब शकोगुमाँ।
दूसरी माँओं से भी जा कर मिले फिर रामचन्द्र, और समझा कर कहा वह सब करें जब्तेफ़ुगाँ।
आयी थी अरुंधती भी साथ गुरु-पत्नी जो थी, राम लक्ष्मण जा के उनसे भी मिले जल्दी वहाँ।
और भी जो ब्राह्मण थे उनकी पत्नी साथ थीं, दोनों भाई मिले उनसे कर दिया सब शादमाँ।
फिर सुमित्रा जी की जा कर गोद में बैठे ये दो, जैसे एक कंगाल को धन मिल गया हो बेगुमाँ।
फिर ये दोनों जाके कौशल्या के चरणों पर गिरे, प्रेम के बाअस नही जिनके रहे ताबोतवाँ।
दोनों बेटों को लिया रानी ने सीने से लगा, जैसे वर्षा, उनकी आँखों से हुए आँसू रवाँ।
जैसे गूँगा कह नहीं सकता किसी का जायका, इस तरह शायर को नामुमकिन है वह खीचे समाँ।
राम जी ने कहा गुरु जी से कि आश्रम को चलें, और फर्माया गुरु ने सबको तुम ठहरो यहाँ।
अपनी हमराही में वो ले कर चले कुछ खास लोग, आश्रम चलने की करने लग गये तैयारियाँ।
ब्राह्मण अरकाने दौलत और गुरु भी साथ थे, राम-लक्ष्मण भरत भी थे और थी हर एक माँ।
आ के सीता ने क़दमबोसी 'गुरु जी को जो की, दी दुआ उनको गुरु ने हो के बेहद शादमाँ।
बीवियाँ मुनियों की जितनी आयी थीं उनसे मिली, कुछ अकीदत का मैं उनकी कर नहीं सकता बयाँ।
मुँह जो देखा अपनी सासों का परेशाँ हो गयी, दर्द से बोली दिखाया आसमाँ ने क्या समाँ।
वो भी जब सीता को देखीं हो गयीं रंजीदा दिल, और यह समझीं कि जो होनी है वह टलती कहाँ।
बढ़ के सीता तब कदमबोस अपनी सासों की हुई, चश्म नम उनके हुए आँखों से आँसू थे रवाँ।
सास सब उनको दुआ देती थी दिल और जान से, तू रहे हरदम सुहागन अपने घर में शादमाँ।
देख कर सासों की हालत ये हुई रंजीदा दिल, और इनको देख कर रंजीदा दिल थी रानियाँ।
तब गुरु ने बैठ जाने के लिए सबसे कहा, और कुछ हालत जमाने की भी की सबसे बयाँ।
राजाए दशरथ के मरने का किया इजहार फिर, जिसको सुन कर राम ने बेहद किये आहोफ़ुगाँ।
खुद को बाअस उनके मरने का बता कर रामचन्द्र, हो गये बेचैन बेहद खो दिये ताबोतवाँ।
लक्ष्मण रोने लगे सीता भी रोने लग गयीं, मच गया कोहराम रोने लग गयी सब रानियाँ।

आज ही राजा मरे हों इस तरह कोहराम था, रो रहे थे लोग ये सब और थे मातमकुनाँ।
तब गुरु जी ने भी की तफ़हीम उठ कर राम की, सूये जू मन्दाकिनी उठ कर हुए ये सब रवाँ।
जा के दरिया के किनारे नहा कर फ़ारिग हुए, है वही मन्दाकिनी जिसकी हो खूबी क्या बयाँ।
रंज से खाना न पानी राम ने उस दिन लिया, गो गुरु ने भी कहा सब ही रहे तिस्नादहाँ।
दूसरे दिन से हिदायत की गुरु ने जिस तरह, सदके दिल से राम उस पर थे मआम्मल बेगुमाँ।
जिस तरह वेदों में हैं अहकाम किरिया कर्म के, राम उनको बजा लाये बिलाशक वहमों गुमाँ।
नाम से जिनके है होते शुद्ध पापी लोग सब, वह नहा कर शुद्ध होते है मैं करता हूँ बयाँ।
जब फ़रागत इससे पायी और दो दिन हो गये, राम अब अपने गुरु से यों हुए गौहरफ़शाँ।
लोग सब तक़लीफ़ में है फूल फल खाते हुए, रंज में हैं शत्रुहन और भरत और हर एक माँ।
वापसी मुल्के अवध को है मुनासिब आपकी, राजा है अमरावती में आप बैठे हैं यहाँ।
है अयोध्या सूनी-सूनी लोग सब हैरान है, कीजिए मुझको क्षमा मुझसे हुई गुस्ताखियाँ।
यह जवाब उनको मिला ऐ राम तुम कहते हो ठीक, लोग सब रंजीदा दिल हैं और हैं मातमकुनाँ।
धर्म के तुम हो समुन्दर और दया के धाम हो, देख कर कुछ दिन तुम्हें ये लोग होंगे शादमाँ।
राम की यह बात सुन कर लोग सब डरने लगे, डूबते को जैसे हो दरिया मे किश्ती नागहाँ।
बात यह सुन कर गुरु को कुछ दिलासा-सा हुआ, या कहो वादे मवाफ़िक आ गयी फ़ौरन वहाँ।
पैसवी नद्दी में करते रोज थे स्नान सब, राम के दर्शन से होते लोग थे सब शादमाँ।
रोज जाते थे वो वन और पर्वतों को देखने, जिस जगह तकलीफ़ और दुख का न था नामोनिशाँ।
नदी और नाले वहाँ बहते थे मीठे आब के, और हवा चलती थी ठंडी हर तरह राहतरसाँ।
झाड़ सायेदार और फलदार थे हर जा खड़े, और पत्थर की शिले हर जा पड़ी थी बेगुमाँ।
और कमल तालाब में चारों तरफ़ आते नजर, सब परिन्दे बोलते थे अपनी-अपनी बोलियाँ।
रहने वाले वन के जो थे यह वही थे काले भील, शहद भरके ले के आये फूल-फल की डालियाँ।
ला के आगे रख के सब के और बयाँ करके खवास, दाम लेने से वो हो जाते थे मुनकिर बेगुमाँ।
आप साधू हैं हमारे प्रेम को पहचानिए, इस तरह कहते थे वो सब उनसे हो कर शादमाँ।
आपके दर्शन से हम सबको मिली है जिन्दगी, राम जी भी हैं निषादों पर निहायत मेहरबाँ।
हम जो तोहफ़े ले के आये हैं ये हैं नाचीज सब, गर कबूल उफ़तद जिहे इज़्ज़ोशरफ़ ऐ राजगाँ।
भील दे सकते ही क्या हैं बर्गो हीजम के सिवा, खबिये किस्मत हमारी है कि आये हो यहाँ।
है बुरी खसलत हमारी और बुरे अतवार हैं, चोर और डाकू है हम यह जानता हैं सब जहाँ।
आपके कपड़े व बर्तन जो नहीं हमने चुराए, है यही खिदमत हमारी बात है बिलकुल अयाँ।
पाप करते हैं हमेशा फिर भी हम मुहताज है, हम नहीं कुछ जानते नेकी की है क्या खूबियाँ।
राम के दर्शन से हम लोगों ने पायी है नजात, पाप सारा कट गया है हो गये हैं शादमाँ।
जब सुनी अहले अवध ने इन सबों की गुफ़्तगू, हो गये मद्दाह उनके और सबसे शादमाँ।
गुफ़्तगू का तौर उनका राम से उनका खुलूम, देख कर थे शाद सब मर्दोज़न पीरोजवाँ।
राम ही की दया का है यह सबब कहते थे सब, नाव जैसे लोहे को ले कर के तैरे बेगुमाँ।
अलग़रज आनन्द से फिरते थे सब अहले अवध, मोरो मेंढक जिस तरह बारिश मे फिरते शादमाँ।
दिन गुज़रते कुछ उन्हें मालूम होता ही न था, मर्दोज़न मुल्के अवध के थे बहुत शादीकुनाँ।
हर घड़ी तैयार सीता उनकी खिदमत के लिए, खुद की सासे तीनों आयीं थी अयोध्या से यहाँ।

इस कदर की उनकी सेवा हो गयी वो सब सुखी, और दुआ दे कर बयाँ करती थीं उनकी खूबियाँ।
राम-लक्ष्मण और सीता की शआदत देख कर, थी पशेमाँ कैकेई, था उसके बसरे से अयाँ।
चाहती थी मौत अपनी या ज़मी में छुप रहे, आरज़ू उसकी ये पूरी हो भी सकती थी कहाँ।
राम के जो हैं मुखालिफ चैन उनको कब मिले, लोक में और वेद में यह बात है बिलकुल अयाँ।
राम घर वापस चलेंगे या नहीं यह फिक्र थी, लोग सब मूलके अवध के सोचते थे बेगुमाँ।
भरत को ना नींद थी, ना भूख थी, थे बेकरार, जैसे बेपानी के कीचड में फँसी हो मछलियाँ।
सोचते थे माँ के बाअस यह खराबी हो गयी, ताजपोशी राम की अब कैसे की जाए यहाँ।
वह गुरु के हुक्म को हरगिज न टालेंगे कभी, गर कहें उनको गुरु हो जाएँगे वापस रवाँ।
राम का मंशा न हो गर ऐसी सूरत में गुरु, हुक्म देंगे या न देंगे मुझको है शक ओ गुमाँ।
माँ के कहने से भी शायद रामचन्दर मान लें, वह करें मजबूर लेकिन ये भी मुमकिन है कहाँ।
दास हूँ मैं तो मेरा कुछ ज़ोर चल सकता नहीं, बदनसीबी से मेरी है फिर गयी बदबख्तियाँ।
मैं अगर कुछ जिद करूँ ये भी मुझे वाजिब नहीं, क्योंकि सेवक के लिए अच्छी नहीं गुस्ताखियाँ।
राय कोई भरत के दिल में नहीं कायम हुई, रात गुजरी यों ही उनके था नहीं आरामें जाँ।
दूसरे दिन सुबह फ़ारिग़ जब हुए सब काम से, भरत की तलबी हुई फ़ौरन गुरु जी के यहाँ।
भरत भी हाज़िर हुए और लोग भी सब आ गये, तब गुरुजी ने किया आगाज़ अपना यों बयाँ।
रामचन्दर कौन है यह अब सुनें सब हाज़रीन, उनके मैं औतार की करता बयाँ हूँ खूबियाँ।
ये सचाई के हैं हामी और मर्यादा पुरुष, उनका है औतार दुनियाँ के लिये राहनरसाँ।
बाप-माँ के और गुरु के हुक्म को हैं मानते, है बुरों के बेशकन नेकों पर हैं ये मेहरबाँ।
जानते आईन हैं दिल में मुहब्बत है भरी, ब्रह्मा, विष्णु शिव ही क्या यह जानता है सब जहाँ।
राम की मंशा पे चलना यह हमारा धर्म है, यह समझ कर आप जो मंजूर हो कीजे बयाँ।
ताजपोशी राम की मंजूर है सब को मगर, किस तरह वापस अयोध्या को वो हों ये हो बयाँ।
यह गुरु की बात सुन कर लोग सब खामोश थे, कुछ जवाब उनको न सूझा बन्द थी सबकी जबाँ।
भरत ने तब हाथ जोड़े और खड़े भी हो गये, और कहा मशहूर है यह सूर्यवंशी खानदाँ।
हो गये कितने यहाँ राजा हैं इसमें नामवर, ये भी सब दुनिया में आये इनके भी थे बाप माँ।
अपने-अपने काम के लायक़ उन्होंने पाया फल, बात यह बिलकुल है ज़ाहिर कुछ नहीं शक ओ गुमाँ।
आपकी कृपा अगर हो कष्ट सारे दूर हों, चैन हो सबको मयस्सर है यह मशहूरे जहाँ।
आप जो चाहें वो कर सकते है ऐ स्वामी मेरे, आप का जो हुक्म हो टल जाए यह मुमकिन कहाँ।
आप मुझसे पूछते हैं राय—ऐ मेरे गुरु, मेरी किस्मत की समझता हूँ ये है बदबख्तियाँ।
भरत के मुँह से जो निकले प्रेम रस अल्फ़ाज यह, गुरु वशिष्ठ के दिल का भाये और हुए वो शादमाँ।
और कहा उनसे गुरु ने आपका कहना है ठीक, राम की मन्शा से बाहर काम हो मुमकिन कहाँ।
बात है एक और भी कहता हूँ अगर मंजूर हो, मुझको कहने में तअम्मुल हो रहा है बेगुमाँ।
आधे को हैं छोड़ देते आधा पाने के लिए, इस तरह होता है आया है यह दस्तूरे जहाँ।
राम लक्ष्मण और सीता फिर अयोध्या को चलें, शत्रुहन और भरत दोनों बन को हो जाएँ रवाँ।
बात ऐसी अच्छी सुन कर भरत भी और शत्रुहन, हो गये दोनों सुखी और हो गये वो शादमाँ।
इनको ऐसा हो गया मालूम दशरथ जी उठे, और अयोध्या के हुए हैं राम चन्दर हुक्मराँ।
दूसरों को फ़ायदा उसमें रहा—नुकसाँ था कम, रानियों की एक हालत थी बहर सूरत अयाँ।

भरत कहने लग गये तामील इसकी हो जरूर, उम्र भर वन में रहूँगा मैं बिला कुछ इनोआँ।
रामचन्दर और सीता जानते सब भेद हैं, आपके औसाफ़ आली भी है बरतरअज़ बयाँ।
आप जो कुछ कह रह हैं हो अगर सच्ची ये बात, कीजिए तामील की इसकी अभी तैयारियाँ।
जब मुनी ने यह सुना हैरतज़दा से रह गये, लोग ख़्वाहिश इनकी सुन कर हो गये सब शादमाँ।
एक गहरा था समुदर भरत जी का प्रेम यह, किश्तीए अक़्ले मुनी जी पार कर सकती कहाँ।
भरत की यह गुफ़्तगू उनको बहुत आयी पसन्द, लेके सब को वो गये थे रामचन्दर जी जहाँ।
राम ने प्रणाम करके दी गुरु जी को जगह, और गुरु के हुक्म से सब लोग भी बैठे वहाँ।
यों गुरु जी ने कहा हो कर मुख़ातिब राम से, आप सब कुछ जानते है जो दिलों में है निहाँ।
राम वह बतलाइए जिसमे भला हो मुल्क का, माँ तुम्हारी ख़ुश रहे और भरत भी हों शादमाँ।
जो दुखी हो राय दे सकता नहीं अच्छी कभी, और जुवारी दाव अपना सोचता है हर जमाँ।
फिर मुनी से राम ने यह दस्त-बस्ता अर्ज़ की, आप का जो हुक्म होगा है वही इज़्ज़त निशाँ।
आपके तो हुक्म की तामील में हाज़िर हूँ मैं, और जिसको आप जो कहिए करे बेईनोआँ।
यों मुनी जी ने कहा कहना तुम्हारा है दुरुस्त, भरत के अतवार से है ग़ौर की ताक़त कहा।
अक़्ल मेरी दंग है इनकी अक़ीदत के सबब, पासे ख़ातिर उनका रखने से नहीं रुसवाइयाँ।
भरत का जो कुछ हो कहना ग़ौर से सुन लीजिए, बाद इसके कीजिए हों जिसमें मुज़मिर खूबियां।
भरत पर जो थी दया की दृष्टि उसको देख कर, राम का दिल शाद था और हो गये वह शादमाँ।
यों कहा फिर राम ने खा कर कसम—ऐ नाथ जी, भरत के जैसा कोई भाई हुआ ही है कहाँ।
जो गुरु सेवक है वह तो हर तरह है खुशनसीब, आपकी उस पर दया की है नज़र तुर्फा बराँ।
भाई के मुँह पर करूँ तारीफ यह है ना दुरुस्त, उनका कहना मान लेने में हैं बेशक खूबियाँ।
फिर मुनी हो कर मुख़ातिब भरत से कहने लगे, दिल में जो कुछ हो तुम्हारे भाई से कर दो बयाँ।
सुनके कहना यह गुरु का पाके मन्शा राम का, भरत समझे यह कि सर पर है मेरे बारे गिराँ।
मुँह से कुछ निकला नहीं वह ईस्तादा हो गये, दस्ताबस्ता थे खड़े आँखों से आँसू थे रवाँ।
और कहा जो कुछ भी कहना था मेरा सब नाथ ने, कह दिया है और ज़्यादा क्या करूँ अब मैं बया।
अपने मालिक का मुझे सब हाल यह मालूम है, वह कभी ख़ता से भी होते नही हैं बद गुमाँ।
मुझ पर तो हर दम इनायत की नज़र उनकी रही, खेल में भी उनके गुस्से का न था नामोनिशाँ।
मैं तो बचपन से हमेशा साथ उन ही के रहा, और वो हर दम रहे मुझ पर शफ़ीक़ो मेहरबाँ।
खेलने में भी कभी मैं हार जाता था अगर, आप ख़ुद मुझको बना देते थे वह नुसरतनिशाँ।
आज तक मैंने कभी उनसे नहीं की इल्तेजा, उनके दर्शन का हूँ मैं प्यासा नहीं ताबोतबाँ।
होने वाली बात थी, भगवान को मंजूर था, माँ के ज़रिये पेंच डाले मेरे उनके दर्मियाँ।
ऐसा कहना मेरे मुँह से मुझको जेबा भी नहीं, कह सके कोई किसी की क्या बदी और खूबियाँ।
नेक हूँ मैं और माँ ही बद यह कहना पाप है, काली घूंघी भी कहीं हो सकती है गौहर फ़शाँ।
दोष देना यों किसी को ख़्वाब में भी है ग़लत, बदनसीबी को समझता हूँ मैं एक बारे गिराँ।
मैंने नासमझी से माँ को मुत्तहिम नाहक़ किया, मैं बना तकलीफ़दे उनके लिए ईज़ा रसाँ।
एक ही है बात की उम्मीद मेरे वास्ते, राम जी हैं मेरे मालिक और गुरु जी मेहरबाँ।
साधुओं की है ये मजलिस और तीरथ का मुकाम, प्रेम है या है बनावट कर नही सकता बयाँ।
झूठ और सच से मेरे वाक़िफ़ गुरु जी हैं मगर, राम को भी मेरी निसबत है नही शानोगुमाँ।

देखा जा सकता नहीं है मुझसे सब माँओ का गम, और अवध के लोग भी करते है सब आहोफ़ुगाँ।
बाप ने तो जान देदी बात रखने के लिए, माँ की नाममझी से वाकिफ हो गया सारा जहाँ।
सब खराबी का सबब मै हूँ मुझे मालूम है, इसलिए मै सह रहा हूँ खुद पे इतनी सख्तियाँ।
राम लक्ष्मण और सीता वन को पैदल ही गये, मुन के यह तकलीफ अब भी है मेरे क़ालिब में जाँ।
जो निषादों के हैं राजा देख कर उनका ये प्रेम, मेरे दिल की क्यों नही उड़ जाती है अब धज्जियाँ।
हो गया मालूम मुझको इस जगह आने से सब, जी रहा हूँ इसलिए कि सह सकूँ रुसवाइयाँ।
राम-लक्ष्मण और सीता के मुखालिफ़ में जो हो, उससे बढ़ कर और दुनिया में मिले पापी कहाँ।
भरत की यह गुफ़्तगू उल्फतभरी सबने सुनी, हो गये बेताब सब और छा गई खामोशियाँ।
तब वशिष्ठ उनसे पुरानी कुछ कथा कहने लगे, भरत की दिलजोई की जिसमे मिटे शक ओ गुमाँ।
बाद उनके रामचन्दर इस तरह कहने लगे, भाई नाहक इस तरह तुम हो रहे हो परेशाँ।
जो कि होनी है कभी टलती नही है बात यह, ईश्वर ही जानता है राजे दुनिया बेगुमाँ।
माजी और हाल, और मुस्तकबिल के सब पुण्यात्मा, तुमसे नीचे है, बुलन्दी तुमको है उन पर अयाँ।
दिल मे भी कोई अगर तुम पर गुमानेबद करे, लोक और परलोक में उसके अमल हों रायगाँ।
कैकेई माता को जो बदनाम करते है फिजूल, साधुओ के वह कभी रहते नहीं हैं दर्मियाँ।
नाम ले ले जो तुम्हारा कष्ट उसका दूर हो, जिन्दगी में खुश रहे वह और मर कर शादमाँ।
सच हूँ कहता भाई मैं और शिव भी है इसके गवाह, है जमीं कायम तुम्हारे ही सबब से बेगुमाँ।
बेसबब तुम हो रहे हो इस तरह रंजिदा दिल, दुश्मनी हो या मुहब्बत छुप ही सकती है कहाँ।
जानवर जाते है मुनियो के बुलाए बेधड़क, भाग जाते है शिकारी से बचा कर अपनी जाँ।
जानवर पहचानते है दोस्त और दुश्मन को जब, फिर न क्यो इन्सान पर यह बात हो बिलकुल अयाँ।
भाई मैं आदत तुम्हारी जानता हूँ खूब खूब, क्या करूँ मजबूर हूँ और बन्द है मेरी जबाँ।
बाप ने छोड़ा मुझे वादा निभाने के लिए, कौल को अपने निभाया और दे दी अपनी जाँ।
हुक्म उनका टाल देना मै समझता हूँ बुरा, उससे बढ़ कर फिक्र है मुझको तुम्हारी मेरी जाँ।
इसलिए अब जिस तरह चाहोगे तुम हाजिर हूँ मै, क्योंकि कहना है गुरु जी का यही ऐ मेरी जाँ।
साफ़ दिल से जो कहोगे वह करूँगा आज मै, राम के अलफाज सुन कर हो गये सब शादमाँ।
इन्द्र ने सोचा कि काम है अब बिगड़ने के लिए, देवता सब दिल ही दिल मे हो रहे थे नीमजाँ।
फ़िक्र उनको थी कि भक्तों पर दया करते है राम, याद करते थे वह दुर्वासा ऋषी की दासताँ।
उससे पहले जब कि थे तकलीफ में सब देवता, हो गये नरसिंह जी प्रह्लाद के कारण अयाँ।
काम अब भी देवताओं का भरत के हाथ है, गुफ्तगू होने लगीं यों इन सबो के दर्मियाँ।
बस यही तदबीर हमको आ रही है एक नजर, भक्त की सेवा से होते राम खुद है शादमाँ।
इसलिए अब चाहिए कि भरत को अपनाएँ हम, जिसके बाअस राम जी हो जाएँ हम पर मेहरबाँ।
देवताओं के गुरु कहने लगे अच्छा है यह, भरत की भक्ति से बेशक आप होंगे कामराँ।
राम के सेमक का जो दिल मे तुम्हारे है खयाल, फिक्र सारी छोड़ कर हो जाएँ अब सब शादमाँ।
भरत को समझो ये तुम वह राम की परछाई है, राम को है उनसे उल्फत उनपे हैं ये मेहरबाँ।
उनकी ऐसी गुफ्तगू से राम को भी फ़िक्र थी, हो गया मालूम इनको क्योंकि ये थे रमजदाँ।
भरत ने सोचा कि सब कुछ बोझ मेरे सर रहा, राम के अहकाम की तामील है शायानेशाँ।
छोड़ करके कौल अपना रखा मुझ पर इनहिसार, किस क़दर यह मेहरबानी है, यह है बिलकुल अयाँ।

हाथ जोड़े भरत ने और राम जी से अर्ज़ की, आपकी नज़रे करम है और गुरु है मेहरबाँ।
बलवला मेरा मिटा अब खौफ़ मुझको कुछ नहीं, खौफ़ से या मेरी बदबख्ती से मैं था नीमजाँ।
माँ की गुमराही से जो बरबाद मैं था हो गया, आपने अपना के मुझको फिर बचा ली मेरी जाँ।
आपकी जब हो दया तो फिर मुझे कुछ डर नहीं, कोई कहता हो मुझे बद, या मुखालिफ हो जहाँ।
ना मुखालिफ़ ना मुआफ़िक आप रहते है मुदाम, आपके साये से हो जाता है इनमाँ कामराँ।
आपकी भी और गुरु की देख कर खुद पर दया, फ़िक्र दिल में कुछ नही बाकी रही अब बेगुमाँ।
नीच है वह जो कि मालिक को तो रक्खे फ़िक्र मे, फायदे का अपने ही देखा करे खुदाबेगिराँ।
फ़र्ज सेवक का यही है वह करे सेवा मुदाम, छोड़ कर सब ऐशो राहत खुद सहे दुश्वारियाँ।
वापसी मे आपकी सब की भलाई है जरूर, आपकी मन्शा पे चलना है मुनासिब बेगुमाँ।
अर्ज मेरा एक मारूजा है वह सुन लीजिए, फिर अमल कीजै वही, जिसमें हो मुजमिर खूबियाँ।
आपको मंजूर हो तो दीजिए इज्जत हमें, ताजपोशी का लिये आये है सामाँ हम यहाँ।
शत्रुहन को साथ दे कर भेज दीजै मुझको वन, लौट कर घर आप कीजै मुल्क भर को शादमाँ।
शत्रुहन और लक्ष्मण को वर्ना घर को भेजिए, आपके हमराह मै रह कर बनूँ इज्जत निशाँ।
वर्ना सीता जी को ले कर आप घर को जाइए, और हम तीनो बिरादर बन को हो जाएँ रवाँ।
मेरे मालिक जिस तरह मंजूर हो कीजै अमल, कह दिया है आपसे मैंने नही रक्खा निहाँ।
मेरे सर रख दी है सारी जिम्मेदारी आपने, गो उठा सकता नही हूर चन्द यह बारेगिराँ।
अर्ज करना कुछ ज्यादा है ढिठाई का सबब, ऐसे सेवक को कहा करते है सब आलिम जबा।
आप है जो रहम दिल, इस वास्ते सुनते हुए, प्यार भी करते है मुझको और है मेरे मदहखवाँ।
आप जो फरमाएँगे उस पर अमल होगा जरूर, हो भलाई जिसमे सब की खुश रहे सारा जहाँ।
भरत की यह गुफ्तगू सुन कर हुए सब लोग खुश, आसमाँ से देवता उन पर हुए सब गुलफशाँ।
सोचने सब लग गये क्या राम अब देगे जवाब, वननिवासी चाहते थे राम रह जाएँ यहाँ।
राम कुछ कहने न पाये सोच मे कुछ पड़ गये, मुन्तजर सब लोग थे और बन्द थी उनकी जबाँ।
यह खबर आयी कि कुछ क़ासिद जनक के आये है, सुनते ही इसको वशिष्ट ने सबको बुलवाया वहाँ।
वो जो आये राम का देखा मुनी के भेस मे, दिल दुखा उनका हुए कुछ आँख से आँसू रवाँ।
गुरु वशिष्ठ उनको बिठा कर इस तरह कहने लगे, खैरियत से तो है महाराजा जनक आली निशाँ।
करके वह प्रणाम यों कहने लगे महाराज जी, आपका यह पूछना उनकी खुशी का है निशाँ।
वर्ना सारी शादमानी चल बसी दशरथ के साथ, जिनके मर जाने से गमआलूदा है सारा जहाँ।
ऐ गुरुजी खास कर मुल्के अवध और जनकपुर, हो गये है बेसहारा, अब वह रौनक ही कहाँ।
सुनके मरना राजा दशरथ का हमारे लोग सब, हो गये बेचैनो मुजतर और है मातमकुनाँ।
राजाए आली जनक का हाल क्या था क्या कहूँ, गरचे साबिर थे मगर सब खो चुके ताबोतवा।
चालबाजी सुनके रानी की हुए हैरान वो, और हुआ मालूम जब यह, भरत होंगे हुक्मराँ।
हो गये बेहद दुखी वो जब खबर यह भी सुनी, छोड़ कर घर को हुए है राम जी वन को रवाँ।
फिर महाराजा ने अपने सब मशीरो से कहा, मुझको क्या करना है लाजिम कीजिए मुझसे बयाँ।
सुनके यह काया पलट जो कुछ अयोध्या में हुई, मेरा जाना है मुनासिब या मैं वो जाऊँ यहाँ।
लोग सब खामोश थे देते न थे कोई जवाब, खुद महाराजा ने सोचा क्योंकि वो है नुक्तेदाँ।
चार जासूसों को बुलवाया, हुआ यह उनको हुक्म, जल्द हो जाएँ अवधपुर को यहाँ से वो रवाँ।

राम जाने की वजह से भरत का क्या है ख़याल, यह ख़बर ले कर वो आयें, हो न ज़ाहिर यह वहाँ।
दूत जा कर राजमें सब हाल से वाकिफ़ हुए, भरत के तौर और तरीक़े उन पर हुए बिलकुल अयाँ।
जब हुए राही अयोध्या से वो सूये चित्रकूट, जल्द वह भी लौट कर आये जनकपुर बेगुमाँ।
आके राजा से कहा तफ़सील से अहवाल सब, कैफियत यह सुनके राजा के न थे तात्रोतवाँ।
शाह के अर्कान दौलत और गुरु सब अकट्ठा, फ़िक्र में डूबे हुए थे बन्द थी सब की ज़बाँ।
सब से कुछ काम फिर राजा जनक जी ने लिया, भरत के अफ़आल सुन कर हो गये वो मदहूशवाँ।
जो बहादुर थे सिपाही और भरोसे के भी थे, उनको बुलवा कर कहा घर के रहें वो निगहबाँ।
रथ व घोड़े और हाथी साथ सब अपने लिये, हो गये मिथिलापती मिथिलापुरी से फिर रवाँ।
रास्ते मे भी महाराजा कहीं ठहरे नहीं, सुबह वो प्रयाग में आ कर नहाये बेगुमाँ।
लोग सब स्नान करके जबकि जमना पार आये, हाल सब मालूम करने हमको भेजा है यहाँ।
इस क़दर कह कर जमीं पर सर उन दोनों ने रखा, और गुरु जी पर हुए हालात सब बिलकुल अयाँ।
जल्द वापस उनको जाने के लिए फ़रमाये वो, साथ दोनों के किया दो-चार भीलों को रवाँ।
यह ख़बर सुन कर कि आते हैं यहाँ राजा जनक, राम को कुछ फ़िक्र थी अहले अवध थे शादमाँ।
कैकेई अफ़सोस के बाइस थी घुलती जा रही, क्या कहे किस से कहे वह, बन्द थी उसकी ज़बाँ।
लोग सब समझे कि आ जाएँ अगर राजा जनक, चार दिन हम और सब रह जाएँगे मिल पर यहाँ।
इस तरह वह दिन भी गुजरा, दूसरे दिन लोग सब, सुबह उठ कर करते थे स्नान पूजा वो वहाँ।
सब दुआ यह माँगते थे राम ही राजा बनें, और सीता जी बनें रानी हमारी बेगुमाँ।
सब तरह फूले फले शादाब हो आबाद हो, पाये तख्त उनका अयोध्या हर तरह वाइज़्ज़ो शाँ।
राम ओहदा दे वली अहदी का भाई भरत को, हमको आँखों से दिखा भगवान् ऐसा तू समाँ।
कामयाबी से करें वो राज अयोध्यापुरी का, इनके ही दौरे हुकूमत में मरें हम शादमाँ।
आरजू सुन कर अयोध्यावासियों की इस तरह, दंग हो जाते थे ज्ञानी और मुनी भी रमज़दाँ।
राम के दर्शन से जैसे लोग थे सब मुस्तफ़ीद, सब से मिल कर हस्बे रुतबा राम भी थे शादमाँ।
राम का यह तो तरीका उनके बचपन ही से है, उनको जो है चाहता रहते हैं उस पर मेहरबाँ।
राम की तारीफ़ करते इस तरह थे लोग सब, खुशनसीबी पे वो अपनी हो रहे थे शादमाँ।
यह ख़बर पा कर कि आते है यहाँ राजा जनक, राम भी फ़ौरन उठे और लोग सब जो थे वहाँ।
भाई सब थे साथ और अहले अवध थे और गुरु, पेशवाई के लिए ये सब हुए फ़ौरन रवाँ।
आया कामदनाथ जब राजा जनक के सामने, करके वह प्रणाम उतरे रथ से अपने बेगुमाँ।
राम से मिलने की खातिर चल रहे थे बेथकान, दिल लगा था सब का उस जा राम सीता थे जहाँ।
जब जनक हमराही ले कर आ गये बिलकुल क़रीब, मस्त हो कर मिलते थे बाहम यके बादीगराँ।
जो मुनी मौजूद थे चूमें जनक ने उनके पाँव, राम ने प्रणाम की उनको, जो अब आये वहाँ।
भाइयों को साथ ले कर राम राजा से मिले, फिर उन्हें वो साथ अपने ले गये अपने यहाँ।
आश्रम उनका था या वह शान्ति का बहर था, और नदी प्रेम की, मिथिलापुरी के साकिनाँ।
जा रही है नदी ये मिलने को अब उस बहर में, राम ले जाते हैं हमराह उसको बन कर बादबाँ।
नदी इतनी है बड़ी यह ज्ञान और वैराग की, वह डुबा कर सब किनारे हो रही हैं यों रवाँ।
और वह नाले थे छोटे जाके जो हों इसमें ज़म, दुख भरे सबके मोखन और आहें और जारी फ़ुगाँ।
और हवा के थे वह झोके साँस लम्बी आह की, जिससे उठती वह तरंगे, सब हो जिनसे रवाँ।

और वनवासी जो थे वो यात्री कोलो किरात, देख कर जो इनको होते थे ग़ामोशो बेज़बाँ।
जाके यह नद्दी मिली जब आश्रम के बहर मे, हो गया तूफ़ान बरपा बहर में एक नागहाँ।
लोग दोनों मिस्त के बेचैन थे और बेक़रार, सब्र बाकी था न दिल में लब पे थी आहो फ़ुगाँ।
राजा दशरथ के लिए रोता था हर एक आदमी, खूबियाँ मरहूम की हर एक करना था बयाँ।
ग़म के दरिया में वो होते जा रहे थे गोता जन, राजा दशरथ के लिए सब लोग थे गानमकुनाँ।
देख कर हालत जनक की यह कभी मुमकिन नहीं, सब्र क़ायम रह सके दिल में किसी के बेगुमाँ।
आखिरस ज्ञानी मुनी जो थे दिये उपदेश कुछ, और समझाया जनक को फिर वशिष्ठ गुरुनादाँ।
वह महाराजा थे काबिल ज्ञान के भंडार थे, गुफ़्तगू से जिनकी होते थे मुनी भी शादमाँ।
जो परे थे हर तरह दुनिया के इस जंजाल से, उनके दिल में इजतिराब ऐसा हो मुमकिन है कहाँ।
राम की उल्फ़त के बाअस इस तरह सब कुछ हुआ, जिनकी क़ुदरत है फ़ज़ूँतर नरतरज वहमोगुमाँ।
विषयी, साधक हुए हैं और हुए है ज्ञानवान, तान ही अक्साम वेदा मे ये जीवों के बयाँ।
इनमे जिसका दिल लगा रहता है इश्के राम में, है बड़ा रुतबा उसका साधुओं के दर्मियाँ।
ज्ञान की रौनक़ नही राम की उल्फ़त बग़ैर, जिस तरह लाज़िम हो किश्ती के लिए मौजे रवाँ।
जब हुए खामोश आखिर मे यहाँ राजा जनक, घाट पर मिल कर गये स्नान करने सब वहाँ।
ग़मज़दा थे लोग सब खाना न पानी कुछ लिया, जानवर प्यासे रहे था लोग खाते थे कहाँ।
दूसरा दिन जब हुआ तब राम और राजा जनक, करके ध्यान स्नान बैठे झाड़ के एक दर्मियाँ।
थे अयोध्या और जनकपुर के निवासी एक जाँ, गुरु वशिष्ठ और गुरु सतानन्द भी हुए जल्वा कुनाँ।
दोनों गुरुओं ने कहा नीती भी और वैराग भी, धर्म के औसाफ़ बतलाये कि वह थे रमज़दाँ।
और विश्वामित्र भी पिछले कहे क़िस्से बहुत, कह के समझाया बहुत लोगों को यह जादू बयाँ।
राम ने हो कर मुखातिब यों कहा महाराज जी, लोग सब है कल से भूखे जितने आये हैं यहाँ।
आज कुछ आहार इनको चाहिए होना जरूर, दोपहर से भी ज्यादा वक़्त गुजरा बेगुमाँ।
पाके मंशा फिर ऋषी का यों जनक कहने लगे, कि हमे वाजिब नहीं है यह गिजा खाये यहाँ।
सुनके यह तजवीज राजा की हुए सब लोग खुश, और सब होने लगे उस जाग से उठ कर रवाँ।
फूल फल पत्ते जो उस जंगल की पैदावार थी, टोकरो में भरके ले आये जो रहते थे वहाँ।
राम की किरपा से वन था हर तरफ फूला फला, और खाने के लिए असबाब की चीजे वहाँ।
वन की शादाबी का हम कुछ जिक्र कर सकते नहीं, और हवा ठंडी थी लोगो के लिए राहतरसाँ।
यह मेहरबानी जनक की हो रही थी खुदबखुद, सब क़याम अपना किए झाडो के नीचे बेगुमाँ।
जो तहायफ़ आये थे सब के लिए भेजे गये, थे लजीज और खुशमजा खाने मे हो शारीदहाँ।
शौक से सब लोग खाये जो कि था भेजा गया, इस तरह रहते हुए दो चार दिन गुजरे वहाँ।
सब अयोध्या के निवासी और मिथिला नगर के, देख कर रघुनाथ को रहते थे हर दम शादमाँ।
सब यही थे चाहते हम राम को ले कर चलें, वह न आये साथ तो हम जाएँ वापस क्यों मकाँ।
राम के हमराह जंगल उनको था आरामदे, ऐहले जन्नत को भी यह हासिल न हो आरामेंजाँ।
कौन है वह जिसको सीता राम लक्ष्मण के बग़ैर, घर में दिल लगता हो जिसका और रहे वह शादमाँ।
खुशनसीबी थी यह सबकी जो ये हासिल हो गया, जाके रहना उस जगह रघनाथ रहते थे जहाँ।
थी नदी मन्दाकिनी स्नान करते तीन बार, राम के दर्शन मे हरदम लोग रहते शादमाँ।
राम के नज़दीक थे मुनियों का होता था मिलाप, यों गुजर जाना बरस चौदह न था बारे गिराँ।

इस तरह जब लोग आपस में थे करते बात-चीत, राम के नजदीक रहने से वो सब थे शादमाँ।
मिलने कौशल्या वग़ैरह से उसी वक्त आ गयीं, भेजी महारानी सुनैना जी ने थीं जो दासियाँ।
जब हुआ मालूम कौशल्या का है फ़ुरसत का वक़्त, आये महल्लाते जनक मिलने को उनसे बेगुमाँ।
पेशवाई रानी कौशल्या ने आगे बढ़के की, जो जगह जिसकी थी मौज़ूँ उसको बिठलाया वहाँ।
थी मुहब्बत सबके दिल में और थे सब ग़मज़दा, नीची नज़रें सबकी थी और आँख से आँसू रवाँ।
यों सुनैना जी ने फिर आहिस्ता-आहिस्ता कहा, यह ज़माने की भी नैरंगी है कैसी बेगुमाँ।
जो नहीं लायक़ सज़ा के पा रहे हैं वो सज़ा, बेगुनाहों पर मुसीबत ढा रहा है आसमाँ।
नाम तो सुनते हैं हम होता भी है अमृत मगर, ज़हर मिल जाता है हरजा कुछ नहीं शक ओ गुमाँ।
कौवे और बगुले व उल्लू रहते हैं हर जा मगर, हंस रहता है उसी जा मानसरोवर है जहाँ।
यों सुमित्रा ने कहा ख़ालिक़ के हैं सब काम अजब, करके पैदा मारना भी सब को है वह बेगुमाँ।
कारोबार उसके हैं ये मानिन्द एक बच्चों के खेल, जो समझ से है परे बेरून अज़ वहमोगुमाँ।
रानी कौशल्या ने फ़रमाया शिकायत है फ़िज़ूल, अपनी क़िस्मत से हुआ करते हैं सब सूदोज़ियाँ।
जो लिखा तक़दीर का है जानना दुश्वार है जानता परमात्मा है उसको बेशकओगुमाँ।
वह भलाई और बुराई का समर देता है ख़ुद, उसकी मंशा के मुताबिक़ चलता है सारा जहाँ।
पैदा करना पालना और मारना है उसके हाथ, फ़िक्र सब बेकार है और सोच है सब रायगाँ।
हम यहाँ राजा के मरने का दुख हैं कर रहे, अपना ही पेशे नज़र रक्खे हुए सूदोज़ियाँ।
यों सुनैना ने कहा—है ठीक जो कहती हो तुम, क्यों न तुम ऐसा कहोगी तुम हो जब फ़ख़्रे जमाँ।
राम लक्ष्मण और सीता वन को जाएं ठीक है, भरत की है फ़िक्र मुझको हो गया है ख़स्ताजाँ।
राम की खा कर क़सम कहती हूँ मैं रानी सुनो, चारों लड़के और बहू प्यारी हैं मुझको बेगुमाँ।
भरत की तौसीफ़ से तो सरस्वती माज़ूर है, सीप से दरिया कभी भर जाए यह मुमकिन कहाँ।
मैं समझती हूँ यही महराज भी कहते थे यह, भरत है लायक़ निहायत और चिराग़े ख़ानदाँ।
जब कसौटी पर कसे होती है सोने की परख, क़द्र जौहर की है तब ही जौहरी हो क़द्रदाँ।
आज़माइश होती है जब काम पड़ जाये कोई, आदमी के वास्ते भी है यह वक़्ते इम्तेहाँ।
जो कहा है मैंने मुमकिन है कि हो यह नादुरुस्त, फ़िक्र और दुख में समझ होती है अक्सर रायगाँ।
भरत की झूठी बड़ाई कर रही हूं यह न हो, सुनके यह अल्फ़ाज़ उनके मुज़तरिब थी रानियाँ।
और कहा कौशल्या जी ने आप तो हैं अक़्लमन्द, क्या ज़्यादा मैं कहूँ, है आप ख़ुद ही नुक़तादाँ।
आप यहाँ राजा जनक को इस तरह समझाइए, लक्ष्मण घर को चलें और भरत वन को हों रवाँ।
गर महाराज जनक को यह पसन्द आ जाय बात, ग़ौर करके ख़ुद करें वह इन्तज़ाम ऐसा यहाँ।
भरत की है फ़िक्र मुझ को वह अगर घर में रहें, मुझको अन्देशा है उनकी बच नहीं सकती है जाँ।
देख कर कौशल्या जी का यह तरीक़ा और तौर, हो गयी बेचैन मुज़तर जिस क़दर थी रानियाँ।
फूलों की वर्षा हुई हर सिम्त से ऊपर तमाम, जो मुनी ज्ञानी ऋषी थे थे हुए सब मदहुश्वाँ।
यों ही बातें होते-होते रात गुज़री दोपहर, और यों बैठी हुई थी महल की सब रानियाँ।
तब सुमित्रा ने कहा ताख़ीर रानी हो गई, सुनके यह फ़ौरन उठी कौशल्या रानी बेगुमाँ।
यों कहा रानी सुनैना जी से अब सब आप लोग, अपने डेरों में करें आराम जा कर बेगुमाँ।
अब हमारा तो मुहाफ़िज़ है फ़क़त परमात्मा, और महाराजा जनक भी हैं हमारे निगहबाँ।
रानी कौशल्या के पा कर इस तरह अच्छे ख़याल, गिर गईं चरणों में महारानी जनक की नागहाँ।

और कहा क्यों कर न होंगे आपके ऐसे खयाल, राजा दशरथ की हैं रानी राम की हैं आप माँ।
नीच से भी नीच का रखते प्रभु है खुद खयाल, पास सर पर कोह के और आग के ऊपर धुआँ।
हैं महाराजा हमारे आपके अदना गुलाम, पार्वती और शिवजी है सबके हमेशा निगहबाँ।
आप की इमदाद के लायक़ जहाँ में कौन है, आग कर सकती है रौशन सम्स को जा कर कहाँ।
राम वन को जा रहे हैं देवता का करने काम, वापस आएँगे अवध को और बनेंगे हुक्मराँ।
और सब अपनी जगह आराम से होंगे मुक़ीम, याज्ञवल्कजी ने यह पहले ही कहा था बेगुमाँ।
उनकी ये पेशीनगोई हो नहीं सकती है झूट, ऐ महारानी न कीजे आप कुछ शक ओ गुमाँ।
पैर उनके पड़के फिर सीता को ले जाने कही, लेके हमरह उनको डेरे को हुई अपने रवाँ।
जानकी जी जाके लोगों से मिली हस्बे तरीक़, देख कर कपड़े फ़कीरी उनके सब थे खस्ताजाँ।
आ गये राजा जनक भी वहाँ पर बाहर से जब, प्यारी सीता को वो छाती से लगाये बेगुमाँ।
प्रेम से दिल उनका भर आया, हुए बेचैन वह, देख कर बेटी को अपने खो दिये तावोनवाँ।
गो महाराजा थे ज्ञानी और थे साधु मनिस, ज्ञान का उनको नहीं बाकी रहा शानोंगुमाँ।
बाप माँ को देख कर सीता भी बेकल हो गयीं, वक़्त की सोची नजाक़त बन्द कर ली फिर जबाँ।
जिस्म पर सीता के देखा जब फ़क़ीराना लिबास, यों कहा रौशन किये बेटी ने दोनों खानदाँ।
वह किया है काम तूने हर कोई मद्दाह है, नेकियाँ तेरी जमाने में न क्योंकर हो बयाँ।
नदी गंगा तो बहा करती फ़क़त है इक तरफ़, तेरी नेकी की यह नद्दी होगी हर जानिब रवाँ।
अपनी यह तारीफ़ सीता को नही आयी पसंद, बाप माँ ने उनको छाती से लगाया बेगुमाँ।
अपनी सासों की उन्हें सेवा का था दिल में खयाल, उनको जहमत होगी मैं रह जाऊँ शब में गर यहाँ।
सोच कर सीता यह दिल में अपने कुछ खामोश थी, मुँह से कह सकती न थी और बन्द थी उनकी जबाँ।
देख कर सीता का मंशा खुद सुनैना जी ने ही, कर दिया सब माजरा राजा जनक जी पर अयाँ।
सुनके यह राजा जनक जी भी बहुत खुश हो गये, और छाती से लगाया होके बेहद शादमाँ।
राजा रानी ने गले मिल कर रवाना कर दिया, और सीता जी वहाँ से हो गयी वापस रवाँ।
देख कर है वक़्त अच्छा यों सुनैना ने कहा, भरत के अहवाल जो कुछ थे किये उनसे बयाँ।
भरत की वह कैफ़ियत सुन कर हुए गो दिल में खुश, लेकिन उल्फत के सबब आँखों से आँसू थे रवाँ।
यों महाराजा जनक कहने लगे रानी सुनो, भरत की दुनियाँ में चमकेगी न क्यों कर खूबियाँ।
राजनीति धर्म और मैं जानता हूँ ब्रह्म ज्ञान, फिर भी उनकी खूबियाँ मुझसे नहीं होनी बयाँ।
शेष ब्रह्मा सरस्वती महादेव हों या गनपती, हों वो ज्ञानी और शायर या कोई हो राजदाँ।
भरत का तौरो तरीक़ा सब को दिल से है पसन्द, हर तरह जो पाक है, हैं जिसमें मुजमिर खूबियाँ।
भरत की हस्ती ज़माने में है बेशक बेमिसाल, उनसा ज्ञानी कोई दुनिया में नही है बेगुमाँ।
भरत की तारीफ़ करना है नहीं मुमकिन कभी, जैसे मछली हो नही सकती है खुशकी पर रवाँ।
भरत के अतवार को तो जानते हैं राम ही, लेकिन उनको कर नहीं सकते हैं वो खुद भी बयाँ।
ये तो सबके वास्ते बेहतर है लक्ष्मण घर चलें, राम के हमरह भरत हो जाएँ जंगल को रवाँ।
रामचन्दर भरत में कुछ इस कदर है इत्तिफ़ाक़, उनसे हैं ये प्यार करते इन पे हैं वो मेहरबाँ।
भरत ने छोड़ा है सब कुछ राम ही के वास्ते, रामके चरणों में उनका दिल लगा है बेगुमाँ।
यह नहीं मुमकिन है टालें राम के वह हुक्म को, इसलिए करना नहीं हम को है कुछ शक ओ गुमाँ।
भरत की तारीफ़ करते रात गुजरी इस तरह, सुबह को जागे, किये स्नान पूजा सब वहाँ।

राम भी अपने गुरु के पास हाज़िर हो गये, दस्तबस्ता यों गुरु जी से किया अर्ज़ बयाँ।
भरत और माएँ हमारी ग़मज़दा हैं ऐ गुरु, और है तकलीफ़ में मुल्के अवध के साकिनाँ।
राजाए आली जनक भी हैं बहुत तकलीफ़ में, हो गया अर्सा उन्हें आ कर मये हमराहियाँ।
इसलिए जो हो मुनासिब काम ऐसा कीजिए, आप ही के हाथ में है काम सबका बेगुमाँ।
इस क़दर कहते हुए बस राम जी चुप हो गये, बात यह सुन कर वशिष्ठ उनके गुरु थे शादमाँ।
यों कहा ऐ राम, ये आये हैं जो दोनों समाज, इनको बिन देखे तुम्हारे मिलती राहत है कहाँ।
ऐश और आराम इनको है नरक से भी बुरे, सबके तुम राहत रसाँ हो सबके तुम आरामें जाँ।
राम से जिसको नहीं है प्रेम वह किस काम का, ख़्वाह वह योगी ही हो या वह हो कोई नुक्तादाँ।
लोग कितने ग़म रसीदा है तुम्हारे वास्ते, हाल से सबके हो वाक़िफ़ तुम पे है सब कुछ अयाँ।
राम को भिजवा दिया फिर जिस जगह रहते थे वो, ख़ुद गये उस जा महाराजा जनक जी थे जहाँ।
रामचन्दर ने कहा जो कुछ था वह सब कह दिया, और कहा कीजे मुनासिब जो हो ऐ शाहेशहाँ।
धर्म के पाबन्द हो और ज्ञान के भंडार हो, आपही से गुत्थी ये अब सुलझ सकती है यहाँ।
बात सुन कर यह गुरु से हो गये बेचैने वह, फ़िक्र करने लग गये बेकार हम आये यहाँ।
राजा दशरथ भेज कर जंगल जिन्हें ख़ुद मर गये, उनको वन को भेज कर हम लौट जायें शादमाँ।
जो तपस्वी या मुनी थे सुनके वो बेचैन थे, फिर गये राजा वहाँ थे भरत जी रहते जहाँ।
पेशवाई के लिए दौड़े भरत जी आ गये, और दी मसनद उन्हें जो उनके थी शायानेशाँ।
भरत से राजा जनक जी इस तरह कहने लगे, भरत तुम तो जानते हो राम की सब खूबियाँ।
बात के पक्के हैं वो और धर्म के पाबन्द हैं, इसलिए वो सह रहे हैं इस क़दर ये सख्तियाँ।
जो तुम्हारे दिल में हो वह मुझ से कह दो साफ़-साफ़, ताकि उसको अब करूँ मैं रामचन्दर से बयाँ।
काँपने थरथर लगे फिर भरत इसतादा हुए, थे मुहब्बत के भी आँसू उनकी आँखों से रवाँ।
आप हम सबके बड़े और मिस्ल है माँ बाप के, और वशिष्ठ अपने गुरु उनसे भी बढ़ कर मेहरबाँ।
आये विश्वामित्र जो भी और आये सब वज़ीर, मेरी है तक़दीर अच्छी आप जो आये यहाँ।
आपका बच्चा हूँ मैं मुझको हिदायत कीजिए, आप जैसे लोग ज्ञानी जब इकट्ठा हैं यहाँ।
आप मुझसे पूछते हैं है बड़ी हैरत की बात, चुप रहूँ तो बेअदब बोलूँ तो हो तूलेज़बाँ।
अर्ज़ करता इसलिए हूँ हो के मैं मजबूर अब, माफ़ कीजेगा मेरी ये आप सब गुस्ताख़ियाँ।
वेद भी और शास्त्र भी कहते हैं सेवा है कठिन, और स्वामी-धर्म से यह मुख़तलिफ़ है बेगुमाँ।
दुश्मनी होती है अन्धी और मुहब्बत बेवक़ूफ़, इसलिए कुछ अर्ज़ करना मेरा होगा रायगाँ।
आप मुझसे कुछ न पूछें राम का मंशा है ये, जो मुनासिब आप सब समझें करें वह बेगुमाँ।
भरत की यह बात सुन कर देख कर उनका ख़याल, राजाए मिथलेश और साथी हुए सब मदहूशाँ।
बात थोड़ी थी मगर अल्फ़ाज़ मानेदार थे, जान ले हर शख़्स उनको यह तो मुमकिन था कहाँ।
जैसे आइने को लेकर देख तो लें अपना मुँह, मुँह की लेकिन बात पकड़े कोई यह मुमकिन कहाँ।
कोई दे सकता न था जब भरत जी को कुछ जवाब, तब महाराजा जनक जी और सब हमराहियाँ।
उठ गये वह उस जगह से और सब उस जा गये, देवता रूपी श्री रघुनाथ रहते थे जहाँ।
इन्द्र और सब देवता कुछ फ़िक्र करने लग गये, काम हमने जो बनाया हो न जाए रायगाँ।
सरस्वती से देवता करने लगे फिर इल्तेजा, अक़्ल पर अब भरत की परदा पड़े कुछ नागहाँ।
उनकी एसी बात सुन कर सरस्वती कहने लगीं, तुम हो अन्धे आँख के क्या, अक़्ल खो डाली कहाँ।

ब्रह्मा विष्णु और शिव की भी बड़ी ताक़त मगर, वह भी फेरें भरत के मंशा को मुमकिन है कहाँ।
तुम यह कहते हो कि इनकी अक़्ल को मैं फेर दूं, चाँद पड़ जाता है फीका मेहर होता है जहाँ।
भरत के दिल में मुहब्बत राम की है जा गुज़ीं, किस तरह होता अँधेरा मेहर है रौशन जहाँ।
देवता यह बात सुन कर हो गये मायूस से, सरस्वती जी हो गयी विधि लोक को वापस रवाँ।
उनके दिल में थी बुराई सोचने वह लग गये, सोचते थे चाल चलनी चाहिए कोई यहाँ।
काम का बनना बिगड़ना भरत ही के हाथ है, इन्द्र ने सोचा यही था अपने दिल के दर्मियाँ।
राजाए मिथिलेश लेके साथ अपने सब समाज, थे जहाँ रघुवीर खुश तशरीफ़ ले आये वहाँ।
कुलपुरोहित जी वशिष्ठ कह कर सुनाये हाल सब, गुफ़्तगू जो कुछ हुई भरत और जनक के दर्मियाँ।
और कहा मेरा तो मंशा है यही तुम जो कहो, सब अमल पैदा उसी पर होंगे बेशक ओ गुमाँ।
राम हो कर दस्त बस्ता अर्ज़ यों करने लगे, आप और राजा जनक तशरीफ़ फ़रमा हो जहाँ।
मेरी क्या मकदूर है मैं कुछ ज़बाँ से कह सकूं, आप जो फ़रमाएँगे तामील होगी बेगुमाँ।
राम का कहना यह सुन कर लोग सब खामोश थे, भरत का मुंह देखने वो लग गये जो थे वहाँ।
भरत ने देखा सभा में लोग सब खामोश हैं, ज़ब्त अपने पर किया पहले और फिर खोली ज़बाँ।
दस्त बस्ता हो के वह सबसे मुखातिब हो गये, और कहा कीजै ऊफ़ू गर मेरी कुछ हों ग़लतियाँ।
सरस्वती का पहले अपने दिल में करके ध्यान वह, इस तरह फिर भरत जी होने लगे गौहरफ़साँ।
आप ही माँ-बाप हैं और आप ही मालिक–गुरु, आप ही आक़ा हैं मेरे और मेरे राज़दाँ।
ग़ल्तियों को माफ़ करना आप ही का काम है, अपने सेवक पर हमेशा से रहे हो मेहरबाँ।
आप-सा मालिक कोई दुनिया में मिलता ही नहीं, और सेवक भी कोई मुझ–सा नहीं नाक़दरदाँ।
आपके अहकाम को और बाप के अहकाम को, तोड़ कर मैं आ गया हूँ ऐ मेरे मालिक यहाँ।
आपके मंशा से हट कर कोई मिलता ही नहीं, मैंने की ऐसी ढिठाई है खता मेरी अयाँ।
आपने सेवा इसे समझा ये है खुशक़िस्मती, है दया की यह नज़र मुझ पर बिला शक ओ गुमाँ।
आपने मेरा भला ही कर दिया इस तौर से, मैं हुआ दुनिया में जिससे कामगारों कामराँ।
वेद में और शास्त्र में भी हुआ यह मजकूर है, आपका तौरो तरीक़ा है ज़माने पर अयाँ।
नीच हो पापी हो या हो बेवकूफ़ और बदमिज़ाज़, नास्तिक हो निडर हो या हो कोई बेखानमाँ।
आपकी आया शरण जब आपने अपना लिया, माफ़ की उसकी खताएँ और अता की खूबियाँ।
ऐसा आक़ा ही कहाँ जो खुद करे मालिक का काम, और अपने खुद किये का कुछ न ले नामोनिशाँ।
बल्कि खादिम के ही उल्टा रंज का रक्खे खयाल, मैं क़सम खा कर हूँ कहता आप–सा कोई कहाँ।
जानवर हैं जानते और बोलते तोते हैं खूब, सब सिखाने और पढ़ाने की है उनको खूबियाँ।
आपने बिगड़ी बना दी खादिमों की इस तरह, साधुओं में फ़ौकियत दी उनको बेशक ओ गुमाँ।
आपके जुज़ कौन है जो इस तरह कुछ कर सके, आप ही वादे को अपने हैं निभाते बेगुमाँ।
रंज समझो या मुहब्बत या कि बचपन ही मेरा, बेइज़ाजत आपकी जो मैं चला आया यहाँ।
आप के पद–पंकजों के मैंने दर्शन पा लिए, हो गया मालूम मुझको आप हैं बस मेहरबाँ।
अपने लोगों की हुज़ूरी में मुझे जाहिर हुआ, आपकी मुझ पर इनायत की नज़र है बेगुमाँ।
मैं था जिस लायक़ किया उससे भी बढ़ कर सरफ़राज़, आपने अपनी नवाज़िस से किया है कामराँ।
आपने अपने करम से की इनायत तो बहुत, मैं ढिठाई कर रहा हूँ वह जो करता हूँ बयाँ।
अर्ज़ करना अपने मालिक से ज्यादा है फ़िज़ूल, दीजिए मुझको इज़ाजत ता करूँ अर्ज़े बयाँ।

रात-दिन दिल में मेरे जो बात है कहता हूँ मैं, आपकी सेवा ही की बस आरजू है बेगुमाँ।
हो गये बेचैन और चरणों में भाई के गिरे, कुछ लिखा जाता नहीं उस वक़्त का हमसे समाँ।
राम ने उनका पकड़ कर हाथ बिठलाया उन्हें, अहले मजलिस के भी तब जाते रहे तावोतवाँ।
राम और सारे मुनी भी और महाराजा जनक, दिल ही दिल में खुश हुए, थे भरत सबके मदहख्वाँ।
देवता भी खुश हुए गो दिल में उनके थी खटक, और वो भी अपने हाथों से हुए सब गुलफ़शाँ।
भरत की यह बात सुन कर लोग ऐसे खुश हुए, जिस तरह होता कमल है रात में खन्दादहाँ।
इन्द्र तो यह चाहते थे काम अपना ही बने, रंज में डूबे कोई, हो जाए कितना ही ज़ियाँ।
इन्द्र की यह चाल है, मानिन्द कौवे की हविस, वह भरोसा ही नहीं करते किसी पर बेगुमाँ।
देवताओं को फ़राहम धोखा दे कर कर लिया, अक्ल भी चकराई उनकी हो गये सब हमज़बाँ।
देवामाया का असर लोगों के दिल पर हो गया, और सब होने लगे अपने दिलों में खस्ताजाँ।
वो कभी तो चाहते थे हम रहें जंगल ही में, और कभी वह चाहते थे हम चले जाएँ मकाँ।
इस तरह उनका इरादा हो रहा था डाँवाडोल, और कर सकते न थे एक-दूसरे से कुछ बयाँ।
राम ने लोगों के इस मंशा का अन्दाज़ा किया, हँस पड़े और यह खयाल आया उन्हें बस नागहाँ।
इन्द्र और अहयास कुत्ते में नही है कोई फ़र्क़, है बराबर, है नहीं कुछ फ़र्क़ इनके दर्मियाँ।
देवमाया से बचे जो लोग थे धर्मात्मा, भरत और राजा जनक या और जो थे नूक़तादाँ।
राम ने देखा दुखी है लोग मेरे वास्ते, इन्द्र ही की चाल से है सब परेशाँ बेगुमाँ।
जो ब्राह्मण या गुरु थे और जनक थे या वज़ीर, भरत की भक्ति ने सबकी फहम कर दी रायगाँ।
हो गये तस्वीर से, सब राम को थे देखते, मुँह से कुछ कहते न थे और बन्द थी उनकी ज़बाँ।
जिनकी भक्ति देख कर मुनिराज और सब दंग थे, किस तरह शायर बयां कर सकता है उसको यहाँ।
अक्ल रानी की है छोटी भरत की महिमा बड़ी, इसलिए आसाँ नही है उसका कुछ करना बयाँ।
भरत का यश चन्द्रमा है फहमे शायर है चकोर, देखता रहता है जो उसको हमेशा बेगुमाँ।
कौन है जो भरत की तारीफ़ करने के सबब, राम की उस पर न हो नज़रें इनायत बेकराँ।
याद मे जो भरत की हो, और न पाये रामको, ऐसा बदक़िस्मत जगत में कोई मिलता है कहाँ।
राम जो थे नेक नीयत, नेक आदत, नेक ख़ू, देख कर यह रंगे महफ़िल यों हुए गौहरफ़शाँ।
भरत प्यारे भाई तुम तो धर्म के औतार हो, हो मुहब्बत ही के पुतले और तुम हो बेदर्दाँ।
कर्म से मन से वचन से तुम तुम्हारे मिसिल हो, मुझसे छोटे हो करूँ ख़ूबी मैं मुँह से क्या बयाँ।
जानते हो दोस्त और दुश्मन सभी के दिल की बात, वाक़िफ़े अहले पिदर हो और रस्मेखानदाँ।
सब के कामों से हो वाकिफ़ अपने और मेरे भी तुम, हर तरह मुझको भरोसा तुम पे है ऐ मेरी जाँ।
बस गुरु जी ने संभाला है तमामी राज काज, वर्ना सब बरबाद हो जाती अयोध्या बेगुमाँ।
शाम से पहले अगर हो जाएगा सूरज का अस्त, होगा क्योंकर यह न सबके वास्ते ईजारसाँ।
यों ही अपने बाप का मरना भी बिलकुल हो गया, अब गुरु जी और जनक जी हैं महाफ़िज निगहबाँ।
मुल्को दौलत और इज्जत राज का सब कामकाज, हैं गुरु जी ही महाफ़िज हैं वही बस पासबाँ।
घर में जो कुछ हो रहा है सब उन्ही का फ़ैज है, और वन में भी उन्हीं का फ़ैज जारी है यहाँ।
अपने आक़ा का ही कहना हो वह या हुक्मे गुरु, वाजिबुल तामील है, जो कुछ हैं कहते बाप-माँ।
इसलिए तुम वह करो जो हो मुनासिब हाल के, और मुझसे भी कराओ वह, जो हो शायानेशाँ।
यह समझ कर तुम ज़रा तक़लीफ़ अपने पर सहो, और सबके वास्ते बन जाओ तुम राहतरसाँ।

भाई मेरी मुश्किलों में सब हुए हैं हिस्सेदार, खास कर तुमको उठानी पड़ रही है सख़्तियाँ।
रहमदिल तुमको समझ कर कह रहा हूँ सख़्त बात, वक़्ते मुश्किल रख नहीं सकता हूँ मैं उसको निहाँ।
वक़्तेमुश्किल भाई की इमदाद होती है जरूर, इसलिए मैं कह रहा हूँ तुमसे मेरे भाई जाँ।
बात ये रघुवर की सुन कर लोग सब खामोश थे सरस्वती भी दंग थी और बन्द थी उनकी ज़बाँ।
भरत के दिल की जलन और सब तपिश जाती रही, छा गयी दिल पर खुशी और हो गये वो शादमाँ।
दस्तबस्ता भाई से अपने वो यों कहने लगे, ऐ मेरे आक़ा हुआ मैं हर तरह अब कामराँ।
आप जैसा हुक्म देंगे मैं करूंगा अब वही, इल्तेजा है एक सुन लो तुमपे है कुर्बान जाँ।
कुछ निशानी दीजिए चौदह बरस के वास्ते, आपका नायब ही बन करता रहूँ मैं हुक्मराँ।
तीर्थों का जल जो आया आपके अभिषेक को, हुक्म क्या होता है उसके वास्ते कीजै बयाँ।
और कहा एक बात मेरे दिल में आयी है हुई, खौफ़ के बाअस उसे मैं कर नहीं सकता बयाँ।
राम ने उनसे कहा बेखौफ़ तुम मुझसे कहो, बात जो दिल में तुम्हारे है न रक्खो वह निहाँ।
जोड़ कर दो हाथ उनसे भरत यह कहने लगे, है मेरे दिल में ये अरमाँ फिर के देखूँ बन यहाँ।
सब परिन्दे और चरिन्दे और नदी तालाब भी, आपके चरणों के जिस-जिस जा नजर आएँ निशाँ।
है मुक़द्दस हर तरह तीरथ की जा है चित्रकूट, आपकी गर हो इजाजत फिर के आता हूँ यहाँ।
राम ने ऐसा कहा अत्री ऋषी से पूछ लो, हुक्म उनका सर पे आँखों पे रखो तुम बेगुमाँ।
बन में जो फैली है बरकत से उन्हीं का फ़ैज़ है, जो नज़र आती है सरसब्ज़ी वो शादाबी यहाँ।
जिस जगह अत्री-ऋषी बोलें वहां तुम गाड़ दो, तीर्थों का जल जो तुम हमराह लाये हो यहाँ।
भाई से सुन कर जवाब ऐसे हुए मसरूर भरत, और चरणों पर ऋषी के सर झुकाया बेगुमाँ।
भरत की और राम की जिस जा सुन ली गुफ़्तगू, देवता सब खुश हुए उन पर हुए सब गुलफ़शाँ।
जनक जी और गुरु वशिष्ठ भी उससे बेहद खुश हुए, क्योंकि जितने लोग थे, थे सब भरत के मदहख्वाँ।
मालिक और सेवक ये दोनों का तरीका ठीक है, जिसमें अल्ताफ़ो इनायत में भरी है खूबियाँ।
अहले मजलिस भी तमामी खुश हुए आनन्द से, राम की फ़ुरक़त का गो सदमा था दिल में बेगुमाँ।
राम की माँ ने तो दुख और सुख को जाना एक-सा, दूसरों को दी तसल्ली ता मिले आरामे जाँ।
कोई तो थी भरत की मद्दाह, कोई राम की, इस तरह आपस में कहने लग गयीं सब रानियाँ।
भरत से अत्री जी बोले पानी को रख दो यहाँ, कोह के नीचे यहाँ है एक जो सुन्दर कुआँ।
सुन के अत्री की हिदायत जल तलब सब कर लिया, जो घड़ों में भर कर अपने साथ लाये थे वहाँ।
शत्रुहन और अत्री जी को ले कर अपने साथ-साथ, और सब हमराहियों के साथ ख़ुद आये वहाँ।
अपने ही हाथों से जल को उस जगह पर रख दिया, तब बयाँ अत्री ने की उनसे जगह की खूबियाँ।
भरत के जितने थे सेवक फिर के देखे सब मुक़ाम, खोद कर कुआँ भी एक बनवा दिया फ़ौरन वहाँ।
नाम रक्खा उस कुवें का सबने मिल कर भरत कूप, उसमें जो स्नान कर ले होगा वह इज्ज़त निशाँ।
ज़िक्र और तारीफ़ उस जा की बयाँ करते हुए, हो गये सब लोग वापस राम रहते थे जहाँ।
राम के पास आ गये अत्री ऋषी और लोग सब, अत्री जी ने उस जगह की की बड़ाई सब बयाँ।
इस तरह वह रात गुजरी और सवेरा हो गया, सब हुए फ़ारिग नहा कर और मुँह धो कर वहाँ।
गुरु वशिष्ठ और राम से अत्री ऋषी से पूछ कर, देखने को बन हुए तब भरत और भाई रवाँ।
दोनों भाई चल रहे पैदल थे हमराही के साथ, सादगी से जा रहे थे कुछ न था इज़हारे शाँ।
रास्ते में काँटे और कंकर भी सब गायब हुए, ठंडी-ठंडी धीमी-धीमी चलती थी बादेसबाँ।

अब्र छाया राह में और फूलफल आबाद थे, मीठी बोली बोलते थे सब परिन्दे बेगुमाँ।
जब जम्हाई ले के कोई राम का लेता है नाम, पाप मिट जाते है सब, हो जाता है वह कामराँ।
भरत तो हैं राम के दिलवन्द और प्यारे अजीज़, वास्ते उनके न क्यों पैदा हो ये आसानियाँ।
इस तरह थे वन में फिरते हर तरफ़ जब भरत जी, देख कर हैरान थे उनको मुनी और साधुवाँ।
पूछते थे जो-जो मिलती चीज़ इनको राह में, और अत्री जी किये जाते थे इन सबको बयाँ।
भरत करते थे कहीं स्नान और दर्शन कहीं, बैठते थे ध्यान करते राम सीता का वहाँ।
देख कर अखलाक़ उनके देव वन के खुश हुए, और दुआ देते थे उनको होके खुश और शादमाँ।
दोपहर होती है तो वापस वे आ जाते थे फिर, आ के छूते थे क़दम वह राम के नुसरत निशाँ।
पाँच दिन में खतम कर डाली वो तीरथ यात्रा, और छठे दिन जमा वो सब हो गये एक जा वहाँ।
राम को कहने में होता था तआम्मुल कुछ ज़रूर, यह कि दिन अच्छा है हो जाएँ ये सब घर को रवाँ।
भरत मंशा कुछ समझ कर सामने हो कर खड़े, दस्तबस्ता भाई से अपने किया अर्ज़े बयाँ।
मेरे मालिक आपने खातिर मेरी हर तरह की, वास्ते मेरे उठाते लोग हैं सब सख्तियाँ।
आपको भी बेसबब तकलीफ़ मुझ से हो गयी, अब इजाज़त दीजिए ता मैं अवध को हूँ रवाँ।
साल चौदह मैं गुजारूँगा अवध जा कर ज़रूर, जो मुनासिब हो मुझे कीजे हिदायत बेगुमाँ।
आपके परताप से खुश हैं अवध के लोग सब, सब रिआया और बराया और अहले खानदाँ।
सब के दिल की जानने वाले हो ऐ मालिक मेरे, काम सबके तुम सँभालोगे यक़ीनन बेगुमाँ।
मुझको ऐसा है भरोसा फ़िक्र अब बाक़ी नहीं, आपकी चश्मे इनायत से हैं ये ताबोतवाँ।
भरत के ऐसे वचन सुन कर कहा यह राम ने, ऐ मेरे प्यारे बिरादर ऐ मेरे आरामे जाँ।
फ़िक्र मेरी और तुम्हारी और घर की दार की, है गुरु जी को ही, और राजा जनक हैं निगहबाँ।
और विश्वामित्र का भी हम पे साया है ज़रूर, इसलिए बाक़ी नहीं अब रंज का नामोनिशाँ।
बाप के अहकाम की तामील हम दोनों करें, फ़र्ज़ मेरा और तुम्हारा है यही ऐ भाई जाँ।
बाप के माँ के गुरु के और बुजुर्गो के हुकुम, जिसने माने अपने दिल से, हो गया वह कामराँ।
इसलिए अब फ़िक्र छोड़ो और तुम जा कर अवध, सल्तनत अपनी करो चौदह बरस बाइज्जोशाँ।
हैं गुरु जी मुल्क और दौलत खजाने के अमीन, और सर पर है तुम्हारे मादराने मेहरबाँ।
कारोबारे सल्तनत इस तरह से करते रहो, जिस तरह दें मशविरा तुमको वजीरे नुकतादाँ।
काम मुखिया का है यह वह काम मुख जैसा करे, मुल्क की राहत की खातिर खुद रहे जहमत कसाँ।
जैसे मुख को कुछ नहीं है अपनी जहमत का खयाल, खुद चबा कर दूसरे आजा को हैं राहत रसाँ।
राज करने के लिए भी भेद है यह लाज़मी, जिस तरह मंशा किसी के दिल में होता हैं निहाँ।
राम जी इस तरह भाई भरत को कहते रहे, और तसल्ली दी उन्हें समझा-बुझा कर बेगुमाँ।
भरत के दिल को तसल्ली इससे कुछ होती न थी, चाहते थे भाई दें कोई उन्हें अपना निशाँ।
राम ने सोचा कि मैं दे दूं खड़ाऊ पैर के, लेकिन इसके वास्ते करने लगे शक ओ गुमाँ।
यक तरफ़ था भाई के इसरार का उनको खयाल, दूसरे जानिब गुरु जी थे वहाँ जलवाकुनाँ।
आखिरस अपने खड़ाऊ भरत जी को दे दिये, ले के जिसको सिर पे रखा हो कर भरत ने शादमाँ।
राम के दोनों खड़ाऊ क्या थे पहरेदार थे, यह रिआया की हिफ़ाजत के लिए थे निगहबाँ।
भरत की उल्फ़त के जौहर के लिए सन्दूक थे, राम जी के नाम के अक्षर थे यह दो बेगुमाँ।
काम करने के लिए मानिन्द हैं दो हाथ के, दो हैं दरवाज़े हिफ़ाज़त के बराये खान्दाँ।

सारे सेवा धर्म करने के लिए दो आँखें हैं, भरत ऐसी चीज़ पा कर हो गये बस शादमाँ।
भरत ने आदाब करके वापसी के वास्ते, राम से माँगी इज़ाजत ताकि वापस हों रवाँ।
राम उठ कर भाई से अपने गले मिलने लगे, वह समाँ लिखा ही जा सकता न हो सकता बयाँ।
दोनों जानिब से मुहब्बत का हुआ इज़हार खूब, राम की आँखों से अब आँसू न हो क्यों कर रवाँ।
दिल में लोगों के भी चलने की हुई ख्वाहिश ज़रूर, सब के दिल में यह खयाल आया चलें वापस मकाँ।
बाद चौदह साल के जब राम वापस आएँगे, उनके दर्शन कर सकेंगे हम बिला शक ओ गुमाँ।
भाइयों की यह मुहब्बत देख कर सब दंग थे, गुरु वशिष्ठ राजा जनक जी और दीगर साधुआँ।
देख कर इस हाल को हैरान थी हर एक अक़ल, हाल वह क्यों कर लिखेगा शायरे मोजिज़ बयाँ।
भरत से मिल कर गले फिर शत्रुहन से भी मिले, लोग सब चलने की करने लग गये तैयारियाँ।
देवताओं और ऋषि मुनियों को वन के पूज कर, शत्रुहन और भरत दोनों हो गये वन से रवाँ।
लक्ष्मण से भी मिले सीता के क़दमों पर गिरे, सब दुआ देते थे उनके वास्ते थे हमज़बाँ।
राजाए मिथिलेश से भी राम और लक्ष्मण मिले, बाअदब हो कर मिले और सिर झुकाया बेगुमाँ।
और कहा तकलीफ़ की महाराज ने बेइन्तेहा, साथियों को ले के जंगल में चले आये यहाँ।
अब दुआ दीजे हमें और आप वापस जाइए, सुन के यह राजा जनक ने खो दिये ताबोतवाँ।
और जो साधु मुनी थे या ब्राह्मण आये थे, सब से मिल कर राम ने सबको किया वापस रवाँ।
राम और लक्ष्मण गये तब सास से मिलने को भी, छू के उनके भी चरण वापस चले आये यहाँ।
कौशिक, वामदेव और जावाली से आ कर मिले, और भी मौजूद जो उस जा थे अहले खानदाँ।
जिस तरह जिससे था मिलना राम और लक्ष्मण मिले, दी तसल्ली हर किसी को और किया वापस रवाँ।
कैकेई के पैर पड़ कर उनको समझाया बहुत, दूर कर डाले खिजालत से जो थे शक ओ गुमाँ।
जाके सीता भी मिलीं माँ बाप से औरों से भी, अपनी सासों से मिलीं और जो थे अहले खानदाँ।
सबका आशीर्वाद ले कर लौट कर यह आ गये, दिल उदास उनका हुआ और छा गयी खामोशियाँ।
राम ने मँगवायी माँओं के लिए तब पालकी, हो गयी जिन पर सवार आराम से सब रानियाँ।
दोनों भाई अपनी माँओं से मिले आदाब से, बाद इज़हारे मुहब्बत कर दिया उनको रवाँ।
हाथी और घोड़े सजे हर एक सवारी सज गयी, भरत और राजा जनक के दल हुए दोनों रवाँ।
याद सीता राम की लक्ष्मण की भी करते हुए, लोग वन से हो गये वापस रवाना बेगुमाँ।
वह रवाना हो गये और मिल लिए जब सब से वे, राम लक्ष्मण आ गये वापस ये रहते थे जहाँ।
गोह के राजा को रुखसत रामचन्दर ने किया, हो गया वापस मगर वह था बहुत आजुर्दाजाँ।
और वन के लोग जो आये थे सब लौटा दिये, राम को दण्डवत् करके सब गये वापस मकाँ।
राम लक्ष्मण और सीता बैठ कर बड़ के तले, भरत का था तज़क्किरा औरों का करते थे बयाँ।
भरत की तारीफ़ करते जा रहे थे रामचन्द्र, हर तरह उनके सनाखाँ और थे वो मदहख्वाँ।
राम थे बेचैन अपने भाई के मजक़ूर से, सुन के यह बेचैन थे सब जानवर और मछलियाँ।
राम लक्ष्मण और सीता थे कुटी में इस तरह, ज्ञान और वैराग भक्ति हैं वहाँ जलवा कुनाँ।
इस तरफ़ भरत और जनक मय अपने हमराही गुरु, रास्ते में जा रहे थे राम का करते बयाँ।
रोज़े अव्वल हो गया जमना किनारे पर मुक़ाम, दूसरे दिन आये वे गंगा का साहिल था जहाँ।
सरबराही में बहुत मसरूफ़ थे राजा निषाद, तीसरे दिन सब नहाये गोमती में बेगुमाँ।
और चौथे रोज़ पहुँचे सब अयोध्या शहर में, राजाए आली जनक भी जाके खुद ठहरे वहाँ।

चार दिन ठहरे वहाँ करने को सारा इन्तजाम, सब को समझा कर बुझा कर ख़ुद हुए घर को रवाँ।
गुरु वशिष्ठ ने जो कहा अहले अयोध्या ने सुना, और रहने लग गये आराम से पीरो जवाँ।
राम के दर्शन के प्यासे व्रत करने लग गये, जिन्दगी अपनी गुज़ारी सादगी में बेगुमाँ।
भरत ने सारे वज़ीरों को बुलाया अपने पास, और जो थे एतमादी अहलकारो खादिमाँ।
सब को समझाया किया हर एक के तफ़वीज कार, लग गये हर एक अपने काम में बेईनोआँ।
शत्रुहन को भी बुला कर की हिदायत उनको सब, और कहा उनको ख़बर रखना जो हैं सब अपनी माँ।
और सूमर को बुला कर की ये उनसे इल्तेजा, काम जो लायक़ हो ख़िदमत के वह कीजेगा बयाँ।
सब रिआया को बुला कर उनको समझाया बहुत, और दिया उनको दिलासा जो थे अहले ख़ानदाँ।
शत्रुहन को साथ ले कर वह गुरु के घर गये, भरत ने अपने गुरु से यों किया अर्ज़ बयाँ।
हो इजाजत आपकी तो तारेकुद्दुनियाँ रहूं, नेम की और धर्म की करता रहूँ पाबन्दियाँ।
यों मिला उनको जवाब अपने गुरु से भरत तुम, जो कहोगे और करोगे होंगी उसमे खूबियाँ।
ज्योतिषी से नेक दिन और नेक सायत पूछ कर, तख़्त पर रक्खे खड़ाऊँ राम के बाइज्जोशाँ।
पैर कौशल्या के पकड़े और सबसे पूछ कर, ख़ुद कुटी में जाके रहने को हुए घर से रवाँ।
जाके नंदीग्राम मे अपनी बनाई एक कुटी, और फ़क़ीराना बसर की जिन्दगी अपनी वहाँ।
खोद कर एक जा जमी उसमें बिछाई घासफूस, भरत रहते थे उसी ख़न्दक़ मे जैसे साधुवाँ।
ज़र जवाहिर छोड़ कर रहने लगे मिसले फ़क़ीर, चैन और आराम का बाक़ी न रक्खा कुछ निशाँ।
उस अयोध्या की हुकूमत की भी कुछ परवाह न की, इन्द्र को था रश्क जिस पर जिसका था वह मदहख़्वाँ।
हुक्मरानी छोड़ कर ऐसी गुजर करते रहे, जिस तरह भोगा रहे नम्दा के बन में बेगुमाँ।
राम की फ़ुरकत मे कुछ मुश्किल न था यह भरत को, नेम भी और व्रत भी और धर्म की पाबन्दियाँ।
उनके चेहरे पर रहा बाक़ी वही ताबोजलाल, गो वह लाग़र हो रहे थे और नहीफ़ो नातवाँ।
भरत का रहना व सहना और भक्ति और नेम, शेष सनातन सरस्वती भी कर नहीं सकते बयाँ।
वह खड़ाऊँ की भी पूजा रोज़ करते थे अदा, माँग कर उनसे इजाज़त होते थे ख़ुद हुक्मराँ।
दिल में सीता राम हैं और लब पे भी है इसमे राम, और आंखों से मुहब्बत के थे आंसू भी रवाँ।
राम लक्ष्मण और सीता थे वहाँ सहरा नवर्द, भरत ना घर ही मे रह कर झेलते थे सख्तियाँ।
देख कर यह रंग उनका लोग सब मद्दाह थे, एक वशिष्ठ जी ही नहीं सब संत और सब साधुवाँ।
भरत के हालात जो सुन लें तो हों सब भरम दूर, मोह छूटे और मुश्किल मे हों सब आसानियाँ।
सब जलन मिटती है दिल की और दुःख होते है दूर, पाप का हाथी दबाने है यह एक शेरे जियाँ।
भरत होते गर न पैदा तो यह मुनियों के लिए, शम व दम और आचरण और नेम मिलते थे कहाँ।
और तकलीफ़ें जहाँ को कौन कर सकता था दूर, याने दुख की दर्द की गुरबत की सारी सख्तियाँ।
जो इसे दिल से पढ़ेगा राम के बरताव से, शाद दुनिया में रहेगा और होगा कामराँ।
राम ने जो कुछ किया आगे वह हम लिखते है अब, भरत के हालात को हम ख़त्म करते हैं यहाँ।
राम लक्ष्मण और सीता वन में रहने लग गये, जिस तरह वन में गुजारे, हम हैं करते अब बयाँ।
एक दिन फूलों को चुन कर राम जंगल से ले आये, उनके जेवर अपने हाथों से बनाये बेगुमाँ।
और पहनाये वे गहने राम ने खुद हाथ से, एक पत्थर पर जो बैठी जानकी जी थी वहाँ।
इन्द्र का था एक बेटा नाम था उसका जयन्त, राम की कुव्वत का करना चाहता था इम्तेहाँ।
जैसे चींटी चाहती हो थाह दरिया का मिले, यों ही उस नादान के भी आया दिल के दर्मियाँ।

भेस कौवे का बना कर आया वह सीता के पास, पैर में सीता के आ कर चोंच मारी बेगुमाँ।
ख़ून बहने लग गया जब राम ने देखा उसे, हाथ में अपने लिया तब राम ने तीरो कमाँ।
बेवकफ़ी से यह की है चालबाज़ी उनके साथ, रहम के दरिया हैं जो मशहूर सब पर मेहरबाँ।
तीर दौड़ा उसके पीछे और वह खायफ़ हुआ, बाप के पास अपने आया वह बसद आहो फ़ुगाँ।
राम का उसको मुखालिफ़ जान कर रखा न इन्द्र, उनको इसकी यह नहीं अच्छी लगी गुस्ताखियाँ।
हर जगह भागा किया कोई न साथी मिल सका, खौफ़ से बेचैन हो कर हो गया वह नातवाँ।
बैठने की भी इाजज़त उसको मिल सकती न थी, कौन रखने को चला घर में उसे अपने यहाँ।
जयन्त को नारद ने जब देखा निहायत बेक़रार, रहम उनके दिल में आया हो गये वो मेहरबाँ।
जाके समझाया उसे तफ़हीम उसकी की बहुत, राम ही के पास उसको कर दिया फ़ौरन रवाँ।
जयन्त ने जा कर पुकारा मुझ पे कीजेगा दया, दरगुज़र कीजे जो मुझसे हो गयीं गुस्ताखियाँ।
राम के चरणों पे जा कर गिर गया वह खौफ़ से, आपकी ताक़त को मैं नादान समझा था कहाँ।
जो ख़ता की थी सज़ा अब मुझ को पूरी मिल गयी, आपके चरणों में आया हूँ मैं हो कर नीमजाँ।
राम ने एक आँख का काना उसे बस कर दिया, बख्श दी उसकी ख़ता और कर दिया उसको रवाँ।
जान लेना चाहिये था राम ने छोड़ा उसे, राम की क्यों कर बयाँ हम कर सकेंगे खूबियाँ।
और कुछ दिन यों गुज़ारे रोज़ एक लीला किये, आखिरस समझे कि अब रहना नहीं अच्छा यहाँ।
ली इजाज़त सब मुनी से राम लक्ष्मण जानकी, आश्रम को छोड़ कर अपने हुए वो सब रवाँ।
चलके वो आये जहाँ रहते थे अत्रीजी ऋषी, देख कर इनको वह उठ कर आ गये जल्दी दवाँ।
राम चरणों पर गिरे वह इनको सीने से लगाये, आँख से आँसू हुए उनके मुहब्बत के रवाँ।
ले गये अन्दर उन्हें अच्छी जगह बिठला दिया, और फल खाने को लाये जो हुए मर्गूबेजाँ।
हाथ जोड़े इल्तिजा की आपका मैं दास हूँ, आप ही सब के दिलों में रहते हैं जलवाकुनाँ।
तीरो तरकस आप रखते हैं हमेशा हाथ में, सूर्यवंशी खानदाँ के हैं जो नूरे खानदाँ।
आपसे मुनियों को सन्तों को मिला आराम है, चाप शिव की आप ने तोड़ीं बिला शक वो गुमाँ।
देवता के दुश्मनों को नष्ट कर देते हैं आप, पाप का बाक़ी नहीं रखते कभी नमोनिशाँ,
आपकी भक्ति मेरे दिलमें रहे क़ायम मुदाम, आपकी मुझ पर इनायत की नज़र हो बेगुमाँ।
जो कोई इस स्तुति को दिलसे पढ़ ले शाद हो, उसका मंशा होगा पूरा और होगा कामराँ।
जानकी ने पैर अनुसूया के छूए बाअदब, अत्री की बीवी जो थीं और पास बैठी थी वहाँ।
हाथ से पहनाये अपने खूबसूरत जेवरात, औरतों के कुछ फरायज़ जानकी से की बयाँ।
एक फ़कत शौहर हैं—रहता है हमेशा जिसका साथ, आर्जी साथी हैं होते भाई भी और बाप-माँ।
दोस्त का बीवी का इस्तक़लाल का और धर्म का, वक़्ते आफ़त ही हुआ करता है हरदम इम्तेहाँ।
ऐसी औरत पर है लानत ज़िन्दगी बेकार है, खिदमते शौहर नहीं करती है जो बाक़ल्बोजाँ।
वह हो बूढ़ा या हो रोगी या हो जाहिल या ग़रीब, ख्वाह अन्धा हो कि बहरा गुस्सावर या नातवाँ।
ऐसे शौहर की भी खिदमत से करे गर आर वह, झेलनी उसको पड़ेगी आक़िबत में सख्तियाँ।
मर्द की अपने करे खिदमत यही है राह नेक, नेम धर्म और व्रत उसका है यही एक बेगुमाँ।
औरतों की चार क़िस्मों में हुई तकसीम है, इनकी अस्मत का मैं तुम से आज करती हूँ बयाँ।
सबसे आला वह है बाअसमत जो ये समझा करे, मेरे शौहर के सिवा है मर्द बाहिम्मत कहाँ।
गैर को जो समझे बेटा अपना भाई या कि बाप, दूसरे दर्जे की बाअस्मत है होती बेगुमाँ।

तीसरे दर्जे की बाअस्मत उसे कीजै शुमार, ऐब से डरती रहे रक्खे लिहाज़े खानदाँ।
जिसकी अस्मत बचती है मौक़ा न मिलने के सबब, आख़री दर्जे की गिनते हैं उसे सब नुकतादाँ।
ग़ैर से जो दिल लगाये देके शौहर को फरेब, सख़्त से भी सख़्त दोज़ख़ की सहेगी सख़्तियाँ।
कौन होगी ऐसी औरत के ममासिल बदनसीब, एक पल के ऐश के कारण सहे ये सख़्तियाँ।
नेकनीयत रह के जो होती है शौहर पर निसार, वह हमेशा शाद रहती है हमेशा कामराँ।
जो मुखालिफ़ अपने शौहर के रहा करती है जन, हर जनम में होगी बेवा और रह-रह कर जवाँ।
यों तो पैदाइश ही औरत की हुई नापाक है, खिदमते शौहर से हो जाती है वह इज्ज़त निशाँ।
है पतीव्रता धर्म ही की वजह तुलसी जी भी, वेद जिनके मदहख़्वाँ हैं और दुनिया क़दरदाँ।
प्यारी सीता तुम तो अपने राम की हो जाँनिसार, धर्म की अपने हिफ़ाजत तुम से होती है अयाँ।
नाम ही ले कर तुम्हारा औरतें दुनिया की सब, अपने-अपने धर्म की रक्षा करेंगी बेगुमाँ।
जानकी ने सिर झुकाया सुन के इस उपदेश को, उनके इस अलताफ़ से वह हो गयीं बस शादमाँ।
राम जी ने दस्तबस्ता यों मुनी से तब कहा, अब यहाँ से और कोई वन को होता हूँ रवाँ।
आपका ख़ादिम हूँ मैं मुझ पर रहे चश्मे करम, भूलिए मुझको न हरगिज मुझ पर रहिए मेहरबाँ।
राम के ऐसे सख़ुन सुन कर मुनी ने यों कहा, ब्रह्मा, विष्णु और शंकर जी है जिनके मदहख़्वाँ।
आप वह अवतार हैं ऐ राम जी मैं क्या कहूँ, इस तरह जो आप मुझसे करते हैं अर्ज़े बयाँ।
लक्ष्मी की मैंने चतुराई को अब जाना है ख़ूब, दूसरों पर आपको तर्जीह दी जो बेगुमाँ।
किस ज़बाँ से मैं कहूँगा आपको अब जाइए, इस तरह कहते हुए आँखों से आँसू थे रवाँ।
शोक से वह देखते जाते थे चेहरा राम का, इनके दर्शन से वो थे मसरूर बेहद शादमाँ।
सोचते थे आज तक मैंने किया क्या नेक काम, जिसके कारण आज यह ख़ुद हैं यहाँ जलवा कुनाँ।
राम के दर्शन से होते पाप हैं कलयुग के दूर, जिसने जाने हाल इनके रहता है वह शादमाँ।
इस ज़माने में न योग है और न जप है न तप, राम ही के नाम से होता है इन्साँ कामराँ।
इस तरह मिल कर मुनी से दण्डवत करके उन्हें, उस जगह से और आगे हो गये तीनों रवाँ।
आगे-आगे राम जी हैं और पीछे लक्ष्मण, और सीता जी चली जाती है दो के दर्मियाँ।
इस तरह मालूम होता था ब्रह्म अरु जीव के बीच, जिस तरह माया का होता है ताल्लुक बेगुमाँ।
वन नदी तालाब पर से ये गुज़रते थे मगर, राह चलने में न थी इनके लिए दुश्वारियाँ।
धूप की तकलीफ़ से बचने को थे बादल घिरे, देवताओं ने करी हर तरह की आसानियाँ।
राक्षस इनसे मिला एक नाम था उसका विराध, ख़त्म कर डाला उसे बस राम जी ने नागहाँ।
हाथ से इनके मरा वह पाप उसके रद हुए, आकेबद उसकी बनी और हो गया वह कामराँ।
राम-लक्ष्मण और सीता चलते-चलते आख़िरस, उस जगह पहुँचे मुनी सरभंग रहते थे जहाँ।
देख कर नूरानी चेहरा राम का वो दंग थे, कहा ये मैं ब्रह्मलोक अब होने ही को था रवाँ।
यह ख़बर मुझ को मिली है राम बन को आ रहे, इसलिए मैं कर रहा हूँ इन्तेज़ार उनका यहाँ।
नीच हूँ मैं कुछ नहीं हूँ जानता साधन कोई, आपके दर्शन से अब मैं हो गया हूँ कामराँ।
ठहरिए उस वक्त तक है आरज़ू मेरी यही, ज़िस्म से मेरे निकल जाए न जब तक मेरी जाँ।
आज तक जप तप मुनी ने जिस क़दर भी था किया, भक्ति का वरदान पा कर हो गये वो शादमाँ।
और चिता अपनी बना कर उस पे जा बैठे मुनी, साँवली सूरत को उनकी कर लिया दिल में निहाँ।
यों जला कर ख़त्म कर डाला उन्होंने अपने को, जान देदी और हासिल की हयाते जावेदाँ।

दूसरे जो थे मुनी हमराह इनके हो गये, इस जगह से राम लक्ष्मण जब हुए आगे रवाँ।
राम ने मुनियों से पूछा यह कहो क्या बात है, इस जगह क्यों इतनी कसरत से पड़ी हैं हड्डियाँ।
पूछने से उनको मुनियों ने दिया ऐसा जवाब, आप तो सब जानते हैं आप तो हैं रमज़दाँ।
मार कर मुनियों को जितने खा गये हैं राक्षस, यह उन्हीं का ढेर है ये हैं उन्हीं की हड्डियाँ।
सुनके यह कुछ राम की आँखों में आँसू आ गये, और कहा उनका मिटाऊँगा मैं अब नामोनिशाँ।
ले गये तशरीफ़ यह हर एक मुनी के आश्रम, अपने दर्शन से किया उन सबको शादो शादमाँ।
था सुतीक्षण नाम जिनका थे गुरु उनके अगस्त, जिनमें थे आसार भक्ती के नुमायाँ बेकराँ।
जब सुना आते है उनके आश्रम में राम जी, हो के वह बेचैन दौड़े पूछते थे हैं कहाँ।
दिल में ये थे सोचते मैंने किया क्या नेक काम, आप जो भगवान खुद तशरीफ़ ले आये यहाँ।
फिर रहे थे आगे पीछे वह मुनी दीवाने से, सूझता उनको न था पाते न थे वो हैं कहाँ।
झाड़ की एक आड़ में आ कर खड़े थे रामचन्द्र, और भक्ति का मुनी की ले रहे थे इम्तेहाँ।
भक्ति से भगवान की जब वह मुनी बेखुद हुए, हो गये मसरूर और बैठे वो रह के दर्मियाँ।
राम आ कर सामने उनके खड़े तब हो गये, राम ने उनको जगाया भी, मगर उठते कहाँ।
आखिर जब बेखुदी से होश में वो आ गये, देखते क्या हैं कि सीता राम लक्ष्मण हैं यहाँ।
इनके दर्शन के लिए जो आज तक बेचैन थे, दौड़ कर क़दमों पे इनके गिर गये वो नागहाँ।
राम ने उनको उठाया और बग़लगीरी हुई, थे मुनी जी देखते चेहरे को इनके बेगुमाँ।
राम के चरणों में आ कर गिर गये फ़ौरन मुनी, और उनको ले गये उस जा वे रहते थे जहाँ।
दस्तबस्ता यों मुनी ने इल्तेजा की राम से, कतरये नाचीज़ हूँ मैं आप बहरे बेकराँ।
आपकी हरदम रहे मुझपे इनायत की नज़र, आपकी क़ुदरत की खूबी मैं करूँ कैसे बयाँ।
ज़िन्दगी और मौत के चक्कर से देते हो नजात, देवता मुनियों के दिल को करते हो तुम शादमाँ।
राम जी करते हो हल्का आप ही दुनिया का बोझ, गुस्सओ ग़म और लालच का तो क्या नामोनिशाँ।
आपकी ताक़त बड़ी है आप बल के धाम हो, आपका गर नाम ले ले पाप रहते हैं कहाँ।
आप सबके दिल के अन्दर चूँकि रहते हो मुदाम, मेरे मन में भी इसी सूरत से हो जाएँ निहाँ।
आपको जो कुछ कोई समझे वह समझा ही करे, मेरे दिल में आप कोशलराज हो जलवाकुनाँ।
दिल से मेरे यह न हरगिज़ हो फ़रामौशी कभी, राम आक़ा हैं मेरे और मैं हूँ सेवक बेगुमाँ।
यों सुतीक्षण जी मुनी जब राम से कहने लगे, राम ने उनसे कहा यों हो के बेहद शादमाँ।
ऐ मुनी जो कुछ हो ख्वाहिश आज मुझ से माँग लो, तब मुनी ने दस्तबस्ता अपनी यो खोली ज़बाँ।
जानता ही मैं नहीं हूँ माँगना क्या चीज़ है, कौन-सी है नफ़ाबख्श और कौन-सी नुकसाँ रसाँ।
आपके दिल को जो भावे वह मुझे दे दीजिए, झूठ और सच का नहीं हूँ मैं ज़रा भी फ़र्कदाँ।
राम ने यह वर दिया वैराग्य और भक्ति के तुम, ज्ञान में पूरे रहो हो जाओ कामिल राजदाँ।
तब मुनी ने यह कहा, जो आपने चाहा दिया, अब मुझे दो—वह जो माँगूं—तुम पे है क़ुर्बान जाँ।
आप सीता और लक्ष्मण यों धनुष धारी बने, मेरे दिल में बैठ जाएँ और हों जलवाकुनाँ।
राम ये वर दे कर उनको और आगे बढ़ गये, और चले उस जा ऋषी कुम्भन जी रहते थे जहाँ।
तब सुतीक्षण ने कहा मुझको गुरु को देख कर, एक अर्सा हो गया है मैं भी चलता हूँ वहाँ।
राम ने हमराही में उनको भी अपने ले लिया, और वो सब हो गये उस जा से भी आगे रवाँ।
पास जब पहुँचे सुतीक्षण जाके यों कहने लगे, ऐ गुरु जिनके हो तालिब—आ गये है वो यहाँ।

दौड़ कर आये वो आगे देखते ही राम को, हो गये मसरूर बेहद और हुए आँसू रवाँ।
खैरियत पूछी बिठाया उनको एक अच्छी जगह, और की खिदमत भी उनकी हर तरह शायानेशाँ।
और भी जो थे मुनी उन सबने दर्शन पा लिये, सबसे मिल कर राम ने फ़र्माया सबको शादमाँ।
राम यों कहने लगे हो कर मुखातिब ऐ अगस्त, आपसे मुखफ़ी नहीं है, मैं हूँ क्यों आया यहाँ।
अब मुझे बतलाइए ये राक्षस कैसे हों खत्म, तब मुनी कहने लगे उनसे बसद खनदा दहाँ।
आप ऐसा किसलिए हैं पूछते नाचीज़ से, आपकी लीला को पहचाने कोई मुमकिन कहाँ।
आपकी आदत है यह करते दया सेवक पे हैं, इसलिए पूछा है शायद आपने यों बेगुमाँ।
आपसे है अर्ज़ मेरी पंचवटी को जाइए, और गौतम की दुआए बद को कीजै रायगाँ।
जो मुनी रहते वहाँ हैं उनपे कीजै अब दया, बात यह सुन कर हुए रघुनाथ जी फ़ौरन रवाँ।
गिद्ध के राजा जटायू से मिले वो राह में, पंचवटी पहुँचे बनायी एक कुटी अपनी वहाँ।
जब से जा कर राम ने अपना किया उस जा मुक़ाम, बन गया सरसब्ज़ और थे सब मुनी भी शादमाँ।
जानवर सारे परिन्दे हर तरह थे शादकाम, क्या करें तौसीफ़ उसकी राम रहते थे जहाँ।
एक दिन लक्ष्मण ने पूछा राम जी से इस तरह, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति को ज़रा कीजै बयाँ।
ईश्वर क्या चीज़ है और जीव भी क्या चीज़ है, भेद क्या है यह बताओ आप—इनके दर्मियाँ।
राम ने उनसे कहा कहता हूँ मैं सब तुम सुनो, मुख्तसर ही तुमसे, कर देता हूँ मैं सब कुछ बयाँ।
मैं और मेरा, तू और तेरा, है यही माया फ़क़त, बस इसी चक्कर में है सब मुबतिला अहले जहाँ।
ख्वाहिशाते नफ़्स जितने है वो सब माया ही हैं, फ़र्क़ होता जाहिल और आक़िल के भी है दर्मियाँ।
जहालत होती है इनसाँ को बड़ी तकलीफ़दे, इल्मियत होती है इनसाँ के लिए राहतरसाँ।
ज्ञान वह शै है कि जो सबको बराबर जान ले, है वही वैराग्य जो खुद हो जगत का हीचदाँ।
जो न जाने ईश्वर को और माया को कभी, जीव कहते हैं उसी को, तुम समझ लो मेरी जाँ।
धर्म से वैराग्य हासिल, योग से मिलता है ज्ञान, योग से है मोक्ष मिलता वेद में है वह बयाँ।
और भक्ति से हुआ करते हैं खुश परमात्मा, जिसके बाअस भक्त हो जाते है शादोशादमाँ।
जाहिलो आकिल सभी भक्ति को पा सकते हैं जल्द, और वजूद इनका भी इस भक्ति के अन्दर है निहाँ।
भक्ति पाने के लिए लाज़िम है संतों से मिलें, हर ब्राह्मण से भी मिलना चाहिए खिदमत कुनाँ।
वेद के कहने के मुआफ़िक़ कर्म के पाबन्द हो, तब उसे वैराग्य की मिलती है जा कर सीढ़ियाँ।
ईश्वर को ही गुरु, माता, पिता जो जान ले, रात-दिन करता रहे उसका भजन जो बेगुमाँ।
छोड़ कर छल जानों दिल से जो करे ऐसा भजन, ऐसे ही दिल में रहा करता हूँ मैं जलवाकुनाँ।
राम ने इस तरह भक्ति योग की तशरीह की, सुनके यह बातें हुए लक्ष्मण निहायत शादमाँ।
एक थी हमसीरे रावण नाम जिसका सुपनखा, शक्ल नीयत की बुरी थी और थी वह बदज़बाँ।
एक दिन वह इत्तिफ़ाकन पंचवटी में आ गई, देख कर राम और लक्ष्मण को फ़िदा की उनपे जाँ।
खूबसूरत मर्द बद औरत जो कोई देख ले, भाई, बेटे, बाप का रहता खयाल उसको कहाँ।
करके वह सिंगार अपना राम के आगे गयी, और कहा—तुम-सा जवाँ और मुझ-सी औरत है कहाँ।
आपका मेरा वह जोड़ा बन गया है खूब-खूब, क़ुदरतन अस्बाब इसके हो गये ज़ाहिर यहाँ।
मैंने दुनिया ढूँढ़ मारी कोई भी क़ाबिल न था, आज तुम को देख कर दिल मेरा ललचाया यहाँ।
देख कर सीता की जानिब राम ने उससे कहा, मेरा भाई है कुँवारा जो कि बैठा है वहाँ।
उससे लक्ष्मण ने कहा मैं तो हूँ उनका एक गुलाम, वह जो करना चाहें उनको है सभी शायानेशाँ।

जैसे सेवक चैन से महरूम इज्ज़त से ग़रीब, और जुवारी या शराबी की रहे दौलत कहाँ।
और जो मग़रूर हो चाहे अगर वह चार फल, ये तो नामुनकिन से नामुमकिन है होना बेगुमाँ।
सुपनखा यह बात सुन कर राम के पास आयी फिर, राम ने लौटा दिया फिर उसको लक्ष्मण के यहाँ।
उससे लक्ष्मण ने कहा बेशर्म होगा जो कोई, उससे शादी तेरी हो सकती है बेशक ओ गुमाँ।
भर के ग़ुस्से में बना कर अपना चेहरा खौफ़नाक, वह गयी बैठे थे सीता–रामचन्दर जी जहाँ।
देख कर चेहरा भयानक उसका सीता डर गयीं, राम ने संकेत लक्ष्मण को किया बस नागहाँ।
नाक उसकी काट डाली लक्ष्मण ने दौड़ कर, इब्तेदा रावण से झगड़े की यही है बेगुमाँ।
नाक–कान उसके कटे और खून बहने लग गया, जैसे काले कोह से गेरू की नहरें हों रवाँ।
खर–दूषण उसके भाई थे गयी वह उनके पास, बेक़रारी से थी रोती ओर थी नालाकुनाँ।
यों कहा जा कर, तुम्हारे पर है लानत सौ–हज़ार, शर्म कुछ आती नहीं है तुम को मेरे भाई जाँ।
जब सबब पूछा उन्होंने हाल बतलाया वह सब, सुनके लड़ने के लिए होने लगी तैयारियाँ।
सैकड़ों–लाखों–हज़ारों राक्षस चलने लगे, मुख़तलिफ़ हथियार ले कर हो गये जल्दी रवाँ।
सुपनखा को रहनुमाई के लिए आगे किया, उसके पीछे चल रहे थे सैकड़ों ही पहलवाँ।
राह में उनको नज़र आने लगे सब बदसगुन, लेकिन उनका कुछ न इनको हो सका शक ओ गुमाँ।
जोश में और वलवले में दौड़ते जाते थे सब, चीखते थे इस तरह जैसे कोई शेरे निहाँ।
कोई कहता था कि औरत इनकी जल्दी छीन लो, दोनों भाई का पकड़ कर डाल दो बस बेड़ियाँ।
राम-लक्ष्मण से मुख़ातिब होके यों कहने लगे, आ गयी है राक्षस की फ़ौज लड़ने को यहाँ।
ले के तुम सीता को जाओ कोह के दर्रों में अब, और रहो उनके मुहाफ़िज़ तुम बदिल जमई वहाँ।
भाई की सुन कर हिदायत ले के सीता जी को साथ, चल दिये उस जा से ले कर हाथ में तीरोकमाँ।
देख कर दुश्मन चले आते है लड़ने के लिए, राम ने भी हाथ मे अपने लिये तीरोकमाँ।
देखते थे इस तरह वह जानिबे फ़ौजे उदू, शेर जैसे ताकना हो हाथियों की टोलियाँ।
दौड़ कर वह आये सब और घेरा डाला राम पर, देख कर तेज और जलाल इनका हुए सब नातवाँ।
खर व दूषन ने बुला कर मंत्री से यों कहा, खूबसुरत हैं यह दो शहज़ादे बेशक ओ गुमाँ।
हम ने दुनियाँ में नहीं देखा है इन–सा आदमी, लाख दुनियाँ छान मारी, और जीता सब जहाँ।
गो बहन की अपनी सूरत हो गयी इनसे खराब, फिर भी ये लायक़ नहीं है कतल के शाहजादगाँ।
अपनी औरत को छुपाया है कही, वह लाके दें, और ये ज़िन्दा चले जाएँ तबीयत हो जहा।
पास उनके जाओ तुम ले कर हमारा यह पयाम, उनका जो कुछ हो जवाब अब लेके आओ तुम यहाँ।
राम से जा कर कहा क़ासिद ने जो कुछ था सुना, राम जी कुछ मुसकुराये और हुए गौहरफ़शाँ।
सैद के हम वास्ते फिरते हैं––क्षत्री नस्ल है, ढूँढ़ते है तुम–सा कोई हमको मिल जाये यहाँ।
देख कर दुश्मन को ताक़तवर नहीं डरते है हम, मौत से भी हम भिड़ा करते हे बेशक ओ गुमाँ।
गो हैं हम इनसान लेकिन दैत्य को मारेंगे सब, और मुनियों के बनेंगे हम मुहाफ़िज निगहबाँ।
दुष्ट जो है मैं सज़ा दूँगा उन्हें, गरचे हूँ तिफ़्ल, मैं न मारूँगा चले जाओ, अगर हो नातवाँ।
आके मैदाँ में बनाना बात का बेसूद है, रहम दुश्मन पर बताना है न शाने पहलवाँ।
जो सुना था आके सब पैग़ामवर ने कह दिया, सुनके खरदूषण का दिल जल उठा बेहद नागहाँ।
और कहा उसने पकड़ लो जाके जल्दी राम को, सुन के वह दौड़े हज़ारों––थे मुसल्लह पहलवाँ।
राम ने अपना धनुष ले कर ज्योंही खींचा उसे, एक ग़रज ऐसी हुई जैसे कोई बर्क़तयाँ।

सुन के यह आवाज़ बहरे हो गये सब राक्षस, और कुछ बेहोश–से भी हो गये सब पहलवाँ।
फिर ज़रा सँभले वो सब और तीर बरसाने लगे, मख़तलिफ़ हथियार ले कर भिड़ गये शेरे ज़ियाँ।
राम ने हथियार उनके तोड़ डाले मिसले तिल, हाथ में जल्दी उन्होंने ले लिए तीरोकमाँ।
मार के मानिन्द जब चलने लगे यह तीर सब, राक्षस मैदान से हटने लगे बस नागहाँ।
खर व दूषन त्रिसरा तीनों हुए उन पर खफ़ा, और कहा भागेगा जो हम उसको मारेंगे यहाँ।
सुन के वो वापस हुए भागे हुए सब राक्षस, राम से लड़ने लगे हथियार ले कर बेगुमाँ।
राम के भी तीर जब इस सिम्त से चलने लगे, सैकड़ो गिरने लगे नामी गिरामी पहलवाँ।
उनके आज़ा कट रहे थे, गिर रहे थे मिस्ले कोह, चील और गोदड़ भी खाते जा रहे थे हड्डियाँ।
जिस्म और आजा के टुकड़े होते जाते थे बहुत, और आखिर में निकल जाती थी उनके तन से जाँ।
देख कर यह बेक़रारी फ़ौज की आगे बढ़े, खर वो दूषन त्रिसरा तीनों बिरादर नागहाँ।
सैकड़ों को साथ ले कर राम से लड़ने लगे, राम जी ने उनकी कर दी सब शुजाअत रायगाँ।
तीर इनके जाके उनके जिस्म में लगने लगे, और धड़ाधड़ वो गिरे जाते थे हो कर नीमजाँ।
देवता खायफ़ थे दुश्मन है इधर चौदह हज़ार, और तनहा राम हैं इतने उदू के दर्मियाँ।
वाक़फ़ियत भेद से जब राम को खुद हो गयी, एक तमाशा ही करामत से किया अपनी यहाँ।
सैकड़ों ही राम जैसे हो गये मैदान में, राक्षस आपस ही में लड़ने लगे बस नागहाँ।
इस तरह पल भर ही मे सब कटमरे आपस में वो, मोज़िजा एक हो गया और मर मिटे सब नागहाँ।
देवता सब खुश हुए नक़्कारे बजने लग गये, और विमानों पर सवार हो कर हुए घर को रवाँ।
इस तरह जब सब मुनी और देवता बेडर हुए, ले के सीता जी को लक्ष्मण फिर चले आये यहाँ।
सुपनखा यह देख कर हालत गयी रावण के पास, रोके यों कहने लगी कैसा है ग़ाफ़िल हुक्मराँ।
नशे मे रहते हो हरदम कुछ नही तुमको खबर, आ गया दुश्मन है सर पर ऐश में हो तुम यहाँ।
फ़ाहिशा के साथ सन्यासी अगर मिल कर रहे, या मसीरे बद अगर रखता हो कोई हुक्मराँ।
और दौलतमन्द हो कर जो कोई कंजूस हो, वास्ते भगवान के करता न हो जो खूबियाँ।
जल्द हो जाता है ऐसों का जहाँ में खातमा, है यही दस्तूरे दुनिया, है ये मशहूरे जहाँ।
पान से ही ज्ञान जाता और मयख़्वारी से शर्म, और नखवत से हुआ करती हैं नेकी रायगाँ।
रोग, दुश्मन, आग, मालिक, साँप हो या हो अजाब, जान तू इसको न कमतर है अगर कुछ नुक्तादाँ।
इस तरह कहते हुए रोने लगी वह ज़ार-ज़ार, लोटने नीचे लगी गिर कर सभा के दर्मियाँ।
तेरे जीते जी अरे रावण मेरी यह गति बनी, जेब देता है तुझे क्या है तेरे शायाने शाँ।
लोग सब उसको उठाये और रावण ने कहा, किसने तुझको है सताया क्यों नहीं करती बयाँ।
राजाए दशरथ अयोध्या नाथ के लड़के है वह, देखने में है बहादुर और सजी ओ पहलवाँ।
उनकी करतूतों से यह मालूम होता है मुझे, राक्षस का अब न बाक़ी रहेगा नामोनिशाँ।
जिनकी ताकत के सहारे सब मुनी बेखौफ़ है, उम्र के कमसिन हैं लेकिन अज़्म के हैं पहलवाँ।
देवताओ की मदद के वास्ते ये आये है, दोनों भाई है बहादुर और वजीह ओ पहलवाँ।
राम उनका नाम है और साथ एक औरत भी है, जो निहायत खूबसूरत है और एकताये जहाँ।
उसके छोटे भाई ने काटे है मेरे नाक कान, मैं तेरी हमसीर हो कर क्या सहूँ रुसवाइयाँ।
मेरा रोना सुन के खरदूषणा मदद को आये थे, थोड़े ही अर्से में वो मारे गये सब पहलवाँ।
क़त्ल खरदूषणा का भी और त्रिसरा का जब सुना, जल गया दशशीश का दिल और भड़का नागहाँ।

सूर्पनखा की उसने की तफ़हीम अच्छी तरह से, अपनी ताक़त और शक्ति का किया उसने बयाँ।
देके यों उसको तसल्ली कर दिया रुखसत मगर, दिल में रावण के बहुत खौफ़ और डर था बेगुमाँ।
मेरे सेवक के मुक़ाबिल हो किसी की क्या मजाल, खर व दूषण तो मेरे भाई थे दोनों पहलवाँ।
ताक़ते ग़ैबी से मारा हो तो मारा हो कोई, दूसरे को इनसे लड़ने की भला ताक़त कहाँ।
मैं भी हठ कर के लड़ूँगा ऐसी ताक़त से ज़रूर, ताकि मर कर भी मैं पा जाऊँ हयाते जावेदाँ।
ज़िन्दगी में तो मुझे ईश्वर की याद आती नहीं, क्यों न उनके हाथ से हो जाऊँ मर कर कामराँ।
और अगर कोई हैं इनसाँ मैं पकड़ लूँगा ज़रूर, उनकी औरत को मैं लाऊँगा ज़रूर अपने यहाँ।
इस तरह कहते हुए रावण ने रथ मँगवा लिया, उसपे चढ़ के वह गया, मारीच रहता था जहाँ।
इस तरफ़ क़िस्सा सुनो, लक्ष्मण गये लाने को फल, एक करिश्मा हो गया जो है वहत राजेनिहाँ।
राम ने हँस कर कहा, ऐ जानकी अब तुम सुनो, मैं ज़रा करता हूँ लीला तुम को करना हूँ निहाँ।
आग में तुम अब समा जाओ बराये चन्द रोज, राक्षस कुल का मिटा देना हूँ मैं नामोनिशाँ।
सुनके यह सीता उसी दम आग के अन्दर गयीं, उनकी जैसी मूरती एक हो गयी जलवाकुनाँ।
भेद यह ऐसा था लक्ष्मण भी न वाक़िफ़ हो सके, और गया रावण वहाँ मारीच रहता था जहाँ।
सर झुकाया अपना रावण ने जब उसके सामने, यों कहा मारीच ने क्या बात है कीजै बयाँ।
किसलिए जंगल में आये हैं अकेले आप आज, तब तो रावण ने किया सब हालेदिल उससे बयाँ।
और कहा तुम दाँव करके अब बनो नक़ली हिरन, और उस औरत को मैं ले कर चला आऊँ यहाँ।
बोला वह उनसे अदावत करके नामुमकिन है जीत, लाख समझाया उसे मारीच ने सूदोजियाँ।
हैं वही शहज़ादे विश्वमित्र जिनको लाये थे, यज्ञ की उनके हिफ़ाजत के लिए थे पासबाँ।
राम ने मारा था ऐसा बाण जिसका फल न था, एक सौ योजन गिरा मैं दूर जा कर नागहाँ।
अब मेरी हालत निहायत हो गयी अबतर खराब, रात-दिन उनका ही डर है मेरे दिल के दर्मियाँ।
तुम अगर उनको समझते हो कि वह इनसान हैं, तब भी वह तुमसे ज़ियादह हैं बहादुर पहलवाँ।
इसलिए उनसे अदावत मोल लेना है फ़िजूल, जो कि मारे ताड़िका को और सुबाहू नागहाँ।
खर व दूषन का किया हो जिसने पल में खातमा, क्या ये इनसानी है ताकत ऐसा मुमकिन है कहाँ।
खैरियत अपनी और अपने घर की गर मंजूर है, चुप पलट जाओ यहाँ से तुम अभी अपने मकाँ।
जल उठा रावण बहु सुन कर और कहा ऐ बेवकूफ, मिस्ल एक उस्ताद के है यह तेरी तर्जे बयाँ।
कौन दुनिया में है जो मेरा मुक़ाबिल हो सके, आज आलम में पहलवाँ हूँ मैं एकताये जहाँ।
दिल में यह मारीच समझा उससे झगड़ा है फिजूल, जो मुसल्लह शख्स हो या बेवकूफ और राजदाँ।
हो वह बावर्ची व दौलतमंद या वह हो हकीम, मुक्तदिर हाकिम हो या हो भाट या शायर बेगुमाँ।
उसने सोचा दोनों हालत में मुझे मरना ही है, राम के हाथों से मरने में ही होगी खूबियाँ।
मैं जवाब इसको अगर दूँ मार डालेगा मुझे, राम ही के हाथ से मैं क्यों न मर जाऊँ यहाँ।
सोच कर वह दिल में ऐसा साथ रावण के गया, राम के चरणों में उसका दिल लगा था बेगुमाँ।
उसका दिल था खुश कि दर्शन राम के हो जाएँगे, लेकिन उसने राज यह रावण से रक्खा ही निहाँ।
आज दोनों भाई के दर्शन करूँगा मैं ज़रूर, और मरूँगा तो मिलेगी मुझे हयाते जावेदाँ।
बन गया मारीच सोने की तरह नक़ली हिरन, जबकि उस जंगल में पहुँचे राम रहते थे जहाँ।
वह नज़र आता था बेहद खूबसूरत दूर से, और निहायत ही अजब था रंग रूप उसका अयाँ।
देख कर सीता ने उसको यों कहा तब राम से, खाल होगी इस हिरन की खूबसूरत बेगुमाँ।

मार कर आप इस हिरन को पोस्त ले कर आइए, राम उट्ठे जानते थे गो वो सब राज़ेनिहाँ।
देवताओं का बनाना काम था पेशेनजर, इसलिए जल्दी चले वह ले के बस तीरोक़माँ।
राम बोले लक्ष्मण से इस जगह हैं राक्षस, होशियारी से रहो सीता के तुम हो निगहबाँ।
राम को देखा हिरन ने दौड़ने बस लग गया, राम भी ले कर धनुष पीछे हुए उसके रवाँ।
पास आता था कभी और दूर जाता था कभी, वह कभी आता नज़र था और कभी होता निहाँ।
इस तरह करता हुआ वह दूर उनको ले गया, राम ने एक तीर मारा लग गया पूरा निशाँ।
वह पुकारा लक्ष्मण का नाम ले कर जोर से, ध्यान दिल मे राम का था और देदी अपनी जाँ।
वह गती उसको मिली मुनियों को जो मिलती नहीं, देवता इस खुशनसीबी पर हुए सब गुलफ़शाँ।
मार कर मारीच को रघुवीर वापस हो गये, जिनके था तरकस कमर में हाथ में जिनके कमाँ।
हाय लक्ष्मण ! जब कहा मारीच ने सीता सुनी, डर गयी वो उनके दिल में हो गये वहमोगुमाँ।
जल्द जाओ तुम तुम्हारे भाई कुछ आफ़त में हैं, बोले हँस कर लक्ष्मण ऐसा है मुमकिन ही कहाँ।
तब तो सीता ने उन्हें कुछ सख्त फ़िकरे कह दिये, कुदरतन लक्ष्मण के दिल में भी हुआ शक्कोगुमाँ।
छोड़ कर सीता को वो वन-देवताओं के सुपुर्द, लक्ष्मण राही हुए थे रामचन्दर जी जहाँ।
देख कर कोई नहीं है भेस साधु का पहन, आ गया रावण वहाँ सीता जी बैठी थी जहाँ।
खौफ़ से जिसके थे डरते देवता और दैत्य भी, आज वह रावण है चोरी के लिए आया यहाँ।
देखता फिरता था रावण ऐसे कुत्ते की तरह, जो कि हो चोरी पर मामल देख कर खाली मकाँ।
हर तरह से उसने सोता को बहुत लालच दिया, और कथाएँ भी कहीं और राजनीति की बयाँ।
उससे सीता ने कहा तुम आप भी तो हो गुमाई, हो मगर दिल के बुरे अल्फ़ाज़ेबद हैं बरज़बाँ।
तब तो रावण अपना असली रूप दिखलाया उन्हें, और अपना नाम और सरवत किया उनसे बयाँ।
डर गयी सीता मगर हिम्मत से कहने लग गयीं, ठहर तू कमबख्त, प्रभु जल्द आते हैं यहाँ।
शेरनी को जैसे कोई चाहता खरगोश हो, तू भी यों ही कह रहा है मौत का बन कर निशाँ।
आ गया रावण को गुस्सा खींच कर सीता को वह, रथ में अपने ले बिठाया हो गया फ़ौरन रवाँ।
इस तरह रावण चलाता जा रहा था अपना रथ, लब पे सीता के थे नाले और थीं जारी कुनाँ।
चीखती वह जा रही थी राम जी को बार-बार, हाय लक्ष्मण, बेसबब तुमसे हुई मैं बदगुमाँ।
कुछ खता इसमें तुम्हारी हाय लक्ष्मण थी नहीं, मैं खफ़ा नाहक हुई पायी सजा भी बेगुमाँ।
कौन प्रभु को सुनाएगा मेरी तकलीफ़ यह, यज्ञ का परसाद खाने को हुआ है खर रवाँ।
इस तरह आवाज़ रोने की सुना जब गिद्धराज, दौड़ कर ऊपर से आया और यों खोली ज़बाँ।
प्यारी सीता तू न डर मैं जल्द मारूँगा इसे, और रावण से कहा, कमबख्त जाता है कहाँ।
पहले रावण कुछ डरा फिर देख कर कहने लगा, है यह क्या मेनाक पर्वत या गरुड़ है बेगुमाँ।
फिर कहा हँस कर जटायु है यह बूढ़ा नातवान, मेरे ही हाथों से आज इसकी निकल जाएगी जाँ।
गिद्ध यों कहने लगा रावण ज़रा सुन मेरी बात, छोड़ कर सीता को हो जा अपने घर को तू रवाँ।
राम के गुस्से की अगनी जब सुलग जाएगी तब, तू भी जल जाएगा, जल जाएगा तेरा खानदाँ।
उसका यह कहना भी सुन कर हो गया खामोश जब, तब तो गुस्सा आ गया गिद्धराज जी को बेगुमाँ।
गिद्ध ने बाल उसके पकड़े रथ के नीचे कर दिया, सिर पे इतनी चोंच मारी हो गया सर खूँफ़शाँ।
आ गया रावण को चक्कर फिर सँभल कर वह ज़रा, काट डाला पर जटायू के, लिये खंजर दवाँ।
गिर गया पच्छी ज़मीं पर याद करते राम की, और रावण ले के सीता को हुआ जल्दी रवाँ।

खौफ़ के मारे बढ़ाता जा रहा था रथ को जल्द, और सीता कर रही थी नालाओ आहो फ़ुगाँ।
एक टीले पर वहाँ बैठे थे बन्दर देख कर, डाल दी सीता निशानी पार्चे की कुछ वहाँ।
इस तरह सीता को रावण ले गया अशोक बन, और डरा-धमका के निगरानी में रखवाया वहाँ।
राम ने लक्ष्मण को देखा आ रहे हैं अपने सिम्त, यों कहा सीता को तनहा तुमने क्यों छोड़ा वहाँ।
राक्षस वन में हैं फिरते मैंने तुमसे कह दिया, कुछ ख़याल इस का न रक्खा और चले आये यहाँ।
मुझको अन्देशा है अब सीता नहीं अपनी जगह, लक्ष्मण छू कर क़दम कहने लगे ऐ भाई जाँ।
कुछ खता मेरी नहीं है मैं बहुत मजबूर था, राम और लक्ष्मण गये, था आश्रम उनका जहाँ।
देख कर सीता से ख़ाली राम बेकल हो गये, याद करके अपनी सीता को किये आहोफ़ुगाँ।
लक्ष्मण ने उनकी की तफ़हीम तब आगे बढ़े, पूछते हर झाड़ से थे वह समझ कर राजदाँ।
वह परिन्दों और पतंगों से भी जाते पूछते, तुम बता सकते हो मेरी प्यारी सीता है कहाँ।
जो तुम्हारे रूप से शरमिन्दा थे सब फूल फल, आ गयी रौनक है उनमें तुम न होने से यहाँ।
तुम कहाँ हो क्यों नहीं आती हो प्यारी जानकी, इस तरह कहते हुए रघुवीर होते थे रवाँ।
और आगे जब बढ़ा देखा जटायु है पड़ा, राम ही का ध्यान था और राम ही बिरदेज़बाँ।
राम ने जब हाथ फेरा दर्द उसका कम हुआ, और उसने राम से की इस तरह अर्ज़ेबयाँ।
नाथ यह सब हाल मेरा करके रावण चल दिया, और सीता जी को भी वह ले गया अपने यहाँ।
ले गया है हाय वह सीता को दक्खन की तरफ़, जो कि करती जा रही थीं राह में आहोफ़ुगाँ।
आप से कहने के खातिर जी रहा था नाथ मैं, अब निकल जाने को ही है जिस्म से यह मेरी जाँ।
राम ने उससे कहा तदबीर वह करता हूँ मैं, आप हो जाएँगे अच्छे और बच जाएगी जाँ।
गिद्ध ने हँस कर कहा जीने की अब ख़्वाहिश नहीं, आपके चरणों को देखा हो गया मैं कामराँ।
राम कहने लग गये जो दूसरों के वास्ते, जान अपनी दे वही होता है हरदम शादमाँ।
आप पूरण काम हैं बैकुण्ठ को बस जाइए, आपको दुख दर्द का बाक़ी न हो नामोनिशाँ।
मेरे वालिद से न कहिए आप कुछ सीता का हाल, थोड़े ही दिन बाद रावण जाके कर देगा बयाँ।
आप निर्गुण हैं सगुण हैं आपकी जै हो सदा, रावणे दशशीश के हैं वास्ते शोला फ़शाँ।
है कमल-सा आपका मुंह और बाजू हैं विशाल, खौफ़ का बाक़ी नहीं रखते कभी नामोनिशाँ।
आप बलवान आप अजनमा और अनादी आप हैं, एक हैं और है अगोचर आप ही हैं वेददाँ।
आपका ना जन्म ही है ना मरण है आपका, जीने मरने का छुड़ा देते हो दिल से सब गुमाँ।
आप को भजते है जो देते हैं उनको सुख मुदाम, ख़्वाहिशाते नफ़्स के हैं दुश्मने जाँ बेगमाँ।
आप माया से भरे हैं और हमेशा शान्त हैं, अपने भक्तों पर रहा करते है स्वामी मेहरबाँ।
आप ही का ध्यान मेरे दिल में हो हरदम लगा, आप ही हरदम मेरे दिल में रहें जलवाकुनाँ।
अस्तुती करने लगा गिद्धराज उनकी बार-बार, आख़िरस वह हो गया बैकुण्ठ को सीधा रवाँ।
राम ने की उसकी क्रिया जिस तरह से चाहिए, जब हुई उससे फ़राग़त हो गये दोनों रवाँ।
रास्ते में एक मिला था राक्षस नामी कमन्द, मार डाला राम जी ने उसको भी फ़ौरन वहाँ।
यों कहाँ दुर्वासा जी ने बद्दुआ दी थी मुझे, आपके दर्शन से अब मैं हो गया हूँ शादमाँ।
राम बोले ब्राह्मण से इख़तिलाफ़ अच्छा नहीं, है ब्रह्मा और शिव भी इसमें मेरे हमज़बाँ।
उस ब्राह्मण की भी पूजा चाहिए करनी ज़रूर, संगदिल हो या किसी को दे रहा हो गालियाँ।
शूद्र गर लिखा-पढ़ा हो और हो लायक़ मगर, पूजा के लायक़ नहीं वह और न उसकी इज्जोशाँ।

आख़िरस गन्धर्व जब यह सब सुना वह चल बसा, मिल गयी उसको नजात और हो गया वह कामराँ।
राम जब आगे बढ़े पहुँचे वह शबरी जी के पास, राम को वह देख कर आते, हुई बस शादमाँ।
पैर दानो भाई के चूमे वह नीचे गिर गयी, पैर धो कर उनके, आसन पर थी बिठलाया वहाँ।
कन्दमूल और फल रसीले लाके वह आगे रखे, राम ने भी शौक से खाया उन्हें बेईनोंआँ।
हाथ जोड़े और कहने लग गयी मालिक मेरे, मक़दरत मेरी है क्या, ख़िदमत के लायक हूँ कहाँ।
नीच हूँ मैं जाति की भी और हूँ मैं बेवक़ूफ़, और मैं रखती नहीं ज़र्रा बराबर खूबियाँ।
राम बोले जाति से मुझको नही कुछ वास्ता, याद जो मुझको करे होता हूँ उस पर मेहरबाँ।
जाति-पाँति और धन बडाई या कुटुम्ब हो और बल, गर न भक्ति हो तो रौनक़ इनमें रहती है कहाँ।
तीसरी भक्ति वही है जो गुरु-सेवा करे, और भजन दिल से करे चौथी है भक्ति बेगुमाँ।
मन्त्र का मेरे जो जप करता है वह पाँचवी, और छठी भक्ति है वह ऋषियों का पकड़े आस्ताँ।
सातवी भक्ति है ऋषियो का बड़ापन मान ले, आठवाँ रुतबा है भक्ति का किनाअत में निहाँ।
बुगुज़ और किनाँ न रख कर सबसे हिल-मिल कर रहे, है नवी भक्ति—न शादी ग़म का हो सूदोज़ियाँ।
एक भी इनमें से हासिल कोई कर लेता है गर, है वही माजूरे परमेश्वर—नहीं शकओगुमाँ।
मरतबा तेरा न क्यो कर होगा आला पीरजन, जब भरी तुझमें है नव अक्साम की ये खूबियाँ।
मुझको बतला जानकी की कुछ खबर तुझको हो गर, बोली वह तुम जाओ पम्पा नाम सरवर है जहाँ।
आप से सुग्रीव मिल कर सब बयाँ कर देगे हाल, गिर गयी पैरों में उनके और छोड़ी अपनी जा।
नीच थी वह लेकिन उसको मिल गया ऊँचा मुक़ाम, और मर कर हो गयी वह सीधी जन्नत को रवाँ।
राम और लक्ष्मण वहाँ से भी रवाना हो गये, राह में किस्से जुदाई के वो करते थे बयाँ।
लक्ष्मण देखो कि यह वन किस कदर शादाब है, सब परिन्दे जानवर जोड़े से फिरते है यहाँ।
वो बुरा कहते है मुझको देख कर तनहाँ मुझे, किस तरह अफ़सोस की जा है यह बेशकओगुमाँ।
हमको आते देख कर जो भाग जाते है हिरन, इस तरह उनको दिलासा दे रही है हिरनियाँ।
खौफ़ क्या है तुम तो असली हो, न इनसे कुछ डरो, ये तो सोने के हिरन के वास्ते आये यहाँ।
अपनी माताओं को रख कर साथ अपने किस तरह, फिर रहे बेखौफ जगल मे है देखो हाथियाँ।
गोया मुझको हो हिदायत मर्द को लाजिम है यह, वह कभी छोड़े न औरत को बग़ैर निगहबाँ।
शास्त्र से खूब वाक़िफ़कार को भी चाहिए, देखना उसको रहे इसमें है मुजमिर खूबियाँ।
लाख सेवा तुमने राजा की अदा की हो मगर, उसको अपने बस में समझो है यह मुमकिन ही कहाँ।
लाख औरत को कोई क़ब्जे में रखना हो मगर, बदचलन औरत कभी क़ब्जे मे रहती है कहाँ।
शास्त्रों पर और राजा पर भी क़ब्जा है मुहाल, है यही दस्तूरे दुनिया है यही तरजे जहाँ।
भाई देखो ऋतु वसन्ती है यह कैसी दिलफ़िजा, साथ सीता के न होने से वह रौनक़ ही कहाँ।
दिल मेरा बेचैन है तनहा में फिरने के सबब, फिर भी कुछ हिम्मत है तुम हमरह जो हो मेरे यहाँ।
झाड़ देखो किस तरह शादाब हैं फल-फूल से, देख कर जिनको हो दिल ठडा खुशी हो बेगुमाँ।
कूकती कोयल है वन में गूंजते मोर और चकोर, बोलते तोते कबूतर, अपनी-अपनी बोलियाँ।
है वह सब सामान ख्वाहिश के बढ़ाने के लिए, कैसे भौरे है बजाते जा रहे शहनाइयाँ।
और यह ठडी हवा भी किस क़दर है दिल फ़रेब, क्यो न वह दीवाना हो हर शख्स जो देखे समाँ।
जो कि क़ाबिल है वही बचता है ऐसे वक्त में, पैर मे लगजिस नही आती है उसके बेगुमाँ।
शहवत और गुस्सा और लालच है मुसीबत तीन ये, संत भी जिसकी वजह मे सहते हैं रुसवाइयाँ।

सहवते इन्सान का दारोमदार औरत पर है, हिर्स है मन्शाए महवस और गुस्सा बरजबाँ।
फिर वहाँ से राम और लक्ष्मण रवाना हो चले, ताल था पम्पा जो नामी दोनो ये पहुँचे वहाँ।
जैसे संतों का हो दिल वैसे ही पानी साफ़ था, चार जिसके घाट थे जिनकी कहूँ क्या खूबियाँ।
दानी पीने के लिए आते जहाँ मोरो मलाव, जिस तरह दानी के घर पर हों इकट्ठे मुफलिसाँ।
आड़ से पत्तों की पानी भी नजर आता न था, जैसे माया के सबब भगवान होता है निहाँ।
धार्मिक जो लोग रहते हैं हमेशा शाद काम, ऐसे ही मसरूर रहती शाद थी सब मछलियाँ।
थे कमल अक़्साम के, भौरे भी करते थे गुजार, हंस भी और जल के भुंगे बोलते थे बोलियाँ।
चक्रवाक हैं और बगुले भी है और दीगर तऊर, चहचहाते फिर रहे है मैं करूँ क्या-क्या बयाँ।
झील के नजदीक मुनियों का बना था आश्रम, आम, चम्पा, ढाक कटहल के दरख्त ऊगे जहाँ।
फूल पत्तों से भरे थे और हरे थे झाड़ सब, और ठण्डी-ठण्डी चलती थी हवा धीमी वहाँ।
ध्यान मुनियों का भी बाक़ी रह नहीं सकता था जब, कोयलें करती थीं कू-कू और होती नग्माख्वाँ।
झाड़ मेवादार ऐसे झुक गये थे बोझ से, जिस तरह फैयाज धन पा कर है झुकता बेगमाँ।
राम ने तालाब देखा और बेहद खुश हुए, और किये स्नान दोनों और फिर बैठे वहाँ।
कुछ कथाएँ राम कहते जा रहे लक्ष्मण से थे, सब मुनि दर्शन को आये और नारद भी वहाँ।
बैठ कर नारद जी यो कहने लगे--ऐ राम जी, एक वर मैं माँगता हूँ दीजै मुझको बेगुमाँ।
नाम तो भगवान के लेने को है यों सैकड़ों, राम जो है नाम यह सब पर रहे फौकुन बयाँ।
जिसके जपने से अजाब इन्सान के सब छूट जाएँ, और मुसीबत का न कुछ बाकी रहे नामोनिशाँ।
आपकी भक्ति हमेशा पूर्णिमा की रात हो, जगमगा उट्ठे इसी एक नाम मे दोनो जहाँ।
राम जो है नाम वह मानिन्दे यह रौशन रहे, दूसरे जो नाम हैं मानिन्दे हों मैयार गाँ।
जिस तरह चाहा मुनि ने वर उन्हें वैसा मिला, पा गये वह दिल की इच्छा हो गये वो शादमाँ।
फिर मुनि ने उनसे पूछा यह मुझे बतलाइए, आपका मुझ पर करम है आप मुझ पर मेहरबाँ।
एक दफ़ा मैं शादी करने के लिए तैयार था, क्यों रुकावट आपने डाली थी उसके दर्मियाँ।
यों जवाब उनको मिला मुझ पर भरोसा जो करे, मैं मुहाफिज उसका रहता हूँ हमेशा निगहबाँ।
जिस तरह बच्चा पकड़ ले आग को या साँप को, दौड़ कर उसको बचा लेती हैं जल्दी उसकी माँ।
जब बडा होता है बच्चा माँ को उससे प्यार है, लेकिन उसकी फिक्र अब उतनी नहीं रखती है माँ।
वह जो ग्यानी है उसे अपने ही बल का जोर है, और सेवक को फकत मेरा ही है एक आस्ताँ।
जोश और गुस्सा तो दोनों ही में रहता है मगर इनसे बचने की मसासिल दोनों सूरत हैं कहाँ।
जो है ज्ञानी अपने बल पर उनसे बच जाता है खुद, भक्त को इनसे बचाना मुझको है ऐ नुक्तादाँ।
महवतो गुस्सा और लालच इश्क हो या हो घमंड, यह है सब तकलीफ़दे और यह है सब ईज़ारसाँ।
इश्क गोया एक जंगल है तो औरत है बहार, और जप-तप के सुखाने के लिए फ़सले खिज़ाँ।
हिर्सो सहवत और गुस्सा है बुरी ये आदतें, औरतों ही से बढ़ा करती है, होता है ज़ियाँ।
धर्म के जो काम हैं वह इससे जल जाते है सब, पैर मे हिर्स और लालच की है पड़ती बेड़ियाँ।
पाप के उल्लू के खातिर यह अँधेरी रात है, अक़्ल ताकत और सचाई है ये गोया मछलियाँ।
और बदऔरत तो होती है बड़ी तकलीफ़दे, इसलिए शादी तुम्हे होती न थी राहतरसाँ।
सुनके ये अल्फ़ाज़ नारद जी का दिल खुश हो गया, दिल में यह कहने लगे मालिक है कितना मेहरबाँ।
ऐसे मालिक को नहीं जो याद करता है कभी, कैसे बख्तावर वह होगा कैसे होगा कामराँ।

फिर कहा नारद ने हो कर बाअदब ऐ राम जी, अज़रहे लुत्फ़ो करम संतों के गुण कीजै बयाँ।
राम कहने लग गये कहता हूँ मैं संतों के गुण, जिसके कारण उनके बस में मैं हूँ रहता बेगुमाँ।
षड विकारों से वो रहते हैं हमेशा दूर-दूर, ग़रज़ और लालच दग़ा का हो नहीं नामोनिशाँ।
ख़ुश मिज़ाज़ ओ साफ़ दिल हो और सच्ची राह पर, पंडितो जोगी भी हो वह और शायर बेगुमाँ।
वह न हो मगरूर साबिर भी हो बाअखलाक़ हो, धर्म का पाबन्द भी हो और उसका कद्रदाँ।
वह अलग रहते हों दुनिया के बखेड़ों से मुदाम, उनकी कटती हमेशा मेरी धुन के दर्मियाँ।
ग़ैर की ख़ूबी है सुनते अपनी सुनते ही नहीं वह कभी इन्साफ़ से हटते नही है बेगुमाँ।
नर्म दिल होते हैं सबसे प्यार रहता है उन्हें, जप व तप और बरत की करते हैं वो पाबन्दियाँ।
वो गुरु की और ब्राह्मण की भी सेवा में रहें, दान की रक्षा समाँ की उनमें हो सब ख़ूबियाँ।
ज्ञान से वाक़िफ़ हो और वैराग्य के पाबन्द हों, भूल कर भी वह बुराई पर कभी चलते कहाँ।
दूसरों की वो भलाई में लगे रहते हैं खुद, याद में भगवान् की रहते है हरदम शादमाँ।
सरस्वती भी संत की तारीफ़ कर सकती नहीं, सन्त की तारीफ़ की जाये ये मुमकिन है कहाँ।
सुन के यह नारद हुए ख़ुश, पैर पड़ कर राम के, हो गये उस जाय से ब्रह्मलोक को वापस रवाँ।
राम लक्ष्मण भी वहाँ से और आगे बढ़ गये, था ऋषि पुक कोह जिस जा दोनों वे पहुँचे वहाँ।
कोह पर सुग्रीव रहते थे और उनके सब वज़ीर, देखा उन लोगों ने आते है इधर दो पहलवाँ।
यों कहा हनुमान से सुग्रीव ने तुम जल्द जाओ, और पता इसका लगाओ, ये है अब जाते कहाँ।
ये अगर बाली की जानिब से यहाँ हैं आ रहे, तुम इशारे से नज़र के मुझ से कर देना बयाँ।
छोड़ कर इस कोह को जल्दी चला जाऊँगा मैं, मुझमें हिम्मत है न लड़ने की न है ताबो तवाँ।
ब्राह्मण का भेष बदले और गये हनुमान जी, देख कर वह राम को गरदन झुकाये बेगुमाँ।
और पूछा हाथ जोड़े कौन है आप ऐ हुज़ूर, किसलिए जंगल में दोनो आप फिरते है यहाँ।
आपका नाज़ुक बदन है ख़ूबसूरत आप है, सह रहे है आप क्यों जगल में ये दुश्वारियाँ।
ब्रह्मा विष्णु शिव से है या नरो नारायण हैं आप, या कि हैं भगवान् इन्साँ बन के यह जलवाकुनाँ।
राम बोले राजा कोशल राज के लडके है हम, बाप के अहकाम से हम वन को आये हैं यहाँ।
नाम हैं राम और लक्ष्मण और दोनों भाई हैं, साथ थीं बीवी भी मेरी जानकी आरामेजाँ।
राक्षस उनको चुरा कर ले गया जंगल से है, हम उन्ही को ढूंढ़ते-फिरते यहाँ है, मेहरबाँ।
हमने अपना हाल सारा कह दिया है आप से, आप भी ऐ ब्राह्मण कुछ हाल कीजेगा बयाँ।
गिर गये पैरों में हनुमत और कुछ कहते न थे, और उन्हें पहचान कर बेहद हुए वह शादमाँ।
यह समझ कर अपने मालिक की चरण सेवा हुई, राम से हनुमान यों करने लगे अर्जेबयाँ।
मैंने जो कुछ हाल पूछे वह तो मेरा फर्ज़ था, मुझसे क्यों हो पूछते जब आप पर है सब अयाँ।
आपकी करनी से मैं तो इस क़दर मबहूत हूँ, अपने मालिक को नहीं पहचान सकता बेगुमाँ।
मैं हूँ नादाँ बेसमझ भी और दिल का हूँ बुरा, आप भी मुझको हैं भूले किसलिए ऐ मेहरबाँ।
सच हूँ कहता मैं भजन से हूँ नहीं वाकिफ़ मगर, आपका जब है भरोसा फिर मुझे डर है कहाँ।
अपने असली रंग में फिर आ गये हनुमान जी, गिर गये पैरों पे उनके खो दिये तावोतवाँ।
राम ने उनको उठाया और गले उनसे मिले, और कहा हनुमान तुम मुझमें न हो कुछ बदगुमाँ।
है मुहब्बत मुझको तुम से बढ़ कर लक्ष्मण से कहीं, अपने सेवक पर हमेशा मैं हूँ रहता मेहरबाँ।
राम के सुन कर वचन हनुमान बेहद ख़ुश हुए, बसबसा जाता रहा और हो गये वो शादमाँ।

फिर कहा ऐ नाथ यह जो सामने है एक पहाड, राजाए सुग्रीव वानरराज रहते हैं यहाँ।
आप उनसे गर मिलें अरू करें कुछ उनकी मदद, वो तलाशे जानकी में भेज देंगे टोलियाँ।
इस तरह समझा के उनको राम और लक्ष्मण को भी, अपने काँधे पर बिठा कर हो गये फ़ौरन रवाँ।
देख कर राम और लक्ष्मण को हुए सुग्रीव खुश, और बग़लगीरी हुई दोनों से बेशक्कोगुमाँ।
कह दिया हनुमान ने दोनों तरफ़ का हाल कुछ, अहदो पैमाँ भी कराया, आग रख कर दर्मियाँ।
दोस्ती के अहदों पैमाँ के मरातिब तै हुए, लक्ष्मण ने पूरा किस्सा कर दिया उनसे बयाँ।
जानकी के ज़िक्र से सुग्रीव रंजीदा हुए, और कहा ऐ नाथ सीता जी मिलेंगी बेगुमाँ।
मैंने देखा एक औरत को लिये जाता था मर्द, एक दिन बैठा था मैं जब मय वज़ीरों के यहाँ।
देख कर हमको पुकारा राम का लेती थी नाम, और कुछ कपड़े भी फेंके, थी बसद आहोफ़ुगाँ।
राम ने जब उनको माँगा ला दिया सुग्रीव ने, ले के उनको राम की आँखों से आँसू थे रवाँ।
फिर कहा सुग्रीव ने हाज़िर हूँ मैं इमदाद को, वानरों को मैं अभी करता हूँ हर जानिब रवाँ।
राम ने पूछा कि तुम किस वास्ते जंगल मे हो, क्या सबब है इसका तुम जल्दी करो मुझसे बयाँ।
यों कहा उसने कि बाली और मैं दो भाई है, थी मुहब्बत हद से भी बढ़ कर हमारे दर्मियाँ।
एक दफ़ा मायावी आया था हमारे शहर में, और गर्जा इस तरह जैसे कोई शेरेज़ियाँ।
देख कर उसकी यह हिम्मत क्रोध आया भाई को, और दौड़ा उसके पीछे मेरा भाई पहलवाँ।
डरके मायावी जो भागा मैं भी पीछे चल दिया, और मायावी छुपा दर्रे के जाके दर्मियाँ।
भाई भी अन्दर गया और मुझसे यह कह कर गया, एक पखवाड़ा रहो तुम मुन्तज़िर मेरे यहाँ।
मैं अगर वापस न आऊँ यह समझना मर गया, इन्तिज़ार मैंने किया भाई का महीने भर वहाँ।
देखता क्या हूँ कि नाला बह रहा है खून का, मर गया बाली मैं समझा कुछ न था शकओगुमाँ।
अब वह आ कर मुझको भी मारेगा, ऐसा सोच कर, रख दिया एक शिल गुफा पर और हुआ फ़ौरन रवाँ।
घर को जब वापस मैं आया जमा थे सारे वज़ीर, बोले यों लाज़िम हुकूमत के लिए हैं हुक्मराँ।
मुझको गद्दी पर बिठाया हो बइसरारे तमाम, और मैं तख्ते हुकूमत पर हुआ जलवाकुनाँ।
मार कर बाली उसे जब अपने घर वापस हुआ, मुझको सिहासन पर देखा, हो गया गुस्साकुनाँ।
वह यह समझा मैंने शिल को इसलिए था रख दिया, वह अगर मर जाए तो मैं बन सकूँगा हुक्मराँ।
इस तरह जब दिल में उसके बैर पैदा हो गया, मुझको मारा इस कदर बाकी न थे ताबोतवाँ।
मेरी औरत का भी छीना घर से बाहर कर दिया, फिर रहा जंगल मे हूँ मैं होके अब बेखान्दाँ।
सुन के यह रघुवीर के भी दिल में कुछ जोश आ गया, और कहा बाली को मैं मारूँगा बेशक्कोगुमाँ।
दोस्ती तो है वही अपनी मुसीबत भूल कर, दोस्त की तकलीफ़ मे हलकी करे दुश्वारियाँ।
दोस्ती करते वो क्यों हैं जब न हो अक्लोफहम, मित्रकी करते रहो हरदम अयाँ तुम खूबियाँ।
देने-लेने में न करना तुम कभी शक्कोशुबह, और मुसीबत में करो सौ बार तुम कुर्बान जाँ।
जिसका जाहिर दूसरा हो और बातिन दूसरा, मित्रसे ऐसे रहो तुम दूर मेरे भाई जाँ।
बेसमझ नौकर हो या राजा कोई कजूस हो, और धोखेबाज़ औरत या हो बोगजी मेहरबाँ।
है ये चारों बिल यकी इनसान को तकलीफदे, मैं मदद पर हूँ तुम्हारे तुम न हो अब नीमजाँ।
राम ने जब यह कहा सुग्रीव ने उनसे कहा, अर्ज करता हूँ कि बाली भी बड़ा है पहलवाँ।
ताड़ का यक झाड भी बतलाया उसने राम को, दुन्दभी जो राक्षस था उसकी सारी हड्डियाँ।
राम ने फौरन गिराया उनको अपने हाथ से, हो गया हैरान वह देखा जो यह ताबोतवाँ।

गिर गया पैरों पर फ़ौरन और कहा मालिक मेरे, मैं हूँ सेवक आपका हां आप मुझ पर मेहरबाँ।
लोग कहते हैं कि सेवा आपकी करते हैं जो सुखरू रहते है हरदम और हरदम कामराँ।
बाली के बाअस तुम्हारे मुझको दर्शन मिल गये, अब अदावत का नहीं बाक़ी रहा शानोगुमाँ।
अर्ज़ मेरी है यही मैं छोड़ कर संसार सब, आपकी भक्ती हो मालिक मेरे दिल के दर्मियाँ।
राम ने जब यह सुना उनसे तो यों कहने लगे, कह दिया जो मैंने वह होता नहीं है रायगाँ।
राम जाने लग गये सुग्रीव को हमराह ले, दे के हिम्मत उनको भिजवाया है बाली के यहाँ।
राम की हिम्मत से ललकारा वहाँ सुग्रीव ने, और बाली भरके ग़ुस्से में हुआ फौरन रवाँ।
उसकी औरत ने बड़ी मिन्नत की, समझाया उसे, और कहा राम और लक्ष्मण है ये दोनों पहलवाँ।
यों कहा बाली ने प्यारी, राम है मुन्सफ़ मिजाज, और गर मारें भी मुझको तो मैं हूँगा कामराँ।
कहके यह आगे बढ़ा सुग्रीव से लड़ने लगा, मार कर घूंसा उसे एक, कर दिया बस नातवाँ
हो गया बेचैन और सुग्रीव मैदां से हटा, और बोला राम से, बाली बड़ा है पहलवाँ।
राम ने उससे कहा भाई हो तुम हम शक्ल दो, फ़क़ कुछ भी है नहीं उसके तुम्हारे दर्मियाँ।
इसलिए मारा न उसको अब तुम्हें हरगिज कभी, कुछ नहीं तकलीफ़ ही होगी नसीबे दुश्मनाँ।
हाथ फेरे जिस्म पर जब, हो गया वह ताजातर, एक गले में फूल की माला भी डाली बेगुमाँ।
उसकी हिम्मत को बढ़ा कर फिर उसे वापस किया, भाई दोनों भिड़ गये फिर जैसे दो शेरेजियाँ।
झाड़ की एक आड़ से सब देखते थे रामचन्द्र, जब यह देखा हो गया सुग्रीव है कुछ नातवाँ।
राम ने एक बाण मारा जो कि बाली को लगा, वह जमीं पर गिर पड़ा बेताब हो कर नागहाँ।
देख कर वह राम को फिर ध्यान करने लग गया, दिल में उल्फ़त थी, मगर शिकवा शिकायत बरजबाँ।
आप तो परमात्मा हो और मर्यादा पुरुष, इस तरह छुप कर मेरी क्यों जान ले ली नागहाँ।
किसलिए सुग्रीव प्यारा और मैं बैरी बना, क्या सबब इसका हुआ कुछ बात तो कीजे बयाँ।
राम ने उससे कहा असबाब सुन ऐ नासमझ, जो नजरबद रख के होना चार से है बदगुमाँ।
छोटे भाई की हो बीवी या बहू, बेटी, बहन, मारना उसको है वाजिब कुछ नहीं इसमें जियाँ।
तू बड़ा मगरूर है सुग्रीव को समझा नहीं, तेरी औरत ने भी समझाया, मगर समझा कहाँ।
यों कहा बाली ने कह सकता हूँ मैं क्या आप से, आपके हाथों से मैं मर कर रहा पापी कहाँ।
फेर कर तब हाथ सर पर उसके बोले रामचन्द्र, तुम अगर चाहो तो मैं देदूँ हयाते जावेदाँ।
जो मुनि जप तप है करते और भजन करते मुदाम, वक़्ते आखिर राम आता ही नहीं है बरजबाँ।
आज वह खुद सामने मेरे यहाँ मौजूद है, फिर कभी वक्त इससे बेहतर मुझको मिलना ही कहाँ।
आपने शायद यह समझा जिन्दगी चाहूँगा मैं आपके दर्शन से मैं अब हो गया हूँ कामराँ।
कीजिए मुझ पर इनायत और यह वर दीजिए, हर जनम में राम मेरे दिल में हों जलवाकुनाँ।
मेरा लड़का है यह अगद इस पे हो चश्मे करम, हाथ में ले लीजे इसको, इसके रहिए पासबाँ।
हाथ जोड़े, यह कहा बाली ने और आराम से, हो गयी परवाज रूह और उड़ गया बस मुर्गेजाँ।
लोग सब रोने लगे बाली का मरना देख कर, और तारा उसकी बीवी हो गयी मातमकुनाँ।
रामने उससे कहा यह पाँच तत्वों का है जिस्म, पृथ्वी, जल, अग्नि, और आकाश, वायु बेगुमाँ।
जिसके बायस रो रहे हो सामने मौजूद है, जीव तो है नित्य फिर क्यों रो रहे हो तुम यहाँ।
इस तरह कहने से उसको ज्ञान पैदा हो गया, गिर गयी चरणों में, उसके मिट गये वहमोगुमाँ।
राम से ले कर इजाजत बाली के मृत्यु करम, सब किये सुग्रीव ने हस्बे रिवाजे खानदाँ।

जब हुई उससे फ़रागत यों कहा लक्ष्मण से राम, जाके तुम सुग्रीव को कर दो यहाँ का हुक्मराँ।
जाके लक्ष्मण शहर में लोगों को सब बुलवा लिए, ताजपोशी हो गयी सुग्रीव की बाइज़्ज़ोशाँ।
और वली अहदी में अंगद का तकर्रुर हो गया, इस तरह सब हो गये मसरूर ख़ुर्रम शादमाँ।
राम ने सुग्रीव को बुलवा के अपने पास फिर, सब फ़रायज़ हुक्मरानी के किये उनसे बयाँ।
और कहा चौदह बरस तक शहर मे जाना नही, अब है बरखा ऋतु इसी टीले पे रहता हूँ यहाँ।
ले के अंगद को करो तुम हुक्मरानी मुल्क की, काम का मेरे नही तुम भूल जाना बेगुमाँ।
आ गये सुग्रीव वापस राम पर्वत पर रहे, एक गुफा अच्छी थी पहले ही से उसके दर्मियाँ।
राम जबस उस जगह रहने लगे जंगल तमाम, हो गया सरसब्ज और छायी बहारे जावेदाँ।
मोर भौंरे और पपीहे और दीगर जानवर, बोलते फिरते थे हरसू अपनी-अपनी बोलियाँ।
एक पत्थर था सुफ़ेद उस पर किसी दिन बैठ कर, राम लक्ष्मण से कथाएँ कर रहे थे कुछ बयाँ।
और कहा बादल से कैसे नाचते है मोर यह, भगत से जिस तरह वैरागी है होता शादमाँ।
यह जो बिजली है चमकती—है नही इस मे क़याम, जैसे बद के दिल मे रह सकती नही है नेकियाँ।
बादल आ जाते है जब नीचे बरसते है ज़रूर, जैसे विद्या पा के हो जाते निमर हैं इल्मदाँ।
चोट बूँदों की है सहते इस तरह यह कोह सब, जिस तरह है सन्त भी सहते बुरों की गालियाँ।
जिस तरह छोटी नदी जाता किनारे तोड़ कर, करते है कमज़र्फ़ भी ज़र पाके यों गुस्ताखियाँ।
गिर के जो पानी ज़मी पर हो गया है गदला, जैसे माया मे लिपट जाते कभी है साधुवाँ।
क़तरा-कतरा हो रहा है जमा यह तालाब मे, जैसे अच्छे गुण चले आते है सज्जन के यहाँ।
नदियाँ बह कर जो जमा होती है अन्दर बहर के, ईश्वर मिलन मे होती है मुनव्वर अपनी जाँ।
सब्ज़ घास ऊपर है, नीचे की ज़मी दिखती नहीं, जिस तरह साधू पै ग़ालिब आ गये पाखंडियाँ।
चौतरफ मेढक है टर-टर कर रहे इस तरह अब, जैसे मकतब मे है बच्चे वेद पढते वेदख्वाँ।
और झाड़ो पर नये पत्ते हैं कैसे खुशनुमाँ, ज्ञान पा कर जिस तरह साधू है होता शादमाँ।
हो गये बे बर्ग है देखो जवासा और मदार, जैसे अच्छे राज मे चलती बुरों की है कहाँ।
ढूंढने पर भी नही मिलता पता है ख़ाक का, जैसे ग़ुस्से से रखा करती है दूरी नेकियाँ।
सब्ज़ धानों में है खेती लहलहाती जिस तरह, जैसे उपकारी पुरुष का सम्पत्ति हो बेगुमाँ।
ज़ोर की बारिश से क्यारी खेत की टूटी हुई, जैसे आज़ादी मे बढ़ जाती है जन की शोख़ियाँ।
घास कूड़ा फेकते बाहर किसान है खेत के, फिर लालच और घमंड जैसे निकाले इल्मदाँ।
है नज़र आता नही देखो कही भी चकवाक, जैसे कलजुग मे निकल जाती है सारी खूबियाँ।
जो ज़मी बंजर है बरखा उस में होती है ज़रूर, घास तक का भी नहीं होता वहाँ नामोनिशाँ।
जैसे भक्तों के दिलो मे हो-नहीं सहवत का ज़ोर, इसको भी ऐसा ही समझो तुम मेरे ऐ भाई जाँ।
फिर रहे धरती पर है ख़ुश मोर और सारे परिन्द, जिस तरह स्वराज्य मिलने पर रिआया शादमाँ।
ज़ोर मे चलती हवा हो और बादल हो नहीं, नेकियाँ गायब हो पैदा जब हो नंगे खानदाँ।
बादलो मे ही कभी परदे मे आती रोशनी, 'और कभी बादल है छुपते और सूरज हो अयाँ।
इस तरह साहबत से बद की ज्ञान भी बरबाद हो, जब मिले अच्छे तो होता ज्ञान दिल के दर्मियाँ।
आ गयी सर्दी की ऋतु बरसात अब जाने को है, घास छायी है ज़मी पर और बारिश है रवाँ।
राह का जल सूख जाता है उदय हो अब अगस्त, सब्र मे लालच की जैसे सूख जाती डालियाँ।
सन्त का दिल जिस तरह हो साफ़ हिर्सो आस से, साफ़ और शफ्फाफ नदियों मे भी पानी है रवाँ।

सूखता जाता है पानी इस तरह तालाब में, जैसे ज्ञानी से छूटी जाती हो दुनियाँ बेगुमाँ।
जब ऋतु आयी शरद की आ गये खंजन मयूर, वक़्त पर जैसे फ़राहम हों चली हों नेकियाँ।
है न मिट्टी और कीचड़ और जमीं है पाक साफ़, क्यों न हों सब काम अच्छे नेक हों जब हुक्मराँ।
जैसे दौलत की कमी से लालची हो मुज़तरिब, आब कम होने मे बेकल हो रही हैं मछलियाँ।
आसमाँ है साफ़ बेबादल के ऐसा खुशनुमाँ, छोड कर दुनिया को जैसे भक्त रहता शादमाँ।
थोड़ी-थोड़ी हो रही बरखा कहीं है गाह-गाह, बाज ही जैसे कि होते हैं जहाँ में रम्ज़दाँ।
गहरे पानी में जा रहती मछलियाँ है ऐसी शाद, याद मे भगवान की जैसे हो जोगी शादमाँ।
खिल गये तालाब में कैसे कमल है खुशनुमाँ, जैसे निर्गुण जाति ब्रह्मा है सगुण हो कर अयाँ।
गूंजते ऐसे हैं भँवरे और करते हैं गुंजार, और परिन्दे मुखतलिफ़ कहते हैं अपनी बोलियाँ।
नीमजाँ होता है चकवा रात की जुल्मत मे यों, गैर को दौलत पे जैसे लालची हो खस्ताजाँ।
है पपीहा प्यास मे इस तरह बेकल हो रहा, जैसे बदगो शिव का कोई चैन पाता है कहाँ।
शरद ऋतु की हो जो गर्मी सूख लेता चाँद है, जब हो दर्शन संत का फिर पाप रहता है कहाँ।
किस तरह हैं घूरते वह चाँद को देखो चकोर, भक्त जैसे देख कर भगवान को हो शादमाँ।
मच्छर और कीडे हुए जाडे मे ऐसे बेपता, दुश्मनी मे ब्राह्मण के होवे ग़ारत खानदाँ।
कीड़े जो बरसात मे निकले ज़मी पर थे कहीं, हो गये सरदी के बायस वह भी गायब नागहाँ।
जैसे मिल जाये कोई मत गुरु किसी जाहिल को भी, हिर्स गुस्सा और घमंड उसके न क्यों हो रायगाँ।
मौसमे बारिश गया सरदी का मौसम आ गया, यह नहीं मालूम मेरी प्यारी सीता है कहाँ।
इस क़दर मालूम हो ले है कहाँ वह आज कल, एक पल भर में उसे मैं ले के आऊँगा यहाँ।
हो अगर ज़िन्दा कहीं भी ले के आऊँगा उसे, कुछ नही इसमें तआम्मुल कुछ नहीं इसमें गुमाँ।
हो गया सुग्रीव भी बेफिक्र अब इस काम से, मिल गयी दौलत भी ज़न भी बन गया है हुक्मराँ।
मैंने मारा जिस तरह बाली को था इस बाण से कल उसे मारूँगा इसमें कुछ नहीं शक्कोगुमाँ।
देखा जब लक्ष्मण ने अपने भाई का गुस्सा जो यह, हो गये तैयार ले कर हाथ में तीरोकमाँ।
राम ने देखा कि लक्ष्मण हो गये है मुस्तइद, इस तरह समझाया उनको और कहा ऐ भाईजाँ।
मारना हरगिज़ न तुम सुग्रीव को ऐ लक्ष्मण, खौफ़ दिखला कर उसे बस जल्द ले आओ यहाँ।
इस तरफ़, हनुमान ने सोचा कि अर्जा हो गया, जाके यों सुग्रीव से की अर्ज ऐ शाहेशहाँ।
आप जो गाफिल हैं बैठे यह मुनासिब है नही, यह न हो जाए कि बदले रंग कोई आसमाँ।
होके खायफ़ यों कहा सुग्रीव बेशक भूल है, जितने भी वानर हैं उन सबको तलब कर लो यहाँ।
और मुनादी यह करो पन्द्रह दिनों में जो न आये, क़त्ल कर दूँगा उसे मैं अपने हाथों बेगुमाँ।
जमा सब वानर हुए हनुमान ने सबसे कहा, उनको समझा कर बुझा कर कर दिया सबको रवाँ।
शहर में जिस वक़्त यह सब हो रहा था इन्तेज़ाम, लाल-पीले हो के लक्ष्मण आ गये फ़ौरन वहाँ।
और कहा मैं खाक कर दूंगा तुम्हारे शहर को, सुनके यह खायफ़ हुए सब खो गये ताबोतवाँ।
देख कर यह हाल अंगद उनके पैरों पर गिरे, और अब तक जो हुआ था सब किया उनसे बयाँ।
डर गये सुग्रीव बेहद उनका गुस्सा देख कर, और कहा हनुमान से तारा व तुम जाओ वहाँ।
जाके तारा और हनुमान इल्तेजा करने लगे, कर दिया सब हाल ज़ाहिर कुछ नहीं रक्खा निहाँ।
उनको समझा कर मना कर महल में ले आये साथ, और की खातिर भी जैसी चाहिए शायानेशाँ।
आके फिर सुग्रीव भी पैरों पर सर को रख दिये, और लक्ष्मण भी मिले हो कर निहायत शादमाँ।

अर्ज की सुग्रीव ने यों ऐ मेरे मालिक सुनो, भूलते हैं चैन में सारे गनी भी बेगुमाँ।
मैं तो हूँ नाचीज इन्साँ फँस गया इस जाल में, इससे मैं बच कर रहूँ मुमकिन यह मुझ से है कहाँ।
लोग जो भेजे गये थे चौतरफ़ दरियाफ़्त को, तब किया हनुमान ने वह हाल सब उनसे बयाँ।
लक्ष्मणो सुग्रीव और अंगद चले सब मिल के तब, उस जगह पर रामचन्द्र की सुकूनत थी जहाँ।
हाथ जोड़ अर्ज की सुग्रीव ने फिर राम से, कुछ नहीं तकसीर मेरी बात है बिलकुल अयाँ।
इश्क़ वह मूँजी बला है लोग फंस जाते हैं जब, उससे छुटकारा मिले जल्दी यह मुमकिन है कहाँ।
हिरस और लालच भी होती है बलाये बद ज़रूर, इनसे जो बच जाए वह होता है बेशक शादमाँ।
मैं तो एक बन्दर हूँ अदना फंस गया इस जाल में, आपकी चश्मेकरम से यह मिटेंगे बेगुमाँ।
राम ने सुग्रीव को आगे बिठा के यों कहा, भरत से बढ़ कर तुम्हें मैं चाहता हूँ भाईजाँ।
अब वही तदबीर कीजे जिससे सीता मिल सके, इस तरह दोनों मे बातें हो रही थी कुछ बयाँ।
मुख़तलिफ़ अस्मात से वानर जमा होने लगे, इस तरह आने लगे जैसे कोई मौजे रवाँ।
रामचन्दर की क़दमबोसी बजा लाते थे वह, राम भी मिलते थे सबसे होके बेहद शादमाँ।
जब खड़े सब हो गये तब यों कहा सुग्रीव ने, बात मेरी अब सुनें मेरे बहादुर पहलवाँ।
करम है यह राम का चारों तरफ़ तुम जाओ अब, और पता लाओ कि रहती जानकी जो है कहाँ।
एक महीना बाद जो आये बिला कोई खबर, क़त्ल कर दूँगा उसे मैं खुद बिला शक्कोगुमाँ।
जब किया सुग्रीव ने ऐलान सबके सामने, सुनके यह अहकाम वानर हो गये हरसू रवाँ।
हुक्म पर सुग्रीव के हमराह अंगद आ गये, जामवन्तो नीलो नल हनुमानो दीगर पहलवाँ।
और कहा जा कर दक्खन मे तुम करो सब जुस्तजू, और पता सीता का लाओ पूछ कर सबसे वहाँ।
जी लगा कर काम करना राम का यह काम है, जोकि लाज़िम हर तरह है फर्जे ऐसे ख़ादिमाँ।
सब के पीछे जबकि हनुमान आ के आगे थे खड़े, राम ने सोचा कि इनसे काम होगा बेगुमाँ।
हाथ से अपने अँगूठी एक निकाली इनको दी, और कहा, हर तरह तुम सीता को समझाना वहाँ।
उनको इत्मीनान हो जाए कि मैं आता हूँ जल्द, मेरी ताक़त और मरव्वत उनसे तुम करना बयाँ।
राम ने जब खास कर उनसे कहा अपना पयाम, खुद को खुश क़िस्मत समझ कर हो गये जल्दी रवाँ।
ढूंढते जाते थे वह मिलते थे जो कुछ राह में, नदी और तालाब, जगल दर्रे ओ कोहेगिराँ।
राह में मिलता कोई गर राक्षस देते चपत, और मुनी मिलता तो उससे हाल करते सब बयाँ।
प्यास होने लग गयी और हो गये सब बेक़रार, और पानी का कहीं मिलना न था नामोनिशाँ।
एक टील पर चढ़े हनुमान, देखा चौतरफ़, एक विवर उनको नजर आयी जमी के दर्मियाँ।
नीचे टीले से उतर कर ले के सब को अपने साथ, हो गये हनुमान दाखिल इस गुफा के दर्मियाँ।
देखते क्या है कि अन्दर एक है बाग़ीचा खूब, और एक तालाब है सहने चमन के दर्मियाँ।
और उस तालाब के नज़दीक एक मंदिर भी था, बैठ कर करती थी पूजा-पाठ एक औरत वहाँ।
दण्डवत सबने किया और उसने पूछा इनसे हाल, जो सबब आने का था वह कर दिया उससे बयाँ।
उसने इनको दी इजाजत फल भी खाने को कहा, पेट भर पानी पिया थे जितने यह तिसना वहाँ।
उसने इन सबसे कहा तुम आँख बन्द अपनी करो, और बाहर इस गुफा से जल्द हो जाओ रवाँ।
आँख जब खोली सबों ने हो गये हैरान सब, देखते क्या है, लबे दरिया है उनका कारवाँ।
और वह औरत गई खुद रामचन्दर जी के पास, उनकी सेवा और पूजा से हुई वह शादमाँ।
वानरों को फ़िक्र थी वह, हो गयी मुद्दत तमाम, और पता सीता का मिलने का नहीं नामोंनिशाँ।

आबदीदा होके अंगद ने कहा अफ़सोस है, लौट कर जाए जो यों ही मौत है अपनी वहाँ।
बाप के मरते ही मुझको मारने थे वह ज़रूर, राम ने मुझको बचाया कुछ नहीं शक्कोगुमाँ।
सुनके यह अल्फाज अंगद के हुए वानर उदास, और आँखों से भी आँसू हो गये रवाँ।
वानरों ने यों कहा हिम्मत न हारें आप कुछ, हम पता ले कर ही वापस होंगे इस जा से रवाँ।
जामवंत ने होके अंगद से मुखातिब यों कहा, राम को इन्सान मामूली न समझो बेगुमाँ।
है बड़ी किस्मत हमारी उनकी सेवा मिल गयी, ऐसे अच्छे भाग्य के दुनिया में होते हैं कहाँ।
कुछ तो क़िस्से और कथाएँ कहके समझाया उन्हें, सुनता था संपाती यह सब, था जो दर्रे में निहाँ।
बोला वह घर बैठे ही अच्छी मिली मुझको गिज़ा, आके बाहर जब यह देखा सैकड़ों ही वानराँ।
एक अरसे से मैं भूखा था, न खाने को मिला, एक दिन भी पेट भर के खाना मैं खाया कहाँ।
आज खा जाऊँगा इनको पेट भर कर खूब मैं, खूबिये किस्मत से मेरा रिज़्क आया है यहाँ।
सबके सब वानर ये बातें गीध की सुन डर गये, और समझे मौत का हम बन गये है अब निशाँ।
फ़िक्र में डूबे थे वानर सब, खमूसन जामवन्त, ममलिहत से यों कहा अंगद ने, वह किस्मत कहाँ।
ऐसा खुशकिस्मत जटायु था उसे हम क्या कहें, राम ही के काम में उसने गवाँ दी अपनी जाँ।
गिद्ध ने जब यह सुना वह हो गया रंजीदा दिल, और आहिस्ता चला आया वह वानर थे जहाँ।
गिद्ध आता देख कर डरने लगे वानर तमाम, उसने इनको दी तसल्ली ता मिटे वहमोगुमाँ।
पूछा संपाती ने अपने भाई के मरने का हाल, जिस क़दर थी कैफ़ियत कर दी गयी उससे बयाँ।
बोला वह मुझको किनारे ले चलो दरिया के तुम, ताकि अपने भाई को पानी में दे दूँ बेगुमाँ।
इसके बदले में मैं कर दूँगा तुम्हारा एक काम, मैं बता दूँगा कि अब सीता जी रहती हैं कहाँ।
जाके उसने दरिया पर भाई को दी तिलांजली, और फिर उसने किया अहवाल सब अपना बयाँ।
एक दिन हम दोनों भाई उड़ गये सूये फ़लक, सूर्य के नजदीक पहुँचे जबकि दोनों थे जवाँ।
शम्स की तेजी न सह कर हो गया वापस जटायु, और मैं मगरूर हो कर हो गया आगे रवाँ।
मेहर की तेज़ी से मेरे जल गये सब बालोपर, गिर गया आखिर जमी पर चीख कर मैं नागहाँ।
मुझको समझाया बहुत और दस्तगीरी मेरी की, चन्द्रमा नामी मुनी ने, जो कि रहते थे वहाँ।
राम के भेजे हुए दूत आएँगे त्रेता में जब, उनसे मिलने पर तेरी दूर होगी सब दुश्वाइयाँ।
आएँगे वह देखने सीता को, तू देगा पता, तेरे पर आएँगे तब तू उड़ सकेगा बेगुमाँ।
बात वह पूरी हुई है आज ही कहता हूँ अब, दिल लगा कर तुम सुनो सब मैं जो करता हूँ बयाँ।
एक है त्रिकूट पर्वत उस पे है लंका बसी, बेशतर बेखौफ़ रावण है वहाँ का हुक्मराँ।
एक बाग़ीचा है जिसका नाम रक्खा है अशोक, सोचने कुछ जानकी बैठी हुई है अब वहाँ।
जो नज़र आता है मुझको देख सकते तुम नहीं, हर तरफ़ हो सकती है मेरी निगाहें जूफ़शाँ।
अब ज़ईफी के सबब मैं हो गया माजूर हूँ, वर्ना करता मैं भी खिदमत आपकी बाकल्बोजाँ।
जोकि कर सकता हो सौ योजन की दरिया का उबूल, राम का यह काम कर सकता है ऐसा पहलवाँ।
राम के तुम दूत हो हिम्मत न तुम हारो कभी, दिल लगा कर काम करना होगे बेशक कामराँ।
इस क़दर कह कर वहाँ से गिद्ध वापस हो गया, वानरों ने अपनी कूवत और ताक़त की बयाँ।
पार दरिया कर सकेगा यह कोई कहता न था, जामवन्त कहने लगे, मैं हो गया अब नातवाँ।
पार दरिया को तो कर दूँगा कहा अंगद ने यों, वापसी मुमकिन नहीं, इस में है कुछ शक्कोगुमाँ।
कहा जामवन्त ने तुम पार कर सकते हो, पर, किस तरह हम तुमको भेजें तुम हो सबके क़ल्बोजाँ।

फिर मुख़ातिब होके यों हनुमान से कहने लगे, किसलिए ख़ामोश तुम बैठे हुए हो मेहरबाँ।
तुम हो दानिशमन्द यकता और उड़ सकते हो ख़ूब, ज़ोरो ताक़त में नहीं है कोई तुमसा पहलवाँ।
कौन-सा वह काम है जिसको न कर सकते हो तुम, राम ही के काम को पैदा हुए हो बेगुमाँ।
सुनते ही हनुमान उट्ठे लाल चेहरा हो गया, और गरजे इस तरह जैसे कोई बर्क़ेतयाँ।
और कहा मैं खेल ही में पार कर लूंगा समुद्र, मार कर रावण को मैं अफ़वाज ला लूंगा यहाँ।
सिर्फ़ यह बतलाइएगा क्या मुझे करना है अब, जामवन्त ने तब मुख़ातिब हो के यों खोली ज़बाँ।
सिर्फ़ इतना तुम करो सीता कहाँ है देख लो, और उनकी जो ख़बर हो लाके पहुँचा दो यहाँ।
राम ही के हाथ से सब क़त्ल होंगे राक्षस, और सीता को वह वापस लाएँगे बाइज़्ज़ोशाँ।
उनकी सब रूदाद दुनिया में जो लिक्खी जाएगी, लोग उसको पढ़ के होंगे शादमानो कामराँ।
यों कहा हनुमान ने तुम मुन्तज़िर मेरे रहो, मैं ख़बर लाता हूँ इसकी और हुआ फ़ौरन रवाँ।
एक टीले पर वह दरिया के उछल कर चढ़ गया, और फिर उस पर से कूदा जिस तरह बर्क़ेतयाँ।
राह में मैनाक पर्वत पर ज़रा कुछ ठहर कर, राम का वह काम करने को हुआ फ़ौरन रवाँ।
देवताओं ने यह सोचा इनकी क़ूवत देखना, किस क़दर तावो तवाँ है लेंगे इनका इम्तेहाँ।
देख कर इनको कहा जिसने कि मैं खालूं तुझे, इसलिए भेजे वह सुरसा को जो थी साँपों की माँ।
यह कहा—मैं राम का जब काम करके आऊँगा, शौक से खाना मुझे तू सच मैं करता हूँ बयाँ।
वह न सुन कर इनका कहना और बहुत इसरार की, जब हुए मजबूर बोले, अभी खाले बेगुमाँ।
जितना मुँह सुरसा ने खोला उससे यह दुगने हुए, आख़िरश उसने किया मुँह अपना सौ योजन अयाँ।
जब बढ़ा मुँह उसका इतना जल्द अन्दर वह गये, और फिर मुँह से निकल आये वह बाहर नागहाँ।
होके खुश उसने कहा, अब आजमायश हो चुकी, जिसके बाअस देवताओं ने मुझे भेजा यहाँ।
अक्ल और ताक़त का तुम में है ख़ज़ाना बिलयकी, इस तरह कह कर दुआ दी हो गयी वापस रवाँ।
एक औरत राक्षस दरिया के अन्दर थी मुक़ीम, जो परिन्दों को हवा में रोकती थी बेगुमाँ।
रोक कर यों राह उनकी उनको खा लेती थी वह, रोक दी हनुमान को भी जब यह पहुँचा पहलवाँ।
उसकी चालाकी यह जब हनुमान पर ज़ाहिर हुई, मार डाला उसको फ़ौरन हो गये आगे रवाँ।
पार दरिया करके, की तफ़रीह बन की जिस जगह, मुख़तलिफ़ अश्जार थे फल-फूल थे जिन पर अयाँ।
एक छोटा-सा था टीला चढ़ गये उस पर ये जल्द, जिस जगह से कुछ नजर आते थे लंका के निशाँ।
क़िला था मज़बूत उसमे इक था सोने का महल, और गली कूँचे बहुत ही खूबसूरत थे वहाँ।
शहर बेहद खुशनुमा और लोग सब मशगूलेकार, फौज के थे दल के दल और थे बहादुर पहलवाँ।
बाग़ था और थे कुएँ, तालाब, नहरे बेशुमार, औरते नाज़ुकअदा जिन पर फ़िदा हो मर्दुमाँ।
लोह पैकर पहलवाँ सब थे गरजते मिसलेराद, और अखाड़ों में वह मिल कर लड़ रहे थे कुश्तियाँ।
खाते थे बकरों को भैंसो को गधों को राक्षस, और बहादुर से बहादुर शहर के थे पासबाँ।
खुद को छोटा-सा बना कर तब चले हनुमान जी, शंखनी एक नाम की दरबान रहती थी वहाँ।
वह बोली बिन मुझसे पूछे तू कहाँ जाता है चोर, मैं तुझे खा कर मिटा दूंगी तेरा नामोनिशाँ।
एक घूंसा उसको मारा वह ज़मी पर गिर गयी, कुछ सँभल कर जब उठी करने लगी वह यों बयाँ।
ब्रह्मा जी ने पहले ही पेशीनगोई की थी यह, मार से बन्दर की जब तू होगी बेताबोतवाँ।
मुबतिला हो जाएगी आफ़त में कौमे राक्षस, खात्मा हो जाएगा मिट जाएगा उनका निशाँ।
शौक से अब जाओ अन्दर और करो सब काम खूब, देख कर तुमको हुई हूँ मैं निहायत शादमाँ।

शहर के अन्दर हुए हनुमान दाखिल इस तरह, देखने जाते थे वह बाजार में सारे मकाँ।
महल में रावण के जब दाखिल हुए हनुमान जी, महवे हैरत हो गये देखी जां उसकी इज्जोशाँ।
और रावण भी नजर आया उन्हें सोता हुआ, जानकी उनको नजर आयी नहीं लेकिन वहाँ।
दूसरा मंदिर उन्हें आया नजर एक खुशनुमा, हो नहीं सकती बयाँ है मुझसे उसकी खूबियाँ।
धर्म के आसार उस घर मे नजर आने लगे, जाबजा थे झाड़ तुलसी के मकाँ के दर्मियाँ।
सोचने वह लग गये रहते यहाँ है राक्षस, धर्म के आसार कैसे देखता हूँ मैं यहाँ।
जाग उठे फ़ौरन विभीषण सो रहे थे महल मे, राम का था नाम लब पर राम ही विरदे जबाँ।
उनके यह अल्फ़ाज सुन कर हो गये हनुमान खुश, और समझा एक साधू मिल गया मुझको यहाँ।
उनसे मै मालूम कर सकता हूँ अब अहवाल सब, क्योकि साधू से जरूर पहुँचे, यह मुमकिन है कहाँ।
ब्राह्मण का भेस बदला और दी आवाज़ उन्हें, सुन के यह आवाज अन्दर से वो आये नागहाँ।
और कहा फर्माइए, कौन आप है, क्यो आये है, आपको मैं देख कर बेहद हुआ हूँ शादमाँ।
तब कहा अहवाल सारा राम का हनुमान ने, नाम भी अपना बताया उनको बेशक्कोगुमाँ।
फिर विभीषण ने कहा मै क्या सुनाऊँ अपना हाल, किस मुसीबत मे गुजरती है मेरी हरदम यहाँ।
इस तरह दुश्मन धरम के है मुझे घेरे हुए, जिस तरह है दर्मियाँ बत्तीस दाँतो के जबाँ।
राक्षस कुल मे हुआ हूँ, मुझमे भक्ति है नही, राम पर रख कर भरोसा जी रहा हूँ बस यहाँ।
आप के आने से मुझको हो गया है अब यकीं, राम को मुझ पर इनायत की नजर है बेगुमाँ।
फिर कहा हनुमान ने सुनिए यह सच कहता हूँ मैं, राम अपने भक्त पर रहते है हरदम मेहरबाँ।
मै भी एक अदना हूँ बन्दर मुझ पे है चश्मे करम, यह कहा आँखो मे उनके हो गये आँसू रवाँ।
यह भी क़िस्मत है हमारी हम है ऐसे बदनसीब, सुबह को जो नाम ले रह जाए वह फाकाकुनाँ।
फिर विभीषण ने बयाँ सब जानकी का कर दिया, और कहा किस तरह होती है गुज़र उनकी यहाँ।
चाहता हूँ देखना उनको कहा हनुमान ने, तब विभीषण जी ने की तरकीब सब उनसे बयाँ।
पूछ कर सब तौर जाने को रवाना हो गये, आए पहुँचे उस जगह सीता जी रहती थीं जहाँ।
झाड़ के नीचे वो बैठी थीं अशोक वन मे उदास, हो गयी दुबली थी, हरदम राम था विरदे जबाँ।
देखती नीचे जमी को और उठा सिर पर थी, देख कर हनुमान के जाते रहे ताबोतवाँ।
सोचते थे किस तरह तकलीफ इनकी दूर हो, आ गया रावण भी उस जा—साथ ले कर रानियाँ।
रावणे बद ने बहुत मिन्नत समाजत पहले की, फिर किया कुछ अपनी सरवत का भी सीता से बयाँ।
और कहा तू मेरे जानिब देख ले गर एक बार, तेरी खिदमत सब बजा लाएंगी मेरी रानियाँ।
आह ले कर एक तिनके को कहा सीता ने यों, रोशनी जुगनू की करती है कमल को क्या अयाँ।
क्या खबर तुझको नहीं कमबख्त अपनी मौत की, राम जी के तीर से तेरी निकल जाएगी जाँ।
तू बड़ा पापी है तुझको कुछ दया आती नहीं, चोर के मानिन्द तू मुझको है ले आया यहाँ।
अपनी जिल्लत ऐसी सुन कर हो गया रावण खफा, खींच कर तलवार अपनी इस तरह खोली जबाँ।
मान ले कहना मेरा वर्ना तुझे मारूँगा मैं, मेरी इस तलवार ही से जाएगी अब तेरी जाँ।
बोली वह—गरदन मे या तो हाथ होगे राम के, या तेरी तलवार ही इस पर पड़ेगी बेगुमाँ।
मेरा सच्चा है अक़ीदा सुन ले तू ऐ बेवकूफ, राम की फ़ुरकत में जलती हूँ, मेरा दिल है तवाँ।
बस इसी तलवार से मिट जाएगी मेरी जलन, खून की धारो से ठंडी होगी ये चिनगारियाँ।
इस क़दर कहते ही रावण क़त्ल करने को उठा, रानी मन्दोदरी तब दोनों के आयीं दर्मियाँ।

शास्त्र उसको सब सुनाये और समझाया बहुत, तब कहा रावण ने उन सब से जो हाज़िर थे वहाँ।
एक महीने की है मुद्दत तुम इसे समझाओ सब, वर्ना इस तलवार ही से क़त्ल कर दूंगा यहाँ।
राक्षस हर तरह सीता को डराने लग गये, त्रिजटा नामी भी एक थी राक्षस उनमें वहाँ।
नेकख़ू थी नेक सीरत धर्म की पाबन्द थी, उसने जो कुछ ख़्वाब देखा था किया सबसे बयाँ।
एक बन्दर ने जला डाली है लंका आग से, राक्षस मारे गये सारे बहादुर पहलवाँ।
हाथ रावण के कटे है और गधे पर है सवार, और सिर उसका मुंड़ा है, सिम्ते दक्खन है रवाँ।
फतह करके राम ने लंका दुहाई फेर दी, अपने जानिब से विभीषण को किया है हुक्मराँ।
और सीता जी गयी वापस बसद जाहो जलाल, ख़्वाब यह सच्चा है, हो कर ही रहेगा बेगुमाँ।
सुनके यह सब डर गये सीता के पैरों पर गिरे, और वहाँ से हो गये सब अपने-अपने घर रवाँ।
दिल मे सीता ने यह सोचा मुझको इसका है यकीन, रावण कमबख्त ले कर ही रहेगा मेरी जाँ।
त्रिजटा से बाअदब हो कर यह सीता ने कहा, अब नही बाक़ी तअम्मुल अब नहीं मुझमें तवाँ।
मेहरबानी करके ऐसी कुछ करो तजवीज तुम, जिसके बाअस जल्द मैं मर जाऊं देदूं अपनी जाँ।
लकड़ियों को ला के उनकी एक चिता जल्दी बना, आग से रौशन उसे कर जल्द, तू ऐ मेहरबाँ।
इल्तेजा है तुझसे मेरी, तू मेरी इमदाद कर, रावण बद की यह बदमाँई सुनूँ कब तक यहाँ।
त्रिजटा ने उसको समझाया कहा माता मेरी, सब्र से लो काम, जल्दी राम आते है यहाँ।
सारी कुल्फ़त दूर होगी कुछ नही है खौफ डर, रात का है वक़्त मिलती आग भी है अब कहाँ।
हो गयी खामोश सीता सोच में वह लग गयी, त्रिजटा भी अपने घर को हो गयी उठ कर रवाँ।
आग के मानिन्द सैयारे चमकते है मगर, क्यों नही गिरते जमीं पर टूट कर ऐ आसमाँ।
आग के जो झाड़ है लेकिन नहीं देते है आग, वक़्ते मुशकिल कोई भी करता नहीं आसानियाँ।
इस तरह सीता की बेताबी न देखी जा सकी, झाड़ पर हनुमान के जाते रहे तावोतवाँ।
झाड पर से एक अंगूठी फेक दी सीता के पास, जिसको चिनगारी समझ कर वह उठा ली नागहाँ।
अपने शौहर की अँगूठी को वह जब पहचान ली, हो गयी हैरान और पैदा हुए दिल में गुमाँ।
फिर वह सोची किसकी कुदरत है जो इनसे छीन ले, और नकली भी अँगूठी उनकी बन सकती कहाँ।
सीता जी बैठी हुई थी नीचे अपनी फिक्र में, और किया हनुमान जी ने झाड़ पर से यों बयाँ।
इब्तेदा से इन्तेहा तक जो हुए थे वाकियात, शाद हो कर जिसको सीता ने सुना बाकल्बो जाँ।
तब तो सीता ने कहा, जो कर रहा है जिक्रे गैर, किसलिए आता नही वह सामने मेरे यहाँ।
जब यह सीता ने कहा हनुमान नीचे आ गये, देख कर उनको किया सीता ने अपना मुँह निहाँ।
तब कहा हनुमान ने पैगामबर हूँ राम का, मैं कसम खा कर हूँ कहता आप सुनिए मेरी माँ।
राम जी की है अँगूठी मैं ही लाया हूँ इसे, दी गयी है मुझको ता पहुँचाऊँ मैं तुमको निशाँ।
किस तरह मिलना हुआ था राम का हनुमान से, पूछने पर सब किया हनुमान ने उनसे बयाँ।
हो गया सीता को उनके कौल पर पूरा यकीं, वसवसा दिल का मिटा और मिट गया शक्कोगुमाँ।
ग़म के दरिया मे मैं डूबी जा रही थी हाय जो, तुमने ही आ कर बचाया है मुझे ऐ पहलवाँ।
ऐ मेरे हनुमान मैं तुम पर निछावर जाऊँगी, खैरियत तुम राम लक्ष्मण की करो मुझ से बयाँ।
यह कहो, क्या याद मेरी भी कभी करते है वो, क्या क़दमबोसी से उनकी मैं भी हूंगी शादमाँ।
हाय मालिक आपने दिल से भुलाया क्यों मुझे, इस क़दर कहते ही आँसू हो गये उनके रवाँ।
देख कर सीता को बेकल यों कहा हनुमान ने, राम-लक्ष्मण खैरियत से है सुनो तुम मेरी माँ।

हिज्रि में वह आपके बेशक बहुत हैं ग़मज़दा, आपकी फ़ुरकत में है बेचैनो बेकल हर जमाँ।
राम ने मुझसे कहा है मैं यह लाया हूँ पयाम, दूरी में सीता के, है दुनिया ये भाती है कहाँ।
जिक्र कर देने से दिल की कुछ जलन होती है कम, मैं कहूँ किससे जो है दिल में मेरे सोजे निहाँ।
तुझसे मुझको किस क़दर उलफ़त है प्यारी जानकी, जानता है दिल ही जो है वाक़िफ़े राजे निहाँ।
और वह दिल तो मेरा रखा हुआ है तेरे पास, और इसमे क्या ज्यादा मैं करूँ हालत बयाँ।
अपने शौहर का सुना पैग़ाम यह सीता ने जब, हो गयीं बेचैन वह और खो गये ताबोतवाँ।
तब कहा हनुमान ने माता करो कुछ सब्र तुम, राम की क़ूवत का अन्दाज़ा करो तुम बेगुमाँ।
राम के तीरों से मर जाएँगे यह सब राक्षस, काम धीरज से जो लोगी तो है फिर आसानियाँ।
आपकी उनको खबर मिलती तो होती कुछ न देर, राम के जब तीर चलते राक्षस रहते कहाँ।
आपको ले कर अभी जाता यहाँ से मैं, मगर, राम ने इसकी इजाज़त दी नहीं है मेरी माँ।
वानरों की फ़ौज ले कर चन्द ही ऐयाम में, रामचन्दर जी चले आएँगे खुद जल्दी यहाँ।
मार कर सब राक्षस को आपको ले जाएँगे, हर कसोनाक़स बयाँ उनकी करेगा खूबियाँ।
तब कहा सीता ने वानर होंगे तुम जैसे ज़ईफ, और यह सब राक्षस तो हैं निहायत पहलवाँ।
मुझको अन्देशा है वानर कैसे मारेंगे इन्हें, इस कदर सुनते ही वह वानर भी गर्जा नागहाँ।
अपनी ताक़त का किया इजहार जब हनुमान ने, देख कर सीता के दिल में मिट गये शक्को गुमाँ।
तब तो सीता ने दुआ दी—ऐ मेरे हनुमान तुम, अक़्ल और ताक़त में हो जाओगे एकनामे जहाँ।
तुम अजर होंगे अमर होंगे दुआ है मेरी यह, और श्री रघुनाथ भी तुम पर रहेंगे मेहरबाँ।
जब दुआ सीता के मुंह से यह सुनी हनुमान ने, हो गये मसरूर बेहद हो गये वह शादमाँ।
फिर कहा ऐ माँ मुझे अब भूख लगी है बहुत, सब फलों से लद गये हैं झाड़ जितने हैं यहाँ।
आपकी गर हो इजाज़त इनको मैं खाजाऊँगा, यों कहा सीता ने इनके राक्षम है निगहबाँ।
मैं नहीं उनसे हूँ डरता फिर कहा हनुमान ने, आपकी मुझको इजाजत चाहिए बस मेरी माँ।
ले के सीता से इजाज़त बाग़ में वह घुस गये, खूब फल खाये व तोड़े झाड़ भी अक्सर वहाँ।
जिसने रोका इनको, उसकी मौत गोया आ गयी, कुछ मरे कुछ भाग कर निकले वहाँ के बाग़बाँ।
जा के यों रावण से कहने लग गये, मालिक मेरे, एक बन्दर बाग़ में आया है अपने पहलवाँ।
बाग़ को बरबाद कर डाला और फल खाये तमाम, मर गये हैं उसकी मारों से कई एक पहलवाँ।
सुनके यह रावन ने भिजवाये सिपाही देखने, जिनके आते ही गरज कर उस पे दौड़ा पहलवाँ।
मार डाला चन्द को और भाग कर कुछ चल दिये, सामने रावण के जा कर सबने की आहोफ़ुगाँ।
एक बेटा उसका था अक्षयकुमार जिसका था नाम, उसको भिजवाया बहुत से साथ दे कर पहलवाँ।
ज्यों ही देखे राक्षस आते हुए हनुमान ने, वह गरज कर उनपे टूटे जिस तरह बर्क़ेतयाँ।
झाड़ को एक तोड़ कर उसको लगे यह मारने, मर गया अक्षयकुमार और उसके सब हमराहियाँ।
चन्द उनमें बच गये थे भाग कर वापस गये, और की फ़रियाद रावण से कि ऐ शाहेशहाँ।
वह तो बन्दर ही नहीं है, है बहादुर और वीर, हम मुक़ाबिल उसके हो जाएँ यह ताक़त है कहाँ।
मौत बेटे की सुनी रावण को गुस्सा आ गया, मेघनाथ उनका था लड़का, जोकि था सब में कलाँ।
यों कहा तुम जाओ बेटे और पकड़ लाओ उसे, मैं भी देखूँ कौन बन्दर है जो आया है यहाँ।
इन्द्रजीत उसका लक़ब था मेघनाथ उसका था नाम, भर के ग़ुस्से में उठा वह और चला शेरेजियाँ।
जैसे ही आते हुए देखा उसे हनुमान ने, दौड़ कर आगे बढ़ा रथ की उड़ा दी धज्जियाँ।

वह गिरा रथ पर से नीचे और ज़मीं पर आ गया, उनको भी मारा पटक कर साथ थे जो पहलवाँ।
भिड़ गये आपस में दोनों मेघनाथ हनुमान भी, यों नज़र आते थे दोनों जैसे हों दो हाथियाँ।
एक घूँसा जब पड़ा हनुमान का तब मेघनाद, खा गया चक्कर जमीं पर गिर गया वह नागहाँ।
यों गिरा कर उसको नीचे चढ़ गये एक झाड़ पर, मेघनाद उठ्ठा लिया फिर हाथ में तीरो कमाँ।
ब्रह्म अस्तर वह चलाया जो लगा हनुमान को जिसके लगते ही जमीं पर आ रहे वह नागहाँ।
उनपे बेहोशी थी तारी उसने बाँधा जाल में, ले चला उनको जकड़ कर खूब रावण के यहाँ।
जब हुआ मालूम सबको हो गया बन्दर अमीर, देखने को सब तमाशा दौड़ कर आये वहाँ।
जब यह पहुँचे उस जगह दरबारे रावण था भरा, हाथ जोड़े थे खड़े सब देवता और राजगाँ।
ऐसी परतापी के उस दरबार में हनुमान भी, जाके बेखौफ़ो खतर बैठे वह सब के दर्मियाँ।
पहले इनको देख कर हँसने लगा रावण, मगर, याद जब बेटे की आयी हो गया कुछ खस्ताजाँ।
और कहा बन्दर अरे तू कौन है, किस वास्ते, बाग को मेरे उजाड़ा और किया इतना ज़ियाँ।
कौन मैं हूँ क्या तुझे मेरा नहीं मालूम नाम, किसलिए तू कर रहा है इस क़दर गुस्ताखियाँ।
अपने मरने का नहीं है खौफ़ क्या दिल में तेरे, तूने क्यों कर बाग़ के सब काट डाले पासवाँ।
किस के बल पर इस क़दर मग़रूर है ऐ बेसमझ, क्या तुझे प्यारी नहीं मालूम होती अपनी जाँ।
तब कहा हनुमान ने रावण उसी का बल है यह, जिसके बलबूते पे जीता है हमेशा यह जहाँ।
देवताओं की हिफ़ाज़त जोकि करते हैं मुदाम, और तुम जैसों को देते हैं सज़ा जो बेगुमाँ।
हाथ से जिसके धनुष शिवजी का टूटा था कभी, खर व दूषन त्रिमरा जैसे मरे हैं पहलवाँ।
मुझको ताकत है उन्हीं की मैं उन्हीं का हूँ ग़ुलाम, जिसकी औरत को चुरा कर तू ले आया है यहाँ।
किस क़दर ताकत है तुझमें जानता हूँ खूब मैं, तू सहस्रबाहू वा बाली से लड़ा था बेगुमाँ।
भूख कुछ मुझको लगी थी मैंने कुछ फल खा लिये, मारने मुझको लगे जब बाग़ के सब निगहबाँ।
मैं भी फिर उनको जवाबन मारने जब लग गया, तो मुझे फ़रजन्द तेरा है पकड़ लाया यहाँ।
इस गिरफ़्तारी का अपनी रंज मुझको कुछ नही, अपने मालिक का मैं करने काम आया हूँ यहाँ।
इस्तेजा मेरी है रावण ध्यान दे कर यह सुनो, किस घराने के हो तुम और कौन-सा है खानदाँ।
जिनसे डरता है जमाना खौफ़ उनका तुम करो, जानकी जी को यहाँ से जल्द तुम कर दो रवाँ।
उनके चरणों में अगर जाओगे कर देवेगे माफ़, खर के दुशमन रामचन्दर है निहायत मेहरबाँ।
राम के पैरों पर अपना सर अगर रख दोगे तुम, उम्र भर लंका के यों ही तुम रहोगे हुक्मराँ।
तुम उन्हीं की नसल से हो जो रहे हैं नेकनाम, जिनको कहते हैं पुलस्त, और तुम हो नंगे खानदाँ।
बेजरिया जो नदी हो वह तो है बेकार ही, सिर्फ बारिश ही में पानी उसमें रहता है रवाँ।
दिल में गर भक्ति नहीं भगवान की बेसूद है, लाख सरवत उसमें हो वह लाख हो शाहेशहाँ।
छोड़ दो अपना घमंड और छोड़ दो अपना गरूर, राम के चरणों में जा कर खुद को कर लो शादमाँ।
हँसके रावण ने कहा बन्दर मिला उस्ताद है, फिर कहा,—खामोश रहता या नहीं ऐ बदज़बाँ।
जानता हूँ मैं कि तेरी मौत आयी है क़रीब, मेरे आगे तू जो यह है कर रहा गुस्ताखियाँ।
तब कहा हनुमान ने मौत आ गयी तेरी क़रीब, जो समझ उल्टी हुई है बात है बिलकुल अयाँ।
हो गया आपे से बाहर और रावण ने कहा, क्यों न इस कमबख्त की फ़ौरन ही ले ली जाय जाँ।
राक्षस दौड़े हजारों मारने के वास्ते, आ गये फ़ौरन उसी साअत विभीषण भी वहाँ।
नर्म लहजे में कहा रावण से ऐ भाई मेरे, मारना पैग़ामबर का कहिए है जायज़ कहाँ।

और कोई दूसरी इनको सज़ा तजवीज हो, अहले मजलिस भी यह सुन कर हो गये सब हमज़बाँ।
हँस के रावण ने कहा एक अज़ब इसका काट दो, और लंका से करो वापस इस बन्दर को रवाँ।
दुम हुआ करती है बन्दर की निहायत ही अज़ीज़, तेल में कपड़ा भिगो कर रख दो दुम के दर्मियाँ।
आग से रोशन करो, बेदुम के जब हो जाएगा, अपने मालिक को वह कैसे लाएगा देखूँ यहाँ।
हुक्म की तामील में दौड़े कई एक राक्षस, और फराहम करके कपड़ा लाये और रोगन वहाँ।
बाँध कर दुम मे लगा दी आग सबके सामने, देखने को यह तमाशा लोग सब आये वहाँ।
ढोल कोई है जमाता कोई ठोकर मारता, कोई तो हँसते हुए देता है इनको गालियाँ।
हर तरफ़ इनका तयस्वुर हो रहा है शहर में, शहले लंका शाद हो कर पीटते हैं तालियाँ।
तोड़ कर बन्धन को अपने चढ़ गये वह कूद कर, कसरे लंका पर चढ़े फ़ौरन बहादुर पहलवाँ।
इस तरफ से उस तरफ़ जब दौड़ने यह लग गये, आग फैली चौतरफ़ और महल था आतिशफ़शाँ।
इस तरह जब आग फैली मच गया कोहराम फिर, लोग चिल्लाने लगे, करने लगे आहोफ़ुगाँ।
चन्द ही लमहों में पूरा शहर जल कर रह गया, बच गया जलने से था बस इक विभीषण का मकाँ।
आग लंका को लगा कर कूद कर दरिया में खुद, की थकावट दूर अपनी मिसल एक शेरेजियाँ।
भेस अपना फिर बदल कर वह रवाना हो गये, और पहुँचे उस जगह थी जानकी रहती जहाँ।
और कहा माता मुझे अपनी निशानी दीजिए, ताकि ले जाऊँ इसे मैं रामचन्दर के यहाँ।
एक उनमें से निकाली और दी हनुमान को, अपने हाथों में वह जो पहने हुई थी चूड़ियाँ।
और कहा मेरा संदेसा इस तरह मालिक को दो, सह रही हूँ हर तरह की मैं यहाँ दुश्वारियाँ।
पूछने वाला यहाँ कोई नहीं मालिक मुझे, आपके लुत्फ़ो करम की राह तकती हूँ यहाँ।
जयन्त का क़िस्सा दिलाना याद तुम उनको ज़रूर, तीर जो उनका चला था वह भी कर देना बयाँ।
यह भी कहना मौत मेरी वह यकीनन जान लें, देर महीने भर से ज्यादा हो जो आने में यहाँ।
देख कर हनुमान तुम को कुछ तसल्ली पायी थी, फिर वही मुझको मुसीबत है वही दुश्वारियाँ।
देके सीता को तसल्ली और चरण छू कर मुदाम हो गये उस बाग से हनुमान जी वापस रवाँ।
जब चले वापस तो गर्जे जोर से और शोर से, खौफ़ से डरने लगी सब राक्षस की बीबियाँ।
ये उछल कर पार दरिया कर गये एक आन में, किलकिलाहट सुन के वानर हो गय सब शादमाँ।
इनका चेहरा देख कर सबको तसफ़्फी हो गयी, सब यह समझे काम करके आये है ये बेगुमाँ।
कैफ़ीयत सब पूछते जाते थे इनसे राह मे, सब वहाँ से हो गये रघुनाथ से मिलने रवाँ।
आखिरस पहुँचे वे मधुवन और खाये खूब फल, देख कर उनकी शरारत रोकते थे निगहबाँ।
मार जब दरबाँ ने खायी दौड़ कर साकी हुआ, और कहा सुग्रीव ने—काम अब हुआ है बेगुमाँ।
फिर कहा राजा ने सीता की खबर शायद मिली, वर्ना क्या मुमकिन था ये वापस पलट आते यहाँ।
सोचते थे ही यह सुग्रीव, आ गये वानर तमाम, और सबने बाअदब राजा का चूमा आस्ताँ।
खैरियत उनकी जो पूछी राजाए सुग्रीव ने, काम जो कुछ करके आये थे किया उनसे बयाँ।
और कहा हनुमान ही ने काम सब कुछ है किया, बच गयी जाने हमारी आज हम है शादमाँ।
राम से मिलने को ले कर वानरों को अपने साथ, तब हुए हनुमान और सुग्रीव राजा भी रवाँ।
राम ने देखा कि वानर आ रहे है अपने पास, दोनों भाई एक शिल पर हो गये जलवा कुनाँ।
राम ने हर एक से मिल कर किया उनको निहाल, और कदमबोसी से वे भी हो गये सब शादमाँ।
जामवन्त ने कहा जिस पर करम होवे आपका, है वही शाद और खुर्रम है वही इज्जत रसाँ।

है बड़ी क़िस्मत कि करके काम हम आये हैं आज, जो किया हनुमान ने है, किस तरह हो वह बयाँ।
जामवन्त ने कही हनुमान की सब कैफ़ियत, राम ने दिल से सुनी उनके हुए वे मदहस्वाँ।
और कहा मुझसे कहो जीती है सीता किस तरह, और बचा रखी उन्होंने किस तरह से अपनी जाँ।
आपका हरदम ख़याल उनके लिए है बावे फ़ैज, आप ही का नाम उनका रातदिन है निगहबाँ।
अपनी आँखों को लगायी आपके चरणों में है, कुफल है गोया वह, फिर किस तरह जाए उनकी जाँ।
अपनी चूड़ी मुझको दे दी है निशानी के लिए, इस क़दर कहते हुए आँखों से आँसू थे रवाँ।
राम ने सीने लगाया ले के चूड़ी हाथ में, फिर किया हनुमान ने सीता का यह अर्ज बयाँ।
राम को मेरी तरफ़ से तुम क़दमबोसी कहो, ख़ैरियत लक्ष्मण से भी पूछो ज़रूर, ऐ मेहरबाँ।
अर्ज करना क्यों नहीं दासी पे है लुतफ़ोकरम, मेरे मालिक मुझको क्यां भूले हुए है बेगुमाँ।
मेरी ही ग़लती है बेशक हो गया मुझ से क़सूर, आपकी फ़ुरकत में क्यों मेरी निकल जाए न जाँ।
है जुदाई आग, रुई तन, हवा है मेरी साँस, जिस्म मेरा खाक़ हो जाएगा जल कर नागहाँ।
आपके दर्शन की प्यासी आँख बरसाती है अश्क, जिसके बाअस आग ठण्डी हो के जलनी है कहाँ।
ज़िन्दगी मुशकिल में है उनकी, कहा हनुमान ने, जल्द चलिए और छुड़ा कर लाइए उनको यहाँ।
सुन के यह अहवाल उनका, राम रंजीदा हुए, और हुए हनुमान के मशकूर भी और मदहस्वाँ।
सुनके यह हनुमान बेहद खुश हुए शादां हुए, राम के चरणों में गिर कर हो गये वो शादमाँ।
राम जी ने अपने चरणों से उठा कर यों कहा, किस तरह लंका जला डाली करो मुझसे बयाँ।
यह जवाब उनको मिला बन्दर की है यह खासियत, शाख पर से शाख पर वह कूदता है हर जमाँ।
यह जो दरिया पार कर ली और मारे राक्षस, कमर को और शहर को उनके किया आतिश फ़शाँ।
आप के परताप के कारण हुआ है यह तमाम, वर्ना मेरी मकदरत क्या मुझमें हिम्मत ही कहाँ।
आपकी सेवा का मुझको हो सरफ़ हासिल मुदाम, है यही एक आरजू बस मेरे दिल के दर्मियाँ।
"यों ही होगा" अब कहा श्री राम ने, वो खुश हुए, वानरों ने जै का नारा तब लगाया बेगुमाँ।
राम ने फ़र्माया सुग्रीव से मुख़ातिब हो के यों, जंग को चलने की अब जल्दी करो तैयारियाँ।
देर करने की ज़रूरत अब कोई बाकी नहीं, वानरों को हुक्म दे दो ताकि आ जाये यहाँ।
सुनके यह सुग्रीव ने अहकाम नाफ़िज कर दिये, हो गये हाज़िर हज़ारों अफसराने पहलवाँ।
बन्दरों राक्षसों की फ़ौजें सब इकट्ठा हो गयीं, जिनका हर एक फ़र्द आता था नज़र शेरे जियाँ।
राम के आगे अदब से सर झुकाये आके सब, राम ने उन पर दया की, दृष्टि फेरी बेगुमाँ।
कूच का डंका बजा जब राम के फ़रमान से, वानरों की फ़ौज के दल हो गये फ़ौरन रवाँ।
सब सुगूने नेक होने लग गये इस सिम्त में, और सीता को सुगून अच्छे नज़र आये वहाँ।
रावणे बदबख्त को आये नज़र सब बद सुगून, फ़ौज यह चलने लगी जैसे कोई मौजे रवाँ।
फ़ौज चलने लग गयी यह कूदते और फाँदते, झाड़ पत्थर को उखाड़े जिस तरह शेरेज़ियाँ।
राम की जय का वो नारा चीख़ते थे बार-बार, आख़िरस पहुँचा समुन्दर के किनारे कारवाँ।
जब से लंका को जला डाला वहाँ हनुमान ने, खौफ़ से सब डर गये थे राक्षस पीरोज़वाँ।
अब भलाई की तवक़्क़ो कुछ नज़र आती नहीं, राक्षस का अब मिटे जाने को है नामोनिशाँ।
जिनके एक अदना मुलाज़िम ने किया इतना तबाह, जब वह खुद आ जाएँगे क्यों कर न हों बरबादियाँ।
जब ज़बाने आम से मन्दोदरी ने यह सुना, हो गयी बेचैन और जाता रहा आरामे जाँ।
उसने तनहाई में शौहर से कहा यों बाअदब, यह अदावत राम से अच्छी नहीं—शाहेजहाँ।

हासिल्ला का भी हमल गिरता है जिनकी याद से, दूत ने उनके तबाही की है जो आ कर यहाँ।
भेज दो सीता को वापस साथ दो अपना वज़ीर, मान लो कहना मेरा ऐ मेरे प्यारे मेरी जाँ।
आयी है सीता यहाँ बरबाद करने के लिए, आपका बरबाद हो जाएगा यह सब खानदाँ।
वर्ना बचने की कोई सूरत नज़र आती नहीं, कामयाबी हो नहीं सकती, नसीबे दुश्मनाँ।
मिस्ल साँपों के चलेंगे तीर जब रघुनाथ के, राक्षस को दम हो लेंगे कुछ नहीं शककोगुमाँ।
इसलिए नाज़िल बला होने से पहले सोच लो, सुनके यह रावण हँसा, कहने लगा खंदादहाँ।
औरतों की जाति होती है निहायत नरमदिल, तुम खुशी के काम में क्यों बोलती हो बदज़बाँ।
आये वानर गर यहाँ खाएँगे उनको राक्षस, कैसी तुम डरपोक हो, मुझसे तो डरता है जहाँ।
अपने सीने से लगाया और फिर हँसता हुआ, महल से रावण हुआ दरबार में बाहर रवाँ।
उसकी बीवी ने यह समझा है मुकद्दर का क़सूर, मार परमेश्वर की है शौहर पे अपने बेगुमाँ।
जब गया दरबार में उसको मिली ऐसी खबर, पार दरिया करके अब आ गया है कारवाँ।
सब मशीरों से कहा—क्या मश्विरा होता है अब, मुझको करना चाहिए क्या कीजिए मुझसे बयाँ।
बोले वह यह मश्विरे की बात ही है कौन-सी, चुप रहो देखो तमाशा आप ए शाहेशहाँ।
देवता और राक्षस सब आपसे नीचे हुए, इनकी है ही क्या हक़ीक़त इनमें क्या ताबोतवाँ।
मश्विरा हो जब ग़लत बरबाद होगी सल्तनत, वैद्य से गर हो ख़ता तो बढ़ती हैं बीमारियाँ।
और गुरु का मश्विरा जब हो ग़लत मिट जाए धर्म, स तरह इन तीन की ग़लती से हों बरबादियाँ।
शाहे रावण की सभा की भी यही सूरत हुई, सब खुशामद करके उसकी थे मिलाते हाँ में हाँ।
भाई रावण के, विभीषण नाम था, वो आ गये, इत्तेफ़ाक़न मश्विरा जब हो रहा था यह वहाँ।
करके वो प्रणाम और अपनी जगह पर बैठ कर, भाई से अपने वह यों करने लगे अर्ज़े बयाँ।
आपने मुझसे है पूछा इसलिए कहता हूँ मैं, जिससे मुज़्मिर है भलाई और जिसमें खूबियाँ।
ग़ैर औरत पर नज़र करना निहायत है खराब, खैर, बरकत और भलाई होती है सब रायगाँ।
और थोड़ी सी भी लालच उसके हक़ में है खराब, ख्वाह वह रुपये ज़मी हो का न क्या हो हुक्मराँ।
ये नहीं होते हैं अच्छे, शहवतों गुस्सा ज़रूर, रास्ता दोज़ख का मिलता है इन्हीं से बेगुमाँ।
इसलिए इन सबको छोड़ो राम से डरते रहो, ताकतें पैदा है उनमें, जानते हैं रम्ज़दाँ।
अहले दुनिया को नजात हासिल हो उनकी जात से, शक्ले इनसानी मे दुनिया में हुए जल्वा कुनाँ।
सेवकों पर है इनायत और बुरों पर है गज़ब, वह किया करते हैं नेकी वेद के हैं निगहबाँ।
सर झुका दो उनके आगे जानकी को भेज दो, छोड़ दो उनसे अदावत उनका चूमो आस्ताँ।
आप से है इल्तेजा मेरी करो मंजूर अब, और मुनी पुलस्त ने भी है यह कहलाया यहाँ।
जो मुनी के शिष्य ने आ कर कहा, मैंने कहा, ज़िक्र होता था इसी का जब मैं आया हूँ यहाँ।
मालवान उसका वज़ीर एक सुन के यह खुश हो गया, और कहा बेशक विभीषण है मुदब्बिर नुक्तादाँ।
आ गया रावण को गुस्सा और बोला चीख कर, दोनो नादानो को इस दरबार से कर दो रवाँ।
अपने घर को चल दिया खामोश हो कर वह वज़ीर, और विभीषण ने अदब से यों किया अर्ज़ेबयाँ।
वेद और पुराण मे है इस तरह लिखा हुआ, दी गयी सबको समझ है, यह तो है बिल्कुल अयाँ।
जो बुराई से इसे बर्तेगा वह हो नामुराद, और जो अच्छी तरह से काम ले है कामराँ।
आप की भी कुछ समझ ऐसी हुई है आज कल, फ़र्क बाक़ी कुछ न रखा, नेकोबद के दर्मियाँ।
इसलिए है तुमने की सीता की जानिब बदनज़र, जो जला कर खाक़ कर देगी तुम्हारा खानदाँ।

फिर मुखातिब हो के मैं यह आप से विनती करूँ, बात मेरी मान लो रक्खो मेरा पासे ज़बाँ।
जब विभीषण ने नसीहत की तो रावण जल उठा, और कहा क्या मौत तेरी आ गयी है बदज़बाँ।
जो रहा है तू मेरा हर दम नमक खाते हुए, और दुश्मन की तरफ़दारी है करता तू यहाँ।
यह पता है कौन दुनिया में बहादुर मुझ-सा आज, कौन है जिसने नहीं चूमा है मेरा आस्ताँ।
शहर में रहता है मेरे और तरफ़दारे उदू, जा, उन्हीं के साथ रह और बन उन्हीं का क़दरदाँ।
यह कहा और खींच कर एक लात भी मारी उसे, फिर भी छोटे भाई ने चूमा क़दम को बेगुमाँ।
तुम करो नेकी उसी से जो करे तुमसे बदी, है तरीक़ा संत का यह, है यही उनका निशाँ।
यों विभीषण ने कहा है आप मानिन्दे पिदर, आप के इस मारने से मैं नहीं हूँ बदगुमाँ।
राम ही के लुत्फ़ से होगी भलाई आप की, उनके चरणों में ही जाना होगा बस राहतरसाँ।
जो मुसाहिब अपने थे हमराह उनको ले लिया, और वह दरबारे रावण से हुआ फ़ौरन रवाँ।
लाख समझाया तुम्हें मैं, अब नहीं मेरा कसूर, राम के क़दमों में अब जाऊँगा बेशक़ को गुमाँ।
ज्यों ही ये चलने लगे सब लोग बेहिम्मत हुए, क्योंकि अच्छों ही के क़दमों से हैं रहती नेकियाँ।
सोचते जाते थे दिल में राह चलते वक़्त यह, अब सरफ़ हासिल क़दमबोसी का होगा बेगुमाँ।
जिनके चरणों के खड़ाऊँ भरत जी ने ले लिये. आज उन क़दमों को मैं चूमूँगा हो कर शादमाँ।
इस तरह वह सोचते पहुँचे समुंदर के करीब, यह कोई जासूस है समझे इशारे वानराँ।
उसके आने की ख़बर जब सुग्रीव को की गयी, राम से जा कर किया सुग्रीव ने ऐसा बयाँ।
भाई रावण का है मिलने आप से आया जनाब, आप का इरशाद जैसा हो अमल है बेगुमाँ।
राम ने पूछा तुम्हारा इसमें है क्या मश्विरा, दस्तबस्ता यों कहा सुग्रीव ने ऐ मेहरबाँ।
राक्षस काबिल भरोसे के कभी होते नहीं, वह नहीं मालूम किस नीयत से आया है यहाँ।
गालिबन कुछ राज़ वह मालूम करने के लिए, इस तरह आया है शायद वह हमारे दर्मियाँ।
मैं मनासिब यह समझता हूँ कि कर ले क़ैद इसे, वर्ना मुश्किल है समझना ये कि क्यों आया यहाँ।
राम ने उनसे कहा तुमने कहा जो ठीक है, आसरे में आये जो मेरे उसे भेजूँ कहाँ।
सुनके यह हनुमान बेहद दिल में अपने खुश हुए, और कहा कितना है देखो राम का दिल मेहरबाँ।
ब्रह्म हत्या का भी पापी कोई आ जाए अगर, राम हूँ मैं काम है मेरा मदद ऐ मेहरबाँ।
जिसकी नीयत बद हो आ सकता नहीं मेरे क़रीब, यह बदी रखता जो दिल में, आ ही सकता था कहाँ।
और जो रावण ही का भेजा हुआ जासूस हो, तो भी हम को कुछ नहीं है खौफ़ इसमें या जियाँ।
जिस कदर है राक्षस दुनिया में उन सबके लिए, सिर्फ़ लक्ष्मण एक काफ़ी है उड़ा दे धज्जियाँ।
वर्ना इसकी तो हिफ़ाजत फ़र्ज़ मेरा हो गया, वह अगर खौफ़ और डर से भाग कर आया यहाँ।
हर दो हालत में उसे ले आओ बोले रामचन्द्र, अंगदो हनुमान लाने को हुए फ़ौरन रवाँ।
जब विभीषण आये, देखा राम को नजदीक से, जिस्म में लर्ज़ा हुआ और आँख से आँसू रवाँ।
हाथ जोड़े राम से वह अर्ज यों करने लगे, भाई रावण का हूँ और है राक्षस का खानदाँ।
नीच हूँ, हरदम रहा है काम मेरा पाप ही, अपने कानों से सुनी है आपकी सब खूबियाँ।
आपके साये में जो आता है होता है निहाल इसलिए मैं आपके चरणों में आया हूँ यहाँ।
इस तरह कहते हुए जब वह जमीं पर गिर गये, राम ने उनको उठाया हो के बेहद शादमाँ।
और कहा लंकेश अपनी कैफ़ियत कहिए मुझे, किस तरह होती गुजर थी आपकी कीजे बयाँ।
रात दिन तो साबिक़ा रहता बुरों के साथ था, किस तरह निभते तुम्हारे धर्म थे और नेकियाँ।

साथदारी बद की होने से नरक़ ही है भला, एक जो हो वह रहे कैसे बुरो के दर्मियाँ।
यों कहा उसने कि तुमको देख कर मैं शाद हूँ, मुशकिलों में मेरी अब सब हो गयी आसानियाँ।
मेहरबानी से किया है आपने मुझको क़रीब, मुशकिलें अब मेरी बाक़ी रह ही सकती हैं कहाँ।
मैं हूँ अदना और हरदम पाप में गुज़री मेरी, आपने मुझको कलेजे से लगाया मेहरबाँ।
है बड़ी तक़दीर मैंने आपके चूमें चरण, वर्ना मैं क्या था मेरी क़िस्मत ही थी ऐसी कहाँ।
राम जी ने अपना शेवा यों बयाँ उनसे किया, ज़ेरे साया मेरे जो आ जाय हो कर नातवाँ।
धोखाबाज़ी हो न उसमें और न हो उसमें ग़रूर, उसको मैं इन्साँ बना देता हूँ बेशक्को गुमाँ।
जो मिले मुझसे अज़ीज़ो अक़रूबा को छोड़ कर, जान से मैं प्यार करता हूँ उसे ऐ मेहरबाँ।
दूसरे के फ़ायदे के जो किया करता है काम, वह मुझे भाता बहुत है, मैं हूँ उसका क़दरदाँ।
मैं न क्यों कर तुम को अपनी जान से बढ़ कर रखूं, तुम में तो लंकापति हैं सब तरह की ख़ूबियाँ।
वानरों ने तब लगाया जय का नारा सुनके यह, और विभीषण भी हुए उससे निहायत शादमाँ।
और कहा भक्ति का अपनी मुझको अब वर दीजिए, मिट गये जो कुछ भी थे दिल में मेरे शक्कोगुमाँ।
राम ने दरिया का पानी जल्द लाने को कहा, और तिलक करके कहा, लंका के तुम हो हुक्मराँ।
गो तुम्हारी कुछ नहीं ख़्वाहिश मगर, मेरे सखा, दोस्ती मुझसे जो कर ले जाए कैसे रायगाँ।
राज जो रावण को हासिल था हुआ मुशकिल के साथ, मिल गया अब वह विभीषण को बआसानी यहाँ।
राम ने पूछा विभीषण से भी और सुग्रीव से, पार दरिया किस तरह हम कर सकेंगे हो बयाँ।
बहर है गहरा और उसमें है हज़ारों जानवर, किस तरह पार उसको कर लेगा हमारा कारवाँ।
यों कहा उनसे विभीषण आपके एक तीर से, सूख जाएगा समन्दर कुछ नहीं शक्को गुमाँ।
फिर भी कहता हूँ कि जा कर इल्तेजा उससे करें, कुछ न कुछ तजवीज़ वह बतला ही देगा बेगुमाँ।
राम ने इस मश्विरे को कर लिया दिल से पसन्द, और कहा ऐसा ही करना चाहिए हमको यहाँ।
लक्ष्मण इससे मुख़ालिफ़ हो के यों कहने लगे, तीर से अपने सुखा दो आने दरिया को यहाँ।
क्या भरोसा है कि अपनी कुछ मदद यह कर सके, आजिज़ी मिन्नत फ़क़त करना है कारे काहिलाँ।
राम ने हंस कर कहा ऐसा ही करना चाहिए, तुम ज़रा रक्खो भरोसा अपने दिल में भाईजाँ।
यों कहा, जा कर किनारे पर वो बैठे घास पर, अब सुनो जो कुछ हुए हालात रावण के यहाँ।
जब विभीषण छोड़ कर रावण को इस जानिब चले, उसने ख़ुफ़िया इनके पीछे कर दिया फ़ौरन रवाँ।
भेस वानर का बदल कर वह रहे सब देखते, देख कर तौर और तरीक़ा राम का थे मदहख़्वाँ।
आख़िरश जब वानरों पर भेद यह ज़ाहिर हुआ, बाँध कर लाये उन्हें, जो थे वहाँ के पासबाँ।
राजाए सुग्रीव के आगे उन्हे जब कर दिये, यों कहा राजा ने इनकी सब करो रुसवाइयाँ।
अज़ो कोई इनके काटो और घुमाओ चौतरफ़, सुनके यह अहकाम झपटे उनके ऊपर वानराँ।
रोये और आजिज़ी करके वह यों कहने लगे, राम की सौगन्ध है जो नाक काटोगे यहाँ।
रहम आया लक्ष्मण को सुनके उनकी यह पुकार, क़ैद से सबको छुड़ाया हो के उन पर मेहरबाँ।
एक चिट्ठी भी उन्हें दी कह दिया रावण को दो, और ज़बानी मेरी जानिब से करो उससे बयाँ।
भेज कर सीता को जल्दी राम से आ कर मिलो, वर्ना यह समझो कि है यह मौत का अपना निशाँ।
सर झुका कर वह चले तारीफ़ भी करते हुए, और वापस आये वह जासूस रावण के यहाँ।
रूबरू रावण के आ कर जब खड़े यह हो गये, यों कहा रावण ने कर तू ख़ैरियत अपनी बयाँ।
और मुझको कुछ विभीषण का भी कह तो हालेज़ार, मौत जिसकी अब क़रीब आयी हुई है बेगुमाँ।

राज करता था वह लंका का यहाँ से चल दिया, दुश्मनों के साथ अब मिट जाएगा नामोनिशाँ।
लश्करे आदा का भी कुछ हाल तो बतला मुझे, धार पर जो मौत के चढ़ते को आया है यहाँ।
उसकी क़िस्मत नेक है जो बीच में हायल है बहर, वर्ना उसको राक्षस रखते थे अब तक ही कहाँ।
और उन दोनों तपस्वी का भी बतला हाल कुछ, जिनके दिल में ख़ौफ़ मेरा बस गया है बेगुमाँ।
क्यों नहीं कहता है मेरे ख़ौफ़ से डरता है क्यों, क्यों खता औसान हैं, खुलती नहीं है क्यों ज़बाँ।
दूत ने तब यों कहा, जब आपने पूछा है हाल, दिल लगा कर आप सुन लें मैं जो करता हूँ बयाँ।
राम ने फ़ौरन तिलक लंका का उनको कर दिया, आपके भाई यहाँ से जाके जब पहुँचे वहाँ।
मुख़तलिफ़ अक़साम की तक़लीफ़ हमको दी गयी, जब कि जासूसी का उन पर खुल गया राज़ेनिहाँ।
नाक भी और कान भी वह काटने तैयार थे, राम की दे कर क़सम हमने बचा ली अपनी जाँ।
राम के लश्कर की गिनती हम बता सकते नहीं, है बड़ा जर्रार लश्कर कर नहीं सकते बयाँ।
जान ली लड़के की जिसने और जलाया शहर को, वह तो है एक फ़र्द लश्कर का निहायत नातवाँ।
ऐसे लाखों हैं बहादुर जो कि हाथी जैसे ,हैं एक से है एक बढ़ कर जंगजू और पहलवाँ।
नील नल अंगद दुधीमुख जामवाँ और केशरी, और पयोन्दो शठ निशठ दुविबुद्ध बहादुर पहलवाँ।
ये है सब सुग्रीव के जैसे बहादुर और शेर, जिनकी आँखों में समाता ही नहीं है ये जहाँ।
मैंने ऐसा है सुना लाखों हैं अफ़सर फ़ौज में, एक भी जो आपसे हो ज़ेर यह मुमकिन कहाँ।
हर कोई कहता यही है हो इजाज़त राम की, रावणे बदबख़्त की फ़ौरन उड़ा दूं धज्जियाँ।
इस तरह कहते हुए वह शोर करते हैं तमाम, जैसे लंका को निगल जाने की है तैयारियाँ।
उनको साया राम का है और वो सब हैं निडर, कौन उनको जीत सकता है यह मुमकिन है कहाँ।
सूख जाएगा समुन्दर उनके एक ही तीर से, पेश उनके है फ़क़त मर्यादा बेशक्कोगुमाँ।
आपके भाई से करके वह सलाह और मश्विरा, माँगते हैं राह दरिया से बिला वहमोगुमाँ।
जब सुना रावण ने, वह हँसने लगा बेइन्तहा, और कहा अक़्लो समझ उनकी हुई मुझ पर अयाँ।
एक बुज़दिल है विभीषण और उससे मश्विरा, अब हुआ मालूम मुझको जीत उसकी है कहाँ।
दूत ने ख़त भी निकाला और उसको दे दिया, और कहा, लक्ष्मण ने लिखा है यह ऐ शाहेशहाँ।
हँस के रावण ने लिया इस ख़त को बाँये हाथ से, और सुनवाया पढ़ा कर उसको सबके दर्मियाँ।
जिसमें लिखा था कि ऐ नादान ऐ गफ़लतशआर, यों न कर बरबाद खुद को और अपना ख़ानदाँ।
राम के चरणों में गिर और छोड़ दे अपना घमंड, वर्ना गारद होगा उनके तीर से सब ख़ानदाँ।
दिल में गो ख़ायफ़ हुआ ज़ाहिर में यों कहने लगा, देखो यह छोटे तपस्वी की है कैसी शेख़ियाँ।
दूत का था नाम शुक जो हाथ जोड़े फिर कहा, ग़ौर से कुछ काम लीजे सोचिए सूदोज़ियाँ।
राम से करनी अदावत आप को अच्छी नहीं, वह निहायत नर्म दिल है और निहायत मेहरबाँ।
आपकी जो कुछ ख़ता है माफ़ कर देंगे ज़रूर, भेज दो सीता को उनके पास बासद इज्ज़ोशाँ।
सुनके यह रावण ने उसको लात मारी ज़ोर से, छोड़ कर दरबार रावण हो गया वह भी रवाँ।
अब इधर का हाल सुनिए तीन दिन गुज़रे मगर, राह चलने की नहीं दरिया में होती थी अयाँ।
राम को ग़ुस्सा जो आया यों कहा लक्ष्मण से तब, अग्नी बाण अब लाओ इसको मैं सुखा दूं बेगुमाँ।
इल्तेजा नादान से, उल्फ़त किसी बदज़ात से, ख़ैर हो कंजूस से, यह बात मुमकिन है कहाँ।
इस तरह कहते हुए खींचा धनुष को राम ने, लक्ष्मण इसके मुअइद थे, हो गये वो शादमाँ।
राम ने जब तीर खींचा आग दरिया में लगी, जानदार अन्दर जो थे होने लगे सब नीमजाँ।

केले को गर लाख सींचो वह कभी फलता नहीं, वह तो फलता है तभी जब काट डालें डालियाँ।
और जो कमज़र्फ है सुनता नहीं कहना कभी, वह बजुज तबम्बीह के सुन ले यह मुमकिन है कहाँ।
मुख़तलिफ़ अकसाम के निकले जवाहिर सतह पर, एक ब्राह्मण इस जगह आ कर किया अर्जेबयाँ।
दस्त बस्ता यों कहा पैरों पे गिर कर राम के, आग पानी और हवा मिट्टी कहाँ है नुकतादाँ।
है यही मर्यादा सब क़ायम रहें अपनी जगह, सूख जाए जब यह दरिया बात फिर रहती कहाँ।
राम ने पूछा कि क्यों कर वानरों की फ़ौज यह, पार दरिया कर सकेगी मुझको बतलाओ यहाँ।
यों कहा उसने कि नल और नील ये दो भाई हैं, यह लड़कपन ही में वर पाये थे दोनों बेगुमाँ।
आपके परताप से दरिया में वह बहते रहें, यह जो दोनों उसको छूलें ख्वाह हो कोहे गराँ।
मैं भी इसमें कुछ मदद अपनी करूँगा मुमकिना, इस तरह बनने में पुल के कुछ नहीं दुश्वारियाँ।
आपने जो बाण खींचा है इसी एक बाण से, उन बुरों का ख़ातमा कर दो जो रहते हैं यहाँ।
राम ने ऐसा ही करके कर दिया क़िस्सा तमाम, और उनका हाल सब उसने किया इनसे बयाँ।
यह जो क़िस्सा लिखते हैं सुनते हैं दिल और जान से, राम की किरपा से होते हैं निहायत शादमाँ।
राम ने अर्काने दौलत को बुला कर यों कहा, देर क्यों होती है, पुल तैयार हो जल्दी यहाँ।
जामवन्त ने तब कहा मालिक तुम्हारे नाम से, पार हो जाती है दुनिया की सभी दुश्वारियाँ।
यह तो छोटा-सा समुंदर क्यों न कर लें पार हम, हम बआसानी चले जाएँगे उस पर बेगुमाँ।
जब कहा जामवन्त ने यों तब कहा हनुमान ने, अर्ज़ मेरी भी यह सुन लीजेगा ऐ शाहेशहाँ।
खुश्क कर डाला समुंदर को तेरे परताप ने, पड़ गयी गर्मी जो उसकी हो गयी आतिशफ़शाँ।
जो उदू मारे गये थे उनके गम और रंज में, उनकी बेवाएँ जो रोयीं बह चले यह आँसुवाँ।
भर गया फिर यह समुंदर हो गया प्यारा है वह, सुन के उनकी बात यह वानर हुए सब मदहख्वाँ।
जामवन्त ने बुला कर नील और नल से कहा, मुस्तइद हो जाओ पुल बनने की हो तैयारियाँ।
और सब वानर को भी बुलवा के भी कहने लगे, झाड़ टीले लाओ और तुम लाओ सब कोहे गराँ।
जय का नारा सब लगा कर भागते खुद आ गये, जिस क़दर वानर वहाँ थे और जो थे भालुवाँ।
खेलते ही खेलते वह खोद डाले कोह को, और ला-ला के वे देते नील नल को थे यहाँ।
गेंद के मानिन्द ले लेते थे अपने हाथ में, और रखते जाते थे वह बरसरे आबेरवाँ।
पुल हुआ तैयार जब कहने लगे यह रामचन्द्र, यह जगह है पाक शिव स्थापना होगी यहाँ।
सब ऋषी-मुनियों को बुलवाया वहाँ सुग्रीव ने, लिंग की विधि पूर्वक स्थापना करने वहाँ।
जिसको शंकर की नहीं भक्ति हो बोले रामचन्द्र, वह मुझे किस तरह प्यारा होगा यह मुमकिन कहाँ।
मेरा खादिम उनका दुश्मन, उनका सेवक मुझसे रंज, वह नरक की आग में दोनों जलेंगे बेगुमाँ।
मैंने जो स्थापना की है उसे पूजेगा जो, वह रहेगा शाद खुर्रम और रहेगा शादमाँ।
और रामेश्वर में जो गंगा का जल ला कर चढ़ाये, आकेबत में भी रहेगा कामगारो कामराँ।
और रामेश्वर की जो सेवा करेगा रात दिन, होगा वह भक्ति में पूरा और होगा राज़दाँ।
और इस पुल के जो दर्शन कर सकेंगे खुशनसीब, उनका बेड़ा पार हो नहरे जहाँ के दमियाँ।
जब कहा यह राम ने वह सब मुनी वापस हुए, नीलो नल तकमीले पुल के वास्ते ठहरे वहाँ।
राम के परताप से पत्थर वो तैरे आब पर, जो डुबा देते हैं औरों को भी बेशक्कोगुमाँ।
नीलो नल ने जो बनाया पुल बड़ा मजबूत था, रामचन्दर जी ने जब देखा हुए वो शादमाँ।
शोरोगुल करते हुए वानर रवाना हो गये, फौज के दस्ते चले जिस तरह एक मौजेरवाँ।

पुल पे चढ़ कर राम ने भी तैरे दरिया खूब की, जानवर अन्दर जो थे बाहर वो निकले नागहाँ।
जिनमें थे मछली मगर घड़ियाल भी और साँप भी, एक से थे एक बढ़ कर खौफ़नाको खौफ़जाँ।
राम के दर्शन के खातिर सतह दरिया पर हुआ, इस क़दर मजमा, नज़र आता न था पानी वहाँ।
राम के अहकाम से तब फ़ौज चलने लग गयी, किस क़दर थी फौज यह बतला ही सकता हूँ कहाँ।
जानवर दरियाई जो आये थे उन पर भी चढ़े, बाज़ यों भी पार दरिया कर गये वह वानराँ।
राम लक्ष्मण देख कर ऐसा तमाशा हँस पड़े, अल गरज़ सब पार दरिया कर लिए नुसरत निशाँ।
जब उधर पहुँचे तो डेरा राम ने डलवा दिया, फूल फल खाने की दी सबको इजाज़त बेगुमाँ।
खा रहे थे फूल फल और शाद थे वानर तमाम, झाड़ पत्थर फेंकते लंका के जानिब शादमाँ।
घूमते-फिरते थे वह चारों तरफ हो कर निडर, इत्तेफ़ाकन राक्षस कोई अगर मिलता वहाँ।
गत बनाते उसकी अच्छी काटते थे नाक, कान, राम की जय जो न बोले छूट सकता था कहाँ।
जो हुए मजरूह थे रावण से जा कर कह दिये, दिल धड़कने लग गया पुल किस तरह बाँधा वहाँ।
पार दरिया कर लिया दरिया पे पुल भी बन गया, क्या यही सच है लबे रावण से निकला नागहाँ।
फिर समझ कर अपनी कमज़ोरी हुआ खामोश वह, महल में दरबार मे उठ कर हुआ फ़ौरन रवाँ।
जब सुना मन्दोदरी ने आ गये नज़दीक राम, हाथ शौहर का पकड कर यो हुई गौहरफशाँ।
अपने आँचल को पसारा और कहा यह अर्ज है, छोड़ कर हठ को, मेरी तुम अर्ज सुन लो मेरी जाँ।
सामना उसका करो जो हो बराबर आप के, राम सूरज आप जुगनू फ़र्क कितना है यहाँ।
मधु कैटभ हाथ मे जिनके मरे थे एक बार, दित्ति के फ़रजन्द सब मारे गये थे पहलवाँ।
जो बली को बाँध डाले अपने वामन रूप में, और सहस्त्रबाहु को भी मारे यही थे पहलवाँ।
यह वही भगवान् आये राम के है रूप में, उनसे झगड़ा मोल लेना हो न क्यों नुकसाँरसाँ।
उनके पैरों मे गिरो और जानकी को सौंप दो, तुम बनो गोसानसीं लड़के को कर दो हुक्मराँ।
शेर भी मजमूर को हरगिज नहीं है मारता, राम तो हैं रहम दिल और है निहायत मेहरबाँ।
आज तक जो चाहिए था आपने सब कर लिया, सारी दुनिया पर हुआ है आपका सिक्का रवाँ।
है यही दस्तूर कहते लोग भी हैं इस तरह, छोड़ दे तख्ते हुकूमत शह जईफ़ो नातवाँ।
आप भी जंगल में जा कर अब भजन करते रहें, छोड़ दीजे ऐशोइशरत, खाहिशे हुस्नेबुताँ।
आप अब परमात्मा को याद में मशगूल हो, जिस तरह जपते है सब ऋषि-मुनी सन्यासियाँ।
आप मेरी बात सुन लें आपका होगा भला, राम के चश्मे करम से आप होंगे कामराँ।
इसका चर्चा फैल जाएगा तमामी दहर में, आपका भी नाम होगा लोग होंगे शादमाँ।
जिस्म मे लरजा पड़ा चरणो पे गिर कर फिर कहा, चाहती हूँ मैं सुहाग अपना रहे यह जावेदाँ।
वह उठाया अपनी बीवी को कहा ऐ जानेमन क्यों हो डरती, कौन दुनिया में है मुझ-सा पहलवाँ।
दोनों आलम को किया है ज़ेर अपने हाथ से, किस लिए हैरान हो, खायफ़ हो क्यों तुम मेरी जाँ।
फिर भी रानी ने कहा उसको बहुत मिन्नत के साथ, लेकिन उसकी अकल चकराई थी वह सुनता कहाँ।
आखिरस वह महल से बाहर निकल कर चल दिया, और वह दरबार मे जा कर हुआ जलवाकुनाँ।
सोचा मन्दोदरी ने अब खातमा रावण का है, और अब बरबाद हो जाएगा पूरा खानदाँ।
आके वह दरबार में पूछा कि कैसे जंग हो, यों कहा अर्कानें' दौलत ने हमारे हुक्मराँ।
पूछते क्या आप हैं क्यों पूछते हैं बार-बार, कौन-सी मुशकिल है यह दुश्मन है कितना नातवाँ।
आदमी भालू व बन्दर इनको खा जाते हैं हम, खौफ़ की है कौन-सी जा, क्यों है यह वहमोगुमाँ।

एक था फरज़न्द रावण का जिसे कहते प्रहस्त, बोला वह यह झूठ है सब, और नहीं शायानेशाँ।
आपके अरकान सब नाफहम हैं बेअकल हैं, बात मुँह देखी यह कहते हैं मिला कर हाँ में हाँ।
ऐसी बातों से फतह भी हासिल नहीं होगी कभी, एक ही बन्दर जो आया, याद है अब तक यहाँ।
आप में से कोई उस वक्त क्यों खाया नहीं, जब जलाया शहर को वह आप सोते थे कहाँ।
मश्विरा यह दे रहे हैं आपको बिलकुल ग़लत, गो बज़ाहर ठीक हैं लेकिन यह है नुकसाँरसाँ।
खेलते ही खेलते जो पार दरिया को करे, और लेके अपनी सेना आये लड़ने को यहाँ
ऐसी क़ूवत से झगड़ना आपका अच्छा नहीं, कह रहे है झूठ यह सब कर रहे है शेखियाँ।
बात को मेरी सुनो तुम दिल लगा कर ऐ पिता, यह न समझो मैं हूँ बुज़दिल और हूँ मैं नातवाँ।
ऐ पिता दुनिया में ऐसे लोग होते हैं बहुत, दिल में उनके है बुराई और हैं शीरीदहाँ।
और ऐसे लोग दुनिया में बहुत कम पाएँगे, बात तो कड़वी हो और उसमें छुपी हों खूबियाँ।
आप ऐसा कीजिए पहले तो भेजें दूत को, और फिर सीता को भी उनके यहाँ कीजे रवाँ।
आप गर ऐसा करें तो शायद हो जाए मिलाप, खत्म क़िस्सा होगा और कुछ भी नहीं रुसवाइयाँ।
लेके औरत को अगर वापस न जाएँ रामचन्द्र, फिर भी लड़ने के लिए उनकी जो हों तैयारियाँ।
मुस्तइद हो जाओ तुम भी फिर, लड़ो दिल खोल कर, फिर लड़ो मैदान में जैसे कोई शेरे ज़ियाँ।
आप सुन लेंगे अगर मालिक मेरा यह मश्विरा, आपका दुनिया में होगा नाम बेशक्कोगुमाँ।
सुनके गुस्सा आ गया रावण को, यों कहने लगा, अक़्ल ऐसी तूने ऐ नाफ़हम पायी है कहाँ।
बुज़दिली क्यों कर रहा है इस क़दर क्यों खौफ़ है, तू है बदनामी का पुतला और नंगे खानदाँ।
बाप के अलफ़ाज़ सुन कर यों कहा प्रहस्त ने, मौत आये तो असर करती दवा कोई कहाँ।
यह कहा, उठ कर वहाँ से अपने घर को चल दिया, और संध्या के लिए रावण हुआ फ़ौरन रवाँ।
एक महल लंका की चोटी पर था बेहद खुशनुमाँ, राग और गाने की महफ़िल रोज़ जमती थी वहाँ।
जाके रावण भी बरामद हो गया उस कसर में, और गवैये राग गा कर हो रहे थे नरमाखवाँ।
तालियाँ बजने लगी वीणा पखावज भी बजे, नाच और गाने में कामिल जो थी नाची रंडियाँ।
इन्द्र से भी कुछ ज़्यादा ऐश और आराम से, मुनाक़िद करता था जलसे रोज़ यह ग़ाफ़िल वहाँ।
आ गया दुश्मन है सिर पर कुछ नहीं उसको खबर, और क़ूवी कितना है दुश्मन फ़िक्र यह उसको कहाँ।
जब यहाँ रघुवीर उतरे फ़ौज ले कर कोह पर, एक जगह जा कर वह बैठे जाय थी अच्छी जहाँ।
गोद में सुग्रीव के रक्खा उन्होंने अपना सर, दाँयें और बाँयें में अपने रख लिए तीरों कमाँ।
राम तरकस फेरते जाते थे अपने हाथ से, और विभीषण कान में कहते थे कुछ राज़ेनिहाँ।
दाबते थे पैर हनुमान और अंगद खुशनसीब, और अक़ब में लक्ष्मण बैठे हुए थे शादमाँ।
उस तरह तशरीफ़ फ़रमा राम जी थे उस जगह, जिसके मन में इसकी हो तस्वीर वह हो कामराँ।
देख कर पूरब की जानिब राम यों कहने लगे, चन्द्रमाँ की रोशनी देखो यह कैसी है अयाँ।
किस तरह यह घूमता है हो के बेखौफ़ो खतर, रौशनी के ज़ोर से बाक़ी अँधेरा है कहाँ।
और सितारे आसमाँ पर हैं जो वह मानिन्दे दुर्ग, ले लिये सब का यह सब जेवर हैं गोया बेगुमाँ।
फिर कहा ऐ भाइयो तुम मुझको दो उसका जवाब, चाँद में क्यों है यह धब्बा तुम करो मुझसे बयाँ।
यों कहा सुग्रीव ने यह तो जमीं की छाँव है, दूसरे ने यह कहा सुनिए हमारा भी बयाँ।
चाँद को राहू ने मारा था यह उसका दाग़ है, और कोई दूसरे ने यों किया उसका बयाँ।
रूप से मह के जो कुछ हिस्सा रही को मिल गया, दाग़ उसका रह गया है इसके दिल के दर्मियाँ।

यों कहा हनुमान ने है चाँद खादिम आपका, आप ही की साँवली सूरत है यह इसमें अयाँ।
सुनके यह हनुमान से हँसने लगे फिर रामचन्द्र, देख कर दक्खन की जानिब यों हुए गोहरफ़शाँ।
किस तरह बादल है छाया और है बिजली की चमक, देखो दक्खन की तरफ़ कैसा विभीषण है समाँ।
हो रही है धीमी-धीमी बादलों की भी गरज, अब बरस जायें न ओले मुझको ऐसा है गुमाँ।
यों कहा उनसे विभीषण ने कि ये बादल नहीं, खूबसूरत एक लंका की है चोटी पर मकाँ।
बैठ कर उस महल में रावण है सुनता रागोरंग, नाच का भी है अखाड़ा हर दफा जमता वहाँ।
है लगा रावण के सिर पर नीलगूं छत्र सही, जो नजर आता है हमको मिस्ले बादल बेगुमाँ।
कान के जो फूल हैं मन्दोदरी के कान में, वह नजर आते हैं ऐ आक़ाये मन बरक़े तपाँ।
बज रहे हैं ताल और मृदंग भी हैं बज रहे, उन सदाओं से गरज मालूम होती है यहाँ।
बखवते रावण समझ कर मुस्कराया राम ने, और फिर हाथों में अपने ले लिये तीरोंकमाँ।
एक ही जब तीर मारा छत्र भी और ताज भी, गिर गये सब कान के फूलों के हमरह नागहाँ।
देखते ही देखते जब सब जमीं पर गिर गये, हो गये सब दंग कुछ समझे न ये राजेनिहाँ।
ऐसा करके तीर वापस आ गया तरकस में फिर, नहूस इसको जान कर सब हो गये खायफ़ वहाँ।
जलजला था ये न कोई जोर की आँधी चली, और न ही हथियार भी कोई नजर आया यहाँ।
किस तरह यह गिर गया है छत्र भी और ताज भी, फूल भी रानी के कानों से गिरे क्यों नागहाँ।
सब यही कहते थे दिल में ये बहुत मनहूस है, देखा रावण ने कि सब पर खौफ छाया है यहाँ।
यों कहा सर का भी कटना शुभ होता है जिसे, ताज सर से गर गिरे, मनहूस होता है कहाँ।
अपने-अपने घर में जा कर सो रहो आराम से, सुन के यह, सब लोग आहिस्ता हुए घर को रवाँ।
कान के जो फूल रानी के गिरे थे कान से, फ़िक्र में रानी बहुत डूबी हुई थी बेगुमाँ।
जोड़ कर फिर हाथ रानी ने कहा रावण से यह, आँख में आँसू थे और कहने लगी आरामेजाँ।
मान लीजे मेरा कहना जिद न कीजे आप अब, राम की ताक़त है ऊँची बरतरज़ वहमोंगुमाँ।
वह नहीं इनसान हैं भगवान ही का रूप हैं, बात ये बिलकुल है ज़ाहिर जानता है सब जहाँ।
ये जो है पाताल इनके पैर हैं, ब्रह्मलोक सर, है ये सूरज आँख और बादल है बालों का निशाँ।
नाक है अस्वनकुमार और रात दिन जिनके पलक, और दिशायें कान हैं, है वेद में ऐसा बयाँ।
लोभ जिनका ओठ है यमराज जिनके दाँत है, ये हवा है साँस जिनकी वेद जिनका है बयाँ।
है ये माया ही हँसी, दिगपाल जिनके दण्ड है, आग जिनका मुंह है यह और है वरुण जिनकी जबाँ।
जन्म देना पालना और मारना है जिनका काम, ये नदी जिनकी नसें हैं है सिकम बहरे गिराँ।
मुखतलिफ़ अवसाम के फल फूल है यह रोम-रोम, और नरक तो इन्द्री है, कोह हैं सब हड्डियाँ।
शिव खुदी है, ब्रह्म फहम और चन्द्रमा ही कल्ब है, ये वही भगवान के ही रूप में आये यहाँ।
दुश्मनी इनसे न रखिये ग़ौर कीजे आप खूब, ताकि क़ायम रह सकूँ मैं भी सुहागन जावेदाँ।
सुनके रानी की ये बातें हँस पड़ा रावण बहुत, और कहा नाफ़हम की कैसे बयाँ हो खूबियाँ।
सच ये कहते हैं कि औरत में हैं होते आठ ऐब, झूठ हिम्मत चुलबुलापन और दग़ाबाजी अयाँ।
खौफ़ भी होता है और नाफ़हम भी होते हैं वो, और नापाकी व बेरहमी भी होती है निहाँ।
मुझको दुश्मन का जो बतलाती है तू खौफ़े अज़ीम, वह तो सब पहले ही से कब्जे में मेरे है यहाँ।
तेरी चालाकी को समझा अब कि तू इस तर्ज से, मेरी क़ूवत और सतवत का यह करती है बयाँ।
मृगनयनी तू है तेरी बात भी है रसभरी, जिसके सुनने और समझने में छुपी है खूबियाँ।

उसकी बीबी ने ये समझा मौत इसकी आ गयी, अक्ल इसकी फिर गयी है अब ये समझेगा कहाँ।
इस तरह कहते हुए वह रात सारी हो गयी, सुबह होते ही सभा को हो गया रावण रवाँ।
लाख बारिस हो दरख्ते बेंत फल सकता नहीं, यों ही मूरख को अगर ज्ञानी कहे सुनता कहाँ।
अब इधर का हाल सुनिये राम जब जागे सुबह, वो बुला कर सबसे पूछे राय हो सबकी बयाँ।
हमको करना चाहिए क्या तब कहा यों जामवन्त, फ़हम की अपने मुआफ़िक मेरी है अर्ज़ बयाँ।
बाली के फ़रज़न्द अंगद को हमारे पास से, भेजिए कासिद बना कर आप रावण के यहाँ।
मश्विरा सुन कर कहा अंगद से आखिर राम ने, ऐ बहादुर, तुम मेरे जानिब से हो जाओ रवाँ।
मैं तुम्हें समझाऊँ क्या तुम खुद हो सब कुछ जानते, काम आसानी से निकले बात हो ऐसी वहाँ।
हुक्म पा कर राम का अंगद क़दम को चूम कर, यों कहा जिस पर तुम्हारी हो नज़र है कामराँ।
आपके सब काम हो जाते हैं खुद ही आपसे, आपने इस तरह मुझको कर दिया इज़्ज़तनिशाँ।
मिल कर अपने साथियों से बाँध कर रख़्ते सफ़र, राम के इस काम को फ़ौरन हुए अंगद रवाँ।
ज्योंही वे लंका में पहुँचे एक रावण का पिसर, खेलता था राह में जो मिल गया इनसे वहाँ।
बातों ही बातो मे इन दोनों मे झगड़ा हो गया, दोनो थे एक-साँ बहादुर और दोनो नौजवाँ।
लात जब उसने उठायी मारने के वास्ते, पैर अंगद ने पकड़ कर उसको दे पटका वहाँ।
राक्षस थर्रा गये उनकी ये क़ूवत देख कर, चुपके चुपके चल दिये सब दुम दबा कर बेगुमाँ।
मर गया रावण का लड़का कोई कह सकता नहीं, सब छुपाये जाते थे वा एक दिगर राज़ेनिहाँ।
देख कर भगदड़ ये सब पर हाल पूरा खुल गया, ये खबर फैली कि फिर बन्दर वही आया यहाँ।
पहले लंका को जलाया अब करेगा फिर ये क्या, इस तरह औसान सबके थे खता, सब नीमजाँ।
जिसके जानिब देखते वह काँप जाता खौफ़ से, राह बतलाता था वह ये चाहते जाना जहाँ।
राम के चरणों का अपने दिल में रक्खा था खयाल, कसर के दरवाज़े पर जा पहुँचा आखिर पहलवाँ।
जाके दरवाज़े पे वह ठहरा निहायत शान से, बेखतर बेखौफ देखा चौतरफ़ दारेज़ियाँ।
भेज कर एक राक्षस को की गयी आ कर खबर, हँस के रावण ने कहा ले आओ बन्दर को यहाँ।
राक्षस सब दौड़ कर अंगद को अन्दर ले गये, उस जगह था तख्त पर बैठा हुआ रावण जहाँ।
देखते अंगद हैं क्या है एक काजल का पहाड़, जिसके बाज़ू झाड़ जैसे सर था एक कोहे गिराँ।
नाक, मुंह और कान उसके जैसे दर्रे कोह के, रोम-रोम उसके नज़र आते थे जैसे डालियाँ।
ज्योंही ये पहुँचे सभा में हो के बेखौफ़ोखतर, देख कर इनको उठे सब लोग जितने थे वहाँ।
देख कर ताज़ीम ये रावण को गुस्सा आ गया, हो के अंगद से मुखातिब उसने यों खोली ज़बाँ।
कौन है तू जल्द बतला मुझको बन्दर अपना नाम, राम का मैं दूत हूँ उसने कहा यों बेगुमाँ।
बाप से मेरे तुम्हारी दोस्ती थी इसलिए, मैं तुम्हारी बेहतरी करने को आया हूँ यहाँ।
तुमने पूजा की है शिव की और ब्रह्मा जी की भी, तुम ऋषि पुलस्त के पोते हो आला खानदाँ।
काम सब पूरे हुए हैं चाहते थे जिस क़दर, लोक वालों को भी जीता तुमने जीते राजगाँ।
हो गया है तुमको लालच या है क़ूवत का गरूर, तुमने सीता को चुराया और लाये हो यहाँ।
मश्विरा देता हूँ तुमको मानो गर मेरी सलाह, माफ़ कर देंगे तुम्हारी राम सारी गल्तियाँ।
दाँत में अपने दबाओ एक तिनका घाँस का, और कुल्हाड़ी डाल लो अपने गले के दर्मियाँ।
जानकी के पीछे रक्खो अपने घर की औरतें, साथ ले कर तुम चलो बेखौफ़ हो कर बेगुमाँ।
और कहो रघुनाथ मुझ पर एक दया की हो निगाह, रहम कीजे रहम कीजे यह रहे बिरदे ज़बाँ।

हो गया आपे मे बाहर सुनके रावन ये वचन, और कहा बन्दर के बच्चे बन्द कर अपनी जबाँ।
देवताओं का हूँ दुश्मन तूने पहचाना नहीं, नाम अपना और अपने बाप का तो कर बयाँ।
कौन-से रिश्ते से तूने दोस्ती जतलायी है, खैरखाही मेरी करने को जो आया है यहाँ।
बाली का मैं पुत्र हूँ और नाम है अंगद मेरा, बाप का मेरे तुम्हें कुछ याद है नामोनिशाँ।
कुछ हुआ शर्मिन्दा रावण और यों कहने लगा, बाली था जो एक बन्दर जानता हूँ उसको हाँ।
लाज आती क्यों नहीं अंगद तुझे इस बात पर, बन गया सेवक तपस्वी का तू नंगे खानदाँ।
किस लिए पैदा हुआ तू किस लिए जिन्दा रहा, क्यों नहीं तू मर गया जब हामिला थी तेरी माँ।
खैरियत बाली की सुनना चाहता हूँ तुझ से मैं, यह तो बतला किस तरह है और अब वह है कहाँ।
यों कहा अंगद ने थोड़े दिन गुजर जाएँगे जब, मित्र से अपने मिलोगे पूछ लेना सब वहाँ।
राम से हो कर मुखालिफ़ किस तरह मिलता है चैन, अपने मुँह से आप वह तुमसे करेंगे खुद बयाँ।
सच यह कहते हो कि नंगे खानदाँ अपना हूँ मैं, और तुम अपने हो कुनबे के मुहाफ़िज़ निगहबाँ।
जो है अंधे और बहरे वह भी यह कहते नहीं, बीस हैं कान और आँखें तुमको कहता है जमाँ।
ब्रह्मा विष्णु देवता जिनके पकड़ते हैं चरण, उनका खादिम हो के कैसे मैं हूँ नंगे खानदाँ।
है समझ ऐसी तुम्हारी क्यों न सीना फट गया, सुनते ही आँखें हुई गुस्से से उसकी खूँफशाँ।
और कहा—यह गुफ्तगू इस वास्ते हूँ सुन रहा, धर्म का पाबन्द हूँ और जानता हूँ नेकियाँ।
यों कहा अंगद ने—नेकी मैं सुना हूँ आपकी, ग़ैर की औरत को चोरी करके ले आये यहाँ।
और कासिद की हिफ़ाजत अपने मुँह खुद कह दिया, डूब कर क्यों मर नहीं जाते हो बेशक्को गुमाँ।
नाक अपनी बहन की काटो गयी वह देख कर, धर्म की तो तुम हिफ़ाजत कर रहे थे बेगुमाँ।
मैं भी खुश किस्मत हूँ जो यह आपके दर्शन हुए, आपके जैसे जहाँ में लोग होते हैं कहाँ।
यों कहा रावण ने बक-बक कर न तू ऐ बेवकूफ, लोकपालों को हिलाये हैं ये बाजू पहलवाँ।
और मैं कैलाश को भी था उठाया एक बार, एक नहीं तूने सुना यह, है जमाने पर अयाँ।
यह बता है कौन तेरी फ़ौज में ऐसा सजीव, जो मुकाबिल में मेरे आ जाय लड़ने को यहाँ।
तेरा मालिक ग़म में औरत के है घुलता जा रहा, भाई भी उसका है ऐसा ही नहीफ़ो नातवाँ।
तेरी और सुग्रीव की तो कुछ हकीक़त ही नहीं, और उस बुज़दिल विभीषण में तो हिम्मत है कहाँ।
नाम जिसका जामवाँ है वह तो बूढ़ा हो गया, सामने आ जाए वह लड़ने को यह मुमकिन कहाँ।
नील नल तो जग के करतब नहीं है जानते, एक बानर है जरूर इनमें बहादुर पहलवाँ।
जिसने लंका को जलाया है यहाँ पहले पहल, सुनते ही अल्फ़ाज यह—अंगद ने यों खोली जबाँ।
किस तरह लंका जला डाली मुझे बतलाइए, कर गया हिम्मत ये क्यों कर एक बानर नातवाँ।
आपकी जो राजधानी जल गयी यह सुनके बात, कब यक़ीन आये किसी को कोई समझे है कहाँ।
वह तो एक अदना है सेवक राजाए सुग्रीव का, जिसकी तुम तारीफ़ करके कह रहे हो पहलवाँ।
वह तो है एक दूत उनका—वह कोई फ़ौजी नहीं, सिर्फ़ लाने के लिए हमने खबर भेजा यहाँ।
बेइजाजत राम के कैसे जला डाला शहर, शायद इस डर के सबब वापस नहीं आया वहाँ।
तुम जो सच कहते हो रावण कुछ नहीं है इसमें झूठ, कुछ नहीं गुस्सा मुझे आता है सुन कर बेगुमाँ।
तुमसे वह आये मुकाबिल जो तुम्हारी जोड़ हो, तुम हो एक मर्दे जयीफ़ और हम हैं सारे पहलवाँ।
दुश्मनी और दोस्ती कीजे तो हमपल्ला के साथ, शेर मेढ़क को अगर मारे, बहादुर है कहाँ।
तुमको मारें राम, तो उनकी बड़ाई कुछ नहीं, फिर भी गुस्सा क्षत्रियों का है बहुत आतिशफ़शाँ।

मार कर तीरे सुखन अंगद ने जख्मी कर दिया, छिद गया क़ल्बे उदू बाक़ी न थे ताबोतवाँ।
हँस के रावण ने कहा बन्दर में खूबी है यही, अपने मालिक का हुआ करता है हरदम मददख्वाँ।
अपने आक़ा के लिए वह नाचता है हर जगह, फ़ायदा करने में उसके, शर्म करता है कहाँ।
जब तुम्हारी नसल में अंगद हक़ीक़त है यही, फिर न क्यों मालिक की अपने तुम करोगे शोखियाँ।
तेरे यह अलफ़ाज़ भी सुन कर जो मैं खामोश हूँ, मैं गुणों को हूँ परखता हूँ गुणों का क़दरदाँ।
फिर कहा अंगद ने, मुझसे था कहा हनुमान ने, क़द्रदाँ कितने हो तुम, है कितनी तुममें खूबियाँ।
आपका लड़का मरा एक, शहर सारा जल गया, क़द्र अफ़ज़ाई इसी की आपने की बेगुमाँ।
मैंने आ कर आज सब देखा है अपनी आँख से, तुममें कुछ शर्मो हया है और न गुस्सा बेगुमाँ।
है समझ तेरी जो ये, तू बाप को भी खा गया, यों कहा अंगद से रावण हो के खुद खन्दादहाँ।
बाप को तो खा गया मैं, तुझ को भी खाता हूँ अब, यह कहा अंगद ने, लेकिन देर है कुछ बेगुमाँ।
छोड़ता तुझको हूँ मैं बाली का बेटा जानकर, खत्म कर देता था अब तक छोड़ना ही था कहाँ।
ऐ घमण्डी मुझको बतला कौन-सा रावण है तू, मैंने जो रावण सुना है उसका करता हूँ बयाँ।
एक गया पाताल को था जो बली को जीतने, अस्तबल में बाँध कर बच्चों ने रक्खा था वहाँ।
और बच्चे मारते थे खेल में हरदम उसे, उसको छुड़वाया बली ने, हो कर उस पर मेहरबाँ।
दूसरा रावण जो था देखा सहस्रबाहू ने जब, एक शय नायाब समझा और पकड़ लाया मकाँ।
और तमाशे के लिए अपने मकाँ मे रख दिया, तब मनी पुलस्त छुड़वाये, ये सब पर है अयाँ।
एक रावण की तो कहने में मुझे भी शर्म है, जिसको बाली ने दबाया था बगल के दर्मियाँ।
एक अर्से तक यों ही फिरता रहा लटके हुए, कौन से रावण हो तुम इनमें, करो मुझसे बयाँ।
तब कहा रावण ने सुन अब कौन सा रावण हूँ मैं, जिसकी ताक़त जानता कैलाश है कोहेगिराँ।
और उमापति जानते हैं मेरी क़ूवत को बखूबी, काट कर अपने सिरों को की थी पूजा बेगुमाँ।
बाजुओं की मेरी क़ूवत जानते दिग्पाल है, खौफ़ जिसका आज भी है उनके दिल के दर्मियाँ।
हाथियों के दाँत टूटे जब हुआ सीना सिपर, मेरे सीने की तो मजबूती है दिग्गज पर अयाँ।
मेरे चलने से जमी है काँपती इस तौर से, नाव पर चढ़ता है हाथी जिस तरह हो कर गराँ।
झूठी बक-बक तू न कर, क्या जानता मुझको नही, मैं नसीबे का धनी हूँ, जानता है सब जहाँ।
नामवर ऐसा हूँ मैं, और तू मुझे कहता है हीच, और सना इनसान की करता है तू ताक़त बयाँ।
आ गया अंगद को गुस्सा और दिया उसको जवाब, ऐ घमण्डी सोच कर कह रोक तू अपनी जबाँ।
जिस सहस्रबाहू की क़ूवत को जलाये परशुराम, जिनके तेगे से हजारों मिट गये है राजगाँ।
वह भी जिनके सामने आ कर खमोदाँ हो गये, ऐसी ताक़त का बता इनसान होता है कहाँ।
तू है नादाँ यह बता, क्या राम भी इन्सान है, कामधेनु, गाई होती है कहीं ओ बदजबाँ।
नदियों में क्या शुमार होता है गंगा जी का भी, कल्पवृक्ष को पेड़ कहता है कोई क्या बेगुमाँ।
अन्न भी क्या धान्य है और रस है क्या अमृत कोई, और गरुड़ को भी परिन्दा कोई कहता है कहाँ।
शेष भी क्या साँप है चिन्तामणी पत्थर है क्या, लोग कहते है जिसे क्या है वही बाते जिन्हाँ।
गरचे दुनिया मे हज़ारों खूबियो के काम है, राम की भक्ति के जैसा फ़ायदा किसमें कहाँ।
जो जलाया शहर को तेरे उजाड़ा बाग़ को, और जिसने तेरे एक फ़रज़न्द को ले ली थी जाँ।
फ़ौज का तेरी और तेरा सब मिटाया जो घमंड, यह बता हनुमान वह, बन्दर है हो सकता कहाँ।
क्या नहीं करता है उनकी याद ऐ मग़रूर तू, उनका दुश्मन बन के कैसे तू बचेगा बेगुमाँ।

ब्रह्मा और शिव भी तुझे हरगिज़ बचा सकते नहीं, डींग मार अपनी न ऐसी छोड़ दे ये शोखियाँ।
बाण उनका चलते ही सर तेरे कट कट कर सभी, वानरों के पैर पर आ कर गिरेंगे नागहाँ।
गेंद के मानिन्द सर कट कर के गिरते जाएँगे, खेलने लग जाएँगे चौगान उनके बानराँ।
राम जब मैदान में आ जाएँगे तू सोच ले, उनको गुस्सा आयगा ले लेंगे फिर तीरों कमाँ।
यह तेरी झूठी शिकायत फिर न बाक़ी रह सके, बेवकूफ इसको समझ ले है समझ तुझको कहाँ।
ये बड़े अल्फ़ाज़ सुन कर और रावण जल गया, जिस तरह घी से हुआ करती है आग आतिश फ़शाँ।
कुंभकरण है भाई मेरा और बेटा इन्द्रजीत, मैंने दुनिया पर फतह पायी है, जीता है जहाँ।
और कहा इमदाद ले कर वानरों से राम ने, बाँधा है दरिया पे पुल, इसमें कोई खूबी है कहाँ।
पार दरिया को तो कर लेता है मामूली दरिन्द, क्या बहादुर होते है वो और होते पहलवाँ।
वह कवि हैं कल हैं बाजू मेरे, सुन बन्दर ज़रा, हो गये है जेर जिससे देवता और पहलवाँ।
मेरे आगे एक राजा की सना करता है तू, दिग्पालों ने भी जब चूमा है मेरा आस्ताँ।
सुलह करने मे उदू से क्या नही आती शरम, देख पहले मेरे बाजू फिर बन उसका मदहख्वाँ।
कौन रावण-सा दिलावर है जो सर को काट कर, दे दिया अपना हवन में बेखतर बेईंता आँ।
मैं जो कहता हूँ गवाही इसकी शिव देंगे ज़रूर, सर मेरे जलते थे सब और कुड था आतिशफ़शाँ।
मेरी पेशानी पे ये लिखा हुआ देखा जो मैं, दस्ते इन्साँ से मरूंगा हँस दिया मैं नागहाँ।
मुझको इसका भी नही कुछ खौफ़ है इस वास्ते, क्योंकि ब्रह्मा भी हुआ है अब जईफो नातवाँ।
लिख दिया होगा ग़लत कुछ सही उससे हो गया, तू अरे नादान बक-बक कर न अब मुझसे यहाँ।
ये कहा अगद ने तुझ-सा बेहया कोई नहीं, अपनी ही तारीफ़ तू करता है अपने मुंह बयाँ।
सर कटाया और उठाया तू ने जो कैलाश को, तेरे सर से वह निकलता ही नहीं अब तक समाँ।
जो सहस्रबाहू को जीता और बली बाली को भी, जोरो बाजू को छिपा रखा है दिल के दर्मियाँ।
बेसमझ अब छोड़ दे सर काटने का तज़करा, सोवेदाबाजो से क्या बतना है इन्साँ पहलवाँ।
काट कर टुकड़े किया करते है अपने जिस्म के, सोवेदाबाजी इसे कहते है सब जादू बयाँ।
गो पतंगे आग में जलते है लालच के सबब, भार उठाते है गधे, कह, ये बहादुर है कहाँ।
बात को अब मत बढ़ा कहना मेरा तू मान ले, राम का भेजा हुआ आया हूँ मैं तेरे यहाँ।
राम का कहना है मारे शेर गर गीदड़ कोई, कुछ नही उसकी बड़ाई कुछ नहीं है उसकी शाँ।
मैं तो उनकी बात ही को याद रख कर इसलिए, सुन रहा हूँ तेरी बातें सह रहा हूँ शोखियाँ।
वर्ना सीता को मैं ले जाता तेरा मुंह तोड़ कर, तेरी ताक़त और क़ूवत हो गयी मुझ पर अयाँ।
गैर औरत को चुराया तूने तनहाँ देख कर, गो है तू मग़रूर और कुल राक्षस पर हुक्मराँ।
राम के सेवक का भी सेवक हूँ एक अदना ज़रूर, वह करिश्मा कर दिखाऊँ जिससे हैराँ हों जहाँ।
फेंक कर तुझको जमीं पर मार कर सब फ़ौज को, शहर तेरा सब जला कर खाक़ कर दूँ नागहाँ।
औरतें जितनी जवाँ है सबको सीता जी के साथ, ले के हो जाऊँ यहाँ से एक-दो पल में रवाँ।
ये भी करना जेब कुछ देता नहीं बिलकुल मुझे, जो हो मरता मारना उसको है अच्छा ही कहाँ।
वाम योगी होवे या ऐयाश हो कंजूस हो, बेखिरद हो या कि हो बदनाम, मुफलिस, नातवाँ।
जो हमेशा का हो रोगी या दवा में गुस्सावर, विष्णु की पूजा से गफ़लत मे करे जावे गिराँ।
जो करे इनकार हरदम वेद के अहकाम से, और करे बरताव संतो से मिसाले दुश्मनाँ।
अपना ही जो हो मुहाफ़िज गैर की रीवत करे, और जो पापी हो—ये है चौदह मुर्दे बेगुमाँ।

इसलिए मैं मारता तुझको नहीं हूँ बदनसीब. अब न गुस्से में मुझे ला, कर दिया तुझसे बयाँ।
सुनके यह अल्लाज़ रावण हाथ मलने लग गया, अपने दाँतों से वो काटा ओठ और अपनी ज़बाँ।
नीच बन्दर मौत तेरी आ गयी बिलकुल क़रीब, मुँह है छोटा और तू करता है यों तूले ज़बाँ।
जिसके बल पर कूदता है उसमें बल कुछ भी नहीं, इसलिए तो बाप ने वन को किया उसको रवाँ।
फ़िक्र है उसको हँसी की और जोरू का है ग़म, और फिर डर है मेरा उसके लिए तुर्फा बराँ।
जिसकी हिम्मत है तुझे, ऐसों को मेरे राक्षस, रात दिन खाते हैं उनको है खबर तुझको कहाँ।
राम की तजलील से अंगद को गुस्सा आ गया, कान से उनकी बुराई सुन वो सकते थे कहाँ।
कट कटाया ज़ोर से और अपने दोनों हाथ को, ज़ोर से मारा ज़मीं पर हिल गयी वह नागहाँ।
लोग जो दरबार में थे खौफ से अकसर गिरे, और कई दरबार से उठ कर हुए फ़ौरन रवाँ।
शाहे रावण गिरेते-गिरते फिर सँभल कर उठ गया, ताज उसके सर के सब गिरने लगे नीचे वहाँ।
चन्द तो खुद उसने ले कर अपने सर पर रख लिये, और कुछ अंगद ने फेंके उनमें से जेरे समाँ।
उनको फेंका उस तरफ़ जिस सिम्त में थे रामचन्द्र, वानरों ने देख कर उनको किया दिल में गुमाँ।
माजरा क्या है कि दिन में टूटते तारे हैं यह, या कि रावण ने कोई है वज्र फेंका यह यहाँ।
राम कहने लग गये कुछ बात यह डर की नहीं, वज्र रावण का नहीं है और न ये सैयारगाँ।
यह मुकट रावण के हैं फेंके हैं बाली-पुत्र ने, जो चले आये हैं सीधे किस तरह देखो यहाँ।
फिर उछल कर हाथ में हनमान ने उनको लिया, राम के आगे रखा सब वानरों के दर्मियाँ।
रीछ और वानर तमाशा देखने उनका लगे, रौशनी जिसमें ज़्यादा मेहर से भी थी अयाँ।
हो के बरहम यों कहा रावण ने इसको मार दो, और भागो चौतरफ़ मेरे बहादुर पहलवाँ।
रीछ वानर जिस जगह मिल जाएँ खा डालो उन्हें, बानरों का कुछ न बाक़ी रह सके नामोनिशाँ।
क़ैद कर लो दोनों भाई राम और लक्ष्मण को भी, इस तरह अपनी सभा में वह हुआ आतिशफ़शाँ।
फ़िर कहा अंगद ने आती शर्म तुमको कुछ नहीं, देख कर ताक़त मेरी खुलती है फिर तेरी ज़बाँ।
चोर, पापी, बदचलन और बेवकूफ़ो नासमझ, हो गया सरसाप तुझको अक़्ल है तेरी कहाँ।
शान में जो राम की बेहूदा है तू बक रहा, क्यों नहीं तेरे इस मुँह से टूट कर गिरती ज़बाँ।
तेरे सर मैदान में कट कर जो गिरते जाएँगे, साथ ही उनके गिरेगी मुँह से भी तेरी ज़बाँ।
जिसके एक ही बाण से बाली का मरना हो गया, यह बता इन्सान हो सकता है वह कैसे कहाँ।
बीस आँखें हैं तेरी और फिर भी अन्धा ही है तू, तुझ पे लानत है हज़ारों, ज़िन्दगी है रायगाँ।
मैं तेरे दाँतों को अब भी तोड़ सकता हूँ मगर, क्या करूँ मजबूर हूँ, है राम का मंशा कहाँ।
दिल यह कहता है कि सारे तोड़ डालूँ सिर तेरे, और लंका को भी कर दूँ गरक़े दरियाँ बेगुमाँ।
है ये लंका एक गुल्लर, और तुम कीड़े हो सब, मैं हूँ बन्दर तो इसे खालूँगा बेशकोगुमाँ।
ऐसी बातें सुनके अंगद को कहा रावण ने यह, इस क़दर बातें बड़ी सीखा है ऐ नादाँ कहाँ।
बाप तेरा तो कभी इतना कहा करता न था, मिलके इन दोनों से अब तू हो गया है बदज़बाँ।
यों कहा अंगद ने तेरे बीस दंड हैं बेवक़ूफ़, तेरे मुँह से खींच डालूंगा मैं तेरी हर ज़बाँ।
होके बरहम पैर अपना ज़ोर से रख कर कहा, पैर मेरा तो हटा दे राम वापस हो रवाँ।
हार जाऊँगा मैं सीता को भी यह भी है परण, कहके ये जम कर खड़ा यह हो गया शेरेज़ियाँ।
तब कहा रावण ने बन्दर को पकड़ कर फेंक दो, इन्द्रजीत उट्ठे, कई दौड़े बहादुर पहलवाँ।
कोशिशें करते थे लेकिन पैर कुछ हटता न था, हो गये नाकाम सब बैठे वे होके नातवाँ।

आके सब कोशिश किये जितने वहाँ थे राक्षस, लाख वह कोशिश किये लेकिन वो हटता था कहाँ।
हार मानी सबने अंगद की ये ताक़त देख कर, और यह गर्जा सभा में जैसे एक शेरेज़ियाँ।
तबतो रावण खुद उठा उसको उठाने के लिए, और मुख़ातिब होके अंगद यों हुए गोहरफ़शाँ।
पैर छूने से मेरा तेरा भला होगा नहीं, राम का तू पैर छू ले होगा तब ही शादमाँ।
सुनके खिसिया गया रावण लौट कर वापस हुआ, जाके सिंहासन पे अपने हो गया जलवा कुनाँ।
लेकिन उसकी हिम्मते कुछ पस्त होने लग गयी, माह की जू जिस तरह होती है दिन में रायगाँ।
करके नीचा सर वह जाके बैठा सिंहासन पे यों, जैसे खो दी हो किसी ने मालोपूँजी बेगुमाँ।
राम दुनिया के हैं मालिक और सबकी जान हैं, उनसे जो होगा मुख़ालिफ़ चैन पाएगा कहाँ।
नीचा-ऊँचा कर जो सकते हैं तमामी दहर को, है परन काशिफ़ा उनके टूट सकता है कहाँ।
फिर भी की तक़लीफ़ अंगद ने, मगर माना न वो, मौत उसकी आ गयी थी, अब वह सुनता ही कहाँ।
राम की तारीफ़ वह करते हुए दरबार से, हो गये अंगद पिसर बाली के उठ कर खुद रवाँ।
खेलते ही खेलते मारूँगा तुझको जंग में, पहले ही तारीफ़ अपनी तुझसे क्या कर लूँ बयाँ।
पुत्र जो मारा गया था सुनके उसका माजरा, दुःख हुआ रावण को बेहद और किया आहोफ़ुँगा।
राक्षस सब डर गये अंगद की क़ूवत देख कर, खौफ़ सब पर छा गया और हो गये सब नीमजाँ।
तोड़ कर ज़ोरे उदू—बतला के अपने ज़ोर को, राम के चरणों में आया शाद हो कर पहलवाँ।
हो गयी थी शाम रावण भी गया रनिवास में, फिर किया मन्दोदरी ने उससे अपना यों बयाँ।
छोड दीजे ये हिमाक़त, ग़ौर करके आप खुद, राम से मद्दे मुकाबिल आप हो सकते कहाँ।
खींच दी थी उनके भाई ने जो एक छोटी लक़ीर, पार उसको भी नहीं जब कर सके थे बेगुमाँ।
मेरे प्यारे आप क्या हैं जीत सकते उनको भी, जिनका क़ासिद फाँद कर दरिया चला आया यहाँ।
जिनके ज़ोरे तेग़ से मारा गया अक्षय कुँवार, शहर बाग़ीचे जले, मारे गये सब पहलवाँ।
आपकी सब वीरता उस वक़्त थी किस जा छुपी, झूठ और बेकार क्यों अब हाँकते हो शोखियाँ।
राम को इन्सान मामूली न कोई जानिए, उनकी क़ूवत है ज़्यादा बरतरज वहमो गुमाँ।
राम के तीरों की क़ूवत जानता मारीच था, आपने उसका भी कहना कुछ न माना, मेरी जाँ।
जब जनक के घर धनुष यज्ञ की हुई तक़रीब थी, सब महाराजा जमा थे आप भी थे पहलवाँ।
तोड़ कर शिव का धनुष जीती थी जिसने जानकी, क्यों नही हो कर मुक़ाबिल उनको जीता था वहाँ।
इन्द्र का लड़का जयन्त उनकी है क़ूवत जानता, एक ही बस आँख ले कर बख़्श दी थी जिसकी जाँ।
अपनी आँखों देखा तुमने सुपनखा का हाल सब, अब भी कुछ शर्मोहया का है नहीं नामोनिशाँ।
जिसने खरदूषण को मारा और मारा है विराध, एक ही नावक से जिसने ली है बाली की भी जाँ।
पुल जो दरिया पर बनाया आ गये दरिया के पार, आप ही की खैर को है दूत भी भेजा यहाँ।
आपके दरबार का जिसने मिटाया सब घमंड, जैसे हलचल हाथियों में डाल दे शेरेज़ियाँ।
राम ही के हैं वे सेवक अंगदो हनुमान भी, जोकि है दोनों बहादुर और दोनों पहलवाँ।
आप बेजा ले रहे हैं हिर्स और नखवत् का वार, आ गयी है मौत आगे कजरवी पर हो रवाँ।
मौत डंडा ले के कुछ आती नहीं है हाँकते, फ़हम और क़ूवत सचाई को है करती रायगाँ।
मेरे मालिक मौत जिसकी आती जाती है क़रीब, आप ही-सा उसमें हो जाता है सब वहमोगुमाँ।
लखतेदिल दो मर गये और शहर सारा जल गया, अब तो इस किस्से को कीजे खत्म ऐ मालिक यहाँ।
वीर जैसे ये सुखन बीबी के सुन कर चुप रहा, और सवेरा जब हुआ, उठ कर हुआ बाहर रवाँ।

रामने अंगद को अपने सामने बुलवा लिया, हँस के फ़रमाया कि मुझको है ये ताज्जुब बेशुमाँ।
रावण ऐसा है बहादुर और शाहे राक्षस, तुम मुकट चार उसके सर के किस तरह फेंके यहाँ।
अर्ज़ ये अंगद ने की वह ताज थे हरगिज़ न चार, पर सिफ़त हैं चार—जो राजा में होती हैं निहाँ।
साम, दाम और दण्ड, भेद है चार ये राजा के गुण, धर्मके है ये तरीक़े वेद में भी हैं बयाँ।
चूंकि रावण में नहीं कुछ धर्म अब बाक़ी रहा, इसलिए वह गुण चले आये है चरणों में यहाँ।
अक़्ल रावण की गयी, मौत आयी है उसकी करीब. आपके इस मरतबे का वह नहीं है कद्रदाँ।
देख कर अंगद की दानाई हुए खुश रामचन्द्र, और अंगद ने किया सब हाल लंका का बयाँ।
जबकि कासिद से जवाब अपने अदू का मिल गया, राम ने सबको बुलाया, यों हुए गौहर फ़शाँ।
ऐ मशीरो, किला लंका का बहत मजबूत है, किस तरह उस पर पे धावा होगा कीजेगा बयाँ।
राजाए सुग्रीव वानर राज ओ राजा जामवन्त, और विभीषण भी हुए इस मश्विरे में हमज़बाँ।
चार हिस्सों में किया तक़सीम सारी फ़ौज को, और किये मामूर अफ़सर भी जो थे शायानेशाँ।
और समझाया उन्हें परताप कह कर राम का, सुनके जिसको सब गरज उट्ठे बहादुर पहलवाँ।
पैर छू कर राम के है दौडने और दीखने, राम की जय का वो नारा है लगाते हर जबाँ।
जानते हैं किला है मजबूत लंका का बहत, फिर भी वह बेखौफ़ हैं, हिम्मत है दिल के दर्मियाँ।
इस तरह हो कर निडर चारों तरफ़ से घेरते, वानरो भालू की फौजें सूये लंका थी रवाँ।
राम की जय का था नारा और लक्ष्मण की भी जय, राजाए सुग्रीव की जय का था नारा बरजवाँ।
सुन के ये आवाज लंका में मचा कुहराम एक, हँस के रावण ने कहा देखो ये उनकी शोखियाँ।
फौज को अपनी बुलाया और वह सब आ गये, और मुखातिब उनसे हो कर यों हुआ खन्दादहाँ।
राक्षस मेरे कई दिन से जो भूखे है वे सब. कुदरतन वानर व भालू आ गये हैं सब यहाँ।
जाओ इनको तुम पकड लो और खा डालो उन्हें, लेके सब हथियार अपने वह हुए फ़ौरन रवाँ।
सुन के यह दौडे गये वे बेसमझ सब राक्षस, वह नहीं ये जानते थे इसमें खुद का था जियाँ।
क़िले पर चढ़ने लगे लाखो हजारों राक्षस, एक से था एक ताकतवर बहादुर पहलवाँ।
बुर्ज पर ऐसे नज़र आते थे ये सब राक्षस, कोह की चोटी पे बादल फिर के हो जैसे समाँ।
जंग का बाजा बजा और ढोल बजने लग गया, हिम्मतें बढ़ने लगीं, जो थे सिपाही पहलवाँ।
भेरी और बजनी नफ़ीरी भी जहाँ थी बेशुमार, जो थे बुजदिल हो रहे थे सुन के इनको नीमजाँ।
राक्षस ने देख ली मैदान में फौजे उदू, वानरों भालू हैं लाखों और बहादुर पहलवाँ।
दौड़ते हैं, काटते हैं, दाँत को हैं पीसते, झाड़ को वो तोड़ते हैं फोड़ते कोहे गिराँ।
इस तरफ़ रावण की जय है उस तरफ़ है राम की, यों दुहाई हर तरफ़ है अपनी-अपनी बरजबाँ।
जब दुहाई यह हुई आगाज लड़ना हो गया, वानरों पर फेंकते थे राक्षस कोहे गिराँ।
ले के वानर हाथ में वापस उन्हें थे फेंकते, और पकड कर पैर उनके थे घुमाते दर्मियाँ।
कूद कर वानर व भालू भी क़िले पर चढ़ गये, फेंक देते थे जमीं पर राक्षस मिलते जहाँ।
सैकड़ों वानर ममल डाले हजारों राक्षस, और क़िले पर फिर वो चढ़ जाते थे जैसे बिजलियाँ।
झुण्ड के झुण्ड राक्षस के भागने तब लग गये, जिस तरह बादल हवा के ज़ोर से होते रवाँ।
शहरे लंका में मचा कोहराम हाहाकार का, तिफ़्लो ज़न बीमार सब करने लगे आहोफ़ुगाँ।
सब यह कहते थे कि इस कमबख़्त को क्या हो गया, बरसरे तख्ते हुकूमत पे जो था जलवाकुनाँ।
मौत को अपने बुलाया है ये अपने हाथ से, इस तरह रावण को ये सब दे रहे थे गालियाँ।

देखा रावण ने कि फौज अपनी परागन्दा है अब, सब को वह वापस बुलाया और यों खोली जबाँ।
जो कोई मैदान से वापस चला जाएगा आज, अपनी ही तलवार से ले लूँगा मैं खुद उसकी जाँ।
आज तक खाया हमारा ऐश और आराम से, आज लड़ने के लिए प्यारी हुई है अपनी जाँ।
सुनके उसकी बात यह सब राक्षस डरने लगे, होके शर्मिन्दा वो लड़ने को हुए वापस रवाँ।
जंग ही में जान दे देना यह है मर्दों का काम, जब ये सूझा, जान की परवाह फिर रहती कहाँ।
ले के वो हथियार अपने वानरों से भिड़ गये, इस क़दर पीटा कि सब के खो गये ताबोतवाँ।
हो के वह बेताब यों कहने लगे आवाज से, अंगदो हनुमान नल नीलो दुर्मुख हैं कहाँ।
पच्छमी दर पर जहाँ हनुमान जी थे लड़ रहे, यह सुना, कुछ फौज अपनी हो गयी है नातवाँ।
मेघनाद हनुमान में जंग हो रही थी जोरदार, इस कदर मजबूत था दर, टूटता था ही कहाँ।
आ गया हनुमान को गुस्सा तो ले कर एक पहाड़, दौड़ कर आगे किये रथ के भी उसकी धज्जियाँ।
सारथी को मार कर लात एक दी मेघनाद को, लोग ले आये उसे घर जब हुआ वह नातवाँ।
जब सुना अंगद, किले पर चढ़ गये हनुमान है, कूद कर वह भी किले पर चढ़ गये फ़ौरन वहाँ।
दोनों यह ऊधम मचाये और किले पर चढ़ गये, राम जी की है दुहाई उनके था विरदेजबाँ।
कसरे शाही को गिराने लग गये ये लोग जब, खौफ रावण को हुआ रोने लगी सब रानियाँ।
पीट कर छाती थी कहती, हाय यह क्या हो गया, अब के भी वानर हैं आये, है मुसीबत का समाँ।
ये गरजते घूरते उनको डराते जोर से, ले के खम्भे कसर के कूदे वह दल के दर्मियाँ।
लात, मुक्की और पत्थर से उन्हें थे मारते, यों खबर ले ले के उनकी, कर दिये बस नीमजाँ।
सैकड़ों को वो मसल कर, सैकड़ों सर फोड़ कर, फेंक देते थे वहाँ दशशीश रावण था जहाँ।
जा के सिर रावण के आगे इस तरह थे फूटते, जिस तरह हैं फूटती जाती दही की हंडियाँ।
और जो अफसर कोई फौजे अदू का मिल गया, फेंक देते थे उसे थे रामचन्द्र जी जहाँ।
और विभीषण नाम हर एक का सुनाते राम को, राम की चश्मे करम से बख्श दी जाती थी जाँ।
ऐसे बदकिरदार थे, बदबख्त थे ये राक्षस, खुश नसीबी देखिए ऐसे नसीब होते कहाँ।
गो अदावत ही से उनको देखते हों राक्षस, राम का तो नाम लेते है, यह किस्मत है कहाँ।
राम की हरये खता बख्शी वह उनको दर गुजर, किस क़दर वो रहम दिल हैं, किस क़दर हैं मेहरबाँ।
कर दिया दोनों ने बस लंका को यों जेरोजबर, जैसे मदरा चल पड़े थे दो समुंदर बेगुमाँ।
इस तरह ऊधम मचा कर शाम जब होने लगी, दोनों वापस आ गये थे रामचन्दर जी जहाँ।
देख कर दोनों सिपाही हो गये खुश रामचन्द्र, और किया उनके गुणों का अपने मुँह से भी बयाँ।
अंगदो हनुमान जब वापस हुए यह देख कर, और भी जितने थे वापस आ गये सब वानराँ।
यों पलटना देख कर और वक्ते मगरिब जान कर, राक्षस उन पर किये हमला अकब से नागहाँ।
वानरों ने यह देखा आ रहे हैं राक्षस, फिर पलट कर भिड़ गये लड़ने को ये सब पहलवाँ।
राक्षस थे सब सियारू और ये थे सुर्खरू, दोनों जानिब थे बहादुर दोनों जानिब पहलवाँ।
जंग होने लग गयी और राक्षस जब कुछ दबे, थे अकंपन और अतीकाई ये फौजी अफ़सराँ।
एक पल भर में किया इस तरह इन दोनों ने खेल, छा गया पूरा अँधेरा और जुल्मत का समाँ।
खूब पत्थर राख की बरसात होने लग गयी, हो गये हैरान वानर खो दिये ताबोतवाँ।
राम ने जाना ये सब कुछ और कहा हनुमान से, अंगदो हनुमान दोनों हो गये फ़ौरन रवाँ।
राम जी हँसते हुए अपनी जगह से उठ गये, और फ़ौरन तीर खींचा जो कि था आतिशफशाँ।

जिसके वाअस जो अँधेरा था वह सब जाता रहा, ज्ञान से जैसे बुराई दिल की होती है रवाँ।
अंगदो हनुमान गर्ज डट गये सब राक्षस, रोशनी पा कर हुए वानर व भालू शादमाँ।
भागते थे राक्षस वानर पकड़ते थे उन्हें, और पटकते थे ज़मी पर उनको करके नातवाँ।
और पकड़ कर पैर उनके फेकते दरिया में थे, साँप बिच्छू और मगर खा लेते थे जिनको वहाँ।
कुछ मरे, घायल हुए कुछ, और कुछ गढ़ पर चढ़े, और गरजते जा रहे थे शोर करते वानराँ।
हो गयी थी रात चारों सिम्त के दल आ गये, लौट कर सब आ गये, थे रामचन्दर जी जहाँ।
इस तरफ़ रावण ने बुलवा कर तमाम अरकान को, जो बहादुर मर गये करने लगा उनका बयाँ।
फौज़ आधी मर गयी है राय का इज़हार हो, किस तरह आगे अमल हो, कीजिए मुझसे बयाँ।
मालवान उसका था नाना और ज़ईफ़ुल उमर था, मरतबा उसका था ऊँचा और था इज़्ज़त निशाँ।
यों कहा उसने की बाबा, बात मेरी भी सुनो, जब से सीता आयी है कितनी मुसीबत है यहाँ।
जिसने हिरनकुश को मारा और मधुकेटभ को भी, ऐसी कूवत के मुक़ाबिल होके जीतोगे कहाँ।
जो बुरों को मारते है और गुणों के धाम है, शिव ब्रह्मा जिनकी सेवा में लगे हैं हर जमाँ।
जानकी को भेज दो और उनकी सेवा में रहो, है इसी में चैन तुमको, है इसी में खूबियाँ।
ऐसी कड़वी बात को रावण न कानों सुन सका, और कहा, बूढ़े निकल हरगिज न रहना तू यहाँ।
हो गया अब तू है बूढ़ा वर्ना तुझे मैं मारता, अब ये मरने ही को है सोचा ये दिल में मालवाँ।
वह बुरा कहता हुआ रावण को अपने घर गया, हो के बरहम मेघनाद उठ्ठा बहादुर पहलवाँ।
और कहा कल सुबह मेरी आप जुर्रत देख लें, जो दिलेरी मैं करूंगा कर नहीं सकता बयाँ।
सुनके लड़के का वचन रावण को हिम्मत हो गयी, प्यार से नज़दीक उसको वह बिठाया बेग़माँ।
जब सबेरा हो गया वानर ने फिर घेरा किया, शहर में होने लगे हर सिम्त से आहोफ़ुगाँ।
राक्षस भी सब मुसल्लह हो कर ऊपर चढ़ गये, और क़िले पर से गिराने लग गये कोहेगिराँ।
और गोले फेंकते थे इस तरह वह जोर से, जैसे बिजली की चमक से है नज़र आता समाँ।
वह गरजते ज़ोर से थे जैसे बादल की गरज, हो रहे ज़ख्मी थे बानर उनसे लड़ कर बेगुमाँ।
हो गये ज़ख्मी मगर बानर न मैदाँ से हटे, फेंकते पत्थर क़िले पर थे वह बाफ़म पहलवाँ।
जब हुआ मालूम बानर आ के फिर हैं घिर गये, मेघनाद उतरा क़िले पर से बहादुर पहलवाँ।
और डंके को बजा कर यों कहा आवाज़ से, राम और लक्ष्मण वो दो भाई हुए है क्यों निहाँ।
अंगदो हनुमान कहाँ है और वह सुग्रीव भी, नल व नील अब है कहाँ दुविमुख बताओ हैं कहाँ।
भाई का दुश्मन कहाँ है वह विभीषण धोखाबाज़, खास कर उसको बनाऊँगा मैं तीरों का निशाँ।
इस तरह कहते हुए गुस्सा गज़ब का आ गया, और वह नावक को खींचा हाथ में ले कर कमाँ।
बाण ऐसे चल रहे थे जैसे साँपों की क़तार, हो के घायल गिरते जाते थे हज़ारों बानराँ।
कोई भी उसके मुक़ाबिल ठहर सकता था नहीं, हिम्मतें टूटी, हुए बानर तमामी नातवाँ।
बाद इसके तीर मारा सबके दस-दम मेघनाद, और गर्जा इस तरह जैसे कोई शेरेज़ियाँ।
देखा जब हनुमान ने यह बानरों का हाले जार, भर गये गुस्से में, दौड़े ले के एक कोहेगिराँ।
फेंका उसको ज़ोर से जिस जा खड़ा था मेघनाद, देख कर कोहेगिराँ को, वह हुआ फ़ौरन दवाँ।
रथ के टुकड़े हो गये और सारथी भी मर गया, और कहा हनुमान ने—आजा मुक़ाबिल में यहाँ।
खौफ़ से आता नहीं वह जानता था इनका ज़ोर, इसलिए वह अब गया थे रामचन्दर जी जहाँ।
और कई हथियार फेंका जिसको काटा राम ने, और मुँह से देते जाता था हज़ारों गालियाँ।

राम की क़वत जो देखी, छा गयी शर्मिन्दगी, चालबाज़ी के वह करने लग गया करतब वहाँ।
देखो नाहिनजार चलता है उन्हीं से चाल यह, जिनसे ब्रह्मा और शिव भी जीत सकते है कहाँ।
उड़के ऊपर वह बहुत ही आग बरसाने लगा, और पानी की भी धारें थीं ज़मीं पर से रवाँ।
मुखतलिफ़ अकसाम के फैला दिये भूतों पिशाच, मारों और काटो के थे अल्फाज़ बस बिरदे ज़बाँ।
वह कभी तो फेंकता था गन्दगी और कभी खून, और कभी वह फेंकता था बाल भी और हड्डियाँ।
फिर किया बौछार उसने पत्थरों की बेशुमार, धूल उड़ा कर कर दिया फिर उसने जुल्मत का निशाँ।
जब अंधेरे में किसी को कुछ नहीं था सूझता, सब परेशान हो गये घबरा उठे सब बानराँ।
देख कर हैरानी इनकी राम जी हँसने लगे, और समझे हो गये खायफ है मेरे बानराँ।
एक ही वह तीर मारे सब तमाशा मिट गया, जिस तरह सूरज की किरणों से अंधेरा हो रवाँ।
राम की चश्मे करम से सब हुए फिर ताजादम, रोकने से भी नहीं रुकते थे लड़ने बानराँ।
साथ अंगद को लिये, ले कर इजाज़त राम से, लक्ष्मण तीरो कमाँ ले कर हुए फ़ौरन रवाँ।
लाल आँखें, चौड़ी छाती और बाजू खूबतर, रंग गोरा, जिनकी है तारीफ में क़ासिर जबाँ।
उनकी हमराही में थे बानर बहादुर और दिलेर, इस तरफ रावण ने भी भेजे कई एक पहलवाँ।
इस तरफ़ था जय का नारा, उस तरफ़ जय की पुकार, दोनों जानिब थे बराबर, लड़ रही थी जोड़ियाँ।
लात मुक्की मारते थे काटते थे दाँत से, बानरों ने इस तरह ऊधम मचाई बेशुमाँ।
शोरोगुल इतना किया चारों तरफ़ फैली सदा, सैकड़ों की कट के गिरने लग गयी थी मुंडियाँ।
देवता यह देखते थे रंग अपनी जाय से, कुछ तो था अफसोस उनको और कुछ थे शादमाँ।
खून बहते-बहते अपनी जाय पर सब जम गया, खाक ऊपर जम गयी, चलने लगी जब आँधियाँ।
लक्ष्मण और मेघनाद आपस में लड़ने लग गये, एक से जब एक बढ़ कर हो फिर जीतेगा कहाँ।
चालबाज़ी लक्ष्मण के साथ वह करने लगा, तब तो गुस्सा आ गया उनको निहायत बेशुमाँ।
तोड़ डाला उसके रथ को, सारथी भी मर गया, इस कदर पीटा उसे, वह हो गया बस नीमजाँ।
दिल में वह समझा कि मेरी जिन्दगी है अब मुहाल, ये तो ले कर ही रहेंगे अब यकीनन मेरी जाँ।
उसने शक्ति बाण को ले कर चलाया हाथ से, जो कि जा कर लग गया लक्ष्मण के सीने के नियाँ।
इसके लगने से जरा लक्ष्मण को चक्कर आ गया, और ये बेखौफ़ हो कर आ गया उनके यहाँ।
चूँकि ये बेहोश थे इनको उठाये राक्षस, सैकड़ों कोशिश किये लेकिन ये उठते थे कहाँ।
जब न उठ्ठे हो गये वह सब खजिल वापस गये, हो गये तरफ़ैन वापस, शाम का जब था समाँ।
राम ने पूछा कि लक्ष्मण क्यों नहीं आये अभी, इतने में हनुमान ले कर उनको पहुँचे ही वहाँ।
देख कर भाई की हालत राम जी गमगीं हुए, जामवन्त ने कहा एक वैद्य रहता है यहाँ।
नाम उसका है सुषण उसको बुला लाये कोई, चल दिये हनुमान फ़ौरन और ले आये वहाँ।
एक जड़ीबूटी बतायी इनके दर्मा के लिए, कोह का भी नाम बतलाया, ये होती थी जहाँ।
मुस्तइद हनुमान हो कर उसके लाने को गये, और खबर इसकी उधर रावण ने पायी बेशुमाँ।
कालनेमी से कहा रावण ने जा कर अज़िज़ से, कुछ रुकावट डाल दो इस काम के तुम दर्मियाँ।
उसने समझाया बहुत, बोला खयाले खाम है, उनसे लड़ने में तुम्हारा हर तरह होगा जियाँ।
यह नसीहत उसकी रावण के समझ मे कुछ न आयी, और गुस्से में भर आया, खो दिया तावोतवाँ।
वह यह समझा रावण बद मुझको मारेगा जरूर, इससे बेहतर राम के सेवक से जाए मेरी जाँ।
रास्ते में बाग़ और तालाब एक अच्छा बना, और मुनी का वेष ले कर आप खुद बैठा वहाँ।

देखा जब हनुमान ने तालाब भी और बाग़ भी, मैं मुनी से पूछ कर, पानी न क्यों पी लूं यहाँ।
जो बना नक़ली मुनी था देखा जब हनुमान को, राम के औसाफ़ वह करने लगा इनसे बयाँ।
रामो रावण मे लड़ाई हो रही है आज कल, राम जीतेंगे यक़ीनन कुछ नही शक्कोगुमाँ।
मैं यहाँ रहता हूँ लेकिन जानता हूँ हाल सब, मैं यहाँ से देख सकता हूँ, जो होता है वहाँ।
पानी पीने के लिए हनुमान ने उससे कहा, दे दिया भर कर कमंडल उसने पानी बेगुमाँ।
तिश्नगी हनुमान की उसमें नही जब जा सकी, वह मुनी बोला कि है तालाब—तुम जाओ वहाँ।
जब गये तालाब में यह पानी पीने के लिए, पैर पकड़ा एक मगर ने जो था पानी मे निहाँ।
मार डाला उसको फ़ौरन तब श्री हनुमान ने, उसकी मुर्त्ता हो गई और वह गया इनके यहाँ।
एक मुनी की बद्दुआ से मैं मगर था बन गया, आपके दर्शन से अब मैं हो गया हूं कामराँ।
यह मुनी बन कर जो बैठा है, नही है यह मुनी, बल्कि यह है राक्षस जो ढोंग करता है यहाँ।
उस मुनी के पास तब हनुमान जी वापस गये, और कहा—सेवा तुम्हारी पहले करनी है यहाँ।
दुम में अपनी उसको लिपटा और पछाड़ा ज़ोर से, आख़िरी दम राम ही का नाम था विरदे ज़बाँ।
जब दवा लाने को पहुंचे कोह पर हनुमान जी, वह न पहचाने कि है यह कौन-सी बूटी यहाँ।
इसलिए वह कोह को सर पर उठा कर चल दिये, और अयोध्या पर से गुज़रे जिस तरह मौजे रवाँ।
भरत ने समझा कि जाता है ये कोई राक्षस, तीर को अपने चलाया हाथ में ले कर कमाँ।
तीर लगते ही गिरे हनुमान, बेहोश हो गये, राम का था ध्यान दिल मे राम ही विरदे ज़बाँ।
जब सुना अल्फ़ाज़ यह तब भरत के होश उड़ गये, दौड़ कर पास आये और करने लगे आहोफ़ुगाँ।
भरत ने इनको जगाया, यह पड़े ग़फ़लत में थे, इनको छाती से लगाया और हुए ख़ुद ख़स्ताजाँ।
आँख में आँसू भर आये और कहा यह भरत ने, राम की फ़ुरक़त का दुःख था हाँ यह है तुर्फ़ाबराँ।
राम का दिल और जाँ से हूं अगर सच्चा ग़ुलाम, अपनी बेहोशी से हो जाये यह चंगा बेगुमाँ।
ज्योंही उनके मुँह से ये अल्फ़ाज़ ज़ाहिर हो गये, उठ के ये बैठे, थो रघुनाथ था विरदे ज़बाँ।
भरत छाती से लगाये इनको बेहद शौक़ से, राम की उल्फ़त से आंखों से हुए आँसू रवाँ।
ख़ैरियत राम और लक्ष्मण की जो पूछी भरत ने, तब किया अहवाल सब हनुमान ने उनसे बयाँ।
कैफ़ियत सुन कर हुए तब भरत जी बेहद उदास, और पछताने लगे यह अपने दिल मे बेगुमाँ।
मैं न आया काम कुछ रघुनाथ के अफ़सोस है, क्यों हुआ पैदा मैं दुनिया मे, मैं क्यों आया यहाँ।
और कहा जाने मे तुमको देर हो जाए अगर, मुमकिन हो जाये तो शायद काम बिगड़ेगा वहाँ।
बाण पर मेरे चढ़ो तुम सिर पर पर्वत को लिए, मैं तुम्हें पहुंचा अभी देता हूँ भाई है जहाँ।
दिल मे यह हनुमान समझे किस तरह मुमकिन है ये, राम को वो याद करके, यों किये अर्ज़ेबयाँ।
आपको तकलीफ़ की इसमें ज़रूरत कुछ नहीं, आपके परताप से जल्दी मैं पहुँचूंगा वहाँ।
भरत से ले कर इजाजत वह रवाना हो गये, भरत के औसाफ़ के थे दिल मे अपने मदहख़्वाँ।
अब वहाँ का हाल सुनिए लक्ष्मण को देख कर, राम थे बेचैन बेहद और यों ख़ाली ज़बाँ।
रात आधी हो गयी हनुमान वापस ही न आये, भाई तुमने वास्ते मेरे सही ये सख़्तियाँ।
गर्मी और सर्दी को तुम सहते यहाँ तकलीफ़ हो, वास्ते मेरे ही छूटे तुम से अपने बाप-माँ।
मैं हूँ बेचैन इस क़दर तुम क्यों नहीं उठते हो भाई, यह मुहब्बत क्या हुई, अब, और गयी उलफ़त कहाँ।
यह अगर मालूम होता भाई होगा यों जुदा, बाप के अहकाम को मैं टाल देता बेगुमाँ।
माल, दौलत, जन, पिसर दुनिया मे मिल जाते हैं सब, अपना साथी भाई, दुनिया में कभी मिलता कहाँ।

जिस तरह बेपर परिन्दा, फील हो बे सूंण्ड का, तुम न हो तो जिन्दगी हो जाए मेरी रायगाँ।
मैं अगर भाई को खो दूँ अपनी औरत के लिए, किस तरह जाऊँ अवध को, मुँह मैं दिखलाऊँ वहाँ।
सीता के खोने की बदनामी मुझे मंजूर थी, तुमको खो देना मुझे मंजूर भाई है कहाँ।
अब तो बदनामी भी होगी, और तुम्हारा दु:ख भी, अब मुझे सहनी पड़ेगी दो तरह की सख्तियाँ।
ऐ मेरे प्यारे, तुम्हारी माँ के एकलौते हो तुम, उनके हो तुम दिल से प्यारे, उनके हो आरामे जाँ।
तुमको लायक़ जान कर सौंपा उन्होंने था मुझे, क्या जवाब अब उनको दूँ मैं, क्या कहूँ तुम हो कहाँ।
इस तरह कहते हुए रोने लगे वह जार-जार, दोनों आँखें लाल थीं, आँसू की धारें थीं रवाँ।
उनको दुःख और सुख से कोई वास्ता मुतलक़ नहीं, ये तो दुनिया के दिखावे को किया था सब यहाँ।
सुनके उनका यह रुदन सब लोग रोने लग गये, आ गये इतने में हनुमां लेके एक कोहे गिराँ।
वैद्य जी ने कर दिया फ़ौरन ही बूटी से इलाज, तब तो लक्ष्मण जाग उट्ठे, बैठे उठ कर नागहाँ।
भाई को अपने गले से तब लगाया राम ने, जितने थे भालू व बानर, हो गये सब शादमाँ।
फिर उन्हें ले जा के उनके घर को पहुँचाया गया, वैद्य जो को जिस तरह हनुमान लाये थे वहाँ।
जब खबर सब हाल की रावण के कानों में पड़ी, सर को अपने पीट कर करने लगा आहोफ़ुग़ाँ।
कुम्भकरण जो भाई था उसका, गया वह उनके पास, सो रहा था जाग उट्ठे कम हुआ ख्वाबेगिराँ।
वह कवी है कल उठा और उठके यों कहने लगा, फ़िक्र के आसार चेहरे से तुम्हारे है अयाँ।
जिस तरह सीता को लाया और जो अब तक हुआ, रावण मगरूर ने सब कुछ किया उससे बयाँ।
और यह भी कह दिया मारे गये सब राक्षस, बानरों के हाथ से मारे गये सब पहलवाँ।
वह महूदर हैं नहीं अब, और अकम्पन है नहा, दुर्मुख और वह सरकुट अतिकाई नामीं अफ़सराँ।
कैफ़ियत सुन कर हुआ उसको निहायत ही मलाल, और कहा, किस वास्ते सीता को तुम लाये यहाँ।
और कहा, अच्छा नहीं तुमने किया है यह तो काम, राम से मिल जाओ तो हो जाओगे तुम शादमाँ।
जिनका हो हनुमान सेवक क्या कोई इनसान है, देर की मुझको जगाने में तो तूने भाई जाँ।
शिव व ब्रह्मा जिनके सेवक हैं अदावत उनसे लो, जो कहा था मुझसे नारद, क्या करूँ वह अब बयाँ।
जाके मैं दर्शन हूँ करता मुझसे मिल लो भाई तुम, इस कदर मुँह से कहा और हो गया वह शादमाँ।
सैकड़ों कुम्भ वह मँगाने के लिए मैं के कहा, और खाने के लिए भैंसे भी मँगवाये वहाँ।
पी के मय, भैंसों को खा कर, जब हुआ वह ताजादम, फिर तो गर्जा इस तरह जैसे कोई बरके तपाँ।
मस्त हो कर वह चला मैदाँ में लड़ने के लिए, साथ भी अपने नहीं रक्खा कोई हमराहियाँ।
जब विभीषण ने यह देखा भाई आता है मेरा, वह गये आगे, गिरे पैरों पे उसके बेगुमाँ।
भाई को अपने उठाया और गले लिपटा लिया, तब विभीषण ने कहा, भाई सुनो अर्जेबयाँ।
मश्विरा मैंने दिया था नेक, मारी मुझको लात, भाई रावण ने, उसी बाअस चला आया यहाँ।
मुझको आजिज जान कर साथ में अपने ले लिया, राम के अल्ताफ़ से मैं हो गया हूँ शादमाँ।
बोला वह रावण की मौत अब आ गयी बिलकुल करीब, उसको अच्छी बात अब, लगती है अच्छी भी कहाँ।
तू है खुश किस्मत कि आया राम की देहलीज पर, कर दिया तूने मुनव्वर अपना सारा खानदाँ।
मौत मेरी आ गयी, नजदीक अब जाता हूँ मैं, नेक और बद सूझता ही है मुझे भाई कहाँ।
बात इतनी जब हुई वापस विभीषण हो गये, और चले आये ये उस जा, रामचन्दर थे जहाँ।
कुंभकरण है आ रहे जा कर विभीषण ने कहा, दौड़ने सब लग गये उसके मुकाबिल वानराँ।
झाड़ पत्थर तोड़ते जाते थे अपने हाथ से, फेंकते जाते थे उस पर सब बहादुर पहलवाँ।

लाख मारें उसको और फेंके हज़ारो संग यह, कुछ अमर होता न था जाते थे वह सब रायगाँ।
आख़िरश हनुमान ने मारा उसे घूँसा जो एक, वह ज़मीं पर गिर गया और खो दिया ताबोतवाँ।
फिर वह उट्ठा और उठ कर मारा खुद हनुमान को, खाके चक्कर गिर गये वह भी ज़मीं पर नागहाँ।
नीलो नल को भी गिराया ज़ेर सब को कर दिया, खौफ से वानर डरे, होने लगे वापस रवाँ।
अंगदो सुग्रीव को बेहोश उसने कर दिया, दाब कर उनको बगल में वह हुआ जल्दी रवाँ।
रामलीला कर रहे थे यह दिखाने के लिए, ताकि वह जो कुछ किये थे आगे चल कर हो बयाँ।
जब गशी जाती रही हनुमान जी फ़ौरन उठे, ढूंढने वह लग गये सुग्रीव राजा है कहाँ।
और इधर सुग्रीव खुद भी होश में जब आ गये, वह खिसक कर खुद बगल से गिर गये नीचे वहाँ।
कुम्भकरण समझा कि ये है मर गया इस वास्ते, उनके जीने का नहीं था उसको कुछ शानोगुमाँ।
उठ गये सुग्रीव फ़ुरती से और फिर मारे उसे, नाक और कान उसके काटे, वह हुआ था नातवाँ।
कुम्भकरण ने पैर पकड़ा और पछाड़ा ज़ोर से, फिर जवाबन उसको भी मारा ये उठ कर पहलवाँ।
नाक-कान उसके कटे शर्मिंदा बेहद हो गया, भर गया गुस्से में और जाते रहे ताबोतवाँ।
और भी मूरत भयानक हो गयी इस बात से, देख कर उसकी ये मूरत डर गये सब वानराँ।
जय का नारा थे लगाते उस पे धावा बोल कर, झाड़ भी फेंके गये डाले गये कोहे गिराँ।
कुछ असर होता न था बेखौफ वह आगे बढ़ा, मौत का लुकमा बने जाते थे लाखों वानराँ।
सैकड़ों को वह मसलता जा रहा था जिस्म से, सैकड़ों को गाड़ देता था जमीं के दर्मियाँ।
जिनको डाला अपने मुँह में निकले कान और नाक से, और होते थे निकल कर इस तरह फौरन रवाँ।
हिम्मतें टूटी जो सब की, वो पलटने लग गये, लाख हिम्मत दी गयी, लेकिन वो सुनते थे वहाँ।
उस तरफ़ इमदाद को भाई जो भेजे राम ने, राम ने देखा कि लोग अपने हुए हैं नातवाँ।
यों कहा सुग्रीव से तुम और विभीषण और लखन, फौज को अपनी सँभालो मैं हूँ अब जाता वहाँ।
कुम्भकरण को और उसकी फ़ौज को समझूंगा मैं, हाथ मे ले कर चले रघुनाथ जी तीरो कमाँ।
जब कमाँ को अपने ठोका तेज आवाज एक हुई, हो गये बहरे उदू की फ़ौज में सब नागहाँ।
सैकड़ों तीरों को मारा राम जी ने इस तरह, जैसे पर के साँप उड़ कर हो रहे हों अब रवाँ।
तीर चलने लग गये मरने लगे सब राक्षस, कट रहे थे पैर, छाती, हाथ, सर और मुंडियाँ।
जो कि घायल हो रहे थे गिर रहे थे दमबदम, फिर सँभल कर कोई आ जाता था लड़ने पहलवाँ।
कोई उनमें था गुज़रता कोई बेधड़ भागता, कोई तो था खौफ से तीरों के वाअस ही रवाँ।
पकड़ो-पकड़ो और मारो शोर था यह हर तरफ, इस तरह फौजे उदू की उड़ गयी थी धज्जियाँ।
कुम्भकरण ने जब यह देखा फ़ौज अपनी कट गयी, आके गुस्से में पुकारा मिसले एक शेरे ज़ियाँ।
वह उठा लेता है अपने सर पे टीले और पहाड़, वानरों पर फेंकता जाता है वह कोहेगिराँ।
जब पहाड़ आते हुए देखा श्री रघुनाथ ने, अपने तीरों से उड़ा दी उसकी फ़ौरन धज्जियाँ।
कुम्भकरण पर सैकड़ों ही तीर मारे राम ने, जिस्म में धँसते थे उसके, जैसे कोई बिजलियाँ।
उसके काले जिस्म से यों खून बहने लग गया, कोहे काजल से बहे गेरू की जैसे नद्दियाँ।
हो गया बेताब वह, वानर गये नज़दीक जब, वह पकड़ने लग गया इनको, हुआ खन्दा दहाँ।
देके रावण की दुहाई वह मसल डाला इन्हें, खलबली एक मच गयी वानर हुए सब तफ़्ताजाँ।
राम जी इमदाद कीजे वक्त है इमदाद का, वर्ना ये तो ले ही लेने को है अब हम सबकी जाँ।
देख कर बेचैन सबको राम आगे बढ़ गये, आके गुस्से में सँभाला हाथ में तीरोकमाँ।

एक सौ वह तीर छोड़े जिस्म में उसके धँसे, ज़लज़ला होने लगा, वह जबकि दौड़ा नागहाँ।
वह जो तोड़ा एक टीला, राम काटे उसका हाथ, एक ही वह हाथ से ले कर हुआ उसको रवाँ।
दूसरा भी हाथ उसका कट गया और गिर गया, आ गया गुस्सा उसे बेहद, गये ताबोतवाँ।
इस भयानक शकल से वह दौड़ने जब लग गया, देवता तक डर गये, जाते रहे ताबोतवाँ।
राम ने जब बाण मारे, मुँह मे उसके घुस गये, फिर भी गिरता ही नहीं था वह ज़मीं पर पहलवाँ।
लेके तक्षक बाण जब उसको चलाया राम ने, कुम्भकरण का सर हुआ धड़ से जुदा तब नागहाँ।
हो गया बेताब रावण, हो गया दल बेकरार, जब गिरा सर सामने, उसके वह बैठा था जहाँ।
जिस्म उसका दौड़ता जाता था जो बेसर का था, और ज़मी धँसती चली जाती थी अन्दर बेगुमाँ।
राम ने उस जिस्म के भी कर दिये टुकड़े जो दो, वह गिरे ऐसे ज़मीं पर जिस तरह कोहेगिराँ।
उसके नीचे भी कई एक वानरो भालू दबे, ख़ात्मा यों हो गया, और देवता थे शादमाँ।
उसके मरने से हुई सब देवताओं को ख़ुशी, राम की तारीफ में सब हो गये रतबुलरसाँ।
तब ऋषि नारद भी आये, अस्तुती करने लगे, यों ही रावण का मिटा दो जल्द अब नामोनिशाँ।
राम की तारीफ़ करके वह भी वापस हो गये, राम जी मैदाँ मे जा कर फिर हुए जलवा फ़ुनाँ।
मुँह पे था उनके पसीना और आँखें लाल थीं, दोनो हाथों से फिराते थे वो नावक और कमाँ।
चारसू बैठे हुए थे उनके वानर और रीछ, ऐसे नज़्ज़ारे का मुमकिन ही नहीं करना बयाँ।
कुम्भकरण था राक्षस भी और था पापी बड़ा, मरके इनके हाथ से पायी हयाते जावेदाँ।
याद जो इनको नहीं करता है वह है बेवकूफ, शिव ने फ़रमाया ये गौरी जी से अपनी बेगुमाँ।
शाम होने लग गयी तरफ़ैन वापस फिर गये, आज दोनों सिम्त के बदम हुए थे पहलवाँ।
राम की नज़रे करम से ये हुए सब ताज़ा दम, घास जैसे आग से मिल कर बने शोलाफ़शाँ।
और रावण का उधर था जोर ऐसे घट रहा, जैसे घट जाता है पुण्य हो अपने मुँह से गर बयाँ।
भाई का गम लेके रावण रो रहा था ज़ार-ज़ार, औरतें करती थीं छाती पीट कर आहोफ़ुगाँ।
मेघनाथ आया उसी दम जबकि ये रोते थे सब, बाप को समझा बुझा कर यों किया उनसे बयाँ।
वीरता कुछ आप मेरी देखिएगा कल सुबह, मैं अगर कुछ अब कहूँगा होगी मेरी शेख़ियाँ।
मुझमें जो कूवत व ताक़त है वह बोला ही नहीं, वह दिलेरी मेरी कल हो जाएगी सब पर अयाँ।
इस तरह कहने में सुनने में सवेरा हो गया, घेर कर चारों तरफ लंका को आये वानराँ।
इस तरफ़ वानर व भालू उस तरफ़ को राक्षस, यानें दोनों सिम्त मे थे सूरमाँ और पहलवाँ।
फ़तह पाने के लिए लड़ते हैं दोनों सूरमाँ, जंग इतनी सख़्त थी, कुछ हो नहीं सकता बयाँ।
बैठ कर रथ पर जो गर्जा आ गया जब मेघनाद, इस तरह मालूम होता था कि है बादे रवाँ।
इस गरज से वानरों में हलचली-सी मच गयी, मुख़्तलिफ हथियार ले कर वह हुआ हमला नुमाँ।
शक्ति और तलवार पत्थर शूल से था मारता, इस क़दर वह तीर मारा, भर गया सारा समाँ।
जैसे बादल घिर गये हों, जब मघा का हो नक्षत्र, पकड़ो और मारों के थे अलफ़ाज़ बस विरेदजबाँ।
सुन रहे आवाज़ से, लेकिन नज़र आता न था, कौन है वह मारने वाला, छुपा है अब कहाँ।
लेके वानर कूदते हैं झाड़ और पत्थर मगर, जब नज़र आया न कोई, हो गये वापस रवाँ।
इस क़दर नावक चलाये राह घाटी और कोह मिस्ले ज़िन्दा के नजर आते थे सबको बेगुमाँ।
राह जाने की न पा कर हो गये वानर उदास, नल व नील, हनुमानो अंगद हो गये सब नातवाँ।
उसने लक्ष्मण को भी मारा और फिर सुग्रीव को, जिस्म को उसने विभीषण के किया फिर ख़ूँफ़शाँ।

मारता था तीर जब वह, साँप हो कर लग रहे, बन गया इस तरह हल्का एक साँपों का वहाँ।
देवताओं ने जो देखा खौफ करने लग गये, राम चन्दर जी भी जब घेरे गये इस दर्मियाँ।
राम के थे काम लोगों को दिखाने के लिए, वर्ना ऐसे जाल में वह फँस ही सकते थे कहाँ।
उनकी लीला और बुद्धि सब समझ के पार है, इसलिए ज्ञानी जो हैं करते नहीं शक्कोगुमाँ।
तंग सबको कर दिया जाहिर हुआ फिर मेघनाद, और बकने लग गया वह अपने मुँह से गालियाँ।
जामवन्त ने कहा कमबख्त तू हो जा खड़ा, सुनके उसको गुस्सा आया और यों खोली जबाँ।
हो गया बूढ़ा है तू इस वास्ते छोड़ा तुझे, तू सूरी को है डराता अक्ल है तेरी कहाँ।
ये कहा त्रिसूल एक उस पर चलाया मेघनाद, जामवन्त जिसको पकड़ कर खुद हुआ उस पर दवाँ।
और उस त्रिसूल को छाती पर मारा जामवन्त, खा गया चक्कर जमीं पर गिर गया वह नागहाँ।
हो गये आपे से बाहर और बरहम जामवन्त, फिर पकड़ कर पैर उसका वह घुमाये बेगुमाँ।
देके चक्कर जब उसे फेंका वह फर्शे खाक पर, इस तरह दिखलायी उसको अपनी ताकत और तवाँ।
कुछ हुआ का था अमर, इस वास्ते मरता न था, फेंका उसको फिर घुमा कर शहर लंका दर्मियाँ।
देवताओं की मदद से आ गया इस जा गरुड़, खा लिया सब साँपों को वह जिस कदर भी थे वहाँ।
खात्मा जब इस तरह साँपों का मारा हो गया, हो गये आजाद वानर और हुए वो शादमाँ।
झाड़, पत्थर ले के ये फिर हमलावर हो गये, और किले पर चढ़ गये थे राक्षस जितने वहाँ।
जबकि बेहोशी मिटा देखा जो अपने आप को, हो गया शर्मिन्दा बेहद हो गया वह खस्ताजाँ।
आज ऐसा यज्ञ करूँगा मुझसे फातेह कोई न हो, सोच कर ये हो गया वह कोह के जानिब रवाँ।
तब विभीषण ने किया यह अर्ज जा कर राम से, नीगों वद से है करता मेघनाद अब यज्ञ वहाँ।
यज्ञ उसका हो जो पूरा फिर न यह जल्दी मरे, अंगद और सब वानरों को याद फरमाया वहाँ।
भाइयो तुम जाओ सब लक्षमण को ले कर साथ अब, यज्ञ उस कमबख्त का जल्दी करो सब रायगाँ।
भाई लक्षमण आज तुम मैदाँ में उसको मारना, देवता बेचैन है, कर दो उन्हें अब शादमाँ।
होशियारी से उसे तुम मारना ऐ लक्षमण, है विभीषण जामवाँ सुग्रीव ये हमराहियाँ।
सुनके वह अपनी कमर में बाँध कर तरकस व तीर, इस तरह लक्षमण ने की यों भाई से अर्ज बयाँ।
आपके परताप से मैं आज मारूँगा जरूर, आपकी खा कर कसम कहता हूँ मैं ऐ भाईजाँ।
आएँ शंकर भी अगर इमदाद को उसकी तरफ़, मैं बजुज़ मारे इसे वापस न आऊँगा यहाँ।
नील नल, अंगद व हनुमान और वानर साथ थे, पैर छू कर राम के लक्षमण हुए फ़ौरन रवाँ।
देखते क्या हैं कि बैठा मेघनाद है जिस जगह, खून और भैंसों को दे कर कर रहा था यज्ञ वहाँ।
महव अपने काम में था मुतलकन जागा नहीं, लाख कोशिश की गयी हो जाए यह यग रायगाँ।
जब न उट्ठा वह तो सरके बाल पकड़े हाथ से, और घसीटे दूर तक देते हुए सब गालियाँ।
लेके वह त्रिसूल उट्ठा उनके पीछे भागते, और यह सब दौड़ कर आए थे लक्षमण जी जहाँ।
हो गया आपे से बाहर और गर्जा मेघनाद, उसके मारे से गिरे हनुमान अंगद बेगुमाँ।
उसने एक त्रिसूल मारा लक्ष्मण जी की तरफ़, तीर से उसकी उड़ा दी लक्षमण ने धज्जियाँ।
उठके अंगद और हनुमाँ मारने उसको लगे, कुछ असर होता न था, थी चोट भी लगती कहाँ।
वह किसी तरह नहीं मरता था, जब देखा गया, लौट कर वापस चले आने लगे सब वानराँ।
वह गरज कर ज़ोर से जब इस तरह आने लगा, लक्ष्मण ने एक भयानक तीर छोड़ा नागहाँ।
तीर आते देख कर अपने को ग़ायब कर लिया, वह कभी होता था जाहिर और कभी होता निहाँ।

लक्ष्मण ने दिल में सोचा देर अब बेकार है, ऐसे पापी का न अब बाक़ी रहे नामोनिशाँ।
राम का जब नाम ले कर वह चलाये अपने तीर, जा के सीने में लगा उसके बराबर यह निशाँ।
वह गिरा और उसके मुँह से यह निकलने लग गया, राम का भाई कहाँ है राम खुद भी है कहाँ।
उसकी क़िस्मत को सराहा अंगदो हनुमान ने, वह मरा लक्ष्मण के हाथों, राम था विरदे ज़बाँ।
मर गया जब वह तो हनुमाँ ने उठायी उसकी लाश, और लंका के वो दर पर रख के आया बेगुमाँ।
उसका मरना देख कर सब देवता आने लगे, और वह फूले समाये, हो गये सब शादमाँ।
हमको इस कमबख्त के हाथों दिलायी है नजात, इस तरह कहते हुए लक्ष्मण के थे सब मदहख्वाँ।
देवता वापस गये लक्ष्मण गये भाई के पास, हो गया बेहोश रावण, जब सुना यह नागहाँ।
रो रही मंदोदरी थी अपने बेटे के लिए, पीटती सर और छाती को बसद आहोफुगाँ।
शहर के सब लोग रंजोग़म में थे डूबे हुए, और रावण को बुरा कह कर वो देते गालियाँ।
रावण अपनी औरतों को जाके समझाया बहुत, और कहा मरना है लाज़िम चूँकि फानी है जहाँ।
दी तसल्ली उसने सबको ज्ञान की बातें कहीं, नीच था वह खुद बलेकिन वह बडा था नुक्तादाँ।
ग़ैर को बतलाने वाले है बहुत से राह नेक, खुद अमल उस पर करें, लोग ऐसे मिलते हैं कहाँ।
रात गुजरी इस तरह और जब सवेरा हो गया, चारों दरवाज़ों में फिरकर आ गये फिर वानराँ।
फ़ौज के लोगों को बुलवा कर कहा रावण ने यों, जिसके दिल में खौफ़ हो रह जाए वह घर में यहाँ।
जाके मैदाँ से पलटने में बड़ी रुसवाई है, इसलिए पहले ही कर देता हूँ मैं तुम पर अयाँ।
ये लड़ाई मेरे ही बाअस हुई आगाज है, इसलिए तनहा मैं खुद जा कर लड़ूँगा बेगुमाँ।
इस क़दर कह कर किया तैयार उसने अपना रथ, चाल में वह रथ न था बल्कि था इक वादे रवाँ।
जंग का बाजा बजा और राक्षस चलने लगे, यों नज़र आता था काजल की है जैसे आँधियाँ।
रास्ते में बदशगुन उसको नज़र आने लगे, नखवते सर की सबब रावण को सूझी ही कहाँ।
गिर रहे हथियार थे हाथी व घोड़े बेहवास, और रथ पर से गिरे जाते थे अक्सर पहलवाँ।
रो रहे कुत्ते थे, उल्लू कर रहे आवाज़ थे, गिद्ध और गीदड़ और कौवे बोलते थे बोलियाँ।
जोकि हो मग़रूर खुद, कुव्वत का जिसको हो घमंड, राम का हो कर मुखालिफ़, चैन पाता है कहाँ।
राक्षस की फ़ौज भी अनगिनत चलने लग गयी, मुखतलिफ़ अकसाम की यह फ़ौज की थी टुकड़ियाँ।
थे कई अकसाम के रथ और सवारी मुखतलिफ़, और रंगारंग के झंडे थे और थी झंडियाँ।
जिस तरह बादल है चलते जब हवा का ज़ोर हो, मस्त हो कर चल रहे थे सैकड़ों ही हाथियाँ।
जो सिपहगीरी के फ़न में कामिलुलफ़न लोग थे, थीं जवाँमर्दों की ऐसी टोलियों की टोलियाँ।
फ़ौज जब चलने लगी हिलने लगे पर्वत ज़मीं, और दरिया में भी जोश आने लगा था बेगुमाँ।
खाक़ इतनी उड़ रही थी छुप गया खुरशीद था, और चलने से रुकी जाती थी खुद वादेरवाँ।
ढोल, नक्कारों की ऐसी हो रही आवाज़ थी, जैसे बादल की गरज से हो कयामत का समाँ।
भेरी शहनाई नफीरी बज रही थी साथ-साथ, और सब करते थे जाते अपनी क़ूवत का बयाँ।
यों कहा रावण ने ऐ मेरे बहादुर फ़ौजियो, फ़ौजे दुश्मन का रहे बाक़ी न अब नामोनिशाँ।
दोनों शहज़ादों को मैं खुद मार दूँगा जान से, इस तरह कह कर किया वह फ़ौज को आगे रवाँ।
वानरों को जब हुआ मालूम ये हैं आ रहे, राम की दे कर दुहाई, वो हुए फ़ौरन रवाँ।
झाड़ पत्थर और लकड़ी उनके ये हथियार थे, पर्वत की मिसिल दौड़े लेके वे सब वानराँ।
डर न था उनको किसी का और न वो कमज़ोर थे, फ़ौजे रावण मिसले हाथी और ये शेरेज़ियाँ।

जोड़ अपनी देख कर तरफ़ैन जब लड़ने लगे, राम की जय थी यहाँ, रावण का नारा था वहाँ।
राम पैदल चल रहे थे और दशमुख था सवार, ऐसा मंजर था विभीषण के लिए बस सोज़ेजाँ।
ऐसी हालत में फ़तह किस तरह उनकी हो सके, दिल में उनके वहम था करने लगे शक्कोगुमाँ।
कह दिया—रथ है सवारी में, न जूता पैर में, कवच भी पहना नहीं, जो जिस्म का हो निगहबाँ।
किस तरह रावण को जीतेंगे, नहीं मालूम ये, दस्त बस्ता इस तरह उसने किया अर्ज़ेबयाँ।
राम बोले—फ़तह का जो रथ है वह है दूसरा, उसकी यह तफ़सील मैं करता हूं अब तुमसे बयाँ।
अज़्में कामिल एक पहिया और दिलेरी दूसरा, और सचाई नेकनामी उसकी है ये झंडियाँ।
कूवतो तमईज जब्तोरीन है ये चार अस्प, मेहरबानी और दयावात और वफ़ू रस्सियाँ।
ऐसी रस्सी से ये घोड़े रथ में हैं जोते गये, और भजन भगवान का है सारथी, ऐ मेहरबाँ।
ढ़ाल है वैराग दस्तेगना भी एक तलवार है, दान फ़रसा, अक़्ल ताकत और विज्ञान है कमाँ।
साफ़ दिल तरकश है, शमओ दम व नेम हैं सब ये तीर, कवच है पूजा गुरु और ब्राह्मण की बेगुमाँ।
फ़तह पाने के लिए इसके सिवा कुछ भी नहीं, जो कोई रखता है यह वह हार सकता है कहाँ।
जिसके कब्ज़े में रहे यह रथ सुनो ऐ मुस्फ़की, क्या अदू की है हकीकत, जीत ले वह सब जहाँ।
राम के पैरों पे गिर कर यों विभीषण ने कहा, इस बहाने ज्ञान का मुझ को किया तुमने बयाँ।
जब गरज कर उस तरफ से रावण आया रज्म में नाराजद थे अंगदो हनुमान भी दोनों वहाँ।
ब्रह्मा और सब देवता बैठे विमानों पर हुए, देखने को आ गये उस वक्त का सारा समाँ।
राम की जंगी ये लीला देखने के वास्ते, शिव ने फरमाया कि मैं भी था उन्ही के दर्मियाँ।
दोनों जानिब के सिपाही खूब लड़ने लग गये, पीटते, लड़ते, गिराते और गरजते पहलवाँ।
राम के एकबाल से वानर थे होते कामयाब, अपने दुश्मन को किये जाते थे बेदम नातवाँ।
वह पटकते थे जमीं पर फोड़ते थे सर कई, और घुमा कर फेंक देते थे जमीं पर नागहाँ।
दफ़्न कर डाले हज़ारों राक्षसों को क़ब्र में, जैसे प्रलय काल का दिखने लगा था वह समाँ।
रक्त उनके जिस्म से भी बह रहा था यों मगर, वह गरजते थे अदू पर जिस तरह बर्कोनियाँ।
काटते थे दाँत से और मारते थे लात से, राक्षस का मिटा देते को ही ये नामोनिशाँ।
फाड़ते थे गाल उनके और सीना चीरते, खींच लेते थे वो अन्दर हाथ से उनकी अनड़ियाँ।
अतड़ियों को जब गले में डाल लेते थे ये खुद, यों नजर आते थे नरसिंह है यहां जल्वा कुनाँ।
पकड़ो और मारो और काटो की सदा गूंजी हुई, राम के डर से अर्वा दुश्मन भी होता है नातवाँ।
फ़ौज जब कमजोर हो कर वापस होने लग गयी, आ गया मैदान में रावण लिये तीरोंकमाँ।
और आवाज़े बुलन्द उनको पुकारा लौटने, हो गया गुस्से से बाहर खा दिया ताबोतवाँ।
वानरो भालू भी आ कर उससे भिड़ने लग गये, झाड़ पत्थर लेके उस पर होते थे हमला कुनाँ।
जिस्म पर उसके नहीं होता था बिल्कुल कुछ असर, वह खड़ा हो रह गया मैदाँ में सबके दर्मियाँ।
वह मसल डाला हजारों वानरों को आन में, चीखते थे तालिबे इमदाद हो कर वानराँ।
अंगदो हनुमान का वो नाम लेते चीखते, राम की देते दुहाई होके वो सब ख्वास्ताजाँ।
देखा रावण ने कि वानर भागते हैं जा रहे, अपने हाथों में लिये दशशीश ने दस ही कमाँ।
उन कमानों से हज़ारों तीर छटने लग गये, भर गया तीरों ही से मैदान का सारा समाँ।
वानरो भालू पुकारे—राम जी इमदाद हो, हम मरे जाते हैं अब भागें तो भागें भी कहाँ।
तीरो तरकस ले कर लक्ष्मण जी रवाना हो गये, जबकि देखा फ़ौज अपनी हो रही है नातवाँ।

जा के लक्ष्मण ने कहा—क्या मारता है फ़ौज को, मैं निशाने मौत तेरा बन के आया हूँ यहाँ।
बोला वह—क़ातिल है तू ही तो मेरे फ़रजन्द का, ढूँढता था तुझको मैं अब बचके जाएगा कहाँ।
मार कर तुझको तसल्ली मैं करूंगा दिल की आज, कहके यह, वह तीर छोड़ा खींच कर अपनी कमाँ।
जिस क़दर तीर आये लक्ष्मण ने किये टुकड़े उन्हें, दूसरे हथियार की भी तो उड़ा दी धज्जियाँ।
फिर उन्होंने बाण मारा रथ के टुकड़े कर दिये, सारथी भी उसका गिर कर मर गया फ़ौरन वहाँ।
बाण जा कर सर पे उसके हो रहे पैवस्त थे, कोह के दर्रों में जैसे साँध होते हैं निहाँ।
एक दम सौ बाण मारे जो कि छाती में लगे, वह ज़मीं पर आ रहा, चक्कर उसे आया वहाँ।
होश उसको आ गया जब वह खड़ा फिर हो गया, शक्ति बाण उसने चलाया जो न जाता रायगाँ।
यह वही था बाण ब्रह्मा ने दिया था जो उसे, आके वह सीने में लक्ष्मण के ही उतरा बेगुमाँ।
लक्ष्मण नीचे गिरे जब वह उठाने लग गया, वह उठा ले इनको, उसमें इतनी क़ूवत थी कहाँ।
क़ूवतो ताक़त का इनकी उसको अन्दाजा न था, इसलिए चाहा कि अपनी वह करे ताकत अयाँ।
देखते ही देखते हनुमान फ़ौरन आ गये, उसने घूँसे मार कर इनको किया हमला कुनाँ।
टेक कर घुटने ज़मी पर, रुक गये हनुमान जी, फिर उठे, उठ कर उसे घूँसा जो मारा पहलवाँ।
गिर गया रावण ज़मी पर इनकी ऐसी मार से, मार से फ़ौलाद के जैसे गिरे कोहे गिराँ।
जब उठा रावण संभल कर इस तरह कहने लगा, तुझमें ताकत है बड़ी और तुझमें है ताबोतवाँ।
यों कहा हनुमान ने, धिक्कार मेरे ज़ोर पर, जो कि तू ज़िन्दा रहा बाक़ी, न निकली तेरी जाँ।
लक्ष्मण जी को उठा कर ले गये हनुमान जी, अगले रावण दंग थी, देखा वो जब ऐसा समाँ।
राम जी ने हाथ फेरा, लक्ष्मण जी उठ गये, और शक्ति बाण हुआ राहे वसूदे आसमाँ।
फिर हुए आमादा लक्ष्मण आके लड़ने के लिए, लेके अपना तीरो तरकस आ गये फिर नागहाँ।
आ के तेजी से वो रथ के टुकड़े-टकड़े कर दिये, सारथी का भी किये वो खातमा फ़ौरन वहाँ।
मार कर तीरों से रावण को किये वह बेकरार, गिर गया तब वह ज़मी पर होके बेहद नातवाँ।
दूसरे एक सारथी ने जो वहा मौजूद था, लेके उसको जल्द लंका को हुआ वापस रवाँ।
जब गया मैदाँ से रावण लक्ष्मण वापस हुए, और चरन छूने के भाई के हुए हाज़िर यहाँ।
रथ गया रावण का जब, वह यज्ञ करने लग गया, राम पर ताफ़तह पाये, और हो वह कामराँ।
सुनके यह जा कर विभीषण राम को कहने लगे, यज्ञ पूरा हो अगर यह, होंगी फिर दुश्वारियाँ।
वानरों को भेजिएगा तो करें बरबाद यज्ञ, और रावण लौट कर आ जाए लड़ने फिर यहाँ।
सुबह होते ही रवाना वानरों को कर दिया, अंगदो हनुमान दौड़े और दीगर पहलवाँ।
खेल ही खेल मे जा कर क़िले पर चढ़ गये, और दाखिल हो गये बेखौफ़ रावण था जहाँ।
देखा रावण को कि है मसरूफ अपने काम में, आ गया गुस्सा जो उनको इस तरह खोली ज़बाँ।
बेहया कुछ शर्म है मैदान से भागा हुआ, घर में बैठे ध्यान बगले-सा है करता तू यहाँ।
इस क़दर कहते हुए अंगद ने मारी लात एक, लेकिन उस पर भी न आया रूबरूए वानराँ।
दांत से काटे उसे लातों से मारे बार-बार, औरतों के बाल पकड़े और घसीटे वानरा।
वे जो चिल्लाने लगी रावण को गुस्सा आ गया, दौड़ कर आया वो उनकी मौत का बन कर निशाँ।
वानरों को वह पकड़ कर पीटने जब लग गया, यज्ञ की बरबादी के ज़ाहिर हुए पूरे निशाँ।
उसने जब देखा यज्ञ अपना हो गया बरबाद यों, दिल मे कुछ मायूस हो कर हो गया वह खस्ता जाँ।
यज्ञ को बरबाद करके जब वो सब वापस हुए, भर के गुस्से में हुआ रावण लड़ाई को रवाँ।

यह रवाना जब हुआ होने लगे सब बद सगुन, गिद्ध उड़ कर बैठते थे उसके सर पर बेगुमाँ।
जंग का बाजा बजाने के लिए आवाज़ दी, फ़ौजे लातादादे रावण हो गयी फ़ौरन रवाँ।
रथ भी थे, पैदल भी थे और सैकड़ों घोड़े सवार, और शामिल फ़ौज थे सैकड़ों ही हाथियाँ।
राम के आगे वो ऐसे दौड़ते थे आ रहे, जिस तरह आयें पतंगे रोशनी रहती जहाँ।
देवता सब मुत्तजी थे, राम अब देरी न हो, हम भी सब तंग आ गये, सीता हैं सहती सख्तियाँ।
राम सुन कर मुसकुराये और जटा सर पर बँधे, और कमर कसकर लिया फिर हाथ में तीरो कमाँ।
जब धनुष सारंग नामी हाथ में अपने लिया, ज़मीं भी थर्रा उठी और डगमगाया आसमाँ।
देवता सब खुश हुए नज़्ज़ारा ऐसा देख कर, गुल फसानी वह किये, हो कर निहायत शादमाँ।
उस तरफ़ से आ गयी अनगिनत जब फ़ौजें अदू, इस तरफ़ से भी हुए वानर के दल के दल रवाँ।
हैं चमकती सैकड़ो तलवार और कृपाण भी, आसमाँ पर जिस तरह गाहे चमकती बिजलियाँ।
और बादल की गरज जिस तरह होती है कभी, शोर रथ घोड़ों का है चिंघाड़ते है हाथियाँ।
वानरो की दुम नज़र आती है ऊँची इस तरह, जिस तरह कौसेक़ज़ह निकली हो सूये आसमाँ।
धूल ऐसे उड़ रही थी जैसे नहरें आब है, तीर का चलना नज़र आता था बारिश का समाँ।
दोनों जानिब से थे फेंके जा रहे पत्थर-पहाड़, गर्द था मैदाने जंग, और लड़ रहे थे पहलवाँ।
तीर पर जब तीर मारे राम ने पैहम कई, राक्षस होने लगे घायल नहीफ़ोनातवाँ।
और चक्कर खाके वह गिरते ज़मी पर दमबदम, जिस्म से उनके बही जाती थी खूँ की नद्दियाँ।
बुज़दिलों के दिल हिला देती थी ऐसी थी नदी, दोनों दल अफ़वाज़ थे उसके किनारे बेगुमाँ।
रथ जो थे वह रेत थी, पहिये जो उनके थे भँवर, जानवर आबी थे घोड़े और पैदल हाथियाँ।
तीर, शक्ति और तूयर साँढ़ के मानिन्द थे, थे धनुष गोया तरंगे ढाल थे, कछुवे वहाँ।
जैसे दरिया के किनारे झाड़ गिरते हों कभी, इस तरह गिरते चले जाते थे नामीं पहलवाँ।
देख कर जिनको डरे जाते थे जो डरपोक थे, और हिम्मत उनकी बढ़ जाती थी जो थे पहलवाँ।
गुसल करते उस नदी मे भूत बैतालो पिशाच, चील, कौवे लेके उडते गोश्त हैं और हड्डियाँ।
एक से जब दूसरा था छीनता कहते थे यों, है बहुत इक रात खाने को, हो लड़ते क्यों यहाँ।
जो बहादुर हो गये घायल वो तट पर थे पड़े, मौत के नज़दीक थे वो, ले रहे थे सिसकियाँ।
गिद्ध आँते खींचते थे जैसे कोई मछलीमार, बैठ कर साहिल पे जैसे हो पकड़ता मछलियाँ।
और मुर्दे भी नदी मे बहते जाते थे बहुत, और परिन्दे बैठते थे ये समझ कर किश्तियाँ।
भूत भी और योगनी थे खून खप्पर मे भरे, नाचते थे इस तरफ़ से उस तरफ हो शादमाँ।
गीदड़ आके खा रहे थे जो पड़े मुर्दे तमाम, सैकड़ो के धड़ पड़े थे, सैकड़ों ही मुंडियाँ।
राम के मारे से लाखों भर के मैदां मे पड़े, सोचा रावण ने कि तनहा रह गया मैं अब यहाँ।
फ़ौज दुश्मन की बहुत है, इसलिए लाजिम है ये, मैं करूँ कुछ चालबाज़ी अपने जानिब से यहाँ।
देवता देखे कि पैदल राम हैं मैदान में, इन्द्र ने रथ अपना भेजा, मन्त्री लाया वहाँ।
राम को जब मिल गया रथ हो गये उस पर सवार, चार घोड़े तेज़ उस रथ मे जुते थे बेगुमाँ।
वानरों ने राम को देखा जो रथ पर है सवार, बढ़ गयी हिम्मत दोबाला हो गये वो शादमाँ।
चालबाज़ी एक की तब रावणे बदबख्त ने, जिस से धोखा खा गये लक्ष्मण भी और सब वानराँ।
हमशबीहे रामोलक्ष्मण फ़ौजे रावण में शरीक, सैकड़ों आये नज़र जिसका न था शानोगुमाँ।
राम ने देखा कि वानर महवे हैरत हैं तमाम, खत्म कर डाला वह अपने तीर से सारा समाँ।

और कहा ऐ भाईयो, तुम थक गये हो आज सब, अब ज़रा देखो मैं जो लड़ता हूँ रावण से यहाँ।
जोश से रावण भी आया और वह आगे बढ़ा, और वह मैदान में आ कर पुकारा नागहाँ।
और कहा तूने फतह पायी है जिन पर, तपस्वी मैं नहीं उनसा हूँ—मैं तो हूँ बहादुर पहलवाँ।
लोकपालों को भी मैंने क़ैद में अपने रखा, नाम रावण है मेरा यह जानता है सब जहाँ।
तुमने मारा त्रिसरा को और खरदूषण को भी, छुपके बाली की भी तुमने मुफ्त में ले ली थी जाँ।
कुम्भकरण को तुमने मारा और मारा मेघनाद, सैकडों मारे गये नामो गिरामी पहलवाँ।
तुम अगर मैदान से भागो नहीं—तुगाएवज, आज बदला सब का ले लूंगा मैं बेगुमाँ।
पड़ गया है काम तुमको आज मुझ जैसे के साथ, आज तुम भी मेरे बचा मुमकिन नहीं हो अपनी जाँ।
राम ने उससे कहा बकबक ज्यादा तू न कर, जिन क़दर तेरी दिलेरी है, हुई है सब अयाँ।
अपनी तारीफ़ आप करके खूबियों का खोल ले, कायदा कहता हूँ तुझसे उफ़ हां गुस्ताखियाँ।
तीन क़िस्मे होती है इन्साँ की दुनिया मे जरूर, जिस तरह झाड़ों की किस्में तीन करते है बयाँ।
एक तो है फूल देता, दूसरा देता है फल, तीसरा देता है फल और फूल दोनो बेगुमा।
यों ही इन्साँ एक वह है, मुँह से कहता है बहुत, दूसरा कहता भी करता भी है वह हिम्मतनिशाँ।
तीसरा वह है जो करता काम तो खुद ही जरूर, काम का अपने किसी से वह नहीं करता बयाँ।
सुन के रावण हँस दिया कहने लगा क्या खूब है, आप मुझको है सिखाना, डर है दिल के दर्मियाँ।
जब अदावत मोल ली उस वक्त तो सोचा नहीं, सामने आ कर मेरे अब हो गयी है प्यारी जाँ।
गालियाँ देते हुए रावण ने छोड़ा बाण जब, तीर पर तीर इतने मारे भर गया सारा समाँ।
राम ने उसके मुकाबिल अपना छोड़ा अग्नि बाण, जल गये सब तीर उसके उड़ गये बन कर धुवाँ।
हो गया शर्मिंदा रावण और छोड़ा शक्तिबाण, राम ने भी तीर से उसको किया वापस रवाँ।
सैकड़ों वह चक्र फ़ेंका सैकड़ों त्रिशूल भी, राम ने इनकी बआसानी उड़ा दी धज्जियाँ।
तीर रावण के हुए जाते थे सब बेकार या, जैसे बद इन्सान का मशवा है होता रायगाँ।
बाण भी रावण ने मारे मारथी पर राम के, गिर गया जब वह ज़मी पर राम था चिरदेज़बाँ।
राम ने उसको उठाया और बरहम हो गये, हाथ में अपने लिया फिर राम ने तीरोकमाँ।
राक्षस सब डर गये जब वह सुने उसकी टंकार, डर गयी मन्दोदरी लरजे ज़मीनो आसमाँ।
कान तक खींचा धनुष को और छोड़ा राम ने, इस तरह आया नज़र, था साफ़ हो गया रवाँ।
तीर क्या थे वह तो थी परदार नागों की कतार सारथी घोड़े मरे रथ की उड़ा दी धज्जियाँ।
उसका परचम गिर गया रावण भी गरजा ज़ोर से, यों बज़ाहिर यों किया, था खौफ़ दिल के दर्मियाँ।
दूसरे रथ पर चढ़ा रावण चलाया अपने तीर, और सब करतब भी उसके हो रहे थे रायगाँ।
तब तो रावण ने चलाये एक दम त्रिशूल दस, चार घोड़े गिर गये जिससे ज़मी पर नागहाँ।
राम ने उनको उठाया और चलाये अपने तीर, तीर जा कर लग गये रावण के सर से बेगुमाँ।
छिद गये रावण के दस सिर तीर से कर आरपार, खून की धारें भी होने लग गयी सर से रवाँ।
फिर भी वह दौड़ा चला आता है लड़ने के लिए, राम ने भी तीस पैहम तीर मारे बेगुमाँ।
सर भी उसके कट रहे थे हाथ भी कटते गये, उड़ते जाते वो हवा में और नये होते अयाँ।
जिस क़दर उसके कटे सर और बढ़ने ही गये, जैसे पुरुआई बढ़े मिलती है जब रुदियाँ।
रावणे बदकार ने भी तीर मारा इस क़दर, राम का रथ छुप गया जैसे कोहर का हो समाँ।
देख कर वानर हुए हैरान और खायफ जरा, जब हवा में उसकी उड़ती जा रही थी गुड़ियाँ।

राम ने एक तीर मारा खातमा उनका किया, कट के वे सब गिर गये खूं की हुई नद्दी रवाँ।
तब तो शक्तिबाण रावण ने चलाया हाथ से, जो विभीषण को ही लगता आ के बेशक्कोगुमाँ।
राम आगे आ गये शक्ति को खुद ने सह लिया, और विभीषण की बचा ली राम ने इस तरह जाँ।
शक्ति लगने से जरा कुछ राम को ग़श आ गया, देवता खायफ़ हुए, जाता रहा आरामे जाँ।
मेरे बाअस राम को तकलीफ़ यह सहनी पड़ी, बात ये आयी विभीषण जी के दिल के दर्मियाँ।
हाथ में ले कर गदा दौड़े विभीषण ज़ोर से, सामने रावण के जा कर इस तरह खोली ज़बाँ।
तूने सबसे दुश्मनी ली, देवता इन्सान से, और सबसे भी, अरे कमबख्त ओ नाक़द्रदाँ।
तूने वर पाया था शिव से इसलिए कटते है सर, जिसके बाअस तू बचाता जा रहा है अपनी जाँ।
राम से हो कर मुखालिफ तू बचेगा किस तरह, मौत सर पर नाचती है तू बचेगा अब कहाँ।
उसके सीने पर गदा को मार कर ऐसा कहा, गिर गया रावण ज़मी पर खून था मुँह से रवाँ।
वह सँभल कर फिर उठा और इससे लड़ने लग गया, लड़ रहे कुश्ती थे आपस में ये दोनों भाइयाँ।
राम के परताप से इसकी दिलेरी बढ़ गयी, रावण ऐसे शेर को भी उसने समझा नातवाँ।
वह विभीषण आँख भी जिसकी न उठती थी कभी, आज उससे भिड़ गया है हो के कैसा पहलवाँ।
दौड़ कर हनुमान पहुँचे ले के सिर पर एक पहाड़, जबकि देखा कुछ विभीषण हो रहे है नातवाँ।
जद ने जिसकी रथ गिरा और मार दी घोड़े मरे, लात भी एक खा गया रावण-सा भारी पहलवाँ।
रह गया रावण खड़ा लेकिन था गदगद काँपता, उसने भी हनुमान को घूंसे से मारा बेगुमाँ।
जब उड़े हनुमान ऊपर उसने दुम पकड़ी उछल, जिस क़दर ऊपर गये ये, साथ उनके था रवाँ।
आखिरस दोनों फ़िज़ाँ मे उड़के लड़ने लग गये, एक से थे एक बढ़ कर वो बहादुर पहलवाँ।
दोनों ने करतब दिखाये अपने-अपने खूब-खूब, आखिरस लड़ते हुए दोनों गिरे वो पहलवाँ।
और जो बानर गये इमदाद को हनुमान की, अपनी क़ूवत से किया रावण ने सबको नातवाँ।
राम ने ललकार कर जब ज़ोर से आवाज़ दी, हो के हिम्मतवर गये लड़ने को फिर सब बानराँ।
उसने ये जादू चला, पहले तो खुद ही छुप गया, अपने जैसे फिर कई रावण किये पैदा वहाँ।
सैकड़ों रावण नज़र आने लगे चारों तरफ़, बानरों-भालू डरे सब खो दिये ताबोतवाँ।
राम जी इमदाद कीजै, लक्ष्मण जी की हो मदद, इस तरह कहते हुए भागे वो भालू वानराँ।
एक ही रावण से हम सब तंग अब तक हो गये, जब हुए इतने ज़्यादा हम बचेंगे अब कहाँ।
देवता आपस में बोले जान ले कर भागिये, जाके दर्रों और पहाड़ों मे करे खुद को निहाँ।
जिसको था मालूम यह तो जादू ही का खेल है, उनके दिल में डर नही था, वो रहे क़ायम वहाँ।
जो बने फ़रजी थे रावण, मारने उनको लगे, अंगदो हनुमानों नल और नीलो दीगर वानराँ।
राम ने देखा कि वानर देवता बेकल है सब, हँस पड़े पहले उठाया फिर धनुष को बेगुमाँ।
हाथ मे ले कर चलाया राम ने सारंग धनुष, जिस क़दर फैला था जादू मिट गया सब नागहाँ।
जिस तरह सूरज निकलने से अँधेरा चल बसे, योंही वो सब मिट गये बाक़ी न था नामोनिशाँ।
एक रावण रह गया मैदान मे, यह देख कर, देवता सब खुश हुए वानर हुए सब शादमाँ।
राम के वापस बुलाने से वो वापस आ गये, जो पलट कर जा रहे मैदान से थे वानराँ।
राम की तारीफ़ जब करने लगे सब देवता, यों कहा रावण ने उनसे हो के उस जानिब रवाँ।
मुझसे तुम दब कर रहे हर दम, अरे ओ बुज़दिलो, गो मैं तनहा हूँ मगर काफ़ी अकेला हूँ यहाँ।
देवता भागे वहाँ से उसको आता देख कर, बोला वह कमबख्त मुझसे भागते तुम हो कहाँ।

देखा अंगद ने कि डर से देवता हैं भागते, पैर रावण का पकड़ कर वह गिराया नागहाँ।
लात भी रावण को मारी और वापस आ गया, फिर सँभल कर वह उठा जैसे कोई शेरेजियाँ।
वह चलाने लग गया बाणों को अपने चौतरफ़, हो गये बेताब और बेचैन अक्सर पहलवाँ।
राम ने भी तीर मारा उसका सर कट कर गिरा, साथ बाजू के गिरे हाथों से सब तीरोकमाँ।
जैसे-जैसे सर कटे बढ़ने गये तादाद में, जैसे तीरथ की जगह हो पाप से दूना जियाँ।
सर के और बाजू के बढ़ने से हुए बेजार सब, किस तरह मारेंगे इसको सोचते थे वानराँ।
अंगदो हनुमान नल ओ नील और वानर सभी, झाड पत्थर ले के दौड़े और हुए हमलाकुनाँ।
ले के उनके हाथ से वह झाड़ उन्हीं को मारता, हो रही थी इस तरह वह जंग इनके दर्मियाँ।
कोई भींचे, कोई काटे, लात मारे कोई एक, सर पर चढ़ कर उसके नल और नील नोचे बेशुमाँ।
वह जमीं पर इनको फेंका हाथ से अपने पकड़, ये मरोड़े हाथ उसका उठके दोनों पहलवाँ।
आ गया गुस्सा उसे फिर ले लिया अपना धनुष, और चलाया उनको जब घायल हुए सब वानराँ।
आ गया हनुमान को गश और भी वानर गिरे, जामवन्त ने ये जो देखा, वह हुआ फौरन रवाँ।
हाथ में अपने लिये जाते थे वो पत्थर पहाड़, साथ उनके दौड़ते जाते थे उनके भालुवाँ।
भालुओं को जेरोबाला जब कि रावण ने किया, लात एक सीने पे मारा खींच कर तब जामवाँ।
चोट छाती पर लगी बेचैन रावण हो गया, वह जमीं पर गिर गया, जाते रहे तावानवाँ।
तब उठाया सारथी ने और किया रथ पर सवार, हो गयी थी शाम वह वापस हुआ घर को रवाँ।
जब कि बेहोशी गयी, वानर सब उठ कर आ गये, राक्षस डरने लगे रावण को सब घेरे वहाँ।
पास सीता के गयी उस रात ही को त्रिजटा, और सब हालात मैदाँ के किये उनसे बयाँ।
सर बढ़े जाते थे रावण के सुना सीता ने जब, खौफ होने लग गया सीता के दिल के दर्मियाँ।
दिल उदास उनका हुआ और पूछने यों लग गयी क्या नतीजा होगा इसका कैसे निकले इसकी जाँ।
सच अगर पूछो तो मेरी बदनसीबी के सबब, बच रहा है वह यहाँ, मैं झेलती हूँ गलतियाँ।
जिस मुक़द्दर ने मुझे मालिक से रक्खा दूर है, जो हिरण मुझको दिखाया जर का नकली बेशुमाँ।
जिसके बाअस मुझको सब तकलीफ़ थी सहनी पड़ी, और जिसने मुझसे लक्ष्मण को सुनायी गालियाँ।
जो मुक़द्दर आज मेरी कुलफतों का है सबब, है वही रावण की जाँ का भी मुहाफ़िज निगहबाँ।
याद करके राम को सीता थीं रोती जार-जार, त्रिजटा बोली सुनो शहजादी तुम मेरा बयाँ।
कलबे रावण में लगेगा तीर जब ऐ जानकी, वह कभी फिर बच नहीं सकता है बेशक़कोशुमाँ।
रुक रहे हैं राम दिल में तीर उसको मारने, याद है दिल में तुम्हारी, तुम हो उसकी दुर्जे जाँ।
जानकी के दिल में अपनी याद हैं समझे हुए, और अपने दिल में वो समझे है, है सारा जहाँ।
इस तरह जब तीर रावण के लगेगा कल्ब में, वह न क्यों होगा ज़माने के लिए नुक्सांरसाँ।
सुनके सीता खुश हुई और फिर हुई कुछ दर्दमन्द, बोली वह कैसे मरेगा वह मैं करती हूँ बयाँ।
हर दफा सर उसके कटने से वह हो जाएगा दिक़, रह सकेगा ध्यान ही दिल मे तुम्हारा भी कहाँ।
राम जब मालूम कर लेंगे कि तुम दिल में नहीं, मार देंगे तीर फ़ौरन क्योंकि वे है रम्ज़दाँ।
त्रिजटा कह कर ये सीता से रवाना हो गयी, और फ़िराके राम में सीता की थी बेचैन जाँ।
रात उनको एक युग से भी ज्यादा हो गई, चाँद को वह देख कर करती रही जारोफ़ुगाँ।
आँख बायी उनकी फड़की यह सुगुने नेक था, वह यह समझीं अब विशाले राम से हूँ कामराँ।
नीम शब गुज़री, उधर रावण का गश जाता रहा, सारथी से यों कहा, तू मुझको क्यों लाया यहाँ।

तू बड़ा नादान है जो जंग मे पलटा लिया, सारथी ने पैर पड़ कर कर दिया सब कुछ बयाँ।
सुबह जब होने लगी, रावण हुआ रथ पर सवार, जंग के मैदान को वह हो गया फ़ौरन रवाँ।
राम की भी फौज मे फिर मच गयी हलचल बड़ी, जब हुआ मालूम रावण आ गया है फिर यहाँ।
दाँत अपने कटकटा कर दौड़ने आते थे सब, झाड़ पत्थर हाथ में थे, या कोई कोहेगिराँ।
मार मे उनके चले जाते थे वापस राक्षस, सूरमा वानर हुए, रावण ने भी हमला कुनाँ।
नोच कर और काट कर बेचैन उसको कर दिये, उसने चालाकी से अपने को किया फ़ौरन निहाँ।
कुछ भयानक सूरतें आने लगीं सबको नजर, भूत की भी शक्ल थी और हाथ में तीरोकमाँ।
खून पीते जा रहे थे नोचते थे बार-बार, हाथ में तलवार और इन्सान की थी मुंडियाँ।
पकड़ो, मारो की सदा आने लगी हरसिम्त से, खा ही डाले सबको, मुंह वह खोल कर होते रवाँ।
और रावण चौतरफ से तेग बरसाने लगा, जिस जगह वानर गये थी वह जगह आतिशफ़शाँ।
हो गये बेचैन वानर, लक्ष्मण, सुग्रीव भी, और फिर गर्जा वह रावण जैसे एक शेरेजियाँ।
हाथ मलते जा रहे थे, हो के वानर बेकरार, हाय का था लब पे नारा, राम था विर्देजबाँ।
दूसरी एक चालबाजी फिर से की रावण ने यह, शक्ल में हनुमान की बन कर कई आये वहाँ।
हाथ मे पत्थर लिये सब दौड़ते जाते थे सब, और पहुँचे उस जगह, थे रामचन्दर जी जहाँ।
जा के वो रघुनाथ को घेरे, उठा कर अपनी दुम, पकड़ो मारो कहते जाते और थे नाराकुनाँ।
राम ने जाना यह सब कुछ, और चलाया एक बाण, खेल जो रचा गया था, मिट गया सब नागहाँ।
खुश हुए वानर तमामी और सब वापस हुए, राम ने रावण को तीरों का बनाया फिर निशाँ।
हाथ और सर उसके कट-कट कर जो गिरने लग गए, इस लड़ाई का नही मुमकिन कभी करना बयाँ।
सर कटे, बाजू कटे, लेकिन वह मरता ही नही, सभी हैरत देखते थे, देख कर ऐसा समाँ।
उसके सिर कटने से बढ़ते जा रहे थे इस तरह, नफ़ा जब होता चले, लालच है बढ़ता बेगुमाँ।
देर होती जा रही थी और वह मरता न था, राम ने सोचा कि कोई बात है इसमें निहाँ।
जानते वह खुद थे लेकिन उनका मंशा है यही, अपने सेवक को बढ़ावे और करे इज्जतनिशाँ।
जब विभीषण की तरफ देखा तो उसने यों कहा, नाभ मे रावण के जो अमृत भरा है बेगुमाँ।
वह इसी के जोर पर अब तक नही मारा गया, सुन के यह रघुनाथ ने फिर ले लिया तीरोकमाँ।
बद सगुन आसार चारो सिम्त से होने लगे, सर व सग और लोमड़ी होने लगे नालाकुनाँ।
छा गयी जुलमत, अँधेरा छा गया चारों तरफ, जैसे होता है ग्रहण के वक्त सारे आसमाँ।
और परिन्दे खौफ से उड़ने लगे चारो तरफ, कोह और जंगल हुए हर सिम्त से आतिशफशाँ।
दरवाजे कला में मन्दोदरी थी काँपती, उसकी आँखो से हुआ सैलाब आँसू का रवाँ।
आसमाँ से आग बरसी और जमी हिलने लगी, खाक उड़ने लग गयी, चलने लगी जब आँधियाँ।
सब बुरे असबाब होने लग गये हर तौर से, उनका गिनना भी है मुश्किल और मुश्किल है बयाँ।
देवता आकाश से आवाज करने लग गये, इस तरह जब हो गया हरसू भयानक ही समाँ।
राम ने अपने चलाये खींच कर इकतीस तीर, नाभि, रावण से सुखा अमृत जो कुछ था निहाँ।
सर कटे उसके और उसके दस्तोबाजू कट गये, धड रहा बाकी जमी पर नाचता था बेगुमाँ।
दौड़ने जब लग गया धँसने लगी अन्दर जमीं, राम ने फिर तीर मारा जिस्म के भी दर्मियाँ।
उसके दो हिस्से हुए और गिर गया कहते हुए, राम को मारूंगा मैं, बतलाओ मुझको है कहाँ।
जब गिरा वह जोर से हिलने लगी सारी ज़मीं, बहर में तूफ़ान आया, हिल गये कोहेगिराँ।

सैंकड़ों वानर दबे जब जिस्म उसका गिर गया, और सर जा कर गिरे मन्दोदरी रहती जहाँ।
शादियाने देवताओं ने बजाये ऐश से, जय का नारा हर तरफ था, ब्रह्मा और शिव शादमाँ।
देवता सब शादमाँ थे और ऋषी भी और मुनी, जो मसर्रत के सबब सब राम पर थे गुलफ़शाँ।
राम की तारीफ करते जा रहे थे बार-बार, हर कोई तौसीफ़ करता, हर कोई था मदहख़्वाँ।
सिर पे उनके थी बन्धी जटा, मालूम देती थी मुकट, जा बजा गूँथे गये थे, फूल जिसके दर्मियाँ।
जिस्म पर बूँदें पसीने की कहीं थी ख़ुशनुमाँ, बाजुओं से फेरते जाते थे वह अपनी कमाँ।
राम की चश्मेकरम से देवता सब शाद थे, और वानर हो गये सब कामगारो कामराँ।
देख कर शौहर का सर मन्दोदरी रोने लगी, आ गया गश उसको जब करने लगी आहोफुगाँ।
औरतें जो पास थीं सब दौड़ कर रोने लगीं, ले गयी उसको वहाँ रावण का मुर्दा था जहाँ।
देख कर रावण की हालत रो रही थी ज़ार-ज़ार, बाल सर के खुल गये, जाते रहे ताबोतवाँ।
उसकी कूवत और सरवत का बयाँ करते हुए, पीटते जाती थी सीने और थी मातमकुनाँ।
तुमसे ख़ायफ़ थी ज़मीं और चाँद सूरज माँद थे, किस तरह तुम लौटते हो आज मरकर के यहाँ।
वरुण और वायू न ठहरे, और नहीं इन्द्रोकुबेर, आपके ये हों मुकाबिल इतनी ताक़त थी कहाँ।
मौत को जीता, फ़रिश्तों को भी जीता आपने, आज कैसे लौटते हो, होके तुम बे ख़ानमाँ।
आपकी कूवत व ताकत थी जहाँ में आशकार, थे बहादुर आपके फरजन्द, अहले ख़ानदाँ।
राम से होकर मुख़ालिफ़ ये तबाही हो गयी, कोई बाकी है न घर में, मिट गया नामोनिशाँ।
तुम ज़माने पर थे हावी, तुमसे ख़ायफ लोकपाल, आज आज़ा सब तुम्हारे खा रहे हैं गीदड़ाँ।
राम को जाना न तुमने, और न मानी कोई बात, यह उसी का है नतीजा, मौत के थे सब निशाँ।
राक्षस वन को जलाने के लिए वह आग है, जिनको तुम इन्सान समझे, राम इन्साँ हैं कहाँ।
तुम हमेशा दूसरों से छेड़ करते ही रहे, उम्र गुज़री पाप में, जानी न तुमने नेकियाँ।
राम ने फिर भी तुम्हारा मर्तबा ऊँचा किया, हाथ से उनके मरे पायी हयाते जावेदाँ।
इस तरह कहते हुए मन्दोदरी थी रो रही, देवता उसके हुए तौसीफ़ख़ार और मदहख़्वाँ।
औरतें घर की जो थीं सब रो रही थी ज़ार-ज़ार, दिल विभीषण का दुखा और खो दिये ताबोतवाँ।
जाके वह नज़दीक उनके आप रोने लग गये, राम के कहने से लक्ष्मण जी गये, ये थे जहाँ।
जाके लक्ष्मण ने तसल्ली दी विभीषण को बहुत, फिर ये वापस आये दोनों, रामचन्द्र थे जहाँ।
रामने उनसे कहा अब फिक्रोग़म को छोड़ दो, और क्रिया रावण की करने की करो तैयारियाँ।
राम के कहने के बाअस तब विभीषण ने किया, भाई रावण का करम हस्बे रिवाजे ख़ानदाँ।
मैयते रावण के जब सब कार्य पूरे हो गये, देके तिलअंजलि हुई वापस महल को रानियाँ।
और बक़ाया सब फरायज़ ख़त्म सारे हो गये, राम की ख़िदमत में आये फिर विभीषण बेगुमाँ।
राम हो कर तब मुख़ातिब भाई लक्ष्मण की तरफ़, अज़रहे लुतफो इनायत यों हुए गौहर फ़शाँ।
नील-नल सुग्रीव मारुती व अंगद जामवंत, दूसरे भी फ़ौज के जो लोग हैं अपने यहाँ।
ले के जाओ तुम विभीषण को ये सब हमराह हों, और तिलक करके विभीषण को बना दो हुक्मराँ।
बाप के अहकाम से मजबूर हूँ आने से मैं, रख नहीं सकता क़दम मैं बसतियों के दर्मियाँ।
मेरे ही हम रुतबा ये भाई है भेजा है जिन्हें, और इनके साथ ही मेरे बहादुर वानराँ।
सुनके यह इरशाद वानर सब रवाना हो गये, राजगद्दी की किये जा कर वो सब तैयारियाँ।
राजसिंहासन पर बिठला कर किया उनको तिलक, ताजपोशी ये विभीषण की हुई बाइज़्ज़तोशाँ।

सर झुकाया उनके आगे सब ख़मीदा हो गये, तख़्ते शाही पर विभीषण जब हुए जलवाकुनाँ।
जब मरासिम हो गये वापस विभीषण आए फिर, और वानर भी सब आये रामचन्द्र थे जहाँ।
राम ने लुतफ़े सुख़न से यों किया महज़ूज़ उन्हें, आप सब की ही मदद से मैं हुआ हूँ कामराँ।
आप ही की थी मदद रावन जो ये मारा गया, और विभीषण आज लंका के हुए हैं हुक्मराँ।
आपका परताप दुनिया में बढ़ेगा और भी, आपके सब काम होंगे साजग़ारो कामराँ।
राम के चूमे चरण, और सर झुकाये लोग सब, सुनके ये अलफ़ाज़ वानर हो गये सब शादमाँ।
राम फिर हनुमान से इस तरह फ़रमाने लगे, जाओ तुम लंका को अब है जानकी रहती जहाँ।
कैफ़ियत सारी यहाँ की जानकी से तुम कहो, और ख़बर तुम ख़ैरियत की उनकी ले आओ यहाँ।
ये रवाना हो गये, दाख़िल हुए लंका में जब, पेशवाई के लिए सब राक्षस आये वहाँ।
कुछ कसर बाक़ी न रखी ख़ातिरे मेहमान में, ले गये इज्जत से इनको जानकी जी थी जहाँ।
दूर से आदाब जब हनुमान ने इनको किया, वह यह समझे, है वही कासिद जो आया था यहाँ।
पूछा सीता ने कहो तुम ख़ैरियत रघुनाथ की, ख़ैरियत से तो हैं लक्ष्मण, और और सब ही वानराँ।
ख़ैरियत सबकी सुना कर यों कहा हनुमान ने, दस्त-बस्ता अर्ज़ है यह, तुम सुनो ऐ मेरी माँ।
जंग में रावण को जीता राम ने, वह मर गया, और विभीषण हो गये लंकापुरी के हुक्मराँ।
जब सुना हनुमान के मुँह से ये सीता ने सुख़न, हो गई मसरूर बेहद हो गयी वो शादमाँ।
पूछती हनुमान से थी क्या तुझे मैं दूं सिला, शुक्रिया तेरा अदा करने में कासिर है जबाँ।
यों कहा हनुमान ने मुझको सिला तो मिल गया, फ़तह पाई राम ने जो और हुए नसरत निशाँ।
तब कहा सीता ने तुमको यह दुआ देती हूँ मैं, हर तरह अच्छे रहो, हों राम तुम पर मेहरबाँ।
अब वही तज़वीज़ करना राम को मैं देख लूं, तब गये हनुमान वापस रामचन्द्र के यहाँ।
जाके हनुमाँ ने तमामी कैफ़ियत उनसे कही, राम ने अंगद विभीषण को बुलाया बेगुमाँ।
और कहा तुम जाओ मारुती को ले कर अपने साथ, और सीता को ले आओ तुम यहाँ बाइज़्ज़ोशाँ।
जल्द रवाना हो गये सब और पहुँचे उस जगह, थीं महारानी श्री सीता जी रहती थी जहाँ।
उस जगह जा कर विभीषण उनको सब समझा दिया, राक्षस की औरतें ख़िदमत में जो भी थी वहाँ।
उनको नहलाया गया ज़ेवर भी पहनाये गये, ख़ूबसूरत पालकी सजधज के आई एक वहाँ।
पालकी में हो गयीं सीता महारानी सवार, राम का था ध्यान दिल में और दिल था शादमाँ।
सब के दिल में थी उमंगें, रीछ, वानर शाद थे, हाथ में ले कर छड़ी, सब दौड़ते थे पासवाँ।
देखने जाते थे वानर राक्षस थे रोकते, तब कहा रघुवीर ने, रोको न इनको मेहरबाँ।
है यही बेहतर कि सीता को यहाँ पैदल ले आओ, ताकि वानर देख लेवें उनको जैसे अपनी माँ।
वानरों भालू हुए ख़ुश राम की सुन कर ये बात, देवता भी आसमाँ से हो रहे थे गुलफ़शाँ।
जानकी का रूप असली आग में जो था छुपा, अब ज़रूरत उसकी थी कि आज वह कर दे अयाँ।
इसलिए कुछ राम ने भी तलख़ बातें उनसे कीं, जोकि सुनने वालों के दिल को हुई ईज़ा रसाँ।
तब तो सीता जी ने की यों लक्ष्मण से इल्तेजा, मैं जल जाऊँगी, तुम आग सुलगा दो यहाँ।
आबदीदा हो गये लक्ष्मण भी जब सीता कही, राम से वह कुछ कहें, उनमें ये हिम्मत थी कहाँ।
राम के मंशा को पा कर लक्ष्मण दौड़े गये, और फराहम करके लाये आग और लकड़ी वहाँ।
आग जब रोशन हुई अच्छी तरह, तब जानकी, आके बेख़ौफ़ो ख़तर बोली यह सबके दर्मियाँ।
राम ही का है सहारा, राम हैं मालिक मेरे, मैं बजुज़ इनके नहीं हूँ, और किसी की क़द्रदाँ।

मैं क़सम खा कर हूँ कहती, बात हो सच्ची अगर, मिसले संदल आग यह हो जाय ठंडी नागहाँ।
राम ही का नाम ले कर आग में वह गिर गई, शिद्दते गर्मी उन्हें मालूम होती थी कहाँ।
जो बज़ाहर ऐब था वह आग में सब जल गया, वसवसे दिल के मिटे, और मिट गये शक्कोगुमाँ।
आग से सीता निकल आई बिला कोई गजन्द, और सबके सामने वह हो गयीं इज्ज़त निशाँ।
और भी रौनक बढ़ी चेहरे पर उनके आखिरस, राम के बाँयें तरफ़ जा कर हुई जलवाकुनाँ।
आसमाँ पर शादियाने ऐश के बजने लगे, देवता सब शाद हो कर हो रहे थे गुलफ़िशाँ।
वानरों भालू भी सब खुश हो गयें शादाँ हुए, राम की जय का वह नारा थे लगाते बेगुमाँ।
मालती रथवान जो था इन्द्र का भेजा हुआ, ली इजाज़त वापसी की हो गया वापस रवाँ।
देवता भी आये सब और इल्तेजा करने लगे, आपने आवण को मारा, हम हुए सब शादमाँ।
आप ही की ज़ात लासानी है और है जातेपाक, आपकी तारीफ़ हमसे हो नहीं सकती बयाँ।
जब मुसीबत हम पे आयी आप ने ही की मदद, मुख़्तलिफ़ अवतार में होते हुए जलवाकुनाँ।
मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह और वामन परसुराम, आप ही का रूप थे यह कुछ नहीं शक्कोगुमाँ।
रावने बद खुदी यह हर तरह से बदजात था, आपके हाथों से मर कर हो गया यह कामराँ।
आपकी ख़िदमत से हम गाफ़िल हमेशा ही रहे, सब ख़ताएँ बख़्श दीजे होके हम पर मेहरबाँ।
देवता और सब मुनी इस तरह कह कर चुप रहे, तब ब्रह्मा जी भी खुद तशरीफ़ ले आये वहाँ।
जय का नारा वह लगाये और कहा रघुनाथ जी, जिन्दगी और मौत हाथी, आप हो शेरेजियाँ।
आप-सा ज्ञानी नहीं है, आपका हमसर नहीं, आप में मुज़मिर है प्रभु जी, हर तरह की खूबियाँ।
आपके रूपे मुनव्वर पर है वह जाहो जलाल, देख ही सकते नहीं जिसको मुनी और राज़दाँ।
आपने रावण को मारा जो बड़ा बदकार था, आपके सब काम अच्छे बाअसे आराम जाँ।
फ़िक्रोग़म बाक़ी न हो और खौफ़ सब जाता रहे, अपने सेवक पर रहा करते हो हरदम मेहरबाँ।
सब मुसीबत दूर करने के लिए आये हो आप, आप ही बस आप हो, है आप-सा मिलता कहाँ।
यह मेरे तसलीम खम है, आपके आगे जनाब, आपने अपना विभीषण की बनाया हुक्मराँ।
ज्ञान के और खूबियों के आप ही भंडार हैं, ख्वाहिशों से दूर रहते हो हमेशा बेग़माँ।
जो कि हैं पापी उन्हें तुम मारने में वीर हो, हो ग़रीबों के मआवन बेकसों के पासबाँ।
आपको और जानकी को यह मेरा प्रणाम है, पाप के दरिया का बेड़ा पार करने बेगुमाँ।
तीरो तरकस खूबसूरत हाथ में रखते है आप, सुर्ख आँखें आपकी है आप है शाहेजहाँ।
आप है बेऐब और कुछ आपमें लालच नहीं, शहवत और नख़्वत को कर देते है बेशक रायगाँ।
ख्वाहिशाते नफ़्स का कुछ शायबा तक भी नहीं, आप दुनिया में अयाँ हो कर भी सबसे है निहाँ।
जैसे सूरज और शै है, रोशनी है और शै, जो बजाहर है जुदा, लेकिन जुदाई है कहाँ।
हमने सेवा की न कुछ, धिक्कार हैं हम पर हज़ार, और क़ाबिल क़द्र हैं, है ये जितने वानराँ।
अक्ल मेरी ठीक कीजे भूल में मैं हूँ पड़ा, इम्तियाजे दर्दो राहत का सलीका ही कहाँ।
आप बदकारों को देते है सजा आक़ाएमन, आपके क़दमों मे शिव-गौरी का दिल है बेगुमाँ।
अब दुआ मुझको ये दीजै आप ही की याद में, मैं गुज़ारूँ उम्र अपनी और रहूँ मैं शादमाँ।
स्वर्ग से दशरथ भी आये राम ने उनसे कहा, मैंने जो कुछ भी किया, सब आपकी है नेकियाँ।
राम लक्ष्मण और सीता ने क़दम बोसी भी की, और दशरथ हो गये सुरलोक को वापस रवाँ।
इन्द्र ने भी राम से यह बाअदब की इल्तेजा, खर व दूषण और रावण थे बहादुर पहलवाँ।

आपने इन सबको मारा खौफ़ अब बाकी नहीं, हो गये मसरूर हम भी, और सब अहले जहाँ।
आपने कमज़ोर कर डाली है नस्ले राक्षस, था बड़ा मगरूर जालिम शाहे लंका बेगुमाँ।
मैं समझता था कि मुझ-सा दूसरा कोई नहीं, आपके दर्शन से मैं अब हो गया हूँ कामराँ।
कोई तो जपते है हरदम आपका निर्गुण स्वरूप, मुझको भाता है सगुण ही रूप जो है अब अयाँ।
मेरे दिल मे आपकी भक्ति का हो हरदम मुकाम, आपकी तसवीर हो दिल मे मेरे जलवाफ़िगन।
आपको प्रणाम करता हूँ मैं आक़ा बार-बार, हो दया की एक दृष्टि मुझ पे ऐ शाहे शहाँ।
काम लायक़ जो हो मेरे वह मुझे फ़रमाइए, ताबजा लाऊँ उसे मैं जो कि है शायाने शाँ।
राम हो कर शाद उनसे इस तरह कहने लगे, वानरो भालू पड़े मैदान के है दर्मियाँ।
राक्षस लोगों के है ये हाथ से मारे गये, मेरी ही इमदाद मे हर इक ने दे दी अपनी जाँ।
आप इन सबको जिलाये, मेरी है यह आरजू, इन्द्र यह इरशाद सुन कर हो गये बस शादमाँ।
इन्द्र ने तामाल में बरसा दिया आबेहयात, हो गये जिन्दा मरे जितने थे भालू वानराँ।
ऐसी बारिश से फ़कत भालू व वानर जी उठे, राक्षस महरूम इससे रह गये सब बेगुमाँ।
क्योंकि मरते वक्त उनके था जबाँ पर राम नाम, उनके हाथों से मरे, पाया हयाते जावेदाँ।
देवता जो आये थे अपने विमानो पर चढ़े, फूल बरसाने लगे और हो गए वापस रवाँ।
जब ये देखा है ये अच्छा वक्त, शिव जी आ गये, राम से हो कर मुख़ातिब यो हुए गौहर फ़शाँ।
कीजिए मुझ पर इनायत आप ऐ रघुनाथ जी, देवताओं के हैं स्वामी, और सब पर मेहरबाँ।
आप अँधेरे को मिटाने के लिए हैं रोशनी, भ्रम बुराई को मिटा देने है बेशकोगुमा।
ख्वाहिशाते नफ़्स का जो है चमन मिस्ले कमाल, आप माला बन के कर देते है गुलशन रायगाँ।
नाव के तुम हो खिवैया पार बेड़ा तुम करो, अहले दुनिया के लिए दुनिया है बहरे बेकराँ।
आपका जो आसरा ले उसपे करते है करम, और ग़रीबों के मआवन भी है और राहत रसाँ।
इल्तेजा मेरी है आप और भाई लक्ष्मण जानकी, मेरे हो दिल मे बसे, रह जाये उसके दर्मियाँ।
आपकी मैं राजगद्दी देखने को आऊँगा, आप जब मुल्के अवध के होंगे जा कर हुक्मराँ।
आये तब राजा विभीषण रामचन्द्र जी के पास, जब कि शिव जी स्तुती करके हुए वापस रवाँ।
ऐ धनुष धारी सुनो अब आप मेरी इल्तेजा मार कर रावण को, मेरे आप के सब हमराहियाँ।
आपने मुझ पर दया की और अपनाया मुझे, मै तो था अदना व जाहिल और मैं था हीचदाँ।
दास के घर मे क़दम रंजा हो सरकार की, मरतबा मेरा बढ़ा कर कीजिए इज्जत निशाँ।
मुल्क और धन आपका है और ख़ज़ाना आपका, कीजिए तकसीम इसको वानरों के दर्मियाँ।
हर तरह से आप अपना लीजिए मुझको हुज़ूर, और अयोध्या को मुझे ले चलिए ऐ शाहे शहाँ।
राम की आँखो मे आँसू आ गये उलफ़त भर, जब विभीषण ने किया यह राग मे अज़नयाँ।
और कहा ए भाई यह घर और ख़ज़ाना है मेरा, बात है बिल्कुल ये सच्चा कुछ नहीं शक्कोगुमाँ।
भरत की मैं याद करके हो रहा हूँ बेकरार, हर घड़ी हर लमहा मुझको है यही बारेगराँ।
वह तपस्वी बन के है मशगूल मेरी याद मे, तुम करो तदबीर वह जल्दी मैं पहुँचूँ अब वहाँ।
मुत्तफ़िक़ तुमसे हूँ मैं, पहुँचूँ अगर मुद्दत के बाद, भाई को जिन्दा नहीं पाऊँगा बेशक्कोगुमा।
याद मेरी दिल मे रक्खो और बसद जाहो जलाल, कल्प भर तक तुम रहो इस सल्तनत के हुक्मराँ।
आख़िरश मे तुम जगह वह पाओगे मेरे अज़ीज़, जो जगह पाता है जोगी संत हो या रम्ज़दाँ।
जब सुना इतना विभीषण, गिर गये पैरों पे वह, और वानर रीछ भालू हो गये सब शादमाँ।

फिर विभीषण कमर को अपने रवाना हो गये, जर जवाहिर ले के वह निकले वहाँ से बेकराँ।
इक जवाहर से भरा राजा विभीषण ने विमान, और ले कर आया उसको रामचन्दर के यहाँ।
राम के आगे जो उतरा आ के वह पुष्पक विमान, इस तरह इरशाद फरमाने लगे खुन्दादहाँ।
पारचा, जर और जवाहर फेंकते नीचे चलो, बैठ कर इसमें उड़ो अब तुम बसूये आसमाँ।
हुक्म की तामील से फ़ौरन उड़ा ऊपर विमान, और हुई बरसात जर और पारचे की बेगुमाँ।
जिसको जो आया उठाया और उसी को शौक से, चीज खाने की समझ कर खाये अक्सर वानराँ।
जो न थी खाने के क़ाबिल वह दिये उसको उगल, राम लक्ष्मण जानकी हँसने लगे सब नागहाँ।
भेद जिनका जान सकते हैं नहीं साधू व संत, वानरों पर देखिए किस तरह है वो मेहरबाँ।
जेवरो मलबूस पहने राम के पास आ गये, ईसतादा हो गये सब आ के भालू वानराँ।
मुख्तलिफ़ अक्साम के वानर जो आये रूबरू, देख कर उनको हुए तब रामचन्द्र शादमाँ।
और यह इरशाद कर पाया कि मेरे भाइयो, यह तुम्हारी ही मदद से मैं हुआ हूँ कामराँ।
मैंने रावण को है मारा बस इसी इमदाद पर, तख्ते लंका पर विभीषण भी हुए जल्वाकुनाँ।
याद मेरी दिल में रखना और रहो बेखौफ़ तुम, अपने-अपने घर को जाओ और रहो सब शादमाँ।
वानरों ने दस्तबस्ता यों कहा ए राम जी, आप जो फ़रमा रहे हैं वह सब शायाने शाँ।
हम तो सब अदना हैं वानर आपने अपना लिया, हम को इस लुत्फ़ और दया से कर दिया इज्जत निशाँ।
रामे आती है हमें यह बात सुन कर आपकी, कोह के आगे भला चींटी की ताक़त ही कहाँ।
शादमानी भी थी दिल में और जुदाई का भी रंज, राम से ले कर इजाजत हो गये आखिर रवाँ।
नील नल हनुमान अंगद और सुग्रीव रीछराज, और विभीषण चुप खड़े थे, देखते थे सब समाँ।
ये न थी हिम्मत किसी की अर्ज कुछ कर सकें, राम का चेहरा थे तकते और थे आँसू रवाँ।
प्रेम उनका देख कर उनको बिठाया अपने साथ, और विमान उड़ कर हुआ इस जा से फ़ौरन रवाँ।
जब उड़ा ऊपर को आखिर शोर होने लग गया, राम की जय बोलने में लोग सब थे हमजबाँ।
राम जी सीता जो थे बैठे हुए के बीच में, नक्श एक रानी हुआ था उस विमा के दर्मियाँ।
और चलने लग गया वह तेज रफ़्तारी के साथ, देखता सब खुश हुए, होने लगे सब गुलफ़शाँ।
थीं हवाएँ भी मुआफ़िक़, आबे दरिया साफ था, रास्ता भी अच्छा था और शोर था साफ हुआ आसमाँ।
राम ने बतलाया सीता को यह वह मैदान है, इन्द्र के फ़ातेह को मारा था लक्ष्मण ने जहाँ।
अंगदो हनुमान ने मारे थे जो भी राक्षस, खाक में सब लोटते कैसे पड़े हैं पहलवाँ।
कुम्भकरण, रावण मरे थे जिस जगह देखा उसे, मेघनाद के मुकाबिल और थे ईसा रवाँ।
मैंने पुल बनवाया इस जा, यह है रामेश्वर मुकाम शिव को स्थापित किया हूँ, हाथ से अपने यहाँ।
जिस जगह बन में रहे थे छुप के शिकार सब मुकाम, और बतलाते थे इनको उनके सब नामोनिशाँ।
आ गया जब चलते-चलते इनके दण्डक बन क़रीब, जिस जगह रहते अगस्त थे और दीगर मासुवाँ।
राम उनके पास उतरे और मिल कर एक से, फिर बसूये चित्रकूट राही हुआ यह कारवाँ।
सैर जमुना और गंगा की कराई राम ने, सर झुकाया उनके आगे हो गये आगे रवाँ।
देख कर प्रयाग को बोले कि तीरथ राज है, पाप होते दूर हैं, त्रिवेणी बहती है यहाँ।
यह वही त्रिवेणी है जो कष्ट को करती है दूर, मंजिले मकसूद पर चढ़ने की है य सीढ़ियाँ।
फिर अयोध्या को दिखा कर यों कहा यह वह शहर, जिसके दर्शन से हुआ करते हैं इन्साँ कामराँ।
शहर को अपने जो देखा, हो गये मसरूरो शाद, और त्रिवेणी पे उतरे और किये स्नान वहाँ।

और कहा हनुमान से जाओ अयोध्या जल्द तुम, भरत से जा कर हमारी खैरियत कर दो बयाँ।
और उनकी खैरियत का ले कर आओ तुम पयाम, इस क़दर सुनते ही हनुमाँ हो गये फ़ौरन रवाँ।
उस जगह ये सब गये रहते जहाँ थे भारद्वाज, देख कर इनको हुए बेहद मुनीजी शादमाँ।
जब वहाँ से भी चले, पाई खबर राजा निषाद, दौड कर चिल्ला के बोला, लाओ किश्ती है कहाँ।
पार गंगा करके आये इस तरफ़ साहिल पर जब, वह विमान उतरा ज़मीं पर हुक्म पा कर नागहाँ।
तब तो सीता जी ने की गंगा की पूजा शौक से, और गंगा ने दुआ दी इनको हो कर शादमाँ।
गोह का राजा वहाँ आया जो पाई ये खबर, गिर गया ज़मीं पर हो के बेहद शादमाँ।
शादमानी के सबब आपे से बाहर हो गया, राम ने उसको उठा कर दिया इज्ज़त निशाँ।
पास उसको अपने बिठलाया और पूछी खैरियत, बोला वह मैं आपके दर्शन से हूँ अब कामराँ।
भरत के मानिन्द समझा, जो कि था अदना निषाद, पास अपने उसको बिठलाया किया इज्ज़त निशाँ।
सदक़े दिल से जो हैं पढ़ते और सुनते हैं इसे, शाद रहते हैं हमेशा और हरदम कामराँ।
राम ही को याद कर तू राम ही का नाम ले, ऐ दिले नादान सुन तू, पाप का घर है जहाँ।
राम जी की वापसी को एक दिन बाक़ी था बस, मुन्तजिर सब लोग थे मुल्के अवध के साकिनाँ।
सब सुगूने नेक होने लग गये चारों तरफ़, और नज़्ज़ारे थे हर सू शादमानी के अयाँ।
रानी कौशल्या का और सब रानियों का दिल था खुश, जैसे आने की खबर सुनने ही को हैं नागहाँ।
सीधा बाजू, आँख सीधी थी फ़ड़कती बार-बार, भरत के दिल मे उमंग होने लगी कुछ नागहाँ।
सोचने दिल में लगे क्या बात है आये नहीं, मुझसे वे नाराज़ हो कर क्या नहीं आये यहाँ।
लक्ष्मण तक़दीर वाले हैं कि जो हमराह है, मैं तो हूँ बदबख्त मुझको साथ वो रखते कहाँ।
बात भी ये ठीक है मैं हूँ सजावारे खता, लेकिन अपने सेवकों के वो है बेशक कद्रदाँ।
इसलिए उम्मीद है उनसे मिलूंगा मै ज़रूर, कुछ सगुन अच्छे नज़र आते है अब मुझको यहाँ।
कल की यह मुद्दत निकल जाये न आये वह अगर, मै बड़ा बदबख्त हूँगा गर न निकले मेरी जाँ।
भरत जी जब सोच मे इस तरह थे डूबे हुए, ब्राह्मण के भेष में हनुमान पहुँचे नागहाँ।
डूबने वाले को मिल जाये अगर किश्ती कभी, किस तरह आती पलट कर उनके है कालिब मे जाँ।
भरत को देखा कि बैठे सेज पर है घास की, है जटा सर पर, है दुबले, राम है विरदे ज़बाँ।
देख कर यह उनकी हालत हो गये हनुमान खुश, और मुहब्बत के थे आँसू आँख से उनकी रवाँ।
भरत से हो कर मुखातिब यों कहा हनुमान ने, आप जिसके हिज्र में अब तक रहे है नीमजाँ।
देवताओं के है रक्षक और मुनियों के मुमिद, रामचन्दर खैरियत से वापस आये है यहाँ।
जंग में जीता अदू को और सीता को ले आये, लक्ष्मण को साथ ले कर आ रहे है अब यहाँ।
यह खबर सुनते ही क़ुलफत दूर सारी हो गयी, जैसे शरबत से मिटा ले प्यास को तिशनादहाँ।
भरत ने पूछा कि तुम हो कौन कैसे आ गये, किस तरह मुझको सुनाई यह खबर राहत रसाँ।
वह कहे हनुमान हूँ मैं और पवन का पुत्र हूँ, राम का सेवक हूँ मैं, भेजा उन्होंने है यहाँ।
वो खुशी से उठ खड़े हो कर गले इनसे मिले, शाद बेहद हो गये, थे आँख से आँसू रवाँ।
और कहा तुमसे मिला तकलीफ़ सब जाती रही, राम ही जैसे के मुझसे मिल गये हैं अब यहाँ।
खैरियत वह पूछते थे भाइयों की बार-बार, क्या मिला उसका तुम्हें है, तुम कहो ऐ—मेहरबाँ।
कोई शै देने के लायक़ मैं नहीं पाता तुम्हें, खूब मैंने सोच कर देखा है इसको मेरी जाँ।
मुझसे वह अहसाँ किया है जो न भूलूंगा कभी, इसका बदला हो सके मुझसे, यह मुमकिन है कहाँ।

फिर सुनाया भरत को अहवाल सारा राम का, जिस क़दर हालात गुज़रे, कर दिया सब कुछ बयाँ।
भरत ने पूछा कि मेरी याद भी करते थे क्या, अपने सेवक को भी करते याद थे क्या बेग़माँ।
सुनके ये अलफ़ाज़ क़दमों पर गिरे हनुमान जी, दिल में सोचा राम खुद इनके हैं रहते मदहख़्वाँ।
और कहा है राम को तो आप जाँ से भी अज़ीज़, भरत ऐसी बात सुन कर हो गये बस शादमाँ।
करके फिर आदाब वापस हो गये हनुमान जी, और फ़ौरन आ गये थे रामचन्दर जी जहाँ।
ख़ैरियत आ कर सुनाई राम भी खुश हो गये, बैठ कर फिर सब विमाँ में हो गये फ़ौरन रवाँ।
भरत भी आये अयोध्या मे गुरु जी से कहा, और महल में भी ख़बर की राम—आते हैं यहाँ।
भरत ने सबको सुनायी ख़ैरियत की भी ख़बर, जब कि सुन कर यह ख़बर आई महल से रानियाँ।
फूल-फल थालों में ले कर पेशवाई के लिए, औरतें जाती थीं, गाती थीं मुबारकबादियाँ।
यह ख़बर सुनते ही दौड़े जा रहे थे लोग सब, जिस किसी भी हाल में, जो थे हुए फ़ौरन रवाँ।
देर हो जाने के अन्देशे से भागे जा रहे, तिफ़्ल और बूढ़े रहे जाते थे घर के दर्मियाँ।
पूछते जाते थे हर एक दूसरे से इस तरह, राम को जाते हुए क्या आपने देखा यहाँ।
राम के आने के कारण छा गया आनन्द सब, लोग थे शादाँ ओ फरहाँ और थे शादो कुनाँ।
और हवाएँ भी मुआफ़िक इस तरफ़ चलने लगीं, आबे सरजू साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ हो कर था रवाँ।
गुरु वशिष्ठ और शत्रुहन को साथ ले कर भरत जी, ख़ैरमकदम उनका करने को हुए फ़ौरन रवाँ।
सीढ़ीयों पर औरतें चढ़ कर थीं ऊपर देखतीं, जब विमान आया नज़र गायी मुबारकबादियाँ।
है अवधपुर एक दरिया राम क़ाबिल माह हैं, जोश में आ कर उबलता है जो ये बहरेग़राँ।
औरतें जो फिर रही थी इस तरफ और उस तरफ, वह तरंगे बहर की थी बहर के इस दर्मियाँ।
सैर करवाते अवध की राम थे चलते हुए, और कहते थे सुनो तुम सब अवध की ख़ूबियाँ।
ख़ास कर सुग्रीव अंगद और विभीषण से कहा, मुल्क है यह ख़ूबसूरत, शहर है नुसरत निशाँ।
लोग कहते है कि है वैकुण्ठ ही अच्छा मुकाम, लेकिन उससे भी ज़्यादा है अवध जन्नत निशाँ।
राज़ इसमें क्या है नावाक़िफ है इससे लोग सब, भेद इसका जानते हैं लोग जो हैं रम्ज़दाँ।
जन्म-भूमि है मेरी, जिसमें है यह सरयू नदी, इसमें जो स्नान कर लेंगे वो होंगे शादमाँ।
जो यहाँ रहते हैं वो हैं सब मुझे दिल से अज़ीज, यह मुबारक शहर है बरकत भी रहती है यहाँ।
तब विमान उतरा ज़मीं पर राम के इरशाद से, जब ये देखा आ रहे है सब अवध के साकिनाँ।
हो गये नीचे फ़रोकस जब विमाँ से लोग सब, राम ने फरमाया वापस उसको कर दीजै रवाँ।
राम के फरमान से वापस गया पुष्पक विमान, जिसका मालिक था कुबेर, और यह गया जिसके यहाँ।
भरत के हमराह सब लोग आये मिलने के लिए, राम के थे हिज्र में सब लोग दुबले नातवाँ।
गुरु वशिष्ठ आये हुए थे और आये बामदेव, राम ने देखा कि आते हैं गुरु जी भी यहाँ।
दौड़ कर राम और लक्ष्मण उनके पैरों पर गिरे, और गुरु ने भी उठाया उनको हो कर शादमाँ।
ख़ैरियत पूछी गुरु ने राम ने उनसे कहा, आपकी किरपा से हम हरदम रहे हैं शादमाँ।
दूसरे आये ब्राह्मण जो थे उनसे भी मिले, राम के चूमे चरण फिर भरत मिसले ख़ादिमाँ।
राम ने उनको उठाया जब ज़मी पर यह गिरे, और गले अपने लगाया हो के बेहद मेहरबाँ।
आँख से आँसू थे जारी रोयें-रोयें थे खड़े, आ गई चेहरे पे रौनक़ और दिल था शादमाँ।
किस मुहब्बत से मिले दोनों यह कह सकता नहीं, इसकी कुल तफसील दी जाए यह मुमकिन है कहाँ।
ख़ैरियत और आफ़ियत यह पूछते है भरत से, भरत के मुँह से न निकले बोल यों थे शादमाँ।

भरत को कितनी खुशी थी कोई कह सकता नहीं, जानता है यह वही जो देख पाया है समाँ।
भरत ने आखिर सँभल कर भाई से अपने कहा, आपके दर्शन से मेरी आ गई है जाँ में जाँ।
गम की दरिया मे मैं डूबा जा रहा था बेतरह, आपने मुझको बचाया ऐ उमिदे बेकसाँ।
भरत से लक्ष्मण मिले और शत्रुघ्न से राम जी, शत्रुघ्न से फिर मिले लक्ष्मण जी बेहद शादमाँ।
भरत ले कर शत्रुघ्न को तब गये सीता के पास, पैर उनके चूम कर खुद को किया इज्जत निशाँ।
राम के आने से सबके दिल हुए थे बाग-बाग, हो गये शाद और खुर्रम सब अवध के साकिनाँ।
लोग जो आये थे सब बेकल थे मिलने के लिए, राम जी सबसे मिले जो लोग आये थे वहाँ।
राम को यों देख कर सब लोग शादाँ हो गये, मर्दोजन मुल्के अवध के पीर और तिफ्लो जवाँ।
एक करिश्मा-सा किया वह इस कदर जल्दी मिले, और फिर आगे बढ़े जिस जा खड़ी थी उनकी माँ।
गाय जैसे दौड़ती नौजाद बछड़ा देख कर, ऐसे ही दौड़ी चली आती थी हर एक उनकी माँ।
छोड़ कर बछड़े को घर पर गाय चरने को जो जाय, वापसी में दौड़ कर कैसे वह आती है मकाँ।
राम हर माँ से मिले और उनको खुर्रम कर दिया, दूर कुल्फत हो गई और हो गयीं सब शादमाँ।
फिर सुमित्रा अपने लड़के लक्ष्मण से भी मिली, राम से रुख्सत करके अफ़ाइल जो हुए थे कामराँ।
कैकई के दिल मे कुछ होता था मिलने मे लिहाज, लक्ष्मण मिल कर मिटाये उनके सब शक्कोगुमाँ।
जानकी भी अपने सासो से मिली फिर दौड़ कर, और दुआ दी उनको सबने हो के वो सब हमजबाँ।
थाल मे सोने की रख कर आरती भी की गयी, फरते इशरत से थे माँ की आँख से आँसू रवाँ।
और निछावर कर रही थी उनपे हर माँ वार, मुख्तलिफ़ अक्साम की चीजें वो वारी बेगुमाँ।
सोचीं कौशल्या के बच्चे दोनों हैं नाज़ुक बदन, राक्षस थे सब बहादुर और सब थे पहलवाँ।
किस तरह बच्चो ने मारा वह बहादुर राक्षस, और रावण भी मरा लंका का जो था हुक्मराँ।
लक्ष्मण सीता के हमराह राम को जब देख ली, हो गई मसरूर बेहद हो गई वो शादमाँ।
तब विभीषण और सुग्रीव नील नल और जाम्बवन्त, अंगद और हनुमान जो थे सर गिरोहे वानराँ।
अपना सब मलबूस बदले भरत से जा कर मिले, और अयोध्या वासियों के भी थे ये सब मदहख्वाँ।
राम ने उनको गुरु जी से मिलाया अपने फिर, और कहा इनकी बदौलत मैं हुआ नुसरतनिशाँ।
और गुरु जी से मुखातिब हो के यों कहने लगे, ये है सब मेरे सखा और मुझ पे है सब मेहरबाँ।
जंग के मैदान मे ये सब मेरे साथी रहे, वास्ते मेरे उठायी इन्होंने दुश्वारियाँ।
भरत से भी मैं ज्यादा इनको रखता हूँ अजीज, सुनके ऐसी बात हमराही हुए सब शादमाँ।
फिर ये कौशल्या से भी जा कर अदब से सब मिले, और दुआ रानी ने दी हो कर निहायत शादमाँ।
तब वहाँ से राम अपने कसर को राही हुए, चारोतरफ़ से लोग उन पर हो रहे थे गुलफशाँ।
सीढ़ियों पर छत पे चढ़ कर देखती थी औरतें, उनके घर पहले जो सीता राम होते थे रवाँ।
तोरणें बाँधी गयीं, घर पर कलश रखे गये, खैर मकदम की हर एक घर पर हुई तैयारियाँ।
रास्ते सब साफ थे गलियाँ सजायी थी गयी, और डंके भी बजे, बजने लगीं शहनाइयाँ।
औरतें गाती हुई थालों में ले कर आरती, गा रही थीं फ़रते मोहब्बत से मुबारकबादियाँ।
जिस तरफ गुजरे थे, होती जा रही थी आरती, वक्त का मंजर मैं कैसे करूँ इसमें कासिर है जबाँ।
राम की फुरक़त में जो दिल हो गये थे सब उदास, फिर शिगुफ्ता हो गये दिल, वो जो फिर आये यहाँ।
शहर के सब लोग दर्शन से हुए यों मुस्तफीद, और महल में राम पहुँचे अपने बासद इज्ज़ोशाँ।
राम ने सोचा कैकई माँ है शर्मिंदा बहुत, सबसे पहले वो गये खुद कैकई जी के यहाँ।

उनको समझा कर बुझा कर सब खिजालत दूर की, बाद इसके फिर हुए वो क़मर को अपने रवाँ।
वे महल में जब हुए दाखिल, हुए सब लोग खुश, ब्राह्मण जितने थे बुलवाये वशिष्ठे नुकता दाँ।
और कहा है आजदिन अच्छा घड़ी भी नेक है, और सारे पंडितो ज्ञानी इकट्ठे है यहाँ।
सोच कर मुझको इजाजत दीजिए इस बात की, राम को मुल्के अवध का आज करदें हुक्मराँ।
यह गुरु की बात सुन कर लोग सब खुश हो गये, ताजपोशी राम की करने में सब थे हमज़बाँ।
देर अब होने न पाये लोग सब कहने लगे, आये बुलवाने से उम जा तब मुमंते नुकतादाँ।
की हिदायत जो गुरु ने सब वो तैयारी हुई. धूम से होने लगी हर बात की तैयारियाँ।
शहर सजने लग गया हररू निहायत शौक से देवता भी चौ तरफ से हो रहे थे गुलफशाँ।
राम अपने सेवकों को तब बुला कर यों कहा, मेरे जो अहबाब हमराह आज आये हैं यहाँ।
उनको तुम स्नान करवाओ ये पहला काम है, सुनते ही अहकाम दौड़े, जिस कदर थे खादिमाँ।
हो गये स्नान से फारिग़ जो ये अहबाब सब, सब को फिर याद फरमाया गया अपने यहाँ।
जो जटा बाँधी थी सर में राम ने खोली उसे, तीनों भाई की हुई हम्माम की तैयारियाँ।
राम ने अपनी जटा खोली फिर अपने हाथ से, खुद इजाजत ली, हुए स्नान करने को रवाँ।
जेवरो दोशाल शाहना हुए जब जेबे तन, शेष भी कासिर थे, खूबी उसकी करने से बयाँ।
जानकी जो को भी सासो ने कराया गुस्ल तब, जेवरो पोशाक पहनो जो कि थे शायानेशाँ।
बाँई जानिब जानकी जी भी बरामद हो गई, राम जब आ कर सभा में हो गये जलवाकुनाँ।
ब्रह्मा और शिव और ऋषी सब थे विमानों पर चढ़े, देखते जाते थे वो इस ताजपोशी का समाँ।
तख्त मँगवाया गुरु ने जो निहायत खूब था, जिसकी खूबी हो नहीं सकती है रावी से बयाँ।
ब्राह्मण से पूछ कर उस पर बरामद हो गये जानकी जी उनके बाजू हो गयीं जलवाकुनाँ।
देख कर जोड़ा वे दोनों का हुए सब लोग खुश, जय का नारा गूँज उट्ठा अज जमीं ता आसमाँ।
सब से पहले गुरु वशिष्ठ इनको दिये टीका लगा, बाद औरो ने लगाया जो ब्राह्मण थे वहाँ।
राज सिंहासन पे बैठे, देख कर फरजन्द को, शाद होती जा रही थी राम की हर एक माँ।
जो ब्राह्मण थे उन्हें वो दान देने लग गयीं, और सब मुहाम भी इनाम पाये बेकराँ।
और नक्कारे खुशी के सब बजाने लग गये, देवताओं ने जो देखा ताजपोशी का समाँ।
आसमाँ पर भी तभी गन्धर्व गाने लग गये, नाचने सब लग गये हो कर वो शादो शादमाँ।
भरत लक्ष्मण शत्रुहन तीनों खड़े पीछे रहे, छत्र, पंखा और चँवर हाथो में ले कर बेगुमाँ।
अंगदो हनुमान विभीषण और सुग्रीव सामने, ढाल और तलवार शक्ति हाथ में थी बरछियाँ।
राम के चेहरे पे कितना था तजल्ला क्या कहूँ, ज़र्द था पीताँवर जेबे तने आली निशाँ।
ताज सर पर और बाजू बन्द बाजू पर बँधे, और भी जेवर थे पहने जो कि थे जेबेशहाँ।
आँख जिनकी थी कमल-सी, सीना चौड़ा जिनका था, जिनके बाजू ऊँचे ऊँचे शानशौकत का निशाँ।
अपने-अपने घर को जब देवता वापस गये, चार भाट आये उसी दम, जो मुजलिम्म वेददाँ।
दस्तबस्ता यों मुवद्दिब हो के कहने लग गये, आपके औतार से सब हो गये हैं शादमाँ।
आपने रावण को मारा, एक बड़ा पापी जो था, और भी मारे गये जो थे निशाचर पहलवाँ।
लोग जो तकलीफ़ में थे उनकी कुलफ़त दूर की, आपके सेवक हैं हम हैं आप दिल से क़दरदाँ।
देवता और राक्षस इनसान व दीगर जानवर, हैं फँसे जंजाल में आवा गमन के बेगुमाँ।
शादमाँ होता है वह छूटता है इस जंजाल से, आप अपने लुत्फ से हो जायें जिस पर मेहरबाँ।

आपकी चश्मे करम हम पर भी हो जाये हुजूर, आप से है इल्तेजा कीजे हमें भी कामरां।
ज्ञान से वाक़िफ़ न हो और आप से ग़ाफ़िल रहे, वह कभी रहता नहीं जीवन में शादो शादमां।
छोड़ कर सब का भरोसा आप का तकिया करें, नाम ले कर आप का, होते है वो नुसरतनिशां।
आपके चरणों में रखते ध्यान हैं हम सब मुदाम, जिसकी बरकत से अहिल्या पा गयीं थी फिर से जां।
ब्रह्मा और शंकर भी जिसको रात दिन हैं पूजते और गंगा जी भी जिनकी बरकतों से हो रवां।
मन, वचन और करम से हम आपको भजते रहें आपके जुज़ और कोई भी नही हो दिल मे निहां।
मानते जो लोग है ब्रह्मा को वह माना करें, लेकिन हम तो आप ही की याद करते हैं यहां।
इस तरह कहते हुए वो लोग ग़ायब हो गये, आये थे जिस जाय से वो हो गये वापस रवां।
तब वहां शिव जी भी आये अर्ज़ यों करने लगे, मौत के डर से छुड़ा दे, आप शाहा मेरी जां।
देवताओं के हो मुखिया और अवध के बादशाह, हे रमापति आप सुन लें, मेरी यह अर्ज़ेबयां।
वह था दस सिर का जो रावण आपने मारा उसे अब न दुनियां में रहा बाक़ी है कुलफ़त का निशां।
राक्षस जितने थे सब बन कर पतंगे जल गये, आपके जब बाण की आतिश हुई शोलाफ़शां।
तीर और तरकस लिये जो हाथ में अपने है आप, आप ज़ेवर है जहां के वास्ते एक बेकरां।
लालच और उलफ़त की तारीक मिटा देते है आप, आप सूरज की किरण बनते है और बरक़ेतयां।
दांव में शहवत के फंस जाते है इनसान सब, कीजिए उनकी हिफ़ाज़त ऐ मेरे शाहे शहां।
लोग बीमारी में रहते है हज़ारो मब्तिला, आपकी जो याद से रहते है भटके हर जमां।
आपके चरणों मे जिनका ध्यान रहना है नहीं, उनकी होती है ज़माने में बहुत रुसवाइयां।
आपका जिनको भरोसा है, वही रहते हैं खुश, संत और भगवान के रहते हैं हर दम मदहख़्वां।
है न वो कमजोर, उनमें है न लालच और घमंड, चैन और तकलीफ है उनको बराबर बेगुमां।
है यही कारण मुनी भी छोड देते योग को, आपकी सेवा में लग जाते हैं वो बाक़ल्बो जां।
सिदके दिल से आपकी करते हैं वह पूजा मुदाम, इज़्ज़त और ज़िल्लत का उनको कुछ नही रहना गुमां।
आपकी मैं याद करता हूँ हमेशा राम जी, आप ही का नाम रहता है मेरे विरदे ज़बां।
आप मगज़न हैं गुणों के और पयबां लुत्फ़ के, आप लक्ष्मी के पति है, आप पर क़ुर्बान जां।
आप पालन हार है दुनिया के ऐ आकाय मन्द, अहले दुनिया पर इनायत की नजर हो जावेदां।
मेरी यह ख़्वाहिश है भक्ति आपकी मुझ में रहे, इस तम्मनाये दिली को कीजिएगा कामरां।
दस्त बस्ता स्तुती शिवजी ने अपनी ख़त्म की, और फिर वह हो गये कैलाश को वापस रवां।
मेहमानों के ठहरने का हुआ तब इन्तज़ाम, राम के हमराह जो आये हुए थे वानरां।
जो कोई सुनता कथा को है ये दिल और जान से, वो रहा करता है ख़ुर्रम और हर दम शादमां।
जो कोई गाता है इसको ज़िन्दगी भर शाद हो, और मर कर भी वह पाता है हयाते जावेदां।
याद में भगवान की रहता है जिसका दिल लगा, ऐश और आराम होता है मयस्सर बेगुमां।
खौफ़ और दुखदर्द इससे दूर होता है ज़रूर, पाप की दरिया में कश्ती है बिला शक्कोगुमां।
ब्राह्मण सब दान पाये, सीमोज़र पाये फक़ीर, दाद और बख़्शीश कितनी, कर नहीं सकता बयां।
जिस क़दर मेहमान थे वो सब रहे आराम से, हर तरह वह शाद थे और हर तरह वो शादमां।
छह महीने वह गुज़ारे इस क़दर आराम से, याद उनको कुछ अज़ीज़ आये न कुछ अपना मकां।
जैसे संतों के दिलो में, दुश्मनी पैदा न हो, ख़्वाब में भी उनको घर की याद आती थी कहां।
एक दिन जब राम ने सब दोस्तों की याद की, हाज़िरे दरबारे आली हो गये सब मुख़लिसां।

पास अपने सबको बिठलाया कहा यों प्यार से, आपको ज़हमत हुई मेरे लिए ऐ मेहरबाँ।
आपकी तारीफ़ मुँह पर मैं करूँ बेकार है, छोड़ कर घर बार सब आ कर रहे मेरे यहाँ।
ये हुकूमत और असासा छोटे भाई जानकी, दौलत और घरबार अपना और अहले खानदाँ।
सबसे मुझको है मुहब्बत, झूठ मैं कहता नहीं, उनसे बढ़ कर तुम से है मुझको मुहब्बत बेगुमाँ।
सेवकों पर सब ही रखते है इनायत की नज़र, मैं तो खादिम पर रहा करता हूँ हरदम मेहरबाँ।
दोस्तो, अब अपने-अपने घर को वापस जायें आप, याद मेरी अपने-अपने दिल के रखिये दर्मियाँ।
ऐसी बातें सुनके वो सब हो गये पस्तो उदास, जानते वे कुछ न थे, हम कौन है अब हैं कहाँ।
हाथ जोड़े वो खड़े थे और सब खामोश थे, प्रेम के मारे कहें कुछ खुल न सकती थी ज़बाँ।
राम ने उनको नसीहत की हज़ारों तौर से, वो कहे कुछ राम को, यह उनमें जुर्रत थी कहाँ।
राम ने मँगवाये पोशाक और ज़ेवर भी वहां, हुक्म की तामील की खुद्दाम ने फ़ौरन वहाँ।
सबसे पहले भरत ने सुग्रीव को पहनाया सब, फिर विभीषण को पिन्हाया लक्ष्मण ने बेगुमाँ।
अंगद बैठे ही रहे कहते न थे खामोश थे, देख कर उनकी अक़ीदत राम की चुप थी ज़बाँ।
जामवाँ को नील नल को राम ने पहनाया खुद, होके ममनूं सब हुए तैयार होने को रवाँ।
तब उठे अंगद जगह से आँख नम उनकी हुई, हाथ जोड़े राम जी से यों किये अज़बयाँ।
ऐ मेरे आक़ा, मेरे मालिक, मेरे फरियादरस, हो ग़रीबां के मआवन और उनके क़दरदाँ।
बाप मरते वक़्त मुझको आपको था दे दिया, आप ही का है भरोसा मुझको बे शक़्कोगुमाँ।
अपने चरणों से न कीजे दूर मुझको ऐ हुजूर, छोड़ कर मैं आपके चरणों को अब जाऊँ कहाँ।
मेरे घर मे मेरी अब क्या है ज़रूरत सोचिए, मैं हूँ नादां और बच्चा, मुझको रख लीजे यहाँ।
घर मे रह कर आपके अपना करूँगा काम सब, आपकी खिदमत में रह कर मैं रहूँगा शादमाँ।
राम के पैरों पर गिर कर इस तरह कहने लगे, अब न ये फ़रमाइएगा मुझसे तू भी हो रवाँ।
रामने उनको उठया और खुद लिपटा लिया, उनकी आँखों से हुए आँसू मुहब्बत के रवाँ।
हार जो पहने हुए थे वो उतारे राम ने, और अंगद के गले में डाला हो कर शादमाँ।
हर तरह तफ़हीम उनको राम ने की बार-बार, उनको समझा कर मना कर, कर दिया वापस रवाँ।
छोड़ने को शत्रुहन और भरत और लक्ष्मण गये, हुक्म की तामील मे अंगद हुए आखिर रवाँ।
देखते जाते थे वो हर दम पलट कर बार-बार, था यही दिलमें कि रुक जाऊँ तो बेहतर है यहाँ।
राम के इखलाक़ की जो याद आती थी उन्हें, हुक्म की तामील करके हो रहे थे शादमाँ।
करके वापस वानरों को भरत जब वापस हुए, तब किया हनुमान ने सुग्रीव से अर्ज़बयाँ।
और कहा मुझको इजाज़त हो अगर सरकार की, राम की खिदमत भी कर लूँ, रह के मैं कुछ दिन यहाँ।
यों कहा सुग्रीव ने, हनुमान तुम हो खुशनसीब, राम ने खिदमत मे अपनी तुम को जो रक्खा यहाँ।
जाओ तुम हरदम खुशी से राम की खिदमत करो, इस क़दर कह कर वो सब वानर हुए घर को रवाँ।
यो कहा हनुमान से अंगद ने मेरी भी सुनो, राम को प्रणाम मेरा अज करना मेहरबाँ।
ज़िक्र मेरा राम से हर वक्त तुम करते रहो, याद तो मेरी रहे हर वक़्त दिलके दर्मियाँ।
जब वो सब रुखसत हुए, हनुमान वापस आ गये, राम से सब हाल वो करने लगे आ कर बयाँ।
जो निषादों का था राजा उसको बुलवाया गया, सर्फ़राज़ी भी हुई, वह हो गया इज़्ज़त निशाँ।
और कहा अब जाओ घर को भूलना मुझको नही, धर्म के पाबन्द रहना तुम हमेशा मेहरबाँ।
भरत के मानिन्द हो तुम भाई हो मेरे अज़ीज़, आने जाने का रखो जारी तरीक़ा तुम यहाँ।

की क़दमबोसी अदा, और घर को वापस हो गया, राम के अल्ताफ़ का करने लगा आ कर बयाँ।
राम के इख़लाक़ से सब लोग थे मसरूरोशाद, मदहख़्वानी कर रहे थे सब अवध के साकिनाँ।
राम की इस हुक्मरानी में रिआया शाद थी, कुलफ़तें सब मिट गई, और लोग थे सब शादमाँ।
बुग्ज और कीनों अदावत दिल से सबके मिट गये, रोग और दु:ख दर्द का बाक़ी न था नामोंनिशाँ।
धर्म के पाबन्द थे सब अपनी-अपनी तर्ज़ पर, कोई जिस्मानी वो रूहानी न थी दुश्वारियाँ।
रखता था हर शख़्स आपस मे मुहब्बत का लिहाज, धर्म के चारों चरण पेशेनजर थे बेगुमाँ।
ख्वाब मे भी पाप के आसार मिलना था मुहाल, जागने मे वह किसी सूरत नज़र आते कहाँ।
राम की भक्ति मे थे मशग़ूल जुम्ला मर्दोज़न, कमसिनी मे उनके मरने का न था नामोंनिशाँ।
लोग सब आराम से थे कोई बीमारी न थी, कोई मुफलिस भी नहीं था, और न कोई नातवाँ।
जहालत भी थी नही और नेक सब अतवार थे, फ़ैज़रस फ़ैयाज सब थे, और मुमिद्दे बेकसाँ।
मर्दोज़न चालाक थे होशियार थे धर्मात्मा, ख़्वद भी लायक थे ये सब, और पंडितों के कदरदाँ।
दूसरों के काम के रहते थे सब एहसानमन्द, रश्क और लालच बुराई थी न दिल के दर्मियाँ।
काल का कोई न डर था, और न कोई ख़ौफ था, उस तरह मुल्के अवध पर राम जी थे हुक्मराँ।
राम की लीला से वाक़िफ़ कोई हो सकता नही, और जो है जानता, वह है हमेशा शादमाँ।
किस तरह आरामदेह था हर किसी को राम राज्य, शेष से भी यह नही मुमकिन करे इसका बयाँ।
एक बीवी के सिवा औरत न रखता था कोई, और कुर्बां मर्द पर करती थीं औरत जिस्म जाँ।
चोर और डाकू न था, कोई न किसका था अदू, एक से था दूसरा ख़ुश, राम जब थे हुक्मराँ।
फूल फल फलते थे बाग़ों में थी शादाबी बहुत, शेर और हाथी फिरा करते थे बन कर मुख़लिसाँ।
एक तबक़े को न था कुछ दूसरे से कोई रंज, होके वो बेख़ौफ़ जंगल मे थे फिरते शादमाँ।
और परिन्दे भी ख़ुशी से चहचहाते थे सदा, मीठी-मीठी बोलते जाते थे अपनी बोलियाँ।
धीमी-धीमी, ठंडी-ठंडी चलती रहती थी हवा, पी के रस थी गूँजती भारों की हरसू टोलियाँ।
बेले फलती थी, शजर देते थे सब अच्छे समर, फ़सल भी होती थी अच्छी, दूध देती गाइयाँ।
पर्वतों में खान थीं, ज़र और जवाहर से भरी, मीठे पानी को बहा करती थीं सारी नद्दियाँ।
और पाबन्दी में रहते थे सदा सारे बहर, फेंकते ला कर किनारे पर थे सीप और मोतिया।
चाँद और सूरज की थी गर्मी और सर्दी मोतदिल, ता किसी इन्सान को हानि न पायें कुछ जियाँ।
और बारिश भी थी होती जब जरूरत उसकी हो, जिस क़दर मतलूब हो जिससे न हो कोई ज़ियाँ।
राम ने अश्वमेध यज्ञ भी किये थे बारहा, ब्राह्मण भी दान पाये थे हमेशा बेगमाँ।
धर्म के पाबन्द थे राम, और मर्यादा पुरुष, नेक सब औसाफ़ थे, और हर तरह की ख़ूबियाँ।
और सीता भी रहा करती थी शौहर की मुती, रात दिन करती थी ख़िदमत उनकी बेशकोगुमाँ।
आप ख़ुद करती थीं ख़िदमत अपने शौहर की मुदाम, गो कई ख़ुद्दाम भी हाज़िर थे ख़िदमत पर वहाँ।
काम करती वह न थी शौहर के मंशा के ख़िलाफ़, हुक्म को तामील मे रखती थीं हाज़िर हर जवाँ।
अपनी सासों की भी ख़िदमत जानती थी फर्ज़े ऐन, रानी कौशल्या ही हो या और दीगर रानियाँ।
देवता चश्मे करम पर जिनके रखते है नज़र, यह वही सीता है, इनकी क्या कहें हम ख़ूबियाँ।
हुक्म के ताबे थे रहते भाई तीनों राम के, राम की ख़िदमत मे रहते मुस्ताइद थे हर जवाँ।
और हमेशा राम के अहकाम के थे मुन्तज़िर, ता बजा लाएं वो ख़िदमत इनकी बादिल और जाँ।
राम की भी इनपे रहती थी इनायत की नजर, इनको बतलाते थे सीधी राह की सब ख़ूबियाँ।

शहर के भी लोग सब बेफ़िक्र थे हर तरह से, दर्द, दुख, तकलीफ़ उनको थी नसीबे दुश्मनाँ।
वह दुआ करते थे हरदम राम का साया रहे, जिन्दगी अपनी गुजारें रह के हरदम शादमाँ।
लौ व कुश सीता के दो नूरे नजर पैदा हुए, वेद और पुराण में है जिनका तफ़सीली बयाँ।
खूब सूरत थे ये दोनों और निहायत खुश नसाब, था कमाल इनको गुणों में, और दोनों पहलवाँ।
और तीनों भाइयों को भी, हुए दो-दो पिसर, जिनके चेहरों से टपकते थे अमारत के निशाँ।
इस तरह दुनिया की लीला कर रहे थे रामचन्द्र, जिन की माया और गुण कुछ कर नहीं सकता बयाँ।
ब्राह्मण के साथ सरजू में नहाते थे सुबह, और होते रोज़ थे दर्बार में जलवा कुनाँ।
जमा होते थे वहाँ दरबार मे अब लोग सब, गुरु वशिष्ठ कहते कथाएं, और पुराणों का बयाँ।
भाइयों को साथ ले कर रोज़ खाते थे राम, तौर उनके देख कर तीनों थीं खुश हर एक माँ।
शत्रुहन और भरत जाते गुलशनों में जब कभी, अपने वह हमराह ले जाते थे हनुमान को वहाँ।
दोनों भाई पूछते थे राम जी का हाल जब, तब किया करते थे हनुमान, अपने मुंह से सब बयाँ।
सुनके उनकी खूबियाँ होते थे दोनों शादकाम, हर दफ़ा वो पूछते जाते थे हो कर शादमाँ।
सब घरों में राम का चर्चा था और होती कथा, ऐश और आराम में रहता था हर कस शादमाँ।
जिस जगह के रामचन्द्र जी हों खुद राजा बने, उस अवध की कर ही क्या सकते हैं हम खूबी बयाँ।
नारद और सनकादिक आते थे अवध को बार-बार, देख कर शाने हुकूमत कुफ़्र रहता था कहाँ।
शहर में हर सिम्त रंगारंग थीं दिलचस्पियाँ, और मकानों में बनी थीं सीमोज़र की सीढ़ियाँ।
और जो सड़कें बनी थीं, साफ़ थीं मिसले सदफ़, दंग हो जाते भूपति थे देख कर ये खूबियाँ।
कसरे शाही में जड़े थे सब जवाहिर सीमो ज़र, और मकानों की बुलन्दी का करें क्योंकर बयाँ।
और दरीचे भी निहायत खूबसूरत थे बने, जिनमें जलते खुशनुमा सीमोज़र के शमादाँ।
ज़र जवाहर के थे हर जगह आला सुतून, और थीं दीवार सोने की महल के दर्मियाँ।
खूब सूरत थे महल सब, और कुशादा थे चमन, संगमरमर का हुआ था फ़र्श जिसके दर्मियाँ।
और दरवाजे जड़ाऊ काम के हीरे जड़े, नीज़ तस्वीरों में भी हर जा अयाँ थीं खूबियाँ।
सब घरों में बाग बागीचे थे फूलों से लदे, जो कि खुशबू से महकते थे और थे अम्बर फ़शाँ।
दिलफ़ज़ा आवाज़ से भौरे भी करते थे गुंजार, और हवा आराम से हर सिम्त रहती थी रवाँ।
मुखतलिफ़ अकसाम के थे पालते बच्चे परिन्दे, खुश थे उड़ने में जो, और बोलते थे बोलियाँ।
तोता और मैना को बच्चे सब सिखाते थे यही, राम रघुनायक रघुपति जिनके था विरदे जबाँ।
क़सरे शाही का जो दरवाजा था आलीशान था, हो सका बाजार चौराहे की रौनक क्या बयाँ।
और बाजारों में रहता माल था इफ़रात से, बैठे बनिये थे और सर्राफ़ लाखों थे जहाँ।
हो गया था माल दौलत से हर एक मिसले कुबेर, ढूंढने से भी नहीं मिलता था मुफ़लिस का निशाँ।
मर्दो जन सब नेक खू थे और सब आराम से, नेक थे अतवार सबके, पीर हों या हों जवाँ।
शहर के उत्तर तरफ़ बहती थी जो सरजू नदी, साफ़ पानी जिसका था प्यारे बनी जिस पर वहाँ।
और किनारों पर नजर आता न था दलदल कहीं, थे जुदा था घाट जाते जानवर पानी जहाँ।
और जनाना घाट पानी के लिए थे जा बजा, मर्द जाते थे न हरगिज़, गुसल करने को वहाँ।
खूब सूरत और आलीशान थे सब राजघाट, और किनार आबे सरजू थे कई मन्दिर वहाँ।
और कई रहते थे ज्ञानी और सन्यासी मुनी, झाड़ तुलसी के भी मुनियों ने लगाये थे जहाँ।
अन्दरूने शहर की तारीफ़ हो सकती नहीं, शहर के बेरून के रौनक़ थी हर दम हर ज़माँ।

देख ले शहरे अयोध्या पाप बिलकुल दूर हो, बावली तालाब बागीचे थे कसरत से जहाँ।
बावली तालाब कुओं का भी पानी साफ़ था, बावली कुओं में जाने को बनी थीं सीढ़ियाँ।
खूबसूरत थे कमल खिलते जहाँ तालाब मे, गूँजते भौंरे, परिन्दे चहचहाते थे जहाँ।
बाग़ बागीचों में कोयल कूकती थी इस तरह, राहगीरों को बुलाती, ऐसा होता था गुमाँ।
मालो दौलत की कमी उस जाय कैसे हो सके, लक्ष्मी के खुद पती हों राम जिस जा हुक्मराँ।
लोग होते थे फरागत जब कहीं वो बैठ कर, राम ही का ज़िक्र करते और उन्हीं की खूबियाँ।
याद दिल में राम की ताज़ा रहे, कहते थे सब, उनकी हर-हर खूबियों का होता जाता था बयाँ।
राम के औसाफ़ की तारीफ़ होती हर जगह, राम भी अपनी रिआया पर थे हरदम मेहरबाँ।
राम के इक़बाल का रौशन हुआ जब से चिराग़, अब अँधेरा ही ज़माने में रहा बाक़ी कहाँ।
जहालत भी मिट गई और पाप भी बाक़ी नहीं, शहवत और गुस्से का भी बाक़ी नहीं नामोनिशाँ।
धर्म के तालाब में है ज्ञान के फूले कमल, सब्र और आराम के चकवे रहा करते वहाँ।
राम के परताप का सूरज है जिस दिल मे उगा, चल बसी दिल मे बुराई, आ गयी सब नेकियाँ।
सैरे गुलशन को गये एक रोज़ जब रघुनाथ जी, साथ में हनुमान जी भी थे और थे सब भाइयाँ।
झाड़ पत्तो फूलफल से बाग़ वह शादाब था, देख कर मौक़ा मुनासिब आये सनकादिक वहाँ।
देखने में तो नज़र आते थे गो कम उम्र वो, थे बड़े ज्ञानी, थी रौनक़ उनके चेहरे से अयाँ।
चार सनकादिक मुनी थे या कि थे ये चार वेद, इनके गुण और शक्ति हो सकते नहीं हरगिज़ बयाँ।
राम ने उनको जो देखा पेशवाई उनकी की, और बिठलाया उन्हें अच्छी जगह थी जो वहाँ।
आप जो ओढ़े हुए पीताम्बर थे राम जी, फ़र्श उसका कर दिया महने चमन के दर्मियाँ।
तीनो भाई भी मिले हनुमान भी उनसे मिले, दिल के उनसे हो गये सब लोग बेहद शादमाँ।
राम की मूरत जो देखी हो गये वो मस्त सब, टिकटिकी बाँधे हुए वो देखते थे बेगुमाँ।
राम जी उनको बिठा कर इस तरह कहने लगे, आपके दर्शन से मेरे पाप बाकी है कहाँ।
मैं हूँ खुशक़िस्मत कि दर्शन हो गये मुझको नसीब, मोहब्बते देवर्षि हासिल हो भी सकती है कहाँ।
संत की संगत मे मिल जाती है दुनिया में नजात, और कामी की है संगत बाअसे बरबादियाँ।
वेद का है यह मक़ूला और पुराणो में लिखा, पंडितो का क़ौल है और शायरों का है बयाँ।
राम का सुन कर यह कहना शाद थे चारों मुनी, दस्तबस्ता इस तरह करने लगे अर्ज़ बयाँ।
आप निर्गुण रूप हो और आप की जै है सदा, सब गुणों के धाम भी हो और सबके निगहबाँ।
आप हो बेमिसाल प्रभु जी और सुख की खान हो, हिर्सो लालच से परे और भक्त के हो क़दरदाँ।
जहालत को मिटा करके ज्ञान दे देते है आप, मुखतलिफ है नाम फिर भी, कुछ नही शानोगुमाँ।
आप हर छोटे बड़े में, आपका हरजा नमूद, आप ही रहते है हर एक रूपी दिल के दर्मियाँ।
जिन्दगी और मौत के जंजाल से दीजे नजात, दूर कर दीजे बुराई जो कि हैं सबमें निहाँ।
चैन और आराम सबको बख्शने वाले है आप, आपकी भक्ति हमारे दिल मे कर दीजे निहाँ।
है हमारी आरजू यह इसको पूरी कीजिए, दीजिए वरदान हमको ताकि हम हों कामराँ।
दिल में जो कुछ दुःख हों उनको दूर कर दीजे हुजूर, ख्वाहिशाते नफ़्सो खतरे हों न दिल के दर्मियाँ।
मानसरवर दिल है मुनियों का और उसमे आप हंस, आप के चरणो को भजते शिव व ब्रह्मा हर जबाँ।
काल कर्म और गुण के रक्षक आप हो रघुनाथ जी, आप रघुकुल के हो केतू वेद के हो निगहबाँ।
इल्तेजा करके वो ऐसी, सर झुका कर बार-बार, हुए सनकादिक मुनी ब्रह्म लोक को वापस रवाँ।

जब गये वापस मुनी भाई थे सब बैठे हुए, राम से पूछे ये कुछ हिम्मत यह उनमें थी कहाँ।
देखते जाते थे सब हनुमान के मुँह की तरफ, और सब यह चाहते थे. राम हो गौहर फ़शाँ।
राम ने हनुमान से पूछा कहो क्या बात है, दस्तबस्ता यों किया हनुमान ने अर्ज़ बयाँ।
आप से कुछ पूछने की भरत की है आरज़ू, है अदब माने, इसी से बन्द है इनकी ज़बाँ।
यों मिला उनको जवाब हनुमान तुम वाक़िफ ही हो, कुछ नहीं है फर्क मेरे और उनके दर्मियाँ।
तब क़दमबोस हो के उनके भरत यों कहने लगे, आप की चश्मे करम पर कुछ नहीं शक्कोगुमाँ।
मैं हूँ सेवक आपका और आप मालिक हैं मेरे, बात एक मैं पूछता हूँ कीजिए मुझ से बयाँ।
वेद और पुराण में संतों को भाया जिक्र है, आप ने भी बारहा तौसीफ उनकी की बयाँ।
आपकी उन पर इनायत की नजर भी है मुदाम, इसलिए मैं उनकी सुनना चाहता हूँ खूबियाँ।
संत की तारीफ क्या है और कौन है गैर संत, कीजिए मुझसे मराहत से ये दोनों का बयाँ।
राम बोले, भाई संतों के हजारों वसफ है, वेद और पुराण भी सन्तों के है मदहत कुनाँ।
संत की तफ़सील पूछो या मिसाले गैरसंत, जैसे सन्दल और कुल्हाड़ी के है निस्बत दर्मियाँ।
काटती तो है कुल्हाड़ी चोबे संदल को जरूर, काम इसका काटना है लकड़ियों को बेगुमाँ।
उसके बदले में मुअत्तर करता है संदल उसे, इस तरह जाहिर दो कर देता है अपनी खूबियाँ।
देवताओं के भी सर पर पा लिया इसने मुकाम, घन से वह पीटी गई और आग है उसका मकाँ।
संत को ख्वाहिश नहीं होती है कोई बात की, वह गुणों का है खज़ाना और गुणों का कदरदाँ।
दूसरों के दर्द से तकलीफ़ होती है उसे, दूसरों के ऐश से होता है वह भी शादमाँ।
है मुहब्बत उसको सबसे और कोई दुश्मन नहीं, हिर्सो नखवत खौफ गुस्सा उसमें होता ही कहाँ।
रहमदिल होता है वह करता है आजिज पर दया, और भक्ति में लगा रहता है हर दम हर जमाँ।
सबकी करता है वह खातिर खुद नहीं कुछ चाहता, ऐसे ही मैं संत का रहता हूँ दिल से कदरदाँ।
अपनी कुछ जाती ग़रज उसको कभी रहती नहीं, सब्र और वैराग से रहता है हर दम शादमाँ।
दोस्ती रखता है सबसे और ब्राह्मण से जरूर, जिसमें यह औसाफ़ हों—हैं संत बेशक्कोगुमाँ।
शम व दम और नेम नीति से कभी हटता नहीं, तलख वह कहता नहीं, रखता है वह शीरींदहाँ।
उसपे तारीफ और शिकायत का असर होता नहीं, शाद रहता है करो तारीफ या दो गालियाँ।
अब बुरों का हाल सुन लो मैं सुनाता हूँ तुम्हें, भूल कर भी साथ उनका है बहुत नुकसा रसाँ।
साथदारी उनकी होती है बड़ी तकलीफ़दे, जैसे अच्छी गाय को सोहबत बुरी की हो गिराँ।
उसके दिल में हर दफा रहती जलन है और तपस, दूसरे के चैन से आराम पाता है कहाँ।
सुनके चुगली दूसरों की होता हैं वह शादकाम, जिस तरह होता है कोई पाके दौलत शादमाँ।
हिर्सो शहबत गुस्साव नखवत से होते हैं भरे, बुरज बेरहमी बुराई का वह होता है मकाँ।
बेसबब सबसे अदावत, और भले से भी बुरा, जो करे उससे भलाई उसका यह कर दें जियाँ।
झूठ उसका लेना देना झूठ उसके काम काज, उनकी शेखी सारी झूठी और झूठी है जबाँ।
मोर का दिल जिस तरह होता निहायत सख्त है, देखने में वह बज़ाहर है बहुत शीरींदहाँ।
उसकी बोली तो है मीठी जो कि सुनने में पसन्द, साँप ज़हरीले भी खा जाता है बेशक्कोगुमाँ।
यह भी ऐसा ही है होता इसकी यह तफ़सील है, बोलता मुँह से है कुछ, दिल में बुराई है निहाँ।
दूसरों का ऐब ढूंढ़े गैर औरत पर नज़र, लालची रहता है जीवन से है रहता शादमाँ।
राक्षस पैदा हुआ है, वह बशक्ले आदमी, हिर्स ही उसके लिए है बाअसे आरामे जाँ।

उसका खाना मिसले हैवाँ, खौफे दोजख कुछ नहीं, गैर की तारीफ सुन कर होता है वह खस्ता जाँ।
गैर की तकलीफ़ सुन कर इस कदर होता है खुश, जैसे दुनिया भर का अब वह हो गया हो हुक्मराँ।
बाल बच्चे वाले जो होते है उनके यह खिलाफ़, शहवत और लालच व गुस्सा उसके दिल के दर्मियाँ।
बद तो होता ही बुरा है दूसरों को बद कहे, कुछ नहीं इज्जत गुरु वो ब्राह्मण या बाप माँ।
अपनी बदनीयत से कर देता है औरों को खराब, उसको पूजा और संगत सत की भातो कहाँ।
वह बुराई का है दरिया, जाहिल और ऐयाश भी, वेद की रहती बुराई है हमेशा बर जबाँ।
औरों के माल पर रहती हमेशा है नजर, दूसरो से बुग्ज़ो कीना उसके दिल के दर्मियाँ।
खास कर उसको ब्राह्मण से तो नफरत ही रहे, देखने में तो है अच्छा, है बदी दिल में निहाँ।
नीच ऐसे लोग सतजुग में तो होते ही नहीं, और त्रेता युग मे तो उनका नहीं नामोनिशाँ।
वो द्वापर में है मुमकिन, हों कहीं थोड़े बहुत, और कलजुग में मिलेंगी टोलियों की टोलियाँ।
दूसरों की जो किया करता कभी इमदाद है, धर्म कोई दूसरा ऐसा नहीं है भाई जाँ।
गैर को तकलीफ देना है बड़ा दुनिया में पाप, है पुरान और वेद में लिक्खा किया तुमसे बयाँ।
जिन्दगी पा कर जो देते गैर को तकलीफ़ है, जाने मरने की उन्हें पड़ती है सहनी सख्तियाँ।
लोग लालच से किया करते है दुनिया में अजाब, आकेबत बरबाद हो जाती है उनकी बेगुमाँ।
फल मिला करता है उनके काम के लायक उन्हें, और सजा भी उनको देता है बिला शक्कोगुमाँ।
इसलिए लाजिम है सबको राम को भजते रहें, जो इसे समझे हुए है वो है बेशक नुक्तादाँ।
है भलाई और बुराई सब ये माया से रची, जो भलाई को समझ ले, है वही बस नुक्तादाँ।
राम के मुँह से यह सुन कर भाई सब शादां हुए, सर झुकाते थे अदब से, हो के बेहद शादमाँ।
खास कर हनुमान के दिल में बड़ा आनन्द था, आखिरश वापस हुए रघुनाथ जी अपने मकाँ।
इस तरह करते रहे हर रोज लीला वह नई, और नारद भी हमेशा आके होते मदहख्वाँ।
रोज आते थे मुनी और देखते थे हाल सब, जाके सब ब्रह्मलोक मे करते थे उन सबका बयाँ।
हाल सुन कर अयोध्या का ब्रह्मा भी मसरूर थे, और कहते थे कि गुण तुम राम के गाओ यहाँ।
सुनते सनकादिक भी थे हालात सब रघुनाथ के, और सुन कर हाल हो जाते थे बेहद शादमाँ।
ऐसे कामिल हो के वो भी छोड़ देते योग जब, राम ही का हाल सुनते और उनकी खूबियाँ।
इससे भी जो कोई इसमें दिल लगाते हैं नहीं, संग दिल होते है वो, इसमें नहीं शकओ गुमाँ।
याद फरमाया गुरु को एक दिन रघुनाथ ने, गुरु वशिष्ठ आये महल में ले के सब हमराहियाँ।
शहर के भी लोग आये और महल के लोग भी, अपने-अपने मरतबे से हो गये जलवाकुनाँ।
राम बोले शहर के लोगों से कहना है मेरा, इसमें मेरा है न लालच और न मेरी इसमें शाँ।
सब तवज्जो से जरा इन बात को पहले सुनें, हो मुनासिब तो अमल पैदा हो उस पर बेगुमाँ।
है वही सेवक मेरा और मुझको प्यारा है वही, मानने में हुक्म मेरा जो लगा दे दिल व जाँ।
और मेरी बात कोई हो तरीके के खिलाफ, हो के बेखौफो खतर वह रोक दे मुझको यहाँ।
खुशनसीबी से मिला करता है यह इन्साँ का जिस्म, यह मुकद्दर देवताओं को भी मिलता है कहाँ।
है यही साधन का बाअस और मुक्ती की है राह, बनके इन्साँ जो न समझा फिर वह इन्साँ ही कहाँ।
आक़ेबत में उसको अपना पीटना पड़ता है सर, मुख़तलिफ़ अक्साम की वह झेलता है सख्तियाँ।
भूल को अपनी समझता ही नहीं वह बेवकूफ़, काल कर्म और ईश्वर से होता है वह बदगुमाँ।
जिस्मे इन्सानी नहीं है ऐश करने के लिए, याने जो दुनिया को समझे बाअसे आरामे जाँ।

वह तो ग़ाफ़िल है बड़ा ग़फ़लत का उसकी क्या कहें, नफ़े के बदले में हासिल होता है उसको ज़ियाँ।
स्वर्ग के आराम उसके सामने सब हीच हैं, इस जगत में ऐश का तो क्या करें हम कुछ बयाँ।
खो के पारस जो कोई लेता है घुंघची हाथ में, क्या अक़लमन्द उसको कहता है कोई अहले जहाँ।
जीव यह चक्कर लगाता लाख चौरासी दफ़ा, और माया से भटकता है यह हर दम हर ज़माँ।
ईश्वर ही की दया से जिस्मे इन्सानी मिले, शाज़ ही मिलता है यह, मिलता है यह मुमकिन कहाँ।
पाप की दरिया का बेड़ा पार करने है जहाज़, और दया भगवान की वादे मुआफ़िक है यहाँ।
और गुरु को समझिएगा, हैं खेवैया नाव के, जो नहीं उनको है समझा, कैसे हो वह कामराँ।
जिस्मे इन्सानी को पा कर जो नहीं पाता है ज्ञान, आदमी के क़तल की पाता सजा है बेगुमाँ।
लोक और परलोक में गर चाहते हो सुख मिले, मेरी इन बातों को समझो रखो दिल के दर्मियाँ।
मेरी भक्ति का तरीक़ा है निहायत सूदमन्द, वेद और पुरान में भी है हुआ इसका बयाँ।
ज्ञान मुश्किल शै है, हासिल उसका होना है मुहाल, झेल कर सख़्ती बड़ी पाता है कोई रम्ज़दाँ।
फिर भी उसमें चूँकि भक्ति है नहीं, इस वास्ते, वह न मुझको है अजीज़ और मैं न उस पर मेहरबाँ।
भक्ति है आज़ाद और वह बाअने आराम है, ग़ायदारी संत की लाज़िम है उसको बेगुमाँ।
संत का मिलना जभी होता है कुछ कर लो सबाब, संत की संगत से मिलती है हयाते जावेदाँ।
और तुम गर पूछते हो, वह है क्या होता सवाब, ब्राह्मण की कीजे ख़िदमत, रहिए उनके कदरदाँ।
सिदके दिल से जो करे ख़िदमत ब्राह्मण देव की, उससे रहते हैं मुनी और देवता सब शादमाँ।
और भी एक बात है वह तुमसे कहता हूँ सुनो, शिव को भजने के बिना भक्ति मेरी मिलती कहाँ।
और भक्ति में नहीं दुश्वारी है हायल कोई, योग, जप और बरत और तप का नहीं नामों निशाँ।
सादगी दिल में हो और कोई न हो मकरो फ़रेब, जो मिले उस पर ही क़ाने रह के, रहना शादमाँ।
मेरा सेवक हो के जो अग़ियार से रखे उम्मीद, क्या भरोसा उसका कीजे, है वह सेवक ही कहाँ।
और ज़्यादा क्या कहूँ मैं, बात यह लम्बी न हो, मैं इसी से शाद रहता हूँ और इससे शादमाँ।
बुग़्ज़ और कीना किसी से वह कभी रक्खे नहीं, और तवक्को भी किसी से भी न रक्खे बेगुमाँ।
ना किसी से दुश्मनी हो ना किसी से बुग़्ज़ ही, ना किसी से आरज़ू ना हो खतर दिल में निहाँ।
अपने कामों काज का जो चाहता बदला नहीं, जिसकी कुछ ख़्वाहिश न हो और हो न अपना मददहख़्वाँ
जो कि पापों से हो ख़ाली और ग़ुस्सा भी न हो, इल्म से वाकिफ़ भी हो और संत पर हो मेहरबाँ।
ऐश और आराम जन्नत के न हों जिसको पसन्द, जाहिरी लज्ज़ाते दुनिया उसको भाते ही कहाँ।
जो कि भक्ति का हो ग़ायल अपने मत पर हठ करे, दूसरे मत की नहीं भाती हों जिसको खूबियाँ।
जो है मेरा ध्यान करता और जपता मेरा नाम, ज्ञान पाता है वही, होता वही है कामराँ।
ज्ञान की बातें वे सुन कर लोग क़दमों पर गिरे, और कहा सबने हमारे आप ही हो बाप माँ।
और मुहब्बत आप ही से हम सब करते हैं मुदाम, जिस्मो दौलत के हमारे आप ही हो निगहबाँ।
आपके जुज़ कोई हमको राह दिखलाता नहीं, इस तरह माँ बाप भी हमसे कहें मुमकिन कहाँ।
दो ही हैं उपकारी जग में, एक तो खुद आप हैं, दूसरे वह हैं जो होते आप के हैं खादिमाँ।
सब दिखावे के जहाँ में दोस्त होते हैं मगर, दोस्त हो सच्चा हक़ीक़ी, ऐसा मुमकिन है कहाँ।
इस तरह जब लोग बोले राम भी खुश हो गये, फिर इज़ाज़त ले के हर एक हो गया घर को रवाँ।
शिव यह कहते हैं अवध के लोग हैं सब खुशनसीब, क्यों न हो तक़दीर वाले राम हों जब हुक्मराँ।
राम से मिलने को मेहमाँ आये थे एक दिन वशिष्ठ, राम ने खातिर बहुत की उनकी बन कर मेज़बाँ।

यों कहा उनसे मुनी ने है ये मेरी इल्तेजा, आपके अतवार से है दिल में कुछ वहमोगुमाँ।
आपकी जो मक़दरत है वेद कह सकते नहीं, फिर मेरी ताक़त ही क्या है जो करूँ उसका बयाँ।
लोग कहते हैं फरायज़ है पुरोहित के बुरे, शास्त्र और जो वेद हैं उसके लिए नफ़रत कुनाँ।
सूर्यवंशी खानदाँ की जब पुरोहिताई मिली, मुझको नामंजूर था, मैं चाहता था ही कहाँ।
मुझको ब्रह्मा ने कहा यों तुम से कर लो क़बूल, फ़ायदा ही होगा तुम को कुछ नहीं इसमें ज़ियाँ।
लेंगे बख़ुद अवतार भगवान आदमी के रूप में, सूर्यवंशी खानदाँ में और बनेंगे हुक्मराँ।
मैं इसी बाअस किया मंजूर ऐसे काम को, तावआसनी उसे पा जाऊँ जो मिलता कहाँ।
फिर तो इससे बढ़के कोई धर्म दुनिया में नहीं, जप व तप और नेम तीरथ में नहीं ये खूबियाँ।
वेद और पुराण पढ़ने का यही है एक फल, आपके चरणों में अपना दिल लगा हो बेगुमाँ।
मैले पानी से नहीं हो सकता कोई कपड़ा साफ़, और पानी को मथें तो दूध बनता है कहाँ।
साफ़ पानी जैसा करले, अपने दिल को पहले साफ़, और फिर भक्ति में लग जाये बिला शक्कोगुमाँ।
आपके चरणों में जिसका ध्यान है लायक़ है वह, है वही पंडित, वही ज्ञानी, वही है रम्ज़दाँ।
आप से है अर्ज़ मेरी कीजिए इसको कबूल, हर जनम में आप के चरणों में दिल हो बेगुमाँ।
इस क़दर कह कर वशिष्ठ वापस रवाना हो गये, रामचन्द्र जी हुए खुश और वे थे शादमाँ।
भाई सब हनुमान और खुद्दाम भी सब शाद थे, एक दिन रघुनाथ जी घर से हुए बाहर रवाँ।
हाथी और रथ और घोड़ों को मँगाया उस जगह, जिसने जो माँगा दिया उसको बगैरे ईनोआँ।
एक दिन ठंडी हवा थी जब, गये अमराई में, भरत भी साथ उनके थे, हमराह थे सब भाइयाँ।
भरत ने पीताम्बर अपना बिछाया फ़र्श पर, और उस पर रामचन्द्र जी हुए जलवा कुनाँ।
भाई सब खिदमत गुज़ारी के लिए मौजूद थे, और पंखा झल रहे हनुमान जी थे शादमाँ।
क्यों न हो हनुमान की क़िस्मत बड़ी है ज़ोरदार, राम की खिदमत से जो हरदम रहे नुसरत निशाँ।
राम ने तारीफ़ जिनकी की है सबसे बार-बार, उनकी खिदमत से हैं वह खुश और इनके मदहख्वाँ।
आ गये नारद मुनी भी ले के वीणा हाथ में, और सना रघुनाथ की करने लगे मुँह से बयाँ।
आपके दर्शन से रद्द होते हैं सब दर्दो अलम, हो दया की एक नजर मेरी तरफ़ शाहेशहाँ।
साँवला है रंग कैसी प्यारी सूरत आप की, आप बसते हैं हमेशा शिव के दिल के दर्मियाँ।
राक्षस की आप ने अफ़वाज़ का तोड़ा घमंड, और सुग्रीव को किया हर तरह खुर्रम शादमाँ।
ब्राह्मण को खेत समझें गर, तो बारिश आप हैं, अपने खादिम और बेकस के सावन बेगुमाँ।
आप ने दुनिया को तकलीफ़ों से छुटकारा दिया, खर व दूषण और विराध अब रह गये बाक़ी कहाँ।
आप ने रावण को भी मारा है ऐ आली जनाब, राजाए दशरथ के घर हैं आप रूये खानदाँ।
शास्त्रों, वेदों, पुराणों में सभी में ज़िक्र है, आप के औसाफ़ का इन सब में आया है बयाँ।
देवता गाते इसे हैं और मुनी गाते इसे, और संतों के भी रहता है यही विरदे जबाँ।
रहमदिल हो, दूर कर देते हो सब झूठा ग़रूर, पाक हैं औसाफ़, सब तुम में, अवध के हुक्मराँ।
इस तरह करके बयाँ नारद मुनी वापस गये, और गये वापस वहाँ, ब्रह्म लोक है वाक़ै जहाँ।
शिव ने गिरजा से कहा, मैंने यह लासानी कथा, जिस तरह मुमकिन था मुझ से कर दिया तुम से बयाँ।
सरस्वती से भी नहीं मुमकिन है, इसको कह सके, कारनामे राम के करना बयाँ, मुमकिन कहाँ।
राम के हैं नाम लाखों और गुण है बेशुमार, इनके औसाफे हमीदा हो नहीं सकते बयाँ।
क़तरये दरिया को गिन ले रेत जंगल की गिने, राम के औसाफ़ को गिन ले, ये मुमकिन है कहाँ।

ये कथा भगवान की भक्ति को देती है ज़रूर, सुनने वाले इससे हो जाते हैं शादो कामराँ।
वह कथा मैंने सुनाई है तुम्हें भगवान की, जो गरुड़ जी से किया था काग भुसुण्ड जी ने बयाँ।
इस तरह शिव ने कही गिरजा से यह सारी कथा, और गिरजा हो गई सुन कर इसे बस शादमाँ।
बोली शौहर से वे अपने हो गई मैं शादकाम, राम की सुन कर कथा मैं हो गई हूँ शादमाँ।
राम की प्यारी कथा है यह, और सुनाना आप का, क्यों न ये दिल को लुभाये आप है शीरीं दहाँ।
इसको सुनते ही रहें, है इस तरह जो चाहता, खत्म करते हैं इसे जो, वह मज़ा पाते कहाँ।
बहरे आलम से जिसे मंजूर हो जाना पार, वास्ते उसके कथा, किश्ती है बेशक्कोगुमाँ।
यह बुरों के वास्ते भी है निहायत शाजगार, जिसको सुन कर साफ़ दिल हो और पाये नेकियाँ।
कान रखने वाला इनसाँ कौन है दुनिया में वह, जो नहीं कानो से सुनता हो कथा की खूबियाँ।
राम की जिसको कथा भाती नहीं है शौक़ से, वह तो है नादान और है दुश्मने जाँ बेशुमाँ।
आपने जो कुछ सुनाया मैंने उसको सुन लिया, और सुन कर हो गई हूँ कामगारो कामराँ।
सोच बस इस बात ही का दिल में मेरे रह गया, और इसी बाअस मेरे दिल में है कुछ शक्कोगुमाँ।
काग भुसुण्ड जी थे कौवे, ज्ञान कैसे पाये वह, और कथा कैसे गरुड़ जी से उन्होंने की बयाँ।
लाख इन्सानो मे शायद एक ही ज्ञानी मिले, ब्रह्म में हो ज्ञान जिसका, कोई मिलता है कहाँ।
ये कथा भगवान की कैसे उन्हें हासिल हुई, और गरुड़ ऐसे थे ज्ञानी क्यों गये उनके यहाँ।
सुनके शिव जी खुश हुए बोले, कि तुम हो खुशनसीब, है कथा से प्रेम तुमको, मैं हूँ अब करता बयाँ।
दक्ष की बेटी थीं तुम और तुमको कहते थे सती, हाल कुछ पिछले जनम का अपने तुम सुनलो यहाँ।
बाप के घर तुम गई यज्ञ में, न कुछ खातिर हुई, आग में अपने को बस तुमने जला डाला वहाँ।
उस जुदाई से तुम्हारी, मैं बहुत गमगीन था, फिरते-फिरते मैं वहाँ पहुँचा, भुसुण्ड जी थे जहाँ।
एक पर्वत है सुमेर और उसमें है पीपल का झाड़, जिसके नीचे बैठ कर वे ध्यान करते हैं वहाँ।
वे अमर हैं, मौत उनको है कभी आती नहीं, दिल लगा पूजा किया करते हैं हरदम और ध्याँ।
बैठते है झाड़ के नीचे कथा कहने को ये, जिसको सुनने के लिए पक्षी है सब आते वहाँ।
हंस के मैं रूप में जा कर वहाँ सुनता रहा, चन्द दिन रह कर हुआ कैलाश को वापस रवाँ।
अब गरुड़ कैसे गये उसका सुनाता हूँ मैं हाल, उनको कुछ भगवान की लीला में था शक्कोगुमाँ।
अपना शक वह दूर करने जब गये ब्रह्मा के पास, उनको ब्रह्मा ने रवाना कर दिया मेरे यहाँ।
मुझसे आ कर राह में जब वह मिले, मैंने कहा, तुम हरी के गुण सुनो जा कर भुसुण्ड जी के यहाँ।
वे गये उनके यहाँ स्थान उनका देख कर, हो गये बेइन्तहा खुश, हो गये वे शादमाँ।
उनको आते देख कर पक्षी जो सब थे खुश हुए, और भुसुण्ड जी ने कहा, क्यों आप आये हैं यहाँ।
तब गरुड़ जी ने कहा जिस वास्ते आया था मैं, आपके दर्शन ही से सब मिट गये शक्कोगुमाँ।
राम जी की अब कथा सुनने की है ख्वाहिश मेरी, आप अपने मुँह से इसको कीजिए मुझसे बयाँ।
काग भुसुण्ड जी हुए खुश और निहायत प्रेम से, पहले समझा कर किया मानस का सब रूपक बयाँ।
मोह रावण को हुआ, रावण लिया औतार क्यों, शक्ले इन्सानी में क्यों भगवान हुए जलवाकुनाँ।
बाललीला और धनुष यज्ञ और विवाह फिर वन गमन, और सुनाया राजए दशरथ का मर्ग नागहाँ।
भरत का इज़हारे उल्फ़त, उनका जाना चित्रकूट, राम की तफ़हीम से क्यों कर हुए वापस रवाँ।
पंचवटी में शुर्पनखा की जो हुई दुर्गत कही, किस तरह सीता को रावण ले गया अपने यहाँ।
दोस्ती सुग्रीव से, बाली का मरना कह दिया, बाद बाली के हुआ सुग्रीव कैसे हुक्मराँ।

कूद कर कैसे किया हनुमान ने दरिया को पार, किस तरह पहुँचे ये सीता जी मुकय्यद थी जहाँ।
दे के सीता को निशानी किस तरह तफ़हीम की, किस तरह लंका जला डाली, किया उसका बयाँ।
वापस आ कर राम को सारा सुनाया माजरा, और विभीषण आके कैसे राम से माँगे अमाँ।
पुल का बनना और बाली पुत्र का जाना कहा, जंग में कैसे लड़े थे, राक्षस और वानराँ।
कुम्भकरण मारा गया, मारा गया जो मेघनाद, और जो मारे गये थे जंग में सब वानराँ।
राम ने जो युद्ध रावण से किया सब कुछ कहा, और रावण किस तरह मारा गया, उसका बयाँ।
रानी मन्दोदरी का ग़म, अक़द सब कहने के बाद, फिर कहा कैसे विभीषण हो गये थे हुक्मराँ।
वापसी सीता की और मिलना श्री रघुनाथ से, बैठ कर पुष्पक पे कैसे थे अयोध्या को रवाँ।
शादमानी कैसी छाई थी अवध में कह दिया, और अयोध्या के हुए थे रामचन्द्र हुक्मराँ।
तब गरुड़ जी ने कहा अब शक मेरा जाता रहा, आपसे सुन कर कथा मैं हो गया हूँ कामराँ।
धूप की तेज़ी में जैसे झाड़ का साया मिले, मोह मुझको गर न होता आपसे मिलता कहाँ।
राम की किरपा से मेरा आपसे मिलना हुआ, आपके कारण हुआ संदेह मेरा रायगाँ।
यों भुसुण्ड जी ने कहा ऐ नाथ क्या कहते हैं आप, आप तो ज्ञानी हैं, सन्देह आपको होता कहाँ।
यह बड़ाई मुझ को देने के लिए रघुनाथ ने, इस बहाने से है भेजा आप को मेरे यहाँ।
नारद और ब्रह्मा व शिव भी बच नहीं इससे सके, मोह ने सबको किया बरबाद हरदम बेगुमाँ।
कौन ऐसा है जो जोबन की न ज़द में आ गया, और ममता ने नहीं किस का किया बल रायगाँ।
काम से बचता है कौन, और क्रोध से जलता नहीं, दौलत और सरवत के मद से कौन छूटा है यहाँ।
डाह ने किसको नहीं बदनाम दुनिया में किया, फ़िक्र और ग़म में रहा बाक़ी किसी का कब निशाँ।
माल की, औलाद की और मरतबे की आरज़ू, कौन ऐसा है जो इससे बच सका हो बेगुमाँ।
यह है सब माया ही जो है सब तरफ़ फैली हुई, शिव व ब्रह्मा को भी मिल सकती नहीं जिससे अमाँ।
ये जो माया है वह गोया फौजे लातादाद है, काम क्रोध और लोभ इस सेना के समझो अफ़सराँ।
और माया एक दासी है श्री रघुनाथ की, जिनकी किरपा के बिना, यह छूट सकती है कहाँ।
एक अदना से इशारे से श्री रघुनाथ के, ऐसी माया नष्ट हो जाती है दिल से नागहाँ।
राम अजन्मे, सच्चिदानंद और बल के धाम हैं, वो है निर्गुण रहते है वो सबके दिल के दर्मियाँ।
वह फ़क़त भक्तों के कारण जिस्मे इन्सानी लिए, काम इन्सानों के जैसे कर दिखाये बेगुमाँ।
जैसे नट करता है नक़ले मुखतलिफ़ अक्सामकी, दरअसल वह रंग और वह रूप उसका है कहाँ।
यों ही लीला राम की है, जो हैं लेकिन बेवकूफ़, राम की लीला पे होता है उन्हें शककोगुमाँ।
आँख में जिसको पांडु रोग हो, वह चाँद को कहता है ज़र्द, नाव पर बैठा हुआ समझे कि चलता है जहाँ।
तिफ़्ल चक्कर हैं लगाते, घर नहीं है घूमता, लेकिन वो कहते है आपस में कि फिरता है मकाँ।
यों ही है भगवान की करनी गरुड जी तुम सुनो, जो है अज्ञानी उन्हें होता है बस शककोगुमाँ।
काम क्रोध और मद के जो जंजाल में है फँस गये, वो अँधों में पड़े है राम को जाने कहाँ।
राम अपने दास में अभिमान रखते ही नहीं, जिसके बाअस झेलनी पड़ती है उसको सख्तियाँ।
जैसे माँ बच्चे के फोड़े को चिरा देती है खुद, कायदे के वास्ते, गो वह करे आहो फुगाँ।
राम ही हैं मेरे मालिक और मैं हूं उनका दास, उनकी लीला देख कर रहता हूँ हरदम शादमाँ।
बाल लीला देख कर कुछ मुझको हैरत सी हुई, किस तरह भगवान ऐसे काम करते है यहाँ।
एक सीता राम ही है जो हैं माया से बचे, और जड़ चेतन हैं सब माया के बस में बेगुमाँ।

जीव को गर ज्ञान होता और होता एक रस, ईश्वर और जीव में फिर भेद रहता ही कहाँ।
जीव तो हैं मुख़्तलिफ़, भगवान की है ज़ात एक, याद करने से भी पर, भगवान् मिलता है कहाँ।
जैसे सूरज के बिना ज़ुल्मत नहीं होती है दूर, चाँद तारें लाख चमकें कोह हो शोलाफशाँ।
योंही जीवन से नहीं मिटते कलेश इन्सान के, जुज भजन भगवान् के मिलती नहीं दिल को अमाँ।
राम ने जब मुझको हैरानी में पाया हँस दिये, भेद यह सबसे रहा, मख़फ़ी रहा सब से निहाँ।
मेरे पीछे दौड़ते जाते थे वह मानिन्दे तिफ़्ल, भागता जाता था मैं, उनसे बचा कर अपनी जाँ।
आख़िरश जब हो गया बेज़ार मैं, वो हँस दिये, उनके मुँह की राह से पहुँचा शिकम के दर्मियाँ।
कायनाते दहर को देखा मैं उनके पेट में, हो गया मैं महवे हैरत, देख कर सारा समाँ।
दी घड़ी में देख डाला मैंने यह सारा चरित्र, मुझको हैरानी हुई, और हँस दिये वो नागहाँ।
ज्यों ही वो हँसने लगे, मैं मुँह से बाहर आ गया, लेकिन मिट सकते न थे दिल के मेरे शक्कोगुमाँ।
मेरी रक्षा कीजिए कहते हुए मैं गिर पड़ा, हाथ सर पर रख के मेरे हो गये वो शादमाँ।
और कहा मैं तुम से ख़ुश हूँ मुझसे जो चाहे सो माँग, मोक्ष और वैराग ज्ञान ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ।
मैंने सोचा सब तो देने को कहा भगवान ने, अपनी भक्ति का नहीं कुछ मुझसे करते हैं बयाँ।
सब हो गुण हासिल मगर भक्ति न हो भगवान की, बेनमक के है वह खाना, उसमे लज़्ज़त ही कहाँ।
मैं कहा मुझ पर दयालू आपकी किरपा हो गर, अपनी भक्ति का मुझे वर दीजिएगा बेगुमाँ।
फिर कहा भगवान ने ऐ काग तू है होशमन्द, मैं तुझे देता हूँ यह वर होके तुझसे शादमाँ।
योग की जो आग में अपना जलाते हैं शरीर, वे भी भक्ति पा सकें उनसे ये मुमकिन है कहाँ।
तुझको भक्ति ज्ञान विज्ञान और वैराग और योग, सब बआसानी मिलेंगे कुछ नहीं दुश्वारियाँ।
मेरी ही माया से सब संसार है पैदा हुआ, जिस क़दर हैं जीवजन्तु सब में हूँ मैं मेहरबाँ।
क्योंकि यह सब मेरी ही लीला से हैं पैदा हुए, लेकिन इन्सानों में है मेरी दया फौकुल बयाँ।
द्विज भी हो और वेदपाठी धर्म का पाबन्द हो, उनमें भी वैराग्य जो ले, इससे मैं हूँ शादमाँ।
और वैरागी हो ज्ञानी या कि विज्ञानी ही हो, उससे बढ़ कर दास पर हूँ मैं हमेशा मेहरबाँ।
चाहे ब्रह्मा ही का वह, भक्ति नहीं तो कुछ नहीं, नीच भी हो और वह हो भक्त, वह है मेरी जाँ।
वेद में ऐसा लिखा है किसको वह प्यारा नहीं, दास जो होता है सुन्दर और पवित्रो बुद्धिमान।
बाप के होते है बेटे मुख़्तलिफ़ अक़्साम के, कोई पण्डित कोई दौलतमंद कोई पहलवाँ।
कोई पाबन्दे धरम और कोई होता है ग़रीब, बाप का इन सबसे होती है मुहब्बत बेगुमाँ।
लेकिन इनमें बाप की सेवा जो करता है मुदाम, उससे रहता बाप है हरदम निहायत शादमाँ।
इस तरह ये जीवजन्तु और सारी कायनात, मेरी ही लीला से ये सब हैं हुए जलवाकुनाँ।
और मेरी भी दया की सब पे रहती है नज़र, लेकिन इनमें जो मुझे भजता है बादिल-बजाँ।
ख़्वाह वह औरत ही हो, नामर्द हो या मर्द हो, जो मुझे भजता है मैं हरदम हूँ उससे शादमाँ।
जब कहा यह राम ने मुझको बड़ा सुख मिल गया, किस क़दर मैं शाद था, वह कर नहीं सकता बयाँ।
वो तो सुख बस जान ही दिल हो मेरा है जानते, उसको कह सकने के क़ाबिल है नहीं मेरी ज़बाँ।
उनकी शोभा का जो सुख है आँख ही है जानती, कूवते गोयाई लेकिन आँख को हासिल कहाँ।
इतना मुझको कह सुनाया, और फिर रघुनाथ जी, बाल लीला अपनी करने लग गये जा कर वहाँ।
इस तरह से ऐ गरुड़ जी मैंने अपना हाल अब, कर दिया तफ़सील से है आपसे सारा बयाँ।
प्रभता जाने बिना विश्वास जग सकता नहीं, और बज़ुज़ विश्वास के प्रीत भी मिलती है कहाँ।

जैसे चिकनाई कभी पानी की रह सकती नहीं, योंही प्रीति के बिना भक्ति का मिलना है अयाँ।
ज्ञान मिलता है गुरु से या कि वह वैराग्य से, और भक्ति से भी रहता भक्त भी है शादमाँ।
शान्ति होती है हासिल सब्रो इस्तकलाल से, जल अगर होगा नहीं फिर नाव चल सकती कहाँ।
ख्वाहिशाते नफ्स से आराम मिल सकता नहीं, सब्र ही से ख्वाहिशाते नफ्स होंगे रायगाँ।
तेज़ को तप चाहिए, जल चाहिए रस के लिए, और न हो विश्वास तो सिद्धी भी मिलती है कहाँ।
ख्वाह वह भक्त हो या वह हो गरुड़ जैसा परिन्द, यह नहीं मुमकिन कि उड़ कर जा सके ता आसमाँ।
राम की महिमा का भी योंही ठिकाना कुछ नहीं, जिनका बल परकास तेज और शक्ति हो क्यों कर बयाँ।
हम जो माँगे उनसे, वह देते हैं हमको बेहिचक, जिनकी ऊँचाई व नीचाई है नाक़ाबिल बयाँ।
किस क़दर दाना हैं वह हम कह नहीं सकते है कुछ, किस क़दर उनका खज़ाना है, यह हैं बिलकुल निहाँ।
कोई उनसा है नहीं है जात उनकी बेमिसाल, सोच कर यह दिल में उनकी याद कीजे हर जमाँ।
वे गुरु की रहनुमाई के कोई इन्सान भी, पार भवसागर करे मुमकिन ये उससे है कहाँ।
फिर गरुड़ जी ने यह पूछा आप कौवे क्यों बने, और मानस आपने पाया कहाँ कीजे बयाँ
और मैं यह भी सुना हूँ आप मरते ही नहीं, क्या यह मुमकिन है कभी मुझको तो है शक्कोगुमाँ।
आश्रम में आपके आते ही मेरा मोह सब, मिट गया है, हो गया हूँ मैं निहायत शादमाँ।
क्या सबब है इसका मुझसे आप सब फरमाइये, मुझका सुनने की है ख्वाहिश मुझसे कीजेगा बयाँ।
बोले वह भक्ति न हो गर राम की वेसूद है, ख्वाह वह ब्रह्मासा ही हो या कि हो वह हीचदाँ।
मैंने भक्ति राम की पायी इसी एक जिस्म से, इसलिए मुझको बहुत भाता है यह तन बेगुमाँ।
मेरा मरना इख्तियारी है मगर इस जिस्म को, मै नहीं छोड़ूंगा, कि वेदों में हुआ है यह बयाँ।
जिस्म का होना है लाज़िम भक्त बनने के लिए, जिस्म ही होता नहीं गर, फिर भजन होता कहाँ।
मुखतलिफ़ योनी में मैंने है लिया अपना जनम, मुखतलिफ़ मैंने किया है कर्म भी हर हर ज़माँ।
लुत्फ़ मुझको कुछ न आया, पिछले जीवन मे कभी, लेकिन मैं अब इस जनम में हूँ निहायत शादमाँ।
एक दफ़ा कलजुग में मैंने भी जनम अपना लिया, और अवध में शूद्र बन कर, मैं रहा था उस ज़माँ।
मोह के बस लोग थे शुभकर्म होते ही न थे, इसलिए कलजुग का भी कुछ तुमसे करता हूँ बयाँ।
धर्म रहता ही नहीं, रहते नहीं चार आश्रम, वेद बेचे ब्राह्मण, राजा करेंगे सख्तियाँ।
है नहीं क़ानून कोई जिसको जो चाहे करे, हैं वही पडित व ज्ञानी जो करेगा शोखियाँ।
ढींग जो करता है कहलाता है साधू सन्त वह, झूठ जो कहता है अक्सर उसको कहते ज्ञानवाँ।
दूसरे का धन व दौलत जो हज़म कर ले कोई, उसको कहते है अक़मन्द और उसको बुद्धिमाँ।
है वही मशहूर कलयुग में तपस्वी और मुनी, जो दिखावे के लिए रखेगा लम्बी चोटियाँ।
है वही योगी उसी को पूजते हैं लोग सब, जेवरो मलबूस पहने, खाये हर शै बेगुमाँ।
दूसरों के जो मुमिद हों उनको कहते है बुरा, और जो झूठे हों उनको मानता है सब जहाँ।
मर्द औरत के हो बस में, जिनको कहते ज़नमुरीद, नाचते वैसा ही है, जैसे है कहती बीवियाँ।
शूद्र जो होते है वह तो पहनते जुन्नार है, ज्ञान की बातें ब्राह्मण से करते हैं बयाँ।
काम, क्रोध और लोभ होता आदमी मे है बहुत, ब्राह्मण और देवता को मानते हैं वह कहाँ।
ग़ैर मर्दों से मिलाती अपना दिल है औरतें, अपने शौहर से रहा करती हैं हरदम बदगुमाँ।
जो सुहागन हो उसे, नये जेवरो मलबूज है, और बेवा रहती है सिंगार ही से हर जमाँ।
फ़र्क़ कुछ होता नहीं शागिर्द और उस्ताद में, और गुरु भी लालची होते हैं ज़र के बेगुमाँ।

अपने बच्चों को सिखाते काम हैं वह वालदैन, पेट बस भर जाय जिससे, हैं उसी से शादमाँ।
क़त्ल कर डाले ब्राह्मण और गुरु उस्ताद को, इसके बदले में अगर मिल जाये उनको कौड़ियाँ।
शूद्र अपने को ब्राह्मण से हैं बढ़ कर मानते और कहते हैं कि तुम में फ़ौक़ियत हमसे कहाँ।
जो ब्रह्मा को समझ ले है वही एक ब्राह्मण, इस तरह कहते हुए करते है उससे शोखियाँ।
ग़ैर की औरत पे रखता है नजर जो बद कोई, और जो कपटी हो, कहता है उसे अच्छा जहाँ।
खुद बुरे होते हैं करते दूसरों को हैं तबाह. नीच जाती सर मुंडा कर बनते हैं सन्यासियाँ।
और खुद को ब्राह्मण से आप पुजवाते हैं वो, ब्राह्मण नीच औरतों से दिल लगा कर शादमाँ।
शूद्र जप और तप हैं करते और कहते है पुराण, और हरामी नस्ल भी होती है पैदा बेगुमाँ।
जो हैं सन्यासी सजाते अपने घर को हैं बहुत, ख़्वाहिशाते नफ़्स से बैराग्य उनका रायगाँ।
और दुनियादार सारे हो गये धन मे दरिद्र, रुपया पैसा जमा होता तपस्वी के यहाँ।
नेक जो औरत को घर से लोग देते हैं निकाल, दासियों को ला के रख लेते हैं वो अपने यहाँ।
वालदैन होते हैं प्यारे पुत्र को उस वक़्त तक, उसकी जब तक हो न शादी फिर बदलना है समाँ।
मिलता है ससुराल जब कुनबे से छुट जाते है फिर, और त्रिआगा पर किया करते है सख़्ती हुक्मराँ।
नीच ही हो और दौलतमन्द हो, वह है कुलीन, सिर्फ़ है जन्नार बाक़ी एक ब्राह्मण का निशाँ।
जो मुख़ालिफ़ रहते है वेदों के और पुराण के, उनको कहते है हरी के भक्त हर कस दर जहाँ।
ऐब जो होते हैं अक्सर, नुक्तादाँ होना नहीं, शायरों के फ़ुंद होते हैं, नहीं है क़दरदाँ।
काल पड़ते हैं बहुत हो जाती है अन की कमी, भूख की शिद्दत से मरने लगते हैं अहले जहाँ।
बाल ही ज़ेवर रहे बाक़ी हैं औरत के लिए, और गरीबी के सबब रहती दुःखी हैं हर जमाँ।
चाहती आराम हैं चलती नहीं वह धर्म पर, आचरण अच्छे नहीं, बुद्धि भी अच्छी है कहाँ।
मान, मोह, पाखण्ड और मद, काम फैलेगा बहुत, है यही आसार कलयुग के जमाने पर अयाँ।
दान जप तप जो करेंगे बादिले नाख़ास्ता, वक़्त पर बारिश भी हो जाये ये मुमकिन है कहाँ।
और पैदावार भी ग़ल्ले की होती कुछ नहीं, फैलती जाती है हरसू मुख़्तलिफ़ बीमारियाँ।
ज़िन्दगी के दिन हैं थोड़े लेकिन फिर भी है घमंड, बहन बेटी की नहीं रहती है कोई इज्ज़तोशाँ।
रहम करना, दान देना और समझदारी नहीं, धर्म के जो आचरण है होते हैं सब रायगाँ।
जाहिलियत और दग़ाबाज़ी जमाने में बढ़े, चाहते हैं लोग सब अपनी ही सब आसानियाँ।
गो यह सब कठिनाइयाँ हैं, एक गुण कलयुग में है, छूटना बन्धन से भव सागर के है आसाँ यहाँ।
सतजुगो, त्रेता और द्वापर में तो फल मिलता है जब, जप व तप और भोग पूजा की सहें कठिनाइयाँ।
और कलयुग में फ़क़त एक नाम से भगवान का, फल वही मिलता है और हो जाता है दिल शादमाँ।
योग जप तप का कहीं भी नाम कलयुग में नहीं, नाम ही भगवान का लेना है बस आरामे जाँ।
मानसिक पुण्य तो हैं होते, पाप होते ही नहीं, है यही परताप कलयुग का यही है एक निशाँ।
ग़ौर से देखो अगर कलयुग सा कोई जुग नहीं, नाम ही लेने से हो जाता है इन्साँ कामराँ।
धर्म के चार आचरण सत्य तप दया और दान हैं, दान ही देने से कलयुग में हो इन्साँ कामराँ।
ज्ञान ममता और सतो गुण है ये सतयुग के कमाल, कुछ रजोगुण और प्रीति ये है त्रेता के निशाँ।
कुछ तपो गुण और झगड़ा खौफ़ द्वापर में भी हो, और कलयुग में तमो गुण हो ज़्यादा ही अयाँ।
बाद इसके अपने पिछले जन्म की सारी कथा, काग भुसन्ड जी ने की तफ़सील से उनसे बयाँ।
किस तरह अपने गुरू का वह निरादर थे किये, शिव ने बदले में दिया क्यों शाप इनको बेगुमाँ।

जो कि गुस्ताख़ी किया करते गरू उस्ताद से, क्या गति होती है उनकी वह भी सब कर दी बयाँ।
शिव की फिर अराधना से किस तरह वह खुश हुए, दूसरा वर देके कैसे कर दिये फिर शादमाँ।
बाद इसके फिर जनम कैसे हुआ यह भी कहा, जीने मरने की न थी तक़लीफ़, थी आसानियाँ।
इस जनम में ब्राह्मण हो कर के पाया कैसे इल्म, जब कि निर्गुण मत से हट कर, था सगुण में इनका ध्याँ।
यह गये लोमस ऋषि के पास जो पर्वत पे थे, और कहा मुझ से सगुण का हाल कुछ कीजै बयाँ।
गो मुनी ने उनको समझाया निहायत शौक़ से, और निर्गुण मत की समझाये बहुत-सी खूबियाँ।
उनको यह भाया नहीं और अपनी ही हठ पर रहे, मानने हरगिज़ न थे उनका कहा यह बेगुमाँ।
आ गया गुस्सा मुनी को शाप इनको दे दिया, जिस वजह से बन गये कौवा ये फ़ौरन नागहाँ।
और लोमस ने दिया क्यों बाद इनको राममंत्र, जिसके बाअस हो गये यह किस तरह से कामराँ।
राम का मानस सुनाना, किस तरह खुद को मिला, शिव ने जो उनको किया था वह किया सारा बयाँ।
इस क़दर सुन कर गरुड़ जी उनसे यों कहने लग, मोह मेरा मिट गया अब हो गया मैं शादमाँ।
ज्ञान और भक्ति में क्या कुछ फ़र्क है बतलाइए, इसके सुनने की मुझे ख्वाहिश है बादिल और व जाँ।
यों जवाब उनको मिला कुछ फ़र्क इनमें है नहीं, है नतीजा एक इन दोनों का सुन लीजै बयाँ।
ज्ञान वैराग्य योग और विज्ञान यह आशिक़-से हैं, और माया ही है एक माशूक उनकी बेगुमाँ।
इश्क के जंजाल में फँसते है ज्ञानी भी कभी, यह वही माया है जो जन धन के होती हैं अयाँ।
जो कि साबिर और वैरागी है वह फँसता नहीं, और रखता राम ही का ध्यान है वह हर जयाँ।
हुस्न पर औरत के औरत है नहीं कुछ रीझती, यों ही भक्ति से कभी माया मिले मुमकिन कहाँ।
मन के दीपक को जला कर दिल को जो रौशन करे, मोह से छुटता है वह, होता वही है राजदाँ।
इन्द्रियों को ज्ञान की रगबत हुआ करती है कम, और बुद्धि बावली है कुछ नहीं शक्को गुमाँ।
ज्ञान का जो मार्ग है मानिन्द एक तलवार है, इसमें जो गिरता है बच कैसे सकेगी उसकी जाँ।
मैं हूँ सेवक और हैं भगवान ही मालिक मेरे, जो यह समझे, पार उसका होगा बेड़ा बेगुमाँ।
जैसे पानी के लिए थल चाहिए ज़ाहिर है ये, मोक्ष के भी वास्ते भक्ति का होना है अयाँ।
जो कि चेतन को करे जड़ और जड़ चेतन करे, उसको जो भजते हैं, धन्य कहता है उनको सब जहाँ।
भक्ति तो है एक ज्योती, दिल मे चमकती है मुदाम, उसको घी बत्ती व दिये की ज़रूरत ही कहाँ।
मोह का इफ़लास उसके पास आता ही नहीं, लोभ से भी यह चमक होती नहीं है रायगाँ।
जाहिलीमत दूर हो जाती है जब हो यह चमक, काम क्रोध और लोभ यह होते हैं सब दिल से रवाँ।
जिसके दिल में यह मणी हो रुवाब में भी दुख नहीं, चाहिए इन्सान को रखे बना कर हुर्ज़े जाँ।
ज़हर अमृत का करेगा काम, दुश्मन दोस्त हों, कोई महनी ही नहीं पड़ती उसे बीमारियाँ।
कोई पाने का तजस्सुम इसके करता ही नहीं, वर्ना पा सकते हैं उसको, है ज़माने में अयाँ।
वेद और पुराण परबत, और कथाएँ काल हैं, जो कोई खोजेगा पालेगा मणी को बेगुमाँ।
संत की संगत से हो जाता है भक्ति का हुसूल, जो कि मद और मोह को करती है दिल से रायगाँ।
ढ़ाल है वैराग्य भक्ति के लिए तलवार ज्ञान, मोह और मद इसके दुश्मन, जिनको करदे बेनिशाँ।
फिर मुखातिब होके उनसे यों गरुड़ जी ने कहा, आपसे यह इल्तेजा मेरी है और अर्ज़ बयाँ।
सबसे दुर्लभ कौन-सा होता है कहिएगा शरीर, दुःख व सुख है कौन-से सबसे बड़े कीजै बयाँ।
संत हम किस को कहेंगे और कहें किसको असंत, पाप और पुण्य कौन-से सब में हैं अर्फ़ा मेहरबाँ।
और मानस रोग भी हैं कौन-से फ़र्माइए, यह जवाब उनको मिला सुनिए मैं करता हूँ बयाँ।

सब शरीरों में है अच्छा, यह शरीर इन्सान का, चर अचर तावे हैं जिसके, मोक्ष की हैं सीढ़ियाँ।
जिस्मे इन्सानी को पा कर जो नहीं करता भजन, फेंक कर पारस को जैसे काँच से हो शादमाँ।
दुःख कोई होता नही बढ़ कर कोई इफलास से, साथदारी संत की आलातरीं है सुख यहाँ।
काम संतो का है औरों की करें इमदाद वह, और खुद सहते रहें तकलीफ़ सारी सख्तियाँ।
दूसरों को दुख जो पहुँचाए वही होगा असंत, दूसरों की जो भलाई मे न होगा शादमाँ।
दूसरों की चीज़ को बरबाद कर देगा ज़रूर, ख्वाह उसके वास्त उनकी निकल भी जाय जाँ।
जैसे ओला खेत उजाडे और खुद बरबाद हो, और चुग़लखोरी व बदगोई बस उनकी बरज़बाँ।
कत्ल भी जायज़ है लेकिन है चुग़लखोरी बुरी, वेद में ऐसा लिखा है और है इसका बयाँ।
और मानस रोग भी है कौन-से सुन लीजिए, लोग जिससे झेलते तकलीफ़ हैं और सख्तियाँ।
मोह जड़ है और पैदा उससे है लाखों कई, काम वात है, लोभ कफ़, और क्रोध है पित्त बेगुमाँ।
गर ये तीनों हों इकटठा क्यों न हो सन्निपात फिर, और विषयों के मनोरथ दिल के हैं दर्दे निहाँ।
दाद ममता, दाह खारिश और हिरस है कन्ठमाल, दूसरों पर रश्क करना क्षय की हैं बीमारियाँ।
कोढ़ के बीमार हैं जो दिल के होते है बुरे, पान, मद, दम्भ और कपट हैं मुख्तलिफ़ बीमारियाँ।
एक ही जब रोग से इन्सान जी सकता नहीं, किस तरह वह सह सकेगा इन सबों की सख्तियाँ।
नेम तप और धर्म और आचार है इनके इलाज लेकिन इनसे फ़ायदा हासिल करे मुमकिन कहाँ।
इस तरह हर एक इन्साँ रोग मे है मुबतिला, मानते इसको नहीं सच, जानता है राज़दाँ।
मुबतिला जब इसमें हो जाते ऋषी भी और मुनी, फिर तो साधारण मनुज की इसमें गिनती ही कहाँ।
जो कहा माने गुरु का, ख्वाहिशों को छोड़ दे, हैं यही परहेज़ उसके वास्ते राहत रसाँ।
राम की भक्ति को समझें आप है संजीवनी, रोग ये सब दूर हो जाते हैं इससे बेगुमाँ।
क़ूवते वैराग्य हो और दुनिया की ख्वाहिश न हो, तब तो समझो चल बसी हैं जिस्म से बीमारियाँ।
जो कि नामुमकिन से नामुमकिन हो वह हो कर रहे, राम से हो कर मुखालिफ़ दिल न होगा शादमाँ।
एक पल में जो बना सकता है मच्छर ब्रह्म को, और मच्छर को बना सकता है ब्रह्म नागहाँ।
छोड़ कर सब कारे दुनिया राम को भजते रहो, और भजन करते रहो दिन रात बादिल और बजाँ।
फिर भुसुण्ड बोले कि मैं नाचीज हूँ क्या-क्या कहूँ, मुझको जो मालूम था सब कर दिया तुम से बयाँ।
आप खुद ज्ञानी हो सब कुछ जानते हो ऐ गरुड़, राम ने मुझको बड़ाई देने भेजा है यहाँ।
यों गरुड़ कहने लगे ममनून हूँ मैं आपका, आप से सुन कर कथा मैं हो गया हूँ शादमाँ।
आप पूरण काम है और आप-सा कोई नहीं, ग़ैर के हित के लिए हैं मुस्तइद जो हर जबाँ।
सर झुका कर उसके आगें और क़दम को पूज कर, हो गये उस जाय से वैकुण्ठ को वापस रवाँ।
शिव यह कहते है कथा को जो कोई दिल से सुने, छूटता बन्धन से है वह और होगा कामराँ।
राम के चरणों में जिसका ध्यान हो सर्वज्ञ है, है वही पण्डित भी ज्ञानी भी गुणी भी बेगुमाँ।
जिस घराने में कि पैदा हो कोई एक राम भक्त, काबिले तारीफ़ हो जाता है उसका खानदाँ।
ये कथा अब तक छिपी थी और यह जाहिर न थी, मैं तुम्हारे ही तो खातिर कर दिया इसका बयाँ।
जो अधर्मी हों कि लोभी हों उन्हें कहना न ये, राम को भजते न हों सुनने का हक़ रखते कहाँ।
जिसकी प्रीति उनके चरणो मे हो वह इसको सुने, मोक्ष की पदवी मिलेगी होगा दिल से शादमाँ।
दूर मल होता है मन का, पाप सब होते है नाश, राम की जो यह कथा सुनते हैं बादिल और बजाँ।
जो कोई गाते हैं इसको छोड़ कर मन से कपट, कामना होती है पूरी और होगे कामराँ।

राम के जो हैं उपासक उनको होगी यह अजीज़, कौन ऐसा होगा जो सुन कर न होगा शादमाँ।
जो कोई इसमें से थोड़ा भी अगर पढ़ ले कभी, नाम को भी पाप उसके रह सके बाकी कहाँ।
इस क़दर कह कर किया शिव जी ने क़िस्सा ख़त्म ये, और गौरी जी भी बेहद हो गयीं ख़ुश शादमाँ।
इस क़दर लिख कर किया वहमी ने रामायण को ख़त्म क़द्र इसकी वो करेंगे जो कि होंगे क़दरदाँ।
क़ौम है कायस्थ माथुर और अलसंडोइया, हैदराबादी कहा जाता है मेरा ख़ानदाँ।
था वतन हिंडौन अपना, जो है राजस्थान में, एक सदी से कुछ ज़्यादा हो गया आ कर यहाँ।
यादगार अपनी यही छोड़ा है अहक़र वैसराय, माफ़ो कर दें लोग इसमें हों अगर कुछ ग़लतियाँ।
राम ही के मत का पैरो, राम ही का भक्त हूँ, राम ही का नाम रहता है मेरे विरदे ज़बाँ।
कीजिए मुझ पर दया मालिक मेरे रघुनाथ जी, दीन हूँ मैं और दुखी हूँ और हूँ मैं नातवाँ।
राम पर रख कर भरोसा, बाद तुलसीदास पर, लिखी है मैंने ये रामायण मिला कर दो ज़बाँ।

आरती

श्री रघुनाथ दया के स्वामी, निर्गुण हो तुम अन्तर यामी।
दीनानाथ दया के सागर, सृष्टी के तुम ही हो उजागर।
राम अजन्मा पूरण कामा, दसरथ नन्दन बल के धामा।
आप धनुषधारी की, दाता, सिया पति कौसल्या माता।
आनन्द के और सुख के सागर, निर्गुण और सगुण परमेश्वर।
दुखःहर्त्ता हो दीन दयालू, तुम रक्षक तुम ही कृपालू।
सुख सम्पत के देने वाले, पापों को हर लेने वाले।
आपकी लीला कोई क्या जाने, संतहि कुछ उसको पहचाने।
सियावर राम छमा कीजैगा, दास पे अपने दया कीजैगा।
तुम ही से कल्याण हमारा, तुम ही में है ध्यान हमारा।
कष्ट कलेश मिटा सब दीजै, ममता, मोह भगा सब दीजै।
पूजा रोज़ करे जो तुम्हारी, कष्ट है मिटते उसके भारी।
मन कर्म बचन से दास तुम्हारा, इस पापी का तुम ही सहारा।
चार पदारथ मैं नहीं चाहूँ, आपकी एक भक्ति बस पाऊँ।
मन में मेरे बस जाओ दाता, तुम और जनक दुलारी माता।
आरती आपकी हम करते हैं, चरणन में मस्तक धरते हैं।
जो कोई मंगल आरती गाये, जन्म—जन्म में वह सुख पाये।

गुण 'वहमी' के उजागर कर दो।
पार उसको भवसागर कर दो।